बाइबल के सत्य खोले गए

इन अन्तिम दिनों

प्रभु यीशु ने
सच्ची मसीहत का वर्णन करते हुए कहा:

हर एक जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है,
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा...

आधुनिक कलीसिया में झूठी शिक्षाओं का
खुलासा!

बाइबल के सत्य खोले गए

इन अन्तिम दिनों में

बाइबल के सत्य खोले गए

द्वारा: मार्क एलेक्जैण्डर

सर्वाधिकार सुरक्षित © जनवरी 2013, मार्क एलेक्जैण्डर
प्रकाशक- *'मार्क एलेक्जैण्डर'*

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी भाग (बाइबल के पदों को छोड़कर) प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना प्रयोग अथवा किसी भी रुप में पुन: उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

पवित्रशास्त्र के सभी पद हिन्दी बाइबल के ओल्ड वर्जन से लिए गए हैं।

बाइबल के सत्य खोले गए

यह पुस्तक 'त्रिएक परमेश्वर', पिता, पुत्र और पवित्रात्मा को समर्पित है, जिसने ही मेरी आंखों को खोला कि मैं इन सत्यों को देख सकूं, (प्रभु के साथ मेरी वर्षों भर की 'मसीही चाल' के दौरान) और उसने अब मेरे हृदय में यह बोझ रखा है कि मैं इस पुस्तक के माध्यम से उनको लोगों तक पहुंचाऊं। मैं इस बात का अंगीकार करता हूं कि मैं इन्हें नहीं जानता यदि परमेश्वर इन सत्यों को अपने आत्मा के द्वारा मुझ पर प्रकट नहीं करता। प्रभु यीशु ने **मत्ती 11:25-27** और **यूहन्ना 16:13-15** में कहा है कि परमेश्वर की वे बातें जो गुप्त हैं उन्हें केवल पिता अपने पुत्र और अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट कर सकता है।

*जैसा दानिय्येल नबी ने भी **दानिय्येल 2:22** में इस बात का अंगीकार किया है:*

"वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है
कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है।"

इस 'पुस्तक का उद्देश्य' निम्न पद में स्पष्ट किया गया हैं:
इफिसियों 4:12-16

[12] जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और
सेवा का काम किया जाए **और मसीह की देह उन्नति पाए,**
[13] जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर
के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन
जाएं और ***मसीह के पूरे डील-डौल*** *तक न बढ़ जाएं।*
[14] ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या और
चतुराई ***से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक***
झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों। *[15]* ***वरन् प्रेम में***
सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है,

अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं- [16] जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

यह पुस्तक हमें, जो 'मसीह के देह' के (भाग) हैं, **जागृत करने** के लिए आई है कि हम अपने आप को जांचे कि क्या हम वास्तव में अपने प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओ (दाखलता) में 'बने हुए' हैं, अन्यथा हम धीरे-धीरे सूख जाएंगे।

प्रभु यीशु के द्वारा कहे गए प्रत्येक शब्द का अर्थ है
और प्रत्येक शब्द जो उसने कहे उसका कुछ अर्थ था!

यूहन्ना 15:5-6, 8,10

*[5] "मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो। जो मुझ में **बना** रहता है*
*और मैं उसमें, वह बहुत फल **फलता** है,*
क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
*[6] **यदि कोई मुझ में बना न रहे,** तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और **वे जल जाती हैं।** [8] मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ,*
तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।** [10] **यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे,** तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; **जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना
***है,** और उसके प्रेम में बना रहता हूं।*

ऐसा कहने में प्रभु यीशु के निम्नलिखित वचन बिल्कुल स्पष्ट हैं कि कुछ ऐसे हैं जो 'उसकी शिक्षाओं और आज्ञाओं में बने हुए हैं' या ऐसे लोग हैं जो 'उसकी शिक्षाओं में बने हुए नहीं है'। उसकी शिक्षाओं में **'बने रहना या न**

बने रहना', परमेश्वर के द्वारा दी गई 'स्वतन्त्र इच्छा' है। यह चुनाव एक 'उद्धार पाए हुए विश्वासी' के जीवन में लगातार बना रहता है (यहां तक कि दाखलता में रोपे जाने के बाद भी) और इसके परिणाम प्रभु यीशु ने स्पष्टरूप से ऊपर बता दिये है जैसा हमने अभी पढ़ा है।

मसीह में अतिप्रिय, यही वह समय है कि 'मसीह की दुल्हन' **नाव में प्रवेश करने की तैयारी करे जिसके द्वार शीघ्र ही बन्द होनेवाले हैं** (जैसा कि प्रभु ने कहा-*'जैसा नूह के दिनों में होता था'*- मत्ती 24:37; मत्ती 25:10)।

विषय सूची

परिचय **7**

भाग 1:
गलत शिक्षाएं जो आज कलीसिया को मार रही हैं। **16**
अध्याय 1 16
अध्याय 2 27
अध्याय 3 38
अध्याय 4 45
अध्याय 5 68
अध्याय 1 94

भाग 2:
परमेश्वर के वचन पर मनन करना **94**
अध्याय 2 111
अध्याय 3 119
अध्याय 4 132

भाग 3
परीक्षाऐं और कष्ट **139**
अध्याय 1 139
अध्याय 2 150
अध्याय 3 159

भाग 4
मूर्ख कुंवारियां **163**
अध्याय 1 163
अध्याय 2 174
अध्याय 3 182
अध्याय 4 197
अध्याय 5 209
अध्याय 6 216
अध्याय 7 226
अन्तिम भाग निष्कर्ष **234**

परिचय

(अवश्य पढ़ें)

बाइबल के सत्य खोले गए नामक पुस्तक उस बोझ का परिणाम है जिसे प्रभु परमेश्वर ने मेरे हृदय में विश्व के सभी भाइयो के लिए रखा है। मुझे जानने में बिल्कुल भी क्षमा-याचना का बोध नहीं है कि यह पुस्तक विश्वासियों को प्रसन्न करने के लिए नहीं लिखी गई परन्तु **विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिए लिखी गई है।** मैं सच में यह विश्वास करता हूं कि मैं इसे इतने हियाव के साथ नहीं लिख पाता यदि प्रभु परमेश्वर इस में मुझे अगुवाई नहीं देता।

मैं कहना चाहूंगा कि यह पुस्तक आपके लिए आंखों को खोलनेवाली पुस्तक ठहरेगी (बहुत से बाइबल सत्यों की ओर जिन्हें इसमें शामिल गया है), और इसलिए इसे **जल्दबाजी में न पढ़ें।**

आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि यदि आप इस पुस्तक को बिना (समय लिए) *'बाइबल के उद्धरणों'* को पढ़ते हैं जिन्हें इसमें लिखा गया है तब **वे बाइबल के सत्य** पाठक के लिए लगातार बन्द बने रहेंगे।

ऐसे समय में जब कि कलीसिया उन गलत शिक्षाओं के खतरे में है, *जिनकी भविष्यद्वाणी पहले से की गई है। यह पुस्तक* एक 'प्रोत्साहन और चेतावनी' के रुप में आई है:

1. **'विश्वास में सामान्य और नए लोगों'** के लिए परिपक्वता में बढ़ने के लिए।
2. **'परिपक्व और आज्ञाकारी विश्वासी',** के लिए, कि वे अपने उद्धार के काम को डरते और कॉपते हुए पूरा करें (फिलिप्पियों 2:12-13) अच्छी कुश्ती लड़ते हुए, सकरे मार्ग से प्रवेश करते हुए, इनाम पाने के लिए आगे बढ़ते हुए, कष्टों और सतावों के

बीच ऊपरी बुलाहट को पूरा करते हुए (फिलिप्पियों 3:11-15; 2 तीमुथियुस 3:12)।

3. **'आत्म-धर्मी और विद्रोहियों'** के लिए की वे ध्यान दे कि कहीं निकाले न जाएं।
4. **'सामान्य और आत्म-सन्तुष्ट'** मसीहियों के लिए कि यह एक जागृति की बुलाहट का समय है।

इस, ***'बाइबल के सत्य खोले गए'*** नामक पुस्तक के आरम्भ में ही मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि यह किसी भी प्रकार से किसी व्यक्ति विशेष, कलीसिया या वर्ग समुदाय का न्याय नहीं है। क्योंकि मैं यह दृढ़ता से विश्वास करता हूं कि 'मसीह की देह' (उसकी दुल्हन) प्रत्येक वर्ग समुदाय/कलीसिया में पाई जाती है और वह **आज्ञाकारी विश्वासयोग्य विश्वासियों से बनी है** जो दाखलता अर्थात् यीशु मसीह की आज्ञाओं में बनी हुई है। परन्तु ऐसा कहते हुए, सभी जगह पर भेड़ के भेष में भेड़िए हैं जो सोचते हैं (और दूसरों को भी यही सिखाते हैं) कि **'चौड़े रास्ते'** पर चलना ठीक है।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि यदि हम यह अंगीकार करते और विश्वास करते हैं कि हम इन 'अन्तिम दिनों' में जी रहे हैं **तो इसे 'अलग नहीं किया' जा सकता बाइबल बहुत स्पष्ट कहती है कि 'अन्तिम दिनों में कलीसिया' सत्य से विमुख हो जाएगी।** 1 तीमुथियुस 4:1; 2 तीमुथियुस 4:3-4 और 2 थिस्सलुनीकियों 2:3)।

अतः गलत शिक्षाएं क्या हैं? इसका अर्थ है- **कलीसिया को सत्य से विमुख होना!** प्रभु ने मेरी आंखों को खोला कि मैं देख सकूं कि आज **सार्वभौमिक कलीसिया में बहुत से लोग अन्धे हैं और उसी चौड़े मार्ग पर चले रहे हैं** और मसीह में उनक नींव प्रभु ने मेरी आंखों को खोला ताकि मैं आज विश्व की कलीसिया को देख सकूं कि वे अन्धी हैं और **चौड़े रास्ते पर चल रही हैं** और उनकी **नींव मसीह में** झूठे शिक्षकों के द्वारा कमजोर की जा रहीं हैं।

बहुत से मसीही, उन्हें छोड़कर जो अपने आस-पास की झूठी कलीसियाओं के विषय में सम्वेदनशील नहीं हैं, यहां तक कि यह भी नहीं पता कि उन्हें इसके बारे में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है (जैसे बाइबल हमें बहुत से पदों के

द्वारा चेतावनी देती है) **कि यह नबवूत की गई झूठी शिक्षाऐं अन्तिम दिनों में कलीसियाओं को नाश करेंगी।** उनमें से कुछ नीचे लिखी हैं:

1 तीमुथियुस 4:1-2:

परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि ***आनेवाले समयों में*** *कितने लोग* ***भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर*** *विश्वास से बहक जाएंगे।*
[2]यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है।

2 तीमुथियुस 4:3-4

[3]क्योंकि ऐसा समय आएगा ***जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे,*** *पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे, [4] और* ***अपने कान सत्य से फेरकर*** *कथा कहानियों पर लगाएंगे।*

बहुत वर्षो के बाद हाल ही में मैंने यह पाया है कि **मत्ती 7:13-29** में प्रभु यीशु के वचन के सन्दर्भ **'बहुतों'** से उसका अर्थ मसीही संसार से है!

मत्ती 7:13-15,21

[13] 'सकेत फाटक से प्रवेश करो, ***क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग*** *जो विनाश को पहुंचाता है,* ***और बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं।***
[14] ***क्योंकि*** *सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। [15] झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्दर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं।*
[21] 'जो मुझसे, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, ***परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।***

यदि आप समय निकालकर पवित्रशास्त्र में **मत्ती 7:13 से 27 पद तक** ध्यानपूर्वक पढ़ें तो आपकी आंखें बहुत से सत्यों की ओर खुल जाएंगी। सबसे पहले उस भाग में प्रभु ने उन लोगों से कहा, "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना," जो वास्तव में सक्रिय और वरदानों से भरपूर विश्वासी प्रतीत होते थे, जो प्रभु के लिए बहुत से काम कर रहे थे, जी हां, यीशु में, अपने प्रभु के ही नाम में- **मत्ती 7:22**

परन्तु दुर्भाग्यवश उनमें **तीन मुख्य बातों** का आभाव था:

- वे प्रभु यीशु की "शिक्षाओं और आज्ञाओं" में लगातार नहीं बने रहे, बल्कि अपनी समझ से चलते रहे- **मत्ती 7:24-27,** और अपने जीवन से सच्चा चेलापन प्रकट नहीं कर पाए **(1 यूहन्ना 3:22-24)।**
- उन्होंने रुक कर कभी परमेश्वर से नहीं पूछा कि उनकी सेवा और जीवन परमेश्वर की 'इच्छानुसार' चल रहा है या नहीं–**मत्ती 7:21-22** ।
- उनमें "आत्मा के फल" का आभाव था-**मत्ती 7:16,** जिसके बिना बाइबल कहती है कि हम उसे जान भी नहीं सकते (1 यूहन्ना 4:8)।

ये सब "बड़ी गलतियां" हैं जिनमें आज भी बहुत से विश्वासी चल रहे हैं।

आज दुख की बात है कि "आधुनिक कलीसियाऐं" पवित्रात्मा के वरदानों को प्राप्त करने पर बल देती हैं (किसी भी रुप में ये वरदान ही हैं और मनुष्य की इच्छा से इन्हें कमाया नहीं जा सकता है, यद्यपि बहुत से सम्मेलन इस विषय पर होते हैं कि इन वरदानों को कैसे प्राप्त किया जाए)। वे हमारे अनुभव, अलौकिकता और उन सब बातों पर जो प्रभु ने कीं, जिन्हें उसने अपनी सेवकाई के जीवन में कभी प्राथमिकता नहीं दी (उसने इन बातों के विषय में कभी शोरगुल नहीं मचाया जैसा आज बहुत लोग करते हैं)। बल्कि प्रभु ने सदैव इस बात पर बल दिया कि उसके चमत्कार प्रचार-प्रसार करने के लिए नहीं हैं। प्राय: उसने लोगों से कहा- 'किसी से मत कहना।' उसने अपने चेलों से कहा, कि वे इस बात पर आनन्दित न हों कि दुष्टात्माऐं उनके वश में हैं, बल्कि अनन्तकाल की बातों पर आनन्दित हों।

स्मरण करें कि यीशु को सदैव एक शिक्षक (रब्बी) के रूप में जाना और पुकारा गया न कि चंगा करनेवाले के रुप में। उसने उन्हें अलौकिक अनुभवों और वरदानों से बढ़कर प्रेम और अच्छे कामों (उसकी इच्छा में) चलने के लिए शिक्षा दी (जिनके कारण आत्मिक ढीठता और आत्म-धार्मिकता जैसे पाप उत्पन्न होते हैं)।

परन्तु उससे पहले कि मैं इस पुस्तक के परिचय में आगे बढ़ूं कि यह पाठक के लिए क्या लेकर आती है, मैं यहां रुकना चाहता हूं और अपनी पिछली पुस्तक के विषय में कुछ कहना चाहता हूं, जब प्रभु ने 26 नवम्बर 2008 की प्रातः को दानिय्येल 12:12 के द्वारा मुझसे बातें कीं (एक ऐसा वर्ष जो संसार और परमेश्वर के कलैण्डर की बहुत सी घटनाओं के आरम्भ का वर्ष था)।

यद्यपि मैं विश्वास करता हूं कि यह प्रभु ही था जिसने मुझे उस रात दानिय्येल की पुस्तक 12:12 तक पढ़ने के लिए उठाया था, लेकिन यह मेरा ही छोटा मस्तिष्क था जिसने प्रभु के आने की तिथि **24/7/12** तय की बल्कि, प्रभु मुझसे यह चाहता था कि मैं मसीह की दुल्हन को एक पुकार भेजूं कि **24×7×12** यीशु मसीह के पुनः वापस आने की वास्तविक सत्यता है। **मैं अंगीकार करता हूं (जैसा यशायाह 55:8-9) में लिखा कि परमेश्वर के विचार और मार्ग मनुष्य के विचारों और मार्गों से ऊंचे हैं।**

इसलिए मैं फिर कहता हूं कि 24×7×12 **एक वर्तमान आचरण है जो प्रभु यीशु मसीह के पुनः आगमन के विषय में है जो एक विश्वासी के जीवन में बना रहना चाहिए** और यही उसकी पवित्रता और **पवित्र जीवन की आनुपातिक प्रेरणा** का स्त्रोत है। इसी कारण उसके पुनः आने के आचरण और उत्सुकता के प्रति परमेश्वर के वचन में बार बार सुसमाचारों से लेकर पत्रियों और प्रकाशितवाक्य तक जोर डाला गया है।

प्रभु ने इस आचरण को तीन मुख्य मसीही पहचान के चिन्हों में प्रकट किया था।

1. उस प्रार्थना के द्वारा जो उसने हमें सिखाई है- ***'तेरा राज्य आए।'***
2. प्रभु भोज के द्वारा '*क्योंकि जब जब तुम इस रोटी में से खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तुम प्रभु की मृत्यु का, **जब तक वह***

<u>न आए</u> प्रचार करते हो।'

3. बाइबल में अपने अन्तिम वचनों के द्वारा- 'जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, '***निश्चय ही मैं शीघ्र आ रहा हूं।'*** **आमीन। *<u>हे प्रभु यीशु आ!"</u>***

क्यों? क्योंकि प्रभु जानता है कि हम जो उसके लोग हैं उनका इतिहास यह रहा है कि हम कठोर और पीछे हटने वाली जाति है। वह यह भी जानता है कि जब सीनै पर्वत पर से मूसा को वापस आने में थोड़ी देर हुई (40 दिन), तब उन्होंने विद्रोही होकर सोने का बछड़ा बनाया (अपने चारों ओर धीरे-धीरे मूर्तियां बनाने लगे)। इसी प्रकार सर्वज्ञानी परमेश्वर जानता था कि उसका पुनः आगमन लगभग 2000 वर्षों के बाद होगा, **उसने उत्सुकता के इस आचरण को अपने आने के विषय में अपने वचन में बुना है**, यह जानते हुए कि हमारे लिए अनन्तकालीन परिणाम होंगे यदि हम 'मूर्ख कुंवारियों' की तरह सोते पाए गए।

मसीह की देह में बहुत से लोग नबूवत की गई नए युग की गलत शिक्षाओं से अधिक परिचित होते जाते हैं जो इन अन्तिम दिनों में कलीसिया की दीवारों को मार रही हैं और ये प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं।

बल्कि वचन में हमें आज्ञा दी है, कि **हम चुपचाप न रहें, लेकिन हम इन शिक्षाओं का खुलासा करें** जो लोगों को आत्म-सन्तुष्ट जीवन की ओर अग्रसर कर रही हैं:

इफिसियों 5:6-11 *कहता है:*
कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, *क्योंकि इन ही*
कामों के कारण <u>परमेश्वर का क्रोध</u> ***आज्ञा न माननेवालों***
पर भड़कता है। [7] *इसलिये तुम उनके सहभागी न हो।*
[8] *क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे <u>परन्तु अब</u>*
प्रभु में ज्योति हो, अतः ***<u>ज्योति की सन्तान के समान चलो</u>***
[9] *(क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता,*
और सत्य है), [10] ***और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है।***
[11] *<u>अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो,</u>* ***<u>वरन् उन पर उलाहना दो।</u>***

प्रभु यह देखकर दुखी होते हैं कि आज कलीसिया में बहुत थोड़े लोग हिम्मतवाले होते हैं जो ऐसी गलत शिक्षाओं के विरुद्ध खड़े होते हैं। बहुत से लोग उसी हवा में बहते रहते हैं जब तक वे बहुसंख्यक में शामिल रहते हैं, बजाय इसके कि वे बाहर खड़े रहें। तौभी **प्रकाशितवाक्य 21:8** हमें चेतावनी देता है कि 'डरपोक' उन लोगों के साथ होंगे जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे।

बाइबल ऐसे व्यक्तियों का वर्णन करती है, ऐसे परमेश्वर के लोग थे जो नए नियम में भी पाए जाते हैं जैसा कि **यूहन्ना 12:42-43** [42] में पढ़ते हैं: *तौभी अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया,* ***परन्तु*** *फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालय में से निकाले जाएं* [43] ***क्योंकि मनुष्यों की ओर से प्रशंसा उनको परमेश्वर की ओर से प्रशंसा की अपेक्षा अधिक प्रिय लगती थी।***

मैं विश्वास करता हूं कि इस पुस्तक *'बाइबल के सत्य खोले गए'* को पढ़ने के बाद बहुत लोग कायल होंगे।

मैं यह भी जानता हूं कि कुछ लोग अपने आप को उन गलत शिक्षाओं के बीच पाएंगे जो अन्तिम समय में होगी जैसा इस पुस्तक में लिखा है। तौभी, मैं उनको दो बातें कह कर उत्साहित करूंगा।

पहला, आप अपने आपको ताश का पत्ता कहलवाने से न शर्माएं, परन्तु हियाव बांधकर उन फन्दों से बाहर आएं।

दूसरा, आपको यह जानकर बहुत निराश नहीं होना चाहिए कि इन अन्तिम दिनों में, ये भविष्यद्वाणी की गईं गलत शिक्षाएं आप से भी टकरा रहीं हैं। परन्तु इन सब से बढ़कर महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको और मुझे कायल होकर प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम उन **'चौड़े मार्गों'** से फिरकर, अपनी इच्छा से प्रभु परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी और पवित्र जीवन जीएं (क्योंकि आप देखेंगे कि जो कुछ **'परमेश्वर के वचन'** में लिखा है वह स्पष्ट है)। **अतः प्रश्न यह है, क्या** हम यहोशू और कालेब की तरह 'परमेश्वर और उसके वचन' की ओर खड़े होंगे, और **(बहुत से)** आस-पास के मसीही झुण्ड के **दबाव से न डरते हुए?**

प्रश्न वास्तव में यह है, यह जानते हुए कि हम **दानिय्येल 12:4** के पूरा होने के समय में रह रहे है जहां लिखा है ***'बहुत से लोग इधर-उधर फिरेंगे'*** क्या जीवन **की व्यवस्ता आपको इस पुस्तक को पूरा पढ़ने से रोकती है?**

अन्त में मैं आप सबसे निवेदन करता हूं, मसीह में प्रियो, कि कृपया इस पुस्तक को खुले मस्तिष्क के साथ पढ़ें और पुष्टि के लिए केवल प्रभु परमेश्वर की ओर ही देखें। मैं भी इस पुस्तक में लिखी हुई बातों के विषय में अन्धा था लेकिन केवल प्रभु परमेश्वर ने ही इन विभिन्न झूठी शिक्षाओं को एक-एक करके देखने के लिए मेरी आंखो को खोला। इन अन्तिम दिनों में मैं यह भी देखता हूं कि प्रभु अन्य मसीही भाईयों की भी आंखे खोल रहा है कि वे इन्हें देख सकें।

मैं नम्रतापूर्वक अंगीकार करता हूं कि मैं किसी भी रीति से स्वयं इन गलत शिक्षाओं के फन्दे से **बचा हुआ नहीं हूं** जिनकी चर्चा इस पुस्तक में की गई है और मैं भी बराबर से उनके प्रति सम्वेन्दशील हूं (*जो कभी-कभी एक लत के समान होती हैं*) जब तक आप और मैं अपनी आत्मा की चौकसी न करें, अपने आप का इन्कार न करें और क्रूस उठाकर **प्रतिदिन मसीह के पद चिन्हों पर न चलें, इसमें उलझ जाना आसान है।**

दानिय्येल 12:10

बहुत से लोग तो अपने अपने को निर्मल और उजले करेंगे,
और स्वच्छ हो जाएंगे; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे; और
दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा;
परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे ही समझेंगे।

रोमियों 13:11 कहता है:
[11] समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, ***इसलिये कि अब तुम्हारे***
लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है;
क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से
अब हमारा उद्धार निकट है।

भाग 1:

गलत शिक्षाएं जो आज कलीसिया को मार रही हैं।

अध्याय 1

परमेश्वर के अनुग्रह को सस्ता अनुग्रह बनाया गया है!

अनुग्रह का विषय बहुत बड़ा है और यह एक **बड़ा भेद** भी है। दुर्भाग्यवश हममें से बहुत से लोग दो बातों में इस बड़े भेद के बारे में गड़बड़ी में पड़े हैं:

1. **पहला,** क्योंकि परमेश्वर की महान बातें आसानी से नहीं समझीं जाती जैसा बाइबल कहती है कि आत्मिक बातें केवल पवित्रात्मा की सहायता से समझी जा सकती हैं (1 कुरिन्थियों 2:13-14)।
2. **दूसरा,** कुछ वक्तागण (जो परमेश्वर के आत्मा के सिखाए हुए नहीं होते) अपनी मानवीय बुद्धि के द्वारा उस वचन को तोड़-मरोड़ देते हैं जो कठिन है, जैसा बाइबल कहती है (2पतरस 3:14-18)।

चूंकि 'अनुग्रह' के विषय की बहुत गलत व्याख्या की जाती है और गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप इस पुस्तक के 'भाग 1' के पहले कुछ अध्याय धीरे और ध्यानपूर्वक पढ़ें, ताकि आप पाठक **पूर्ण रुप से तैयार** हो सके जैसे मैं गहराई से आत्मिक अंधेपन को स्पष्ट करता हूं और आनेवाले अंधेपन से आपकी रक्षा करने का प्रयास करता हूं।

शत्रु अपने फन्दों और युक्तियों कि माध्यम से काम करता है, जो लगातार कलीसिया के विश्वास और नींव को खोखला कर रहा है जो उस ''चट्टान'' पर बना है जिसे-मसीह यीशु कहते हैं।

इफिसियों 2:8-9 कहता है

*'क्योंकि विश्वास के द्वारा **अनुग्रह ही से** तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह **तुम्हारी ओर से नहीं,** वरन् परमेश्वर का दान है, [9] और **न कर्मों के कारण,** ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।'*

क्योंकि हम सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। सच में यह 'अनुग्रह' परमेश्वर की ओर से बचाए गए विश्वास के ऊपर बिना कमाया हुआ पक्ष है। और हम कभी भी कुछ ऐसा नहीं कर पाएंगे कि इस महान वरदान को कमा सकें।

परन्तु अब आप देखें, कि यह परमेश्वर का अनुग्रह जो हमारे जीवनों पर हुआ है **उद्धार पाने के बाद अब हमारी ओर से एक जिम्मेदारीपूर्ण प्रत्युत्तर की मांग करता है।** प्रभु की स्तुति हो कि यह यहीं पर समाप्त नहीं होता है बल्कि उद्धार पाए हुए विश्वासी को लगातार चुनौती देता है, ठीक अगले (आगेवाले) पद **इफिसियों 2:10** अब **'भले कामों'** के शब्दों को प्रयोग करते हुए, जो एक उद्धार पाए हुए विश्वासी के जीवन में चलते रहते हैं।

इफिसियों 2:10

*[10] क्योंकि **हम उसके बनाए हुए** हैं, और मसीह यीशु में उन **भले कामों** के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।*

आप समझें कि **'भले काम'** एक विश्वासी के हाथ के चुनाव हैं। परन्तु यह भी अवश्य जानना होगा कि उनमें न चलने के गम्भीर परिणाम होंगे। आइए पहले उसी पद को ध्यान से पढ़ें।

'भले कामों' *और* **'कामों'** में बहुत बड़ा अन्तर है। **आप समझें कि सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान ने पद 10 को पद 8-9 के बाद रखा है** ताकि लोग गलती न करें, **'भले काम' केवल उद्धार के बाद आते हैं** और तब हम अपने आप में कुछ नहीं होते हैं, परन्तु उसकी कारीगरी हैं।

बहुत से मसीही लोग यह सोचने में मूर्खता करते हैं कि बचाए जाने के बाद एक विश्वासी स्वत: ही 'भले कामों' में चलना आरम्भ करेगा। परन्तु बाइबल ऐसा नहीं कहती। बाइबल कहती है कि बचाए जाने के बाद पवित्रात्मा हमें सिखाता है। परन्तु फिर भी चुनाव हमारा व्यक्तिगत है कि हम क्या पवित्रात्मा की अगुवाई में आज्ञाकारिता में चलेंगे।

कृपया ध्यान दें कि **इफिसियों 2:10** में यह नहीं कहता है कि 'हमें करना ही होगा' या 'हम निश्चय ही करेंगे,' परन्तु यह कहता है 'हमें उनमें चलना चाहिए' **परमेश्वर अपनी स्वतन्त्र इच्छा (चुनाव) हमारे जीवन में बदलता नहीं है- विश्वासी या अविश्वासी।**

अब यदि आप **इफिसियों 2:8-10** ध्यानपूर्वक पुन: पढ़ें तो आप सही तरीके से समझ पाएंगे कि बाइबल हमारे उद्धार पाने से पहले **हमारे मरे हुए कामों के बारे में** और **हमारे उद्धार पाने के बाद के 'भले कामों'** के बीच क्या अन्तर बताती है।

इफिसियों 2:8-10 *[8] क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, [9] और* ***न कर्मों के कारण,*** *ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।* [10] *क्योंकि* ***हम उसके बनाए हुए*** *हैं, और मसीह यीशु में उन* ***भले कामों*** *के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।*

यही सत्य बड़ी सफाई से कि एक 'बचाए गए पापी' का सही प्रत्युत्तर क्या होना चाहिए:

तीतुस 2:11-12,14

[11] क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, [12] ***और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर*** *इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।*

[14] जिसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो ***भले-भले कामों के लिए सरगर्म हो।***

आधुनिक झूठी कलीसिया दुर्भाग्यवश **बहुत सी मूर्ख कुंवारियों को पनपने दे रहा है,** उन्हें आत्म-सतुष्टि में रहने हेतु उत्साहित करते हुए, यह प्रचार करते हुए कि 'उद्धार कभी खो नहीं सकता' **बजाय इसके कि <u>बचाए हुए पापी को यह सिखाए</u> कि वह <u>अधर्मी और सांसारिक लालसाओं का इन्कार करे।</u>**

आप समझें कि हमारे मसीह जीवन को यह **"बदला हुआ जीवन"** प्रकट करने की आवश्यकता है और यही आचरण सम्पूर्ण नए नियम की पत्रियों में प्रकट होता है जहां विश्वासियों से विनती की गई है कि वे सदा धार्मिकता और भक्तिपूर्ण जीवन जीएं और सांसारिक लालसाओं से बचे रहें।

देखें कि कैसे प्रेरित पौलुस लगातार इसी बात को अन्य वचनों में बार-बार बताता है **'कामों'** और **'भले कामों'** में क्या अन्तर है:

तीतुस 3:4-8

*[4]पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रगट हूआ, [5] तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के **कामों के** <u>कारण नहीं,</u> जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। [6] जिसे उसने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। [7] जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें। [8] <u>यह बात सच है, और मैं चाहता हूं कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले इसलिये कि जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया है, **वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें।**</u> ये बातें भली और मनुष्यों के लाभ की हैं।*

बहुत से मसीही लोग अपने उद्धार को यूं ही लेते हैं और आत्म-सतुष्टि का ठण्डा जीवन जीते हुए परमेश्वर के द्वारा दिये गए जन्म के अधिकार को एसाव की तरह बेच देते हैं - **इब्रानियों 12:14-17**

फिलिप्पियों 2:12 कहता है:

*"इसलिये हे मेरे प्रियो, **जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो,** वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब*

मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।"

ध्यान दीजिए कि पवित्रशास्त्र कहता है ***'जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो',*** हम समझते हैं कि एक बचाए हुए विश्वासी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह एक आज्ञाकारिता का जीवन जीए और बाइबल आगे कहती है, ***'डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।'***

यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि आज **'परमेश्वर के 'इस अनुग्रह' को बहुतों के द्वारा सस्ता अनुग्रह समझा जा रहा है** जिसमें एक विश्वासी के जीवन में कोई आज्ञाकारिता की मांग नहीं है (अपने उद्धार के काम को डरते और काँपते हुए करने की बात तो छोड़िऐ)।

यही लापरवाही "मूर्ख कुंवारियों" के दृष्टान्त में भी हमारे प्रभु यीशु के भविष्यद्वाणी के दृष्टान्त में भी सम्बोधित की गई है (मत्ती 25:1-12)
जो आत्मिक रुप से झपकी लेती हुई और बिना आत्मिक तैयारी के पाई गई जैसा उन्होंने अपनी मशालों में पर्याप्त तेल न लेते हुए प्रकट किया।

गलत शिक्षा वाली कलीसिया यह अंगीकार करती है कि यदि आप का एक बार उद्धार हो गया है, और यदि आपके पास कोई 'भले कार्य' नहीं हैं तो आप केवल 'उद्धार के आनन्द' को इस संसार में खो देते हैं क्योंकि आखिरकार आप स्वर्ग में पहुंच जाएंगे। मसीह में अतिप्रियो, यह बात सही नहीं है और यह शैतान का एक बड़ा झूठ है।

क्योंकि 1 यूहन्ना 3:6 कहता है
जो कोई उसमें बना रहता है वह पाप नहीं करता,जो कोई पाप करता है उसने न तो उसे देखा और न उसको जाना है।

पुन:1 यूहन्ना 3:24 कहता है
जो उसकी आज्ञाओं को मानता है वह उसमें और वह उनमें बना रहता है ***और इसी से*** *अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है* ***हम जानते हैं कि वह हममें बना रहता है।***

आधुनिक झूठी कलीसियाऐं निम्नलिखित बातों को एक तरफ हटाने में निपुण हैं:

- पाप के प्रति निरुत्तर
- आज्ञाकारिता की आवश्यकता
- परमेश्वर का पवित्र भय और
- एक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं के उल्लंघन के परिणाम

आप बहुत कम लोगों से ऊपर लिखे गए बिन्दुओं पर सन्देश सुनते हैं। वे एक विश्वासी को यह कहते हुए गड़बड़ी में डालते हैं कि 'आप केवल अनुग्रह से बचाए गए हैं, कामों से नहीं', जो अपने आप में सत्य है परन्तु वे केवल प्रभु के चरित्र के अनुग्रह के भाग पर ही बल देते हैं, परन्तु उसकी पवित्रता को **छोड़ देते हैं**। क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक पश्चात्तापी विश्वासी को बुलाता है कि वह अपने सच्चे पश्चात्ताप् को 'भले कामों और पवित्र जीवन जीने के द्वारा प्रकट करे।' और वह सुसमाचार जो केवल परमेश्वर के अनुग्रह को सम्बोधित करता है वह उस अनुग्रह के लिए है जिसके के लिए ही सम्बोधित किया है (अर्थात् अधार्मिकता को इन्कार करने की चर्चा न करते हुए) वह एक तरफा सुसमाचार है।

पापियों के जीवनों में परमेश्वर का तरस किसी भी प्रकार से पाप में लगातार बने रहने की अनुमति नहीं है। याद रखें कि प्रभु यीशु ने एक व्यभिचारिणी स्त्री को क्षमा करने के बाद उससे कहा जा और आगे को पाप न करना। परमेश्वर एक प्रेमी परमेश्वर है, परन्तु यह भी याद रखें क वह एक पवित्र परमेश्वर है।

पांच बातें हैं (जिन्हें आप देखेंगे) जो गिरने के कारण हैं जब एक विश्वासी आरामदायक जीवन यह सोचकर जीता है-एक बार उद्धार हो गया तो सदा के लिए सुरक्षित है।

1. यह एक विश्वासी को अपने उद्धार के काम को भय और कांपते हुए पूरा करने के लिए अस्त्र हीन करता है जैसे परमेश्वर के वचन ने प्रत्येक सच्चे विश्वासी को आदेश दिया है (**फिलिप्पियों 2:12-13**)।

2. यह एक विश्वासी को भले कार्यों/भले कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करता है जैसा आत्मा अगुवाई करता है (**इफिसियों 2:10**)।
3. इससे एक विश्वासी उस समय निरुत्साहित हो जाता है जब उसके मार्ग में परीक्षाऐं और कठिनाईयां आती हैं बजाए इसके कि वह प्रभु के उद्देश्यों के लिए अपने आपको पवित्र और नम्र करे जिसके लिए प्रभु ने उसे भेजा है (**रोमियों 5:3-5; रोमियों 8:35-37; 2 कुरिन्थियों 12:9-10**)।
4. इससे आत्म-निर्भरता का सृजन होता है बजाय इसके कि 'धार्मिकता की भूख' का आभाव उत्पन्न हो (**मत्ती 5:6**) परिणामस्वरुप, परमेश्वर के प्रति प्रेम कम हो जाता है और उसकी इच्छा और उद्देश्यों को उसे प्रसन्न करने के लिए जानने की इच्छा कम हो जाती है (**यूहन्ना 8:29; 2 कुरिन्थियों 5:9**)।
5. और अन्त में, 'आत्मा में दीन' होने के बजाय, जैसा हमारे प्रभु ने चेलों को आज्ञा दी थी (**मत्ती 5:3**), (और जैसा प्रेरित पौलुस ने **1 कुरिन्थियों 9:24-27** में कहा है) हम अपने निश्चित उद्धार के आचरण में चलने के अभ्यस्त हो जाते हैं, बजाए इसके कि हम प्रत्येक कठिनाई, परीक्षा को सहन करते हुए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करें (**फिलिप्पियों 3:12-15; इब्रानियों 10:35-39**)।

ऊपर लिखी गई सभी बातों का परिणाम **सूखी हुई डालियां** होती है जो अन्ततः काटी जाएगी और आग में फेंकी जाएगी जैसे प्रभु यीशु ने **यूहन्ना 15:1-11** में भविष्यद्वाणी की है।

याकूब 2:14,19-20 बाइबल के विश्वास को सर्वोत्तम रुप से परिभाषित करता है:

हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो इससे क्या लाभ? ***क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?***

[19] तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं। [20] पर हे निकम्मे मनुष्य, क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?

और इसी प्रकार 1 यूहन्ना 5:4 कहता है
क्योंकि जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है

आज परमेश्वर के अनुग्रह का एक और बुरा अनुवाद है कि आप के पास स्वतन्त्रता है कि आप जो चाहें वह करें, (बजाय इसके कि प्रत्येक चरण पर परमेश्वर की इच्छा को देखें) यह सोचते हुए कि परमेश्वर ने हमें पाप की अधीनता से स्वतन्त्र किया है।

सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि यह स्वतन्त्रता एक विश्वासी के जीवन में किस कीमत पर आती है। **दूसरा,** हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हमारा परमेश्वर धर्मी और न्यायी है, न कि अधर्मी न्यायी। इसके बारे में सोचें, कि जब सांसारिक नियम एक कैदी को स्वतन्त्र करता है, तो वह इस अनुमति के साथ उसे स्वतन्त्र नहीं करता कि वह पुन: अपने पुराने अपराधों को करने लगे। हम कैसे अपने परमेश्वर को धर्मी और पवित्र परमेश्वर सोच सकते हैं (हमारे सांसारिक स्तरों से बहुत ऊपर), कि वह एक बचाए गए विश्वासी से इससे कम मांग करता है। इसके विपरीत प्रभु यीशु ने **'पहाड़ी उपदेश' में** नए नियम के विश्वासी के लिए **पुराने नियम की दस आज्ञाओं से अधिक कठिन बना दी है।**

यहूदा जो हमारे प्रभु का अर्ध-भाई था, हमें **यहूदा 1:4-5** में चेतावनी देता है:

'क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिनके इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहले ही से लिखा गया था: ***ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं।***[5] *पर यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तौभी में तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूं कि प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नष्ट कर दिया।*

और हम जानते हैं कि चूंकि यहोशू और कालेब अपना विश्वास कामों के द्वारा व्यवहार में लाए थे, इसलिए बाकी लोग 'प्रतिज्ञा किए हुए देश' में प्रवेश न कर सके।

मुझे यह स्पष्ट करने दीजिए कि **'अनन्त जीवन'** एक विश्वासी के लिए **परमेश्वर की ओर से निश्चित निःशुल्क उपहार** है, **यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए काम के द्वारा** और यह वरदान कभी भी कोई भी एक उद्धार पाए हुए विश्वासी से नहीं छीन सकता है।

मैं ऐसा क्यों कहता हूं?

मैं इसकी अच्छी तुलना एक साम्यानुमान से कर सकता हूं। आज बहुत से निर्माता अपना उत्पादन 'गारण्टी या वॉरण्टी' के साथ बेचते हैं। परन्तु वहीं पर एक हल्की लिखाई में यह लिखा रहता है–*यदि उत्पादन का गलत प्रयोग किया गया तो कोई गारण्टी या वॉरण्टी मान्य नहीं होगी।* आप समझें कि हमारे निर्माता, स्वर्गीय पिता, सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने प्रत्येक उद्धार पाए हुए विश्वासी को **उद्धार की गारण्टी दी है** और वह उनसे कोई छीन नहीं सकता है। उस क्षण में जब हम अपने हृदय में विश्वास करते और अपने मुंह से अंगीकार करते हैं कि यीशु ही प्रभु है, हमारा उद्धार हो जाता है। उसी क्षण हमें दाखलता (यीशु मसीह) में रोप दिया जाता है और हमारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे जाते हैं और हम स्वर्ग के मार्ग पर चलने लगते हैं।

परन्तु यदि उसके बाद हम लापरवाही का जीवन जीते हैं (उद्धार पाने के बाद) उद्धार के इतने बड़े उपहार की हम यदि चौकसी नहीं करेंगे, (जो सस्ती कीमत का नहीं है) जो हमारे पास बड़ी कीमत से आया है, और यदि हम अपने पुराने मार्गों पर चलते रहेंगे (क्षमा न करना, कड़वाहट, लालसाऐं, गुस्सा, लालच, ईर्ष्या, बकवास, निन्दा, झूठ आदि) और हमारे जीवन में आनेवाले कष्टों और परीक्षाओं पर फलवन्त होते हुए विजयी नहीं होंगे। **जो हमें** नम्र बनाने और जांचने के **लिए** आते हैं, ताकि हमें (मसीह के समान) जयवन्त से भी बढ़कर बनाए, तब हम इसे खो देंगे।

ऐसे दिन में जब पूरे संसार में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का दिन मनाया जाता है (और दुर्भाग्यवश बहुत-सी नए युग की कलीसियाओं के द्वारा भी), अपने जीवन को परमेश्वर के मार्गो के सदृश्य बनाने की बात को प्रायः व्यक्तिगत उल्लंघन करने के रुप में देखा जाता है। और यदि कोई व्यक्ति जो परमेश्वर की सीमाओं के बारे में बोलता है जो उसके पवित्रवचन में निर्धारित की गई हैं **उसे आज 'कानून बाजे' कहा जाता है।**

याद रखें कि मैंने पहले एक निर्माता के विषय में चर्चा की थी जो कहता है कि उत्पादन की गारण्टी समाप्त हो जाएगी यदि उसका दुर्पयोग किया गया। नीचे वचन का भाग एक सिपाही और एक धावक के आचरण का उदाहरण देता है जिसकी तुलना एक सच्चे मसीही के आचरण से की गई है:-

2 तीमुथियुस 2:3-5, 7, 10-12

*[3] मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा। [4] जब कोई योद्ध **लड़ाई** पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले **को प्रसन्न करे,** अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता। [5] फिर अखाड़े में लड़नेवाला **यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।** जो मैं कहता हूं उस पर ध्यान दे, और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा [10] इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूं कि वे भी उस उद्धार को जा मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएं। [11] यह बात सच है, कि यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो उसके साथ जीएंगे भी; [12] **यदि हम धीरज** से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे; यदि हम उसका इन्कार करेंगे, तो वह भी हमारा इन्कार करेगा।*

ऊपर के पदों में हम एक 'धावक' के विषय में पढ़ते हैं कि **एक धावक तभी अपना मुकुट जीतता है** यदि वह अपनी दौड़ नियमों के अनुसार पूरी करता है।

मसीही जीवन एक युद्धक्षेत्र है, प्रतिदिन का युद्ध जिसमें विजय पाना है (अपने विश्वास को कायम रखते हुए) परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए दुखों को उठाते हुए जिसने हमें सूचीबद्ध किया है। हमें उसे उसके राज्य को अनन्तकालीन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपनी इच्छाओं से पहले स्थान पर रखना है। जैसा कि किसी ने कहा, "कोई युद्ध बिना लड़ाई का नहीं होता है और **को**ई भी मुकुट बिना युद्ध के नहीं मिलता है।

प्रेरित पौलुस की सेवा के अन्त में वह अपने विश्वास की रखवाली के विषय में :

2 तीमुथियुस 4:7-8 में बताता है:

*[7] **मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं,** मैंने अपनी दौड़ पूर कर ली है, **मैंने विश्वास की रखवाली की है।** [8] भविष्य में मेरे लिये **धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है,** जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।*

जैसा किसी ने कहा है:
''विजय के बिना *मुकुट* नहीं
और युद्ध के बिना *विजय* नहीं।''

बाइबल के सत्य खोले गए

पुस्तक आपकी आंखों को **पर्याप्त रुप से वचनों को स्पष्ट करने के लिए सत्य की ओर खोलेगी** कि जब प्रभु यीशु ने कहा कि **केवल कुछ ही** परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे, उसका अर्थ था कि **'कुछ' कलीसिया के अन्दर!**

*यह पुस्तक आप पाठक को चुनौती देगी और प्रेरित करेगी कि आप उन **कुछ** में होने के लिए एक पवित्र और विजयी जीवन जीएं।*

अध्याय 2

क्या एक मसीही जीवन में भले काम आवश्यक हैं?

इब्रानियों 10:23-24 कहता है:

[23] आओ हम आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है, [24] और प्रेम और ***भले कामों*** *में उसकाने के लिए हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें।*

जब बाइबल '**भले कामों**' की चर्चा करती है, तो इनका माप हमारे स्तर से नहीं है और न ही संसार के स्तर से है, परन्तु यह **परमेश्वर के स्तर से है।** अन्य शब्दों में, '**भले काम**' परमेश्वर की इच्छा और आज्ञाकारिता के परिणाम हैं जो प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर की 'इच्छा और आज्ञा' का अनुसरण करते हैं (पवित्रात्मा की अगुवाई के द्वारा)।

रोमियों 8:1 कहता है:

"अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, ***उन पर*** *दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं परन्तु* ***आत्मा के अनुसार चलते*** *हैं"*

यह उस योग्यता को पूर्ण करती है कि **केवल उन लोगों** के ऊपर दण्ड की आज्ञा नहीं है जो अब अपने पुराने मार्गों पर नहीं चलते हैं (जैसे मन के परिवर्तन के पूर्व), परन्तु अब पवित्रात्मा की अगुवाई में चलते हैं। **अपने आप का इन्कार** करने के द्वारा प्रतिदिन अपनी क्रूस उठाकर और पवित्रात्मा की अगुवाई **में मसीह के मार्गों** में चलते हैं।

यह उन मार्गों में चलना हो सकता है जहां पवित्रात्मा आपको चलने के लिए अगुवाई करता है अथवा नहीं करता। उदाहरण के लिए, अपने जीवन में एक बहुत कठोर व्यक्ति को क्षमा करना अथवा ऐसे व्यक्ति के प्रति दयालु होना जो आपके प्रति जलन रखता है अथवा किसी सांसारिक लालसा से दूर रहना अथवा अन्य किसी रास्ते में जिसमें वह चलने के लिए आपको चुनौती देता है।

इसीलिए **रोमियों 8:14** में परमेश्वर का वचन तोड़-मरोड़ नहीं करता ***'जितने पवित्रात्मा के चलाए चलते हैं वे परमेश्वर के पुत्र हैं।'***

कई बार हम जिन्हें 'भले काम' कहते हैं वे हमारी बुद्धि और हमारे आस-पास के लोगों को अच्छे लग सकते हैं, बल्कि हमारे आस-पास के संसार को भी, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि परमेश्वर की दृष्टि में वैसा ही हो, बल्कि वह हमारे लिए परमेश्वर की दृष्टि में बिल्कुल उल्टी इच्छा भी हो सकती है।

हममें से कुछ लोग अचानक अफ्रीका या फिलीपीन्स में मिशन के काम के लिए चले जाते हैं, वहां जाकर हम निर्धनों, नशीले पदार्थों के सेवन करनेवालों के पुनस्थापित क्षेत्रों, वेश्याओं को स्वतन्त्र कराने आदि काम करने लगते हैं, हम यह सोचते हैं कि इससे परमेश्वर प्रसन्न होगा। मैं कहता हूं कि यह हमारे जीवन में परमेश्वर की इच्छा हो सकती है और नहीं भी हो सकती है, और हमें ऐसे किसी कदम को उठाने से पहले केवल परमेश्वर के साथ जांचना चाहिए और उसकी पुष्टिकरण के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए।

मैं क्या कहने की कोशिश कर रहा हूं? हम बहुत कुछ **काम** करते हैं कि संसार बदल जाए, परन्तु **केवल मसीह का दूसरा आगमन और उसका नया राज्य** ही इस निराशावादी और दुखी संसार को शान्तिपूर्ण स्वर्ग में बदल पाएगा। अपने चारों ओर देखें कि क्या मनुष्य के सारे कामों ने इसे एक बेहतर स्थान बनाया है? इसके विपरीत यह उस ओर चल रहा है जहाँ मसीह हमारे प्रभु ने भविष्यद्वाणी की थी कि अन्त के दिनों में बहुतों का प्रेम एक दूसरे के प्रति ठण्डा हो जाएगा और दुष्ट अपनी दुष्टता में हर एक बुराई के साथ बढ़ते जाएंगे।

हमारी मानवीय शक्ति में अन्य सारे प्रयास थोड़े दिनों के लिए हैं और अन्ततः समस्त सांसारिक समस्याओं में असफल होंगे जैसे ग्लोबल वार्मिंग, विश्व शान्ति, गरीबी उन्मूलन, भ्रष्टाचार, युद्ध और युद्ध की चर्चा आदि (और हमारे मानवीय प्रयास मानो चोट पर पट्टी बांधने जैसे होंगे)। इसीलिए प्रभु ने हमें सबसे पहले (अपनी प्रार्थना में) सिखाया कि हम प्रार्थना करें कि 'तेरा राज्य आए।'

हमें नम्रतापूर्वक यह मानना चाहिए कि हम परमेश्वर के मार्गों और विचारों को कभी भी पूर्ण रुप से नहीं समझ पाएंगे, क्योंकि उसके मन और मार्ग हमारे मार्गों से बहुत ऊंचे है **क्योंकि उसके मन में प्रत्येक स्थिति में अनन्तकाल है।**

हां, आप इसे रुचिकर पा सकते हैं। एक बार हम एक मिश्नरी दम्पत्ति को दोपहर के भोजन के लिए ले गए। उसी संगति के दौरान वे बताने लगे कि एक मिशन समूह एक रविवार को उनकी कलीसिया में आया और उनके द्वारा फिलीपीन्स में गरीबों के बीच में किए गए कार्यों की बहुत सी स्लाइड्स दिखाने लगा। उनके मिशन संगठन का नाम बहुत प्रेरणादायक और उचित था 'निर्धनों के लिए यीशु ' या इसी प्रकार का कोई नाम। जब उस मिश्नरी की पत्नि ने उस समूह के एक सदस्य से पूछा कि "आप उन निर्धनों के साथ यीशु का सुसमाचार कैसे बांटते हैं?" उसने बताया कि उस सदस्य के चेहरे पर आश्चर्य झलक रहा था (वह चुप था) कि *'आप क्या बात कर रहीं हैं, मैं नहीं जानता।'*

बहुत से मसीही मेडिकल डाक्टर अथवा मसीही शिक्षक जाते हैं और काम करते हैं, परन्तु एक बात को आसानी से भूल जाते हैं और केवल शारीरिक रुप से उन्हें शक्तिशाली बनाने के प्रस्ताव देते हैं बिना उस महत्वपूर्ण जीवन बदल देने वाले सत्य के जो अनन्त जीवन और मृत्यु से सम्बन्ध रखता है। हम अपने आपको अपने चारों ओर के बहुत से लोगों की तालियों के बीच पाते हैं परन्तु परमेश्वर प्रत्येक हृदय के इरादे को जांचता है।

जैसा मैंने पहले कहा है, हमें सावधान रहना चाहिए कि उस दिन हम उन लोगों की तरह न पाए जाएं जो पुकारते हैं, 'हे प्रभु हमने तेरे नाम से यह किया या वह किया, और परमेश्वर ऐसा न करे कि हम प्रभु को यह कहते हुए सुनें जैसा उसने **लूका 13:27** *में कहा है, [27] परन्तु वह कहेगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैं तुम्हें नहीं जानता कि तुम कौन हो, इसलिए हे कुकर्मियो तुम मुझसे दूर हो।'*

मैं एक घटना को जानता हूं जहां एक प्रचारक को एक बड़े अस्पताल के डाक्टर और स्टाफ के सेमिनार (मसीही रिट्रीट) में बोलने के लिए बुलाया गया था। मुझे बताया गया था कि सबसे पहले दिन उसने वह सेमिनार यह कहते हुए आरम्भ किया *"यदि आप अपने रोगियों के साथ मसीह को नहीं*

बांटते तो आप उन्हें नरक में जाने के लिए चंगा और स्वस्थ कर रहे हैं।" आप ने देखा कि हमें सदैव बड़ी तस्वीर देखनी चाहिए-और हमें कभी भी 'राज्य के विचार' को नहीं छोड़ना चाहिए जैसा मसीह ने अपने आस-पास के लोगों को चुनौती दी थी।

नीतिवचन 16:2 कहता है,*"मनुष्य का सारा चाल-चलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है परन्तु यहोवा मन को तौलता है"* एक बाइबल का अनुवाद कहता है, 'प्रभु इरादों को जांचता है।'

प्राय: हम प्रभु के लिए अपने काम का चुनाव करते हैं और परमेश्वर को चुनाव करने की अनुमति नहीं देते हैं। **हम कहते हैं 'मैं अपने बलिदान की झांकी का <u>चुनाव करना चाहता हूं?"</u>**

नीतिवचन 21:2-3 ठीक ही कहता है

[2] मनुष्य का सारा चाल-चलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है
परन्तु यहोवा मन को जांचता है।
[3] धर्म और न्याय करना यहोवा को <u>बलिदान</u> से अधिक अच्छा लगता है।

हम प्राय: बलिदानों को करने में व्यस्त रहते हैं जो हमें अपनी दृष्टि में सही लगते हैं, **परन्तु परमेश्वर के लिए जो आवश्यक है वह हमारा बलिदान नहीं परन्तु हमारी उसकी इच्छा के <u>प्रति आज्ञाकारिता</u>** (उसके आत्मा की अगुवाई में)' **महत्वपूर्ण है *जो परमेश्वर के प्रति सच्ची धार्मिकता और न्याय है।***

धार्मिकता का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध। हम परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध के स्थान पर कैसे आ सकते हैं? उसकी इच्छा को पूरा करते हुए (न कि हमारी)।

मुझे प्रभु यीशु की इस पृथ्वी पर की सेवा के दौरान के कुछ उदाहरण देने दीजिए <u>जो हमारी प्रतिदिन की सोच का द्विभाजन प्रकट करते हैं:</u>

1. एक बार एक व्यक्ति प्रभु के पास आया और बोला, *"मैं तेरे पीछे चलूंगा, परन्तु पहले जाकर अपने पिता को दफन करने दे।* यह बात बिल्कुल उचित लग सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह

जवान अपने पिता का आदर करता है और एक जिम्मेदार पुत्र की तरह अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहता है। परन्तु देखें कि प्रभु क्या कहता है? " *यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना"- **लूका 9:60 ।***

2. एक और घटना है जब प्रभु की माता-मरियम और उसके भाई उससे मिलने आए और उसे यह बताया गया। एक व्यक्ति कल्पना कर सकता है कि प्रभु आनन्द से उछल पड़े होंगे और सब काम वहीं रोककर उनसे मिले होंगे। परन्तु प्रभु यीशु ने उनसे कहा, *'उसने उन्हें उत्तर दिया 'मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?' और उन पर जो उसके आस-पास बैठे थे दृष्टि करके कहा,' देख मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहन और माता है' -**मरकुस 3:33-35।***
3. जब उसने यहूदा इस्करियोती को मरियम को यह कहते हुए डांटते देखा कि इस कीमती इत्र को बेचकर कंगालों की सहायता की जा सकती थी बजाए इसके कि इसे तोड़कर प्रभु के चरणों पर डालकर व्यर्थ कर दिया जाए, अर्थात् कि वही काम साधारण पानी से किया जा सकता था न कि कीमती इत्र से। यह भी मरियम को अच्छा विचार लग सकता था। परन्तु प्रभु का उत्तर यहूदा के लिए क्या था? *"यीशु ने कहा, 'उसे रहने दो क्योंकि उसने यह मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए यह किया है। क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे साथ रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूंगा' **यूहन्ना 12:7-8***
4. **यूहन्ना 7:1-8** में हम यहूदियों के पर्व के दौरान देखते हैं कि उसके अपने ही भाई जो (पहले) उसमें विश्वास नहीं करते थे वे ही (अपने भाई) के लिए गडढा खोदते हुए दिख रहे हैं, वे प्रभु से कहते हैं, कि यदि वह प्रसिद्ध होना चाहता है तो अपने आप को गुप्त में न रखे परन्तु सार्वजनिक रुप से चमत्कार करे। परन्तु यीशु ने उनके इरादे को जानते हुए और सही समय न आने के कारण कहा, *'अभी मेरा समय नहीं आया।'*
5. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के चेले चकित होकर यीशु के पास आकर पूछने लगे, *"हम और फरीसी क्यों उपवास रखते हैं, परन्तु*

तेरे चेले उपवास नहीं करते?–***मत्ती 9:14*** । यह भी बहुत वैध प्रश्न प्रतीत होता है। एक व्यक्ति कल्पना कर सकता है, कि उपवास जैसा आत्मिक काम प्रभु ने अपने चेलों को लगातार करने के लिए दिया होगा। परन्तु प्रभु ने उन्हें उत्तर दिया कि वे मेरे जाने के बाद करेंगे,' *यीशु ने उनसे कहा, 'क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा उस समय वे उपवास करेंगे'* ***मत्ती 9:15*** । परन्तु अब प्रभु उपयुक्त वचन के अनुसार हमें आज्ञा देते हैं कि अब प्रत्येक सच्चे विश्वासी को उपवास के लिए बुलाया गया है (यदि हम नहीं करते हैं, तो यह पद हमें प्रोत्साहित करता है कि हम लगातार उपवास करें–जैसे साप्ताहिक–क्योंकि प्रभु चाहता है कि उसके सच्चे विश्वासियों में उसके वचन पूरे हों)।

हम जानते हैं कि हमारा प्रभु यीशु उपवास करता था और **प्रेरितों के काम** की पुस्तक भी यह प्रकट करती है कि उसके आरम्भिक चेले और विश्वासी लगातार उपवास करते थे।

एक लगातार **साप्ताहिक उपवास** हमारे शरीर को नियंत्रण में रखने के लिए सहायक होता है जो कभी–कभी पुनः जीवित होने की कोशिश करता है। यह वह समय भी होता है कि हम अपने आत्मिक भीतरी मनुष्यत्व को पुनः स्थापित और तरो–ताजा करें जो **हमें अपने आपको इन अन्तिम दिनों में ऊपरी आत्मिक बुलाहट की ओर ताकने में सहायता देता है।**

तौभी बिन्दु 5 पर पुनः लौटते हुए, हम देखते हैं कि प्रायः प्रभु को गलत समझा गया, यहां तक कि लोगों ने उसे बालजबूल और शैतान कहा और कई बार उसे मारने के लिए पत्थर उठा लिए, **यूहन्ना 8:48,52,59 ।**

कभी–कभी एक आज्ञाकारी विश्वासी के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब वह पवित्रात्मा के चलाए चलता है और अन्य लोग उसे गलत समझ लेते हैं। कई बार उन्हें आवश्यकता से अधिक धर्मी होने या आत्मिक कामों को करने में मूलभूत सिद्धान्तों की कमी होने का दोषी माना जाता है जैसे वे स्वयं करते हैं। ऐसे समयों में मैं सलाह देता हूं कि हम उन दोषारोपणों को यूं ही सहन कर लें बजाए इसके कि हम अपने आपको सही ठहराने का प्रयास करें कि हम वे

काम क्यों कर रहे हैं।

प्रभु में प्रियो, यदि लोग हमारे ऊपर कीचड़ उछालते हैं तो शायद परमेश्वर चाहता है कि हम उन समयों में से होकर गुजरें जिनमें से राजा दाऊद गुजरा था, जब वह अपने पुत्र अबशालोम से भाग रहा था जिसने उसको मारने के लिए षड़यन्त्र रचा था और जब वह बहुरीम नामक स्थान से होकर गुजर रहा था तो शिमी नामक एक व्यक्ति आया और राजा दाऊद को लगातार शाप देता, पत्थर मारता और धूल फेंकता रहा (**2शमूएल 16:5-13**) **उस समय देखें दाऊद ने अपने एक सेनापति अबीशै से क्या कहा** जो तुरन्त जाकर शिमी का सिर काटना चाहता था जिसने दाऊद को श्राप दिया था, 'यदि वह श्राप देता है और यदि परमेश्वर ने उससे कहा, 'दाऊद को श्राप दे' तब कौन कह सकता है, "तूने ऐसा क्यों किया है?" दाऊद आगे लगातार कहता है, ***"शायद परमेश्वर मेरे कष्टों पर ध्यान देगा और उसके श्रापों के बदले मुझे भलाई दे।"***

कहानी के अन्त में हम जानते हैं कि परमेश्वर ने दाऊद को राज्य वापस दे दिया और उसका पुत्र जिसने उसे मारने की योजना बनाई थी वह मारा गया और शिमी अपने शब्दों में फंस गया और मारा गया।

ऐसे समय आते हैं जब परमेश्वर यह अनुमति देता है कि वे लोग जो हमसे घृणा करते हैं या जलस रखते हैं (दुर्भाग्यवश मसीही दुनिया में आप इन दोनों का सामना करते हैं) हम पर आगे या पीछे से पत्थर फेंकें। उन समयों में हम विद्रोह न करें और न ही बदले की भावना रखें, क्योंकि प्रभु हमारा रक्षक है और न्याय परमेश्वर के हाथ में छोड़ें जो न्यायी और धर्मी है वह अपने समय में हमारा न्याय करेगा।

आप देखते हैं कि कई बार परमेश्वर उन कठिनाईयों को हमारे जीवनों में लाता है ताकि हम **मसीह के समान बनें,** यह जानते हुए कि हम में अभी भी कमियां हैं जिनमें प्रभु प्रत्येक आज्ञाकारी विश्वासी को ऐसा सच्चा बनाना चाहता है जैसा कि **मत्ती 11:29** *'मेरा जुआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो कि* ***मैं नम्र और मन में दीन हूं*** *और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे'* और इसी प्रकार की परीक्षाऐं हमें इन '**नम्र और दीन** बनने के गुणों को विकसित करने में सहायक होगी।

कई बार कठिनाईयां और सताव हमारे किसी पाप के कारण नहीं आते बल्कि केवल मसीह के साथ दुख में शामिल होने के लिए (**1 पतरस 2:21**), और ऐसे समयों में हमें स्थिर रह कर अपनी बुलाहट को पूरा करना चाहिए, और इन सब के द्वारा प्रेम, धैर्य और सहनशीलता उस बिन्दु तक दिखाना चाहिए कि हमें लोग बुरी तरह से गलत समझें। प्रभु यीशु के वचन ऐसे समयों में मुझे बहुत बल प्रदान करते हैं (और मैं आशा करता हूं कि वे आपको भी बल प्रदान करते होंगे)।

मसीही जीवन सकरे रास्ते में चलने का जीवन है और उसमें कोई छोटा मार्ग नहीं है। ऐसे समय भी आते हैं जब मैं एक फैसले मैं कूद पड़ता हूं और उसे अपने तरीके से करना चाहता हूं (जब प्रतीक्षा बहुत लम्बी हो जाती थी) तब मैं सोचता था कि मैं अपनी आस्तीने मोड़कर अपने तरीके से काम करना आरम्भ करूं, परन्तु उन्हीं समयों में मैं आत्मा की आवाज सुनता हूं, *"शान्त हो", "वह मेरा युद्ध लड़ रहा है"* और *'वह अपने समय में सब कुछ ठीक करेगा।'* (मेरे समय में नहीं)। प्रभु मुझे इस प्रकार के पद भी याद दिलाता है:

मत्ती 10:24-28

24 "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, और न दास अपने स्वामी से। 25 ***चेले का गुरु के और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है।*** *जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा, तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहेंगे। 26 इसलिए मनुष्य से न डरना क्योंकि कुछ ढका नहीं जो खोला नहीं जाएगा न कुछ छिपा है जो जाना न जाएगा। 27 जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूं उसे तुम उजियाले में कहो जो कानों कान सुनते हो उसे छत्तों पर से प्रचार करो। 28 जो शरीर को घात करते हैं पर आत्मा को घात नहीं कर सकते उनसे मत डरना पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नर्क में नष्ट कर सकता है।'*

2 कुरिन्थियों 5:9-11, 14-15

9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें। 10 क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्यायासन के सामने खुल जाए कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए। 11 इसलिए

प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं परन्तु परमेश्वर पर हमारा हाल प्रकट है और मेरी आशा यह है कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रकट हुआ होगा। [14] क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है इसलिए हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए। [15] और वह इस निमित सबके लिए मरा कि जो जीवित हैं वे आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा।

यदि आप सोच रहे हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह और दया आपके जीवन में एक दिशा निर्देशक है और नापने का यन्त्र है तो आप परमेश्वर के साथ ठीक चल रहे हैं और परमेश्वर आपसे उसकी सेवा के काम में बहुत प्रसन्न है- **मैं सुझाव देता हूं कि आप एक बार पुनः विचार करें!**

हममें से बहुत लोग अपनी उच्च बुलाहट के अनुसार नहीं जीते जो प्रभु यीशु ने हमें दी है, यह सोचते और मानते हुए कि परमेश्वर समझेगा। हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रसन्न है और कहते हैं "देखो प्रभु ने मुझे उस विपत्ति से बचा लिया है" या "देखो, आज मेरे जीवन पर परमेश्वर का अनुग्रह है।"

ऐसा इसलिए है कि हमारा प्रभु परमेश्वर बहुत अनुग्रह, प्रेम और धैर्य का परमेश्वर है। मैं ऐसा सोचता था (और अभी भी कभी-कभी ऐसा ही सोचता हूं) जब मेरे जीवन में सारी बातें ठीक चल रही है, तब मैं अपने तरीके से काम करने लगता हूं (यह न जानते हुए कि ये काम उसकी इच्छानुसार नहीं हैं) जब तक कि वह मेरा नम्रता से सुधार न कर दे। कभी-कभी वह मुझे चेतावनी देता है, **कि अपने जीवन की जांच करें और प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ न गवाएं,** जो परमेश्वर के साथ चलने का सही चिन्ह है।

मैं एक उदाहरण देता हूं। एक बार (हमारा मित्र) एक विश्वासी ने बताया कि उसे और उसकी पत्नी को उसके गैर-मसीही कार्यालय के सहकर्मी ने अपने घर बुलाया मेरे मित्र ने सोचा कि यह अच्छा अवसर होगा कि वे उस परिवार को मसीह की गवाही देंगे कि कैसे परमेश्वर ने उनके लिए अद्भभुत प्रबन्ध किए और कैसे प्रभु यीशु मसीह की दया और विश्वास योग्यता उनके जीवनों में रही। उसे आश्चर्य हुआ कि इससे पहले कि वह अपने अविश्वासी

मित्र के साथ कुछ गवाहियां बाँटे, वह स्वयं अपने और अपनी पत्नी के जीवन में परमेश्वर की भलाईयों को बांटने के लिए उत्तेजित था (यद्यपि वह इसका आदर एकमात्र और जीवित परमेश्वर को नहीं दे रहा था जहां से वे आई थीं) मेरा मित्र असन्तोष अनुभव कर रहा था कि उसका अविश्वासी मित्र और उसकी पत्नी बराबर से अपने जीवनों में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और दया का वर्णन करने के लिए उत्सुक थे।

आप समझें, जैसा मैंने पहले कहा, हमें यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का अनुग्रह हमारे जीवनों में यह प्रकट नहीं करता कि हम परमेश्वर की इच्छा में हैं।

भजनसंहिता 145:9

*[9]यहोवा **सभों** के लिये भला है, और*
*उसकी दया उसकी सारी **सृष्टि पर है।***

चूंकि परमेश्वर का चरित्र नहीं बदल सकता यद्यपि हम अविश्वासयोग्य हो जाएं वह लगातार विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह बदल नहीं सकता है।

2 तीमुथियुस 2:13 कहता है:

'यदि हम अविश्वासी भी हों तौभी वह विश्वासयोग्य बना रहता क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता।'

भयानक भाग उसी दिन आएगा जब हम उसके सम्मुख खड़े होंगे और उन सब का इन्कार करेंगे जो उसकी इच्छा पर नहीं चलते थे। क्योंकि हमारा परमेश्वर बहुत धैर्यवान है, वह क्रोध में धीमा और प्रत्येक को तुरन्त दण्ड नहीं देता बल्कि उन्हें समय और अनुग्रह देता है कि वे बदल जाएं।

मैं एक और घटना को याद करता हूं जब मैं एक व्यक्ति (अविश्वासी) की शिकायत प्रभु से कर रहा था जो वास्तव में एक दुष्ट, कृतघ्न और अधन्यवादी था। मैंने सोचा कि प्रभु मेरे साथ वास्तव में सहमत होगा (यह बात जानते हुए कि मैं उस व्यक्ति के साथ कितना दुखी था) और मैं आशा कर रहा था कि मैं परमेश्वर से बुहत शान्तिदायक उत्तर पाऊंगा, लेकिन मेरे सुबह के मनन के समय **लूका 6:35-36** निकला, *[35] वरन् अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और भलाई*

करो और फिर पाने की आशा न रखकर उधार दो, और तुम्हारे लिए बड़ा फल होगा और तुम परमप्रधान की सन्तान ठहरोगे क्योंकि ***वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरे पर भी कृपालु है।*** *[36] जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है* ***वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।***

मेरा जबड़ा बन्द हो गया और मैं अपने मार्ग पर रुक गया, जैसे मैंने यह पढ़ा मैं समझ गया कि परमेश्वर मुझे इन पदों के द्वारा वास्तव में क्या बता रहा था, 'यदि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर होकर दुष्टों के प्रति दयावन्त हूं, तो तू कौन है जो उस व्यक्ति के विरुद्ध बना रहे।' यह बात यहीं तक सीमित नहीं रही परन्तु कुछ दिनों के बाद प्रभु ने मुझसे कहा कि जाकर उस व्यक्ति से मेलमिलाप कर ले, यद्यपि मैं ही वह व्यक्ति था जो अनावश्यक रुप से सताया जा रहा था।

यदि हम सच में प्रभु यीशु को प्रेम करते हैं, सबसे अच्छी पहचान यह है कि आप उसके मार्गों में चलेंगे (चाहे वे कितने ही कठिन क्यों न दिखें) **यूहन्ना 14:15, परन्तु प्रश्न यह है कि हम वास्तव में किस के पीछे पड़े हैं?** हम किस पुरुस्कार के पीछे दौड़ रहे हैं? हम कौन-सी दौड़ रहे हैं?

प्रेरित पौलुस के आचरण को देखें:

1 कुरिन्थियों 9:24-27

[24] क्या तुम नहीं जानते कि ***दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो।*** *[25] हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है। वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं जो मुझराने का नहीं। [26] इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं, मै भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। [27] परन्तु मैं अपनी देह को मारता, कूटता और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से* ***निकम्मा ठहरूं।***

अध्याय 3

एक भिन्न सुसमाचार!

आज कुछ झूठे शिक्षकों के द्वारा सुसमाचार को उसकी शक्ति से वंचित किया जा रहा है। आज की कलीसिया हमारे प्रभु यीशु को अनुग्रह से भरा हुआ प्रकट करती है परन्तु यह केवल आधा सत्य है, क्योंकि हमें यह याद रखना है कि पूरा सत्य यह है कि **वह अनुग्रह से भरा हुआ है और सत्य से भी भरा हुआ है (यूहन्ना 1:14) और वह बुराई को सहन नहीं कर सकता है।**

1 यूहन्ना 1:5-6 कहता है:

[5] जो समाचार हमने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। [6] यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभगिता है और ***फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते।***

प्रेरित पतरस भी इस सत्य को **1 पतरस 1:14-17** में बहुत स्पष्ट करता है:

[14] ***आज्ञाकारी बालकों के*** *समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। [15] पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। [16] क्योंकि लिखा है,* ***"पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।"*** *[17] और जबकि तुम 'हे पिता' कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ।*

बाइबल **2 कुरिन्थियों 11:1-4** में कहती है, जैसे सांप ने परमेश्वर के वचन को हव्वा को तोड़-मरोड़कर बताया कि परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर इसके भयंकर परिणामों को उत्पन्न किया। इसी प्रकार ये झूठने शिक्षक लोगों को गड़बड़ी में डालते हैं कि एक विश्वासी परमेश्वर के अनुग्रह को उद्धार के लिए प्राप्त करता है। पहला भाग सत्य है और हम जानते हैं कि उद्धार कमाया नहीं जा सकता है परन्तु यह परमेश्वर का नि:शुल्क वरदान है, जैसा हमने **इफिसियों 2:8-9** में पढ़ा है। तब इसका दूसरा भाग/भूमिका आती है, जैसा

इफिसियों 2:10, में पढ़ा है कि उद्धार पाने के बाद उन सब बातों को मानना जिनकी आज्ञा उसने दी है ताकि 'भले कामों का फल उत्पन्न' करे। जैसा प्रभु यीशु ने कहा कि जो कोई उसकी शिक्षाओं में नहीं बना रहता और वही बातें दूसरों को नहीं सिखाता वे दोनों न्याय के दिन दोषी घोषित किए जाएंगे। **मत्ती 7:13-27** यहां तक कि वे मसीही भी जो सेवा में लगे हुए हैं।

'उद्धार केवल अनुग्रह' से ही है और इसके विषय में कोई प्रश्न नहीं है। परन्तु 'छुटकारा' '**परमेश्वर की इच्छा में लगातार**' चलने के द्वारा ही आता है (**मत्ती 7:21; 1यूहन्ना 2:17; प्रकाशितवाक्य 3:2-6**)। जैसे इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से बाहर निकाला/बचाया गया, परन्तु परमेश्वर ने बाद में उन्हें जंगल में परखा कि उनके **हृदयों को जांचे।**

तौभी, बाइबल कहती है कि परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न नहीं था, **1 कुरिन्थियों 10:5** (उन दोनों के अतिरिक्त जो छुड़ाए गए थे), क्योंकि उनके शरीर जंगल में बिखरे पड़े थे।

जी हां, इसी प्रकार परमेश्वर एक विश्वासी को बचाने के बाद उसे बहुत से जंगल के अनुभवों में से होकर गुजारता है, परीक्षाऐं, जांच और कठिनाईयों में से कि देखें कि उसका हृदय परमेश्वर की आज्ञा में बना रहता है कि नहीं। परमेश्वर ऐसा उन सब लोगों के साथ करता है जो अपने आपको परमेश्वर की सन्तान कहते हैं पुराने नियम से लेकर नए नियम के लोगों तक। उसने प्रभु यीशु को भी नहीं छोड़ा और वह उसे जंगल में ले गया **ताकि उसकी भी परीक्षा हो** जैसा हम **मत्ती 4:1** में पढ़ते हैं, और वह हमारे साथ भी वैसा ही करेगा।

प्रेरित पौलुस भी विश्वासियों को यही चेतावनी देता है, अन्यथा हम मसीहियों के लिए इतिहास पुनः दोहराया जाएगा जैसा हम **1 कुरिन्थियों 10:1-12** में पढ़ते हैं **कि केवल 'कुछ ही' लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में जा सके,** यहां तक कि बपतिस्मा लेने, आत्मिक भोजन खाने, आत्मिक चट्टान से पानी पीने के बाद जो मसीह था, **उद्धार पाने के बाद एक मसीही का अजीब जीवन है।** वह चेतावनी देते हुए अन्त करता है हमें सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वे सोचते हैं कि वे स्थिर हैं, सावधान रहें कि कहीं गिर न जाएं।

उससे पहले जब पौलुस **1 कुरिन्थियों 10** को आरम्भ करता है, वह पहले अध्याय 9 में **1 कुरिन्थियों 9:27** को यह कहते हुए अन्त करता है कि वह स्वयं भी अपने उद्धार को यूं ही हल्के रूप में नहीं लेता है।

1 कुरिन्थियों 9:27

*'परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं, **ऐसा न हो** कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से **निकम्मा ठहरूं।***

अब प्रेरित पौलुस क्रूस पर मसीह के द्वारा पूरे किए गए कार्य पर कोई सन्देह नहीं करता है, जब उसने ऊपर यह बात कही कि वह स्वयं कहीं निकम्मा न ठहरे, परन्तु केवल वह बदले हुए जीवन और परमेश्वर के प्रति हमारे सच्चे प्रेम और भक्ति की साक्षी देने की बात कहता है। मसीह में प्रियो, यदि प्रेरित पौलुस का यह आचरण था तो मेरा और आपका ऐसा आचरण कितनी अधिक मात्रा में चाहिए होगा?

प्रेरित पौलुस का प्रभु यीशु के साथ दमिश्क के मार्ग पर ऐसा बड़ा व्यक्तिगत सामना होने के बाद और जिस पर यीशु मसीह का बड़ा दर्शन प्रकट हुआ कि वह खोए हुए गैर-यहूदियों तक पहुंचेगा, उसने कभी-भी अपने ऊपर अपने उद्धार के लिए आत्म-विश्वास नहीं किया बल्कि वह सदैव वर्तमान सम्भावना के प्रति सावधान रहा कि कहीं **'निकम्मा न ठहरे'**- **1 कुरिन्थियों 9:27**, यदि वह लगातार अपने उद्धार के काम को डरते और कांपते हुए पूरा नहीं करता-**फिलिप्पियों 2:12 ।**

प्रभु यीशु मसीह सदैव 'सत्य' के ज्ञान पर जोर डालते रहे कि वह आवश्यक है। यह नहीं कि जैसा हम 'सत्य' को समझते हैं बल्कि जैसा बाइबल बताती है। **यूहन्ना 8:31-32** में वह कहता है कि 'सत्य' में बने रहना और 'आज्ञाओं' में लगातार बने रहना है और ध्यान दीजिए कि उसने यह बात अविश्वासियों से नहीं परन्तु विश्वासियों से कही है जैसा आप वचन में पढ़ते हैं

प्रभु यीशु मत्ती 25:41 में कहते हैं:

41 *'तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, **जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।'***

आप समझें कि लोग नर्क का विचार पसन्द नहीं करते। वे कहते हैं कि कैसे एक भला परमेश्वर मानवजाति को नर्क में भेज सकता है। आप समझें कि नर्क हमारे लिए नहीं बनाया गया था परन्तु शैतान और उसके गिराए हुए स्वर्गदूतों के लिए बनाया गया था। हमारे जीवन में बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम पसन्द नहीं करते। हम दुख, बीमारी, किसी भी प्रकार की असफलता आदि को पसन्द नहीं करते, परन्तु केवल इसलिए कि हम इन वस्तुओं को पसन्द नहीं करते तो इसका अर्थ नहीं है कि उनका अस्तित्व नहीं है और यह सब हमारे साथ नहीं होगा। इसी प्रकार की वास्तविकता नर्क के साथ भी है। परन्तु आप देखते हैं कि एक पवित्र, धर्मी और भले परमेश्वर ने हमें नर्क से बाहर रहने का चुनाव भी दिया है।

हमें गम्भीरता से रुक कर यह जांच करनी चाहिए कि क्या हममें से कोई ऐसे सुसमाचार के बारे में तो नहीं बोलता है जो केवल सारे अनुग्रह का है और एक उद्धार पाए हुए व्यक्ति के जीवन से कुछ भी मांग नहीं करता है क्योंकि ऐसा सुसमाचार जो बाइबल में नहीं है?

तीतुस 2:11-12 कहता है:

*[11] क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और **हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं** से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।*

परमेश्वर का वचन 1 तीमुथियुस 6:14 में कहता है:

*कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने **तक** इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख।*

मैं 2 कुरिन्थियों में से एक सामर्थी वचन लाना चाहता हूं-जिसे शायद आपने निकटता से मनन न किया हो, जहां प्रेरित पौलुस ने उसी चिन्ता को व्यक्त करते हुए **कलीसिया को चेतावनी दी,** कि वे झूठे शिक्षकों के फन्दे में न आएं जो पाखण्ड और झूठी शिक्षाएं लाते हैं। प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया के समक्ष हियाव से इन शिक्षाओं को निम्नलिखित रुप से प्रकट करता है:

1. दूसरा यीशु
2. भिन्न आत्मा
3. भिन्न सुसमाचार

2 कुरिन्थियों 11:2-4

*[2] क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुंवारी के समान मसीह को सौपं दूं। [3] परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएं। [4] यदि कोई तुम्हारे पास आकर **किसी दूसरे यीशु** का प्रचार करे, जिसका प्रचार हम ने नहीं किया; या कोई **और आत्मा** तुम्हें मिले, जो पहले न मिला था; या **सुसमाचार सुनाए** जिसे तुमने पहले न माना था, तो तुम उसे सह लेते हो!*

जब मैंने प्रथम बार यह वचन एक बाइबल कॉलेज के पूर्व-प्रधानाचार्य को बताया तो उसे अचम्भा हुआ कि ऐसा वचन मेरी आंखों से छूट गया। नए नियम में एक और स्थान पर एक विश्वासी को 'भिन्न सुसमाचार' के प्रति चेतावनी दी गई है, यह पाया जाता है:

गलातियों 1:6-7

*[6] मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर **और ही प्रकार के सुसमाचार** की ओर झुकने लगे। [7] परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और **मसीह के सुसमाचार** को बिगाड़ना चाहते हैं।*

आधुनिक सुसमाचार में बहुत से नए कथनों का प्रयोग किया जाता है जो कि आरम्भ में केवल अच्छे ही नहीं लगते बल्कि उनका अर्थ भी सम्पूर्ण लगता है। उनमें से एक है *'हम मछली को साफ करके नहीं पकड़ते, परन्तु हम मछली पकड़ते हैं और तब इसे साफ करते हैं'* उनका अर्थ यह होता है कि हमें लोगों को कलीसियाओं में निमन्त्रित करने और उन्हें बुरा न लगनेवाला

सुसमाचार प्रचार करने की आवश्यकता है (जिसे मैं आधा सुसमाचार कहता हूं) और उनको पश्चाताप् करने और आत्मिक चंगाई की आवश्यकता को सम्बोधित नहीं करना है, और वे बहुतों को कलीसिया में लाने के नाम पर ऐसा करते हैं।

तौभी वास्तविकता यह है कि यद्यपि यह कथन हमारे लिए कुछ अर्थ रखते हो तौभी यह आवश्यक नहीं कि यह परमेश्वर के लिए कुछ अर्थपूर्ण हो। हमें सदैव यह पूछना चाहिए (जिसमें हम प्राय: असफल होते हैं) 'क्या प्रभु, यही मार्ग है जिसमें आप चाहते हैं कि मैं चलूं?' क्योंकि याद रखें कि परमेश्वर के मार्ग और विचार हमारे मार्गों और विचारों से बहुत ऊपर हैं। **कोई भी ऐसा सुसमाचार जो बिना पश्चाताप् की पुकार का हो वह वास्तव में एक भिन्न सुसमाचार है।** यह बहुत दुख की बात है कि आधुनिक कलीसियाऐं इन बातों में आसानी से समझौता कर लेती हैं केवल संख्याओं को बढ़ाने के लिए। बाइबल में सुसमाचार सदैव 'पश्चाताप् और विश्वास' की पुकार के साथ जाता है। यदि कोई इस बात को नहीं मानता वे एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर के सम्मुख पापी हैं। वे अभी तक प्रभु यीशु की क्रूस की सराहना और उसे प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं हैं। क्योंकि सुसमाचार एक नि:शुल्क वरदान है जो स्वतन्त्र चुनाव के साथ दिया जाता है और जिसे थोपा और उसके साथ समझौता नहीं किया जा सकता।

हमारा कार्य केवल मसीह का सुसमाचार उसकी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करना है और तब यह सुननेवाले पर निर्भर करता है कि वे उनके पापों की क्षमा हेतु इस बड़े प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं कि नहीं। प्रभु यीशु ने स्वयं ही कहा कि वह धर्मियों के लिए नहीं परन्तु पापियों के लिए आए हैं जिसका अर्थ उन्होंने यह कहते हुए प्रकट किया कि एक बीमार को ही डॉक्टर की आवश्यकता होती है न कि एक स्वस्थ व्यक्ति को। किसी भी रुप से मछली को साफ करना हमारा काम नहीं है परन्तु परमेश्वर का काम है। **हमारे द्वारा एक बकरी को सफेद रंग से रंग देने से वह भेड़ नहीं बन जाती है; वह अभी भी बकरी ही है-ठीक है? केवल परमेश्वर ही बकरी को भेड़ में बदल सकता है।** दुर्भाग्यवश बुरा न लगनेवाला सुसमाचार का प्रचार करने से एक विश्वासी अभी भी बहुत से बिना अंगीकार किए गए पापों की अधीनता में बना रहता है। (अक्षमा, अनैतिकता, क्रोध, लत, मूर्तिपूजा, जलन

आदि)। यह तभी होता है जब हम सत्य को स्वीकार करते हैं तब हमें सहायता की आवश्यकता होती है कि हम अपने आपको और अपने पापों को क्रूस के नीचे लेकर आएं। यह तभी होता है जब हम परमेश्वर के वचन के प्रति **लगातार आज्ञाकारिता में जीवन** बिताने का फैसला करते हैं, तभी हम सच में स्वतन्त्र होते हैं जैसा प्रभु ने **यूहन्ना 8:31-32** में कहा।

मैं प्राय: सोचता हूं कि अब समय आ गया है कि हम **'विश्वासी' शब्द को अब 'आज्ञाकारी विश्वासी'** की उपाधि में बदल दें। क्योंकि केवल 'विश्वासी' होना हमारे प्रभु परमेश्वर के लिए कोई अर्थ नहीं रखता है।

याकूब 2:19 कहता है:

19-*तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।*

अध्याय 4

आधा सुसमाचार- प्रचार करने की परीक्षा!

आज बहुत से लोग 'परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह' के साथ खिलवाड़ करते हैं 'परमेश्वर की पवित्रता' की (चर्चा न करते हुए) जो 'आज्ञाकारिता' की मांग करता है),, वे सुसमाचार को क्रोधरहित बनाने के लिए ऐसा करते हैं। आधा सत्य सत्य नहीं है!

जैसा किसी ने सही कहा है कि **शैतान एक निपुण जूडो शिक्षक की तरह है। जब हम सोचते हैं कि हमने एक कमजोरी पर विजय प्राप्त कर ली है तो वह हमें दूसरी तरफ धकेल देता है।**

2000 वर्षों पूर्व आरम्भिक कलीसिया नए यहूदी विश्वासियों के साथ उद्धार के लिए संघर्ष कर रही थी जो 'उद्धार को व्यवस्था और परम्पराओं के द्वारा' पाना चाहते थे क्योंकि उसके द्वारा वे आत्मिक उपलब्धता और श्रेष्ठता का आभास करते थे।

2000 वर्षों के बाद अन्तिम दिनों की कलीसिया अपने पुराने सांसारिक तरीकों में फिसल रही है और परमेश्वर के अनुग्रह को हल्का ले रही है और इस प्रकार आत्मिक उच्चता की श्रेणी में सुरक्षित स्थान पा रही है और अनुग्रह की स्वतन्त्रता को शरीर के लिए अवसर बना रही है।

इसके बारे में सोचें! क्या शैतान आपके और मेरे साथ अपना समय बर्बाद करेगा यदि वह यह जानता है कि हम उद्धार पाए हुए मसीही अपना उद्धार नहीं खो सकते हैं?

अथवा मैं इसे इस प्रकार कहना चाहता हूं कि क्यों पौलुस, याकूब, यूहन्ना, पतरस, यहूदा और स्वयं प्रभु ने क्यों इतना समय लिया कि वे कलीसिया को लगातार चेतावनी देते रहे कि वे पवित्रता में चलें, प्रायः वे उन्हें झिड़कते थे, यदि अन्त में परमेश्वर के साथ अनन्तजीवन निश्चित था (चाहे वह आज्ञाकारी हो या अनाज्ञाकारी हो)?

सम्पूर्ण संसार में कलीसिया धीरे-धीरे इस **कांटे में फंस रही है, यह उसकी आदत में आ गया है यह खुजलाने वाले कानों को अच्छा लगता है और नाशवान शरीर इसे सुनना पसन्द करता है,** इसीलिए इस प्रकार का प्रचार सदैव बड़े कमरों में खचाखच भीड़ के साथ किया जाता है और कलीसियाऐं बड़ी कलीसियाओं में बदलती जाती हैं। इससे हमें अचम्भा नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे प्रभु यीशु ने पहले से भविष्यद्वाणी की है कि बहुत से लोग उसी चौड़े सुसमाचार के मार्ग पर चलेंगे!

दूसरी ओर, जब प्रभु यीशु की शिक्षाऐं सत्य के साथ कठोरता से आई;

यूहन्ना 6:66-68 *कहता है:*

*[66] **इस पर उसके चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।** [67] तब यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" [68] शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।"*

यीशु मसीह की शिक्षाओं के प्रति लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही? **क्या ये बड़ी-बड़ी कलीसियाऐं थीं?** नहीं। दूसरी ओर यह तथाकथित नम्र सुसमाचार उनके श्रोताओं के लिए बुरा न लगनेवाला, उनके कानों की खुजली मिटाने वाला था।

प्रेरित पौलुस और यूहन्ना लोगों के विचारों की चिन्ता नहीं करते थे जब तक कि वे यह जानते थे कि उन्हें सत्य बोलना है।

प्रेरित पौलुस **गलातियों 4:16** में कहता है, *'क्या मैं तुम से सच बोलने के कारण तुम्हारा बैरी बन गया हूं?'*

और प्रेरित यूहन्ना **1 यूहन्ना 3:13** में कहता है:

'हे भाइयो, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना'

आपको मालूम है कि जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए पहली बार भेजा तो उन्होंने कहा, 'मनुष्यो पश्चात्ताप् करो- **मरकुस 6:12'**

फन्दों का पता लगाना

(आज्ञाकारिता को कलीसिया की खिड़की से बाहर फेंक देना)

आरम्भिक कलीसिया को पहले ही मारते हुए देखा गया था

जैसा प्रभु के प्रेरितों ने हियाव के साथ निम्नलिखित पदों में सम्बोधित किया है:

❖ **प्रेरित पौलुस ने गलातियों 5:7-9, 13,16,19-24:** *7 तुम तो भली-भांति दौड़ रहे थे। अब किसने तुम्हें रोक दिया कि सत्य को न मानो। 8 ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। 9 थोड़ा-सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है।* *13* ***हे भाईयो, तुम स्वतन्त्र होने के लिये बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतन्त्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर बने,*** *वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।* *16 पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे* *19 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन,* *20 मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,* *21 डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा* ***और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूं,जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।*** *22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।* *24* ***और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।***

❖ **गलातियों 6:7-8 कहता है** *'धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।* ***8 क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।'***

❖ **2 यूहन्ना 1: 8-9 कहता है।** *8 अपने विषय में चौकस रहो, कि जो परिश्रम हमने किया है उसको तुम गवां न दो, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ।* *9* ***जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है और उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं;*** *जो*

कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी।

- ❖ और अन्त में (प्रभु यीशु के भाई) यहूदा के द्वारा अन्त के दिनों की कलीसिया के बारे में चर्चा है जिसका वह बहुत क्रोध में विरोध करता है यदि आप **यहूदा 1:4-5, 10-13, 16-20** को पढ़ने के लिए समय निकालें।

यदि आप इसे पढ़ रहे हैं, क्या मैं यहां रुककर यह पूछ सकता हूं, 'क्या आपके जीवन में कभी ऐसा समय रहा है जब आपने अपने पुराने जीवन के पापों से अंगीकार करने का सर्मपण किया और पाप के विनाश किए गए जीवन से एक **'बदले हुए जीवन'** की लालसा की और प्रभु यीशु को अपने हृदय में उद्धारकर्त्ता के रुप में आने का निमन्त्रण दिया है?

संसार के सारे धर्मों में से मसीही विश्वाास ही केवल ऐसा है जो परमेश्वर तक हियाव के साथ पहुंचने के लिए हमें प्रोत्साहित करता है, विनाशकारी परमेश्वर के रुप में नहीं, परन्तु अब्बा, पिता के रुप में। **परमेश्वर यह सौभाग्य उन सब को देता है जो** उसकी उपस्थिति और संगति में सीधे तौर पर हमारे **यीशु जो तरस से भरा महायाजक है, के द्वारा बुलाए गए हैं।**

परमेश्वर का अनन्तकालीन उद्देश्य सदैव यह रहा है कि वह गिरे हुए मनुष्यों का मेल-मिलाप पुनः अपने आप से करा ले। **परमेश्वर की बुलाहट अपने लोगों के लिए सदैव यह रही है** उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, यही पुकार रही है, पश्चाताप् करो और उसके पास पुनः लौट आओ।

यदि आपने अपने पापों के लिए प्रभु के द्वारा क्रूस पर दिये गए बलिदान को स्वीकार किया है यह जानते हुए कि आप एक पापी हैं, क्योंकि बाइबल कहती है सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है, क्या आप अभी थोड़ी देर के लिए रुक इस बात पर विचार करेंगे? आप जन्म से मसीही हो सकते हैं परन्तु शायद आप जन्म से मसीही रहे हों **लेकिन इससे कोई लाभ नहीं है जब तक आप व्यक्तिगत रुप से मसीह** यीशु को अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का प्रभु बनने के लिए अनुमति न दे।

प्रेरितों के काम 4:12 में बाइबल कहती है:

'किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'

हम संसार में ऐसे बहुत से लोगों को देखते हैं जो यह प्रसिद्ध वाक्य बोलते हैं **'हम अभी भी खोज कर रहे हैं'** परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि कुछ मसीही भी इसी बात को दोहराते हैं।

व्यवस्थाविवरण 4:29-31 कहता है:

'[29] परन्तु यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो।–[30] अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, यह सब विपत्तियां तुम पर आ पड़े तब **तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना।** [31](क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है), वह तुमको न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा तेरे पितरों से शपथ खाकर बांधी है उसको नहीं भूलेगा।

मैं वास्तव में नहीं समझता कि खोज क्या है? जब प्रभु यीशु मसीह ने किसी अनिश्चित समय में यह कहा:

यूहन्ना 14:6

यीशु ने उससे कहा,

***"मार्ग** और सत्य और जीवन मैं ही हूं;* **बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"**

मैं नम्रता और परमेश्वर के प्रेम के साथ आपसे निवेदन करता हूं कि आप यह समर्पण प्रभु यीशु के साथ **बिना देरी किए** अपने शान्त कमरे में करें।

इब्रानियों 4:6-7 कहता है

*[6] तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहले सुनाया गया उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया। [7]इसलिये वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे **'आज का दिन' कहता है। जैसे पहले कहा गया, "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।"***

बहुत से मसीही हैं जो धार्मिक रुप से प्रतिदिन भजनसंहिता 91 पढ़ते हैं लेकिन अपने जीवन को अपने तरीके से जीते हैं। वे इस भजन के प्रथम पद को नजरअन्दाज कर देते हैं जो आगे की सभी आशीषों के लिए **भजनसंहिता 91** में प्रारम्भिक शर्त है।

भजनसंहिता 91:1 कहता है *'जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की **छाया में ठिकाना** पाएगा।'* हमें अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिए–क्या हम सच में वास्तव में परमेश्वर की इच्छा में रह रहे हैं? **यदि** ऐसा है **तो** परमेश्वर की सुरक्षा निश्चित है।

आज हम साधारण **'बाइबल के सत्यों'** को बोलते हैं, हम देखते हैं कि लोग **'सत्य'** के विचारों को छोड़कर अन्य विचारों में अधिक रुचि रखते हैं यह कहते हुए– 'क्या आपको पता है कि जो अपने कहा उससे अमुक व्यक्ति को ढेस पहुंची' जैसा प्रभु के साथ, और बहुत से लोगों के साथ हुआ था, जैसे हम निम्नलिखित पदों में देखते हैं:

मत्ती 15:10–12

[10] तब उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, 'सुनो और समझो; [11] जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है [12] तब चेलों ने आकर उससे कहा, ***क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई है।***

अत: मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं क्या आज आप वास्तव में प्रभु यीशु की शिक्षाओं में पवित्र भय के साथ बने हुए हैं? आप अपने आस–पास के, साथ के लोगों के विचारों की चिन्ता किए बिना परमेश्वर के वचन के अनुसार हियाव बान्धकर सभी प्रकार की गलत शिक्षाओं को उजागर कर रहे हैं, जैसे हमारे प्रभु यीशु ने हियाव बान्धकर की थी?

दुर्भाग्यवश 2000 वर्षों से अब तक बहुत थोड़ा बदलाव आया है।
और बहुत हद तक आप और मैं 'विधर्मी' और 'सनकी'
कहलाएगे *यदि हम निम्नलिखित शिक्षाओं को मानेंगे:*

➢ ***कैसे प्रेरित याकूब ने याकूब 1:1-2 में कलीसिया को प्रोत्साहित किया है: याकूब 1:2-4*** [2] *हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो।* [3] *यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।* [4] *पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।*

➢ **कैसे प्रेरित पतरस ने कलीसिया को 1 पतरस 4:12-19 में प्रान्नत किया है:** [12] *हे प्रियो, जो दुख रुपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इससे* ***यह समझकर अचम्भा न करो*** *कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है।* [13] *पर जैसे-जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।* [14] ***फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है,*** *तुम पर छाया करता है।* [15] *तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए।* [16] *पद यदि मसीही होने के कारण दुख पए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिय परमेश्वर की महिमा करे।* [17] *क्योकि वह समय आ पहुंचा है कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए; और जबकि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?* [18] *और* ***"यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनाई से उद्धार पाएगा,*** *तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?"* [19] *इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दु:ख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।*

अपने आपसे यह प्रश्न पूछें पिछली बार कब आपने इस प्रकार की शिक्षा सुनी थी (आप सोचें कि यह आरम्भिक कलीसिया में प्रचलित थीं? ''अथवा यह कलीसिया की खिड़की से बाहर फेंक दिया गया है?

आज हम सच में निम्न भविष्यद्वाणी की ओर बढ़ते जा रहे हैं:

आमोस 8:11

*परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, "देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में महंगी करूंगा; उसमें न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, **परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी।***

आज की शिक्षा/प्रचार सब कुछ 'अच्छा लगनेवाला तथ्य है!' और इसे कौन पसन्द नहीं करेगा? मेरा पापमय शरीर उस शिक्षा को सुनना पसन्द करेगा, जब मैं कलीसिया से बाहर निकलूंगा तो अपना सिर ऊंचा उठाऊंगा परन्तु इससे मुझे अपने जीवन को मसीह हमारे प्रभु के लिए बदलने के लिए कोई कायलता नहीं होगी।

इन नई कलीसियाओं के 'सुहावने प्रचार' का उद्देश्य यह है **कि जब से आप कलीसिया में प्रवेश करेंगे और जब आप इसे छोड़ेंगे- आपका मनोरंजन होता रहेगा!**

मैं समझता हूं कि सुसमाचार एक खोए हुए व्यक्ति के साथ मसीह के प्रेम और क्षमा के विषय में बांटना है जैसा हम कलीसिया के बाहर करते हैं। परन्तु प्रत्येक रविवार को उतेजित करनेवाले उपदेश दिए जाते हैं कि मसीह हम से कितना प्रेम करता है। (बजाय इसके कि यह मालूम किया जाए कि उस सप्ताह में विश्वासियों ने प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार कितना जीवन जीया है) यदि कभी नहीं तो कभी-कभी ही सही कि एक बचाए हुए पापी को उसके पुराने मार्गो से फेर कर ईश्वरीय मार्गो में लाने के लिए कायल किया जाए।

यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी 23:1,16-17 उनके जीवनों में पूरी होती है:

*'[1]उन चरवाहों पर हाय, जो मेरी चराई की भेड़-बकरियों को तितर-बितर करते और उनका नाश करते हैं। यहोवा यह कहता है। [16] सेनाओं के यहोवा ने तुम से यू कहा है: 'इन भविष्यद्वक्ताओं की बातों की ओर जो तुम से भविष्यद्वाणी करते हैं **कान मत लगाओ**, क्योंकि ये तुम को व्यर्थ की बातें सिखाते*

हैं; ये दर्शन का दावा करके यहोवा के मुख की नहीं अपने ही मन की बातें कहते हैं [17] *जो लोग मेरा तिरस्कार करते हैं उनसे ये भविष्यद्वक्ता सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है 'तुम्हारा कल्याण होगा'; और जितने लोग अपने ही हठ पर चलते हैं उनसे ये कहते हैं 'तुम पर कोई विपत्ति न पड़ेगी।'*

इससे उन्हें यह अनुभव होगा कि वे अपने जीवन में आत्म-धर्मी हैं और उन्हें कोई भी रुकावट को दूर करने के लिए कायल होने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के विश्वासी अपने आप को अभिषिक्त और अभिषिक्त महसूस करते हुए बाहर आते हैं उस गलती के आत्मा के फन्दे के द्वारा जो अभी भी आज्ञा न मानने वाले बालकों में कार्यरत है।

एक और बात जो मैंने देखी है वह यह है कि प्रचारक और शिक्षक जो समस्त अनुग्रह और मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले सुसमाचारों का प्रचार करते हैं, स्वयं उनके पास बहुत कम अनुग्रह होता है। यदि आप उनके साथ गहरी चर्चा करें तो यह जानने में बहुत देर नहीं लगेगी कि उनके पास प्रेम का फल वास्तव में बहुत कम है जो उनकी ऊंचाई की छाप है। इसलिए मसीह ने **मत्ती 7:16 में** यह संकेत दिया है कि तुम उन्हें उनके फल से पहचान लोगे। इसका कारण यह है कि वे मसीह की तरह **अनुग्रह और सच्चाई में सम्पूर्ण नहीं हैं** और पहला दूसरे के बिना स्थिर नहीं रह सकता, यह असफल होगा।

उनके लाड़-प्यार वाले संदेश सदैव यह होते हैं कि परमेश्वर आपको कैसे 24X7 आशीष देना चाहता है, वे केवल बाइबल के एक भाग को यह कहते हुए दोहराते रहते हैं 'आशीषों में वह आपको आशीष देगा और बहुगुणन में वह आपको बहुगुणित करेगा।' और कभी भी उसकी शर्तों को पूरा करने की बात नहीं करते।

अत: आज की कलीसिया किधर जा रही है? दुर्भायवश, यह अन्तिम दिनों की कलीसिया के विषय में हुई भविष्यद्वाणी की ओर जा रही है:

2 थिस्सलुनीकियों 2:11-12

[11] *इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें,* [12] *ताकि जितने लोग* ***सत्य की प्रतीति नहीं***

करते, *वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं वे सब दण्ड पाएं।*

जब तक मैं अपने प्राण को इन सन्देशों को सुनने से नहीं रोकूँगा, तब तक मुझे नहीं मालूम होगा कि यह कैसे मेरे जीवन में लगातार चलता रहेगा और लगातार मैं यह गीत गाता रहूंगा- *"मैं परमेश्वर का मित्र हूं, मैं परमेश्वर का मित्र हूं, उसने मुझे मित्र कहा है"* बिना शर्तों को पूरा किए हुए। प्रभु यीशु ने अपने चेलों से **यूहन्ना 14:15** में कहा, "तुम मेरे मित्र ठहरोगे **यदि उसे** करो जिसकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।"

परन्तु यदि हम सोचें कि हम उसके मित्र हैं तो भी ठीक है, क्योंकि प्रभु यीशु ने भविष्यद्वाणी करके उस व्यक्ति को 'मित्र' कहा जिसके पास विवाह के वस्त्र नहीं थे, उससे पहले कि उसके हाथ-पैर बान्ध कर नर्क की आग में फेंका जाए (कृपया पढ़ें **मत्ती 22:11-14**)। अत: अगली बार जब हम अपने आपको परमेश्वर का मित्र कहें तो **आइए याद रखें कि परमेश्वर मित्रों में भी पक्षपात नहीं करता है।**

प्रेरित यूहन्ना ने बाद में कलीसिया को पहले से चेतावनी दी है कि इन झूठे वक्ताओं की बातें न सुनें और उससे पहले कि हमें पता भी न चले यह धोखा देनेवाली आत्मा हम पर, उनके सुननेवालों पर आ पड़ेगी।

1 यूहन्ना 2:24-25, 26 28

"जो कुछ तुमने आरम्भ से सुना है, वही तुम में ***बना रहे;*** *जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में* ***बना रहे*** *तो तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे।* [25] *और जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की वह* ***-अनन्त जीवन है।"*** [26] *मैंने ये बातें तुम्हें उन के विषय में लिखी हैं,* ***जो तुम्हें भरमाते हैं;*** [28]*अत: हे बालको,* ***उसमें बने रहो*** *कि जब वह प्रगट हो तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने* ***लज्जित न हों।***

दूसरे शब्दों में, मुझे उस पद से जो चेतावनी मिलती है वह यह है कि यदि हम इन शिक्षाओं पर ध्यान देना आरम्भ करें तो धोखा देनेवाली आत्मा बहुत शीघ्र ही नियन्त्रण कर लेती है और हम सत्य में नहीं बने रह सकेंगे।

इसका परिणाम यह होगा कि यीशु मसीह के आने पर हमें द्वार के पीछे/बाहर छोड़ दिया जाएगा जहां हम खटखटाते रहेंगे। जी हाँ, यदि हम उसकी शिक्षा

में **बने हुए** हैं **तब हमारे पास उसकी अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा है (अन्यथा नहीं)।** मूलभूत रुप से प्रेरित यूहन्ना ऊपर **1 यूहन्ना 2:24-25** में विशेष कर के अपने स्वामी के शब्दों को स्वीकार कर रहा था जो **यूहन्ना 15:1-8** में लिखे हैं (**कि उसकी डालियों की तरह हमें उसकी आज्ञाओं में बना रहना आवश्यक है ताकि अधिक फल लाएं कि वह सिद्ध करे कि** हम उसके सच्चे चेले हैं अन्यथा हम काट डाले जाएंगे और जलाने हेतु फेंक दिए जाएंगे)।

अत: हम यहां रुकें और अपने आप से पूछें, अपने अन्दर खोज करें, **कि हमें किस प्रकार का सुसमाचार प्रचार करना चाहिए- 'नम्र सुसमाचार' या 'सत्य का सुसमाचार'?**

आज सुसमाचार को प्रचार करने के लिए कलीसिया में बहुतों को बोझ है। क्या यह बात सत्य है? सच में नहीं, क्योंकि बहुत से लोग अपनी सहायता उन तथाकथित (नम्र सुसमाचार) टी. वी. कार्यक्रम में वक्ताओं को भेजते हैं जो अपने आपको सुसमाचार प्रचारक कहते हैं, जो दान दाताओं का धन बड़ी सभाओं में बड़ी क्वायर और उनके सामान को लाने ले जाने, बड़े-बड़े वातानुकूलित हॉल को सुरक्षित करने और खुले में सुसमाचार प्रचार की सभाओं का आयोजन करने में लगाते हैं। यह सब वे स्थानीय कलीसिया के पहले से बचाए गए लोगों को बुलाने और बचाए गए विश्वासियों को 'चौड़े रास्ते' पर लाने के लिए सुसमाचार प्रचार को फैलाने के लिए करते हैं।

प्राय: ये सब काम वे एक सत्य प्रचारक के कठिन परिश्रम को समाप्त करने के लिए करते हैं जिसने गांव और नगरों की सड़कों पर बिना थके काम किया है, **बहुतों ने बिना किसी पैसे के किया (वे अपने स्वामी की आज्ञा को मानते रहे-मरकुस 6:8-9** [8] *उसने उन्हें आज्ञा दी, "मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ न लो; न तो रोटी, न झोली, न बटुए में पैसे,* [9] *परन्तु जूतियाँ पहिनो और दो दो कुरते न पहिनो)* **उन आत्माओं को बचाने के लिए।**

जब एक निर्बल और थका हुआ विश्वासी इन सभाओं में आता है, अथवा दूरदर्शन पर इसका प्रचार सुनता है कि **अब उसे प्रभु के पीछे चलने के लिए कोई क्रूस उठाने की आवश्यकता नहीं है,** और अब केवल प्रभु

परमेश्वर उनके जीवनों को आशीषित करना और बढ़ाना चाहता है और उन्हें सिखाया जाता है कि अपने-अपने वर्तमान दुख/परख, संकट शैतान के द्वारा भेजे गए समझें, यह सब टूटे और पिसे हुए हृदयों को बहुत शान्तिदायक और सुहावने लगते हैं विशेषकर उन समयों में जब वे इन सब कठिनाइयों के मध्य मसीह के लिए बहुत सी परखों और सताव के बीच आग में से ताए जाकर अपने विश्वास को सिद्ध करते हैं **(1पतरस 1:6-7)**। उन्हें बताया जाता है कि प्रतिदिन का जीवन उनके आनन्द और सम्पन्नता में जीने का है।

मसीह में प्रियो, मैं दुख के साथ यह कहता हूं कि यह हमारे प्रभु शिक्षाओं और प्रेरित पौलुस, पतरस, याकूब प्रभु की उस शिक्षा के **बिल्कुल विरुद्ध** है जो उन्होंने सतावों, कष्टों और परीक्षाओं के बारे में दी थी जिसे हम थोड़ी देर पहले ही पढ़ चुके हैं।

आरम्भिक कलीसिया के चेलों ने उन बातों को ठीक समझा जो उनको प्रभु यीशु ने निम्नलिखित पद में कहीं:

लूका 9:24

क्योंकि जो कोई अपने प्राण बचाना चाहता है वह उसे **खोएगा**, *परन्तु जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोएगा वह उसे* ***बचाएगा।***

इसलिए पौलुस ने कलीसिया को उत्साहित करते हुए ***2 थिस्सलुनीकियों 1:4-8 में*** *लिखा है कि कष्ट एक सत्य मसीही के जीवन के मुख्य भाग हैं।*

2 थिस्सलुनीकियों 1:4-8

[4] यहां तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं कि ***जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रकट होता है।*** *[5] यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो जिसके लिए तुम दुख भी उठते हो। [6] क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें बदल में क्लेश दे। [7]* ***और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट***

होगा, [8] *और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा।*

यह एक वचन में भविष्यद्वाणी के रुप में एक चेतावनी है जो वचन में पाई जाती है कि ये झूठे शिक्षक आएंगे जैसा हम नीचे पढ़ते हैं:

1 यूहन्ना 4:1

हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो *कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।*

ये झूठे शिक्षक चिकनी चुपड़ी बातें बोलते और आत्मिक बातों को तोड़-मरोड़ कर प्रकट करते हैं। इसमें बहुत अधिक परख की आवश्यकता होती है ताकि हम उन्हें पहचान सकें।

कुछ तरीके हैं जिनमें आप इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं और वक्ताओं को पहचान सकते हैं:

1. सबसे पहला तरीका (और आसान तरीका), उन्हें पहचानने का यह है जो प्रभु ने हमें **लूका 6:23** में दिया है *' हाय तुम पर* **जब सब मनुष्य तुम्हारे विषय में भली बातें कहें,** *क्योंकि उनके पूर्वज भी झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ ऐसा ही करते थे।'* आज ऐसे बड़े मसीही वक्ताओं का उनके आस-पास इतना प्रभाव है कि कोई भी खुले रुप में उनके विरुद्ध बोल नहीं सकता है। बल्कि केवल उनकी पूजा ही नहीं होती लेकिन जो कुछ उनके मुंह से निकलता है उसे बिना प्रश्न किए सुसमाचार का सत्य मान लिया जाता है।
2. आप देखेंगे कि वे लोग प्रभु परमेश्वर और उसके अनन्तकालीन राज्य का झण्डा ऊपर उठाने की बजाए अपनी सेवाओं के झण्डे ऊंचे उठाएंगे। उनकी बहुत सी सेवाऐं मसीह के **बजाए उनके व्यक्तिगत नामों से जानी जाती हैं** क्योंकि वे अपनी सेवा और अपना नाम ऊंचा उठाते हैं। प्रभु यीशु जो स्वयं सुसमाचार है (**मरकुस 1:1**), तौभी, जब उसने इस पृथ्वी पर अपनी सेवा आरम्भ की, उसने अपना नाम ऊंचा नहीं किया, परन्तु "परमेश्वर

के राज्य" के बारे में प्रचार किया (**मरकुस 1:15**)।

3. जब वे मंच या टेलीविजन पर होते हैं वे अपने घमण्ड में इतने चूर होते हैं कि वे बताते हैं कि उन्होंने और उनकी सेवाओं ने क्या-क्या उपलब्धियां प्राप्त कीं हैं, लोगों के जीवनों को स्पर्श किया है और **सदैव अपने विषय में और अपनी सेवाओं के विषय में वाह-वाही बटोरते हैं।** यह बहुत दुख की बात है जबकि परमेश्वर का वचन हमें निर्देश देता है कि अब हम जीवित न रहे परन्तु मसीह हममें जीवित है और हमारे जीवन मसीह में छिपे हुए हैं। **गलातियों 2:20** कहता है, *'मैं' मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब 'मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'।* मसीह ने परमेश्वर होने के बावजूद भी अपनी महिमा नहीं करवाई परन्तु उसने परमेश्वर को महिमा दी (यूहन्ना 8:50)। इसी प्रकार यीशु मसीह ने अपना (विज्ञापन) प्रचार नहीं किया बल्कि उसने अपने स्वर्गीय पिता की गवाही दी (यूहन्ना 5:31-32)।
4. वे **लगातार आर्थिक अनुदान का निवेदन करते रहेंगे** कि उनकी सेवा में अनुदान दें। यहां भी मसीह ने कभी किसी प्रकार स्वयं को या उसकी सेवा हेतु अनुदान को प्रोत्साहन नहीं किया और न ही निवेदन किया; विशेषकर आर्थिक रुप से। बल्कि उसने अपने चेलों को आज्ञा दी कि जब वे बाहर जाएं तो अपने साथ अपने रुपया भी न ले जाएं। क्योंकि सुसमाचार को कभी रुपयों की आवश्यकता नहीं पड़ी और न पड़ेगी केवल एक साहसिक मुंह जो परमेश्वर के आत्मा से भरा हो कि वह घोषित करे कि यीशु ही मसीह 'अभिषिक्त' है। न कि वे अपने लिए धन मांगे और अपनी संख्या के द्वारा सुसमाचार प्रचार करें, उन्हें शिक्षा और यह प्रचार करना चाहिए कि उनके सुनने वाले मसीह के चेले बनें (न कि उनके स्वयं के चेले बनें)। इस प्रकार वे अपने सुननेवालों के द्वारा संसार तक पहुंचे। मसीह की बुलाहट यह नहीं थी कि उसके द्वारा ही सेवा का काम बढ़े परन्तु उसने कहा, "सारे संसार में जाओ और अन्य राष्ट्रों को भी चेला बनाओ (**मत्ती 28:18-20**)।
5. वे **अपने तरस का प्रर्दशन करते हैं।** विकासशील राष्ट्र के एक गरीब बच्चे को अपनी गोद में लेने से हम मसीह के सच्चे सेवक या वास्तविक तरस को प्रकट करनेवाले नहीं बन जाते हैं, परन्तु

परमेश्वर की इच्छा पर चलने से अपने जीवन को परमेश्वर की शिक्षाओं और आज्ञाओं के अनुसार निर्मित करने और दूसरों को ऐसा ही सिखाने से हम उसके सच्चे सेवक बनते हैं **(मत्ती 7:21-24, मत्ती 28:20)**।

6. अन्त में वे अपने चेलों (सहभागियों) को सम्मोहित करते हैं अथवा हम उन्हें आर्थिक सहयोगी कह सकते हैं। क्योंकि यदि कोई उनके **मनपसन्द मंच या टी.वी. नायक** के विरुद्ध एक शब्द भी कहता है तो आप देखते हैं कि वे तूफान खड़ा कर देते हैं और आप पर बरस पड़ते हैं। मुझे आश्चर्य है कि कहीं यीशु मसीह के प्रति उनका ऐसा आचरण न हो। जैसा प्रेरित पौलुस और अपुल्लोस ने अपनी आरम्भिक कलीसिया की सेवा में देखा था, तब पौलुस ने अपने समय के विश्वासियों को **1 कुरिन्थियों 1:12-13** में झिड़का जो अपने आपको प्रभु यीशु के स्तर तक रख रहे थे।

एक व्यक्ति को उनकी हो-हल्ला पूर्ण आत्म प्रसन्नता की बातों से आसानी से ठगा जा सकता है जैसे वे चतुराई से सत्य को तोड़ते-मरोड़ते हैं। क्यों? क्योंकि बाइबल स्पष्ट रुप से कहती है कि एक **धोखा देनेवाली आत्मा** है जो चारों ओर घूमती-फिरती है और विश्वासियों पर आ पड़ती है यदि वे अपने हृदयों की चौकसी नहीं करते- कृपया समय निकालकर उन बहुत से धोखों के बारे में जानें जिनके विषय में बाइबल स्पष्टरुप से कहती है कि वे अन्त के दिनों में कलीसिया पर आ पड़ेंगे जैसा वचन- **2 थिस्सलुनीकियों 2:3,11; 2 तीमुथियुस 3:1-7; 2 तीमुथियुस 4:2-4; 1 यूहन्ना 2:26-28 और प्रकाशितवाक्य 16:14।**

हम में से बहुत से मसीही साधारण हैं और ऐसा महसूस करते हैं कि मसीही संगति के नाम में किसी भी कलीसिया और किसी भी मसीही के साथ (बिना भेद-भाव के) संगति कर सकते हैं। हमें सब को प्रेम करने के लिए बुलाया गया है (बिना भेद-भाव के)। परन्तु हमें केवल ऐसे भाईयों के साथ संगति रखने के लिए बुलाया गया है जो ज्योति में चलते हैं न कि अंधकार में। बल्कि बाइबल बहुत स्पष्ट करती है कि हमें उन लोगों के साथ कोई संगति नहीं करनी चाहिए जो मसीह यीशु की शिक्षाओं पर नहीं चलते। मैं बड़ी ईमानदारी

से निवेदन करता हूं कि आप समय निकलकर उन वचनों को पढ़े जो '**संगति की सीमाऐं**' निर्धारित करते हैं जैसा निम्नलिखित वचन में है:

2 यूहन्ना 1:8-11

*[8] अपने विषय में चौकस रहो कि जो परिश्रम हमने किया है उसको तुम गंवा न दो, **परन्तु उसका पूरा प्रतिफल पाओ** [9] जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है और उसमें बना नहीं रहता उसके पास परमेश्वर नहीं है; जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है उसके पास पिता भी है और पुत्र भी। [10] यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे उसे न तो घर में आने दो और न नमस्कार करो। [11] क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है वह उसके बुरे कामों में साझी होता है।*

जैसे आप **1 यूहन्ना 1:3-7; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6; 2 कुरिन्थियों 6:14-18** पढ़ेंगे तो आपको इसके विषय में और ज्ञान प्राप्त होगा।

तब यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्यों सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ने इन झूठे शिक्षकों और भविष्यद्वक्ताओं को ऐसा करने की अनुमति दी है? इसका उत्तर वास्तव में भविष्यद्वाणी के वचनों के रुप में **व्यवस्थाविवरण 13:1-4** में है जो कहता है कि परमेश्वर ने झूठे वक्ताओं को **उन्हें चिन्ह और चमत्कार करने की शक्ति के साथ अनुमति दी है** कि वह उन्हें परखे कि वे उसके सच्चे अनुयायी हैं जो उसके 'वचन की सत्यता और आज्ञा' के प्रति समर्पित हैं जो प्रत्यक्ष रुप से उसके प्रति प्रेम का प्रर्दशन है जो सत्य और जीवित परमेश्वर है।

व्यवस्थाविवरण 13:1-4
(झूठे शिक्षकों का दण्ड)

*"यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई **चिन्ह या चमत्कार दिखाए,** [2] और जिस चिन्ह या चमत्कार को प्रमाण ठहराकर **वह तुझ से कहे,** 'आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर जिनसे तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें', [3]*

तब तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर ***यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले,*** *कि ये मुझ से अपने सारे मन और* ***सारे*** *प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं? [4]* ***तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, और उसका भय मानना,*** *और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना।*

हम आज इस वचन को पूरा होते हुए देखते हैं, बहुत सी मसीही सभाओं और टेलीविजन के वक्ताओं के द्वारा। **उनका मुख्य उद्देश्य चिन्ह और चमत्कारों को प्रकट करना होता है परन्तु बहुत कम वे अपने श्रोताओं को इस बात से कायल करते हैं** कि उन्हें पाप से फिर कर पवित्र जीवन जीना है जैसी प्रभु ने आज्ञा दी है। इसके बजाए वे उन्हें बहुत सुन्दर और **चौड़े मार्ग** में ले जाते हैं जैसा हम **'बहुत'** से मसीहियों को पाते हैं जो उस पर चल रहे हैं, बुरा मत मानिए।

जब प्रेरित यूहन्ना ने **1 यूहन्ना 4:1** में कहा, *'हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को* ***परखो*** *कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं', मैं* विश्वास करता हूं कि प्रेरित यूहन्ना हमें याद दिला रहा था कि प्रभु ने हमसे कैसे कहा कि हम 'सच्चे लोगों को बनावटी लोगों से कैसे परख सकते हैं,' **मत्ती 7:15-17** में प्रभु यीशु ने कहा कि उनके पवित्रात्मा के फल से पहचानोगे और उनके चमत्कारों में न बह जाएं, **मत्ती 7:21-23।**

मसीह में प्रियो, **मेरी आप में से प्रत्येक से यह विनती है,** जो इसे पढ़ रहे हैं कि प्रभु यीशु ने चेतावनी दी है- **इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो!**

प्रभु ने मत्ती 7:15-17 में यह कहते हुए चेतावनी दी है:

[15] ***झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो,*** *जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं। [16]* ***उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।*** *क्या लोग झाड़ियों से अंगूर या ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? [17] इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।*

बहुत सी मसीही झूठी शिक्षाऐं हैं जिन्हें समझने के लिए बहुत आत्मिक ज्ञान की आवश्यकता है कि शैतान के धोखे को जान सकें। **आपको केवल इनकी आवश्यकता है:**

- ❖ **पवित्रात्मा**
- ❖ **पवित्र लिखित वचन पर (दिन और रात) मनन करना**

मसीह में प्रियो, यह अन्तिम घड़ी है, बहुत से ख्रीष्ट विरोधी भेड़ के भेष में निकल पड़े हैं। कृपया **अभी से** इस प्रकार के अनावश्यक मसीही टी. वी. कार्यक्रम को देखना बन्द करें (जो प्रभु परमेश्वर के नाम में आते हैं)। यदि नहीं तो आप उन सब के साथ लज्जित होंगे जब प्रभु यीशु प्रकट होंगे–**1 यूहन्ना 2:24-28।**

प्रभु यीशु ने पुनः मत्ती 7:21-23 में चेतावनी दी है:

*" 21जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु! कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। 22 उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, **क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?'** 23तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।'*

प्रभु यीशु कहते हैं कि 'सत्य भविष्यद्वक्ता और प्रचारक' वे हैं जो सच में उसकी शिक्षाओं और आज्ञाओं का पालन करते हैं। **मत्ती 7:24** *24 "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।*

प्रभु यीशु ने यह स्पष्ट किया कि **वास्तविक छुटकारा** तभी होगा जब हम पाप से फिरकर उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, जैसा उसने कहा:

यूहन्ना 8:31-32

तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा,

"यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। [32] *तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा।"*

आज बहुत से लोग अंगीकार करते हैं और प्रभु के निम्नलिखित वचन उद्धरित करते हैं:

'तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा।'

लेकिन केवल कुछ लोग यह जानते और समझते हैं कि यदि आप वापस उसी पद में जाए जहां से यह लिया गया है (जिसे हमने अभी पढ़ा है) वहां यह बात स्पष्ट है कि उसके वचन का पालन करने से ही **हम वास्तव में स्वतन्त्र हो पाएंगे** (सभी प्रकार के अन्धेपन और बन्धनों से)।

मुझे बताया गया है कि सांख्यिकीविद कहते हैं कि उनमें से 70% लोग जो प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रुप में बड़ी सुसमाचार की सभाओं में स्वीकार करते हैं **वे वापस अपने पुराने मार्गों में अपने विश्वास से हट जाते हैं** केवल इसलिए कि उन्हें यह नहीं बताया गया कि 'मसीही जीवन परीक्षाओं' का जीवन है और उन्हें आज्ञाकारिता में रहना आवश्यक है जैसी प्रभु यीशु ने आज्ञा दी थी, **मत्ती 28:20** ।

आज, **परमेश्वर के साथ अनन्तकाल/अनन्तकाल का राज्य'** आदि शब्द बहुत से नए युग के मसीहियों के लिए अधिक **अच्छे शब्द नहीं है क्योंकि उनके मन में यह आशा बहुत दूर है,** परन्तु वर्तमान शरीर और तुरन्त भविष्य को प्रसन्न नहीं करता है।

दुर्भाग्यवश आज के सुसमाचार और प्रचार में महान आज्ञा में बड़ी भूल है। प्रभु यीशु की महान आज्ञा केवल इसी के साथ नहीं रुकती है...

मत्ती 28:18-19

[18] यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। [19] *इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।*

परन्तु यह लगातार चलती है (जिसे हम पालन करने में भूल करते है) प्रभु यीशु की आज्ञा का दूसरा भाग.....**मत्ती 28:20**

20 *और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं।" आमीन्।*

आधुनिक कलीसिया की शिक्षा "आज्ञापालन की शिक्षा'' नहीं है, परन्तु "नम्र सुसमाचार" के सन्देशों के द्वारा उन्हें यह सिखाया जाता है कि परमेश्वर उन्हें कितना प्रेम करता है और कितना उन्हें आशीषित करना चाहता है।

पहला, हम भूल जाते हैं कि पवित्र परमेश्वर न केवल अनुग्रह से परिपूर्ण है परन्तु वह धर्मी और न्यायी परमेश्वर और भस्म करनेवाली आग है जो पाप को सहन नहीं करता। **क्योंकि यदि परमेश्वर केवल अनुग्रह से ही भरा है** (जैसा हममें से अधिकांश सोचते हैं) तब मैं चाहता हूं कि आप अपने आप से यह प्रश्न पूछें, **कि क्यों परमेश्वर.ने यह नाटक किया कि आदम और हव्वा को अपनी पवित्र उपस्थिति से हटा दिया?** क्योंकि वे केवल एक बार फिसले थे। वह इस मामले में पाप को नजरअन्दाज कर देता यदि वह केवल अनुग्रह से भरा था-ठीक है? नहीं-क्योंकि उन्हें एक 'न्यायी और पवित्र' परमेश्वर का सामना करना पड़ा अपनी अनाज्ञाकारिता के परिणामों के लिए!

बाइबल कहती है कि परमेश्वर कल, आज और सदा तक एक सा है और इसकी चर्चा पुराने नियम और नए नियम में है।

हमने पहले ही नए नियम में बहुत सी जगह देखा है कि प्रभु परमेश्वर अभी भी अपने वचन में मांग करता है कि एक बचाया गया पापी उसके वचन की आज्ञाकारिता में चलें। **2 कुरिन्थियों 11:3** में पौलुस विश्वासियों को चेतावनी देता है कि जैसे हव्वा शैतान के धोखे में आ गई, वैसे वे इन झूठे वक्ताओं के धोखे में न आएं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं और कहते हैं कि परमेश्वर के नियमों और आज्ञाओं का पालन करना या न करना कोई अर्थ नहीं रखता है। परन्तु यह बाइबल के बिल्कुल विरुद्ध है,

1 कुरिन्थियों 7:19
'न खतना कुछ है और न खतनारहित, ***परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है।***

ऊपर का पद इस बिन्दु को बताता है कि खतने के नियम को रीति रिवाजों के साथ हटाने से यह अर्थ नहीं है कि प्रभु परमेश्वर के नियम और आज्ञाऐं भी खिड़की से बाहर फेंक दी जाएं।

दूसरा, यदि आप यह सोचते हैं और आपको यह सिखाया जाता है कि प्रभु यीशु परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं को मिटाने आया था (उन्हें रीति-रिवाजों से जोड़ने के द्वारा) जैसे, *'तू चोरी न करना'* या *'तू हत्या न करना'* या *'तू व्यभिचार न करना'* **तब भ्राई/बहन आप बाइबल के परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह को समझने में गम्भीर गलती कर रहे हैं।** क्योंकि यह प्रभु यीशु ही है जिसने व्यवस्था को बहुत से स्थानों पर और कड़ा बना दिया जैसा हम मत्ती 5:21-28 में पढ़ते हैं।

प्रभु यीशु ने मत्ती 5:17-18 में स्पष्ट कहा,
"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं, *लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं।* [18] *क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।''*

परमेश्वर वास्तव में एक उद्धार पाए गए पापी को यह आज्ञा देता है कि वह पश्चात्ताप् करते हुए, अपने आप का इन्कार करते हुए और भूतकाल के पापों और विद्रोही मार्गों को छोड़ते हुए अपने 'अनन्तकाल के उद्धार' हेतु फल उत्पन्न करे; **न कि केवल वर्तमान सांसारिक और आर्थिक उद्धार ही**, जो दुर्भाग्यवश आज प्रायः प्रचार किया जाता है और समझा जाता है।

मैं ऊपर की बातों को क्यों इतने हियाव के साथ कह रहा हूं, क्योंकि आपको ताज्जुब होगा कि बहुत से तथाकथित आत्मिक अगुवे, प्राचीन, पास्टर, प्रचारक, शिक्षक जिनमें सैमिनरी के छात्र भी शामिल हैं वे अपने उद्धार न पाए हुए

पड़ोसी को एक एक करके सुसमाचार सुनाने के लिए समय नहीं देते हैं न उन्हें उनके प्रति बोझ है। इससे भी अधिक यह ताज्जुब की बात है कि उनमें से बहुतों को यह भी नहीं मालूम कि एक बिना उद्धार पाए हुए व्यक्ति को कैसे सुसमाचार सुनाऐं यद्यपि उनके सामने अवसर का बड़ा द्वार खुला है।

मेरा एक मित्र जो अपनी कलीसिया में एक प्राचीन था, हमारे घर आया (वह बहुत निराश था) उसने हमें बताया कि उसने अपने पास्टर को यह सुझाव दिया, जो बहुत वर्षों से अपनी कलीसिया में सुसमाचार प्रचार कर रहा था (यह मजाक की बात है यह कलीसियाओं में होता है जहां लोगों ने सुसमाचार कई बार ुसना है) कि यह अच्छा होगा कि कलीसिया को सुसमाचार प्रचार करने के बुनियादी तरीके बता कर उन्हें तैयार किया जाए। **क्योंकि उसने कहा था कि सुसमाचार को कलीसिया के बाहर प्रचार करने की आवश्यकता है न कि कलीसिया की चारदीवारी के अन्दर** (जैसी प्रभु ने चेतावनी दी कि यदि नमक नमक के साथ रहेगा तो अपना नमकीनपन खो देगा)। मेरे मित्र ने मुझे बताया कि उस दिन से उसके पास्टर ने उसे कलीसिया से अलग कर दिया।

इसी मित्र ने मुझे एक और बड़ी निराशाजनक घटना बताई कि एक बार किसी दूसरी कलीसिया ने इस कलीसिया की समिति को यह निवदेन भेजा कि क्या वह इनके बपतिस्मा की टंकी का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि उनकी कलीसिया में बपतिस्मा देने की टंकी नहीं थी। उस निवेदन को बहुत दिनों तक पीछे की ओर रख दिया गया। मेरा मित्र जो निराश था वह निवेदन कलीसिया की समिति के सामने लाया और कहा, "भाईयो, हम इस बहुत महत्वपूर्ण निवेदन को कैसे नज़रअन्दाज कर सकते हैं जब कि एक मसीह की देह को बपतिस्मा की टंकी की आवश्यकता है कि वह एक आत्मा को बपतिस्मा दे जो तैयार है?" उसे बताया गया कि इस निवेदन को नजरअन्दाज करने का कारण यह था कि वह निवेदन इसलिए ठुकरा दिया गया कि उन्हें उस समय बपतिस्मा की टंकी की आवश्यकता थी जब वह समय कलीसिया के लिए असुविधाजनक था। तब मेरे मित्र ने यह प्रस्ताव दिया कि वह उस दिन और उस समय कलीसिया भवन में आएगा, कलीसिया भवन को खोलेगा, बपतिस्मा की टंकी भरेगा, और बपतिस्मा के समय वहां रहेगा और कलीसिया भवन को बन्द करने की जिम्मेदारी लेता है। उसे ताज्जुब हुआ कि उसका

निवेदन ठुकरा दिया गया था।

आज **2 तीमुथियुस 3:5** की भविष्यद्वाणी वास्तव में पूरी हो रही है जैसा हम अपने चारों ओर देख रहें हैं। ***"वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे;"*** *ऐसों से परे रहना।*

जैसे मैं इस अध्याय को समाप्त करता हूं अपने आप को याद दिलाते हुए (यदि हम कहते हैं कि यीशु को सच में प्रेम करते हैं) इस बात की **जांच** उससे करें जो हमारे प्रभु ने कही है, तब हम उसके प्रेम को पूरा कर पाएंगे जो नीचे लिखा है:

यूहन्ना 14:15
"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

प्रेरित यूहन्ना भी इसी बात की गवाही देता है 'वही है जो प्रभु में सच्चाई से चलता है जैसा नीचे पद में लिखा है।

1 यूहन्ना 3:24
[24] **जो *उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह उसमें और वह उनमें*** बना रहता है.

अध्याय 5

नए युग के बहुत से फन्दे और झूठी शिक्षाएं!

नए युग के बहुत से फन्दे और झूठी शिक्षाएं हैं जो आज कलीसिया की चार दीवारी को मार रही हैं और ऐसा लगता है कि मानो हम भविष्यद्वाणी किए गए समय में रह रहे हैं। यह अन्तिम समय की भविष्यद्वाणी एक तरफ पूरी हो रही है जिसे देखकर बहुत निराशा होती है कि झूठी शिक्षाओं की कलीसिया उसमें धीरे-धीरे फिसल रही है। लेकिन दूसरी ओर, यह हमारे लिए उत्साह की बात है कि इसके द्वारा हम जान जाते हैं कि हम 'मसीह के पुनः आगमन' के कितने निकट पहुंच गए हैं। इस पुस्तक के इस भाग को पढ़ने के बाद, आप इस बात पर सहमत होंगे कि वास्तव में **यह परिपक्व समय है कि हम 'पश्चाताप्'** करके सत्य के वचन पर **'वापस लौट'** आएं।

अन्तिम दिनों की झूठी शिक्षाएं वैसी ही है जिन्होंने इस्राएल राष्ट्र को पुराने नियम के विभिन्न समयों में नष्ट कर दिया था, जब इस्राएल राष्ट्र परमेश्वर स मुड़कर अपने मूर्तिपूजक पड़ोसियों के पीछे चलने लगा। **लेकिन आज की झूठी शिक्षाऐं इतनी स्पष्ट नहीं है** जैसी **2 तीमुथियुस 3:5अ** में लिखा है,' *वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे'।*

नए युग की बहुत सी झूठी शिक्षाऐं हैं जो कलीसिया की चारदीवारी को मार रही हैं (और ये दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं)। मैंने इनमें से कुछ की सूची बनाई है जिनके विषय में **हमें जानकारी हो जाए और *हम सावधान हो जाएं!***

- **सारी शिक्षाऐं, सेमिनार, क्रूसेड पवित्रात्मा के वरदानों के अभ्यास पर सम्पन्न होते हैं न कि पवित्रात्मा के फल पर:**

आज बहुत से लोग शिक्षाएं, सभाऐं, सम्मेलन और रैलियां पवित्रात्मा के अभिषेक और वरदानों को प्राप्त करने में व्यस्त हैं। चंगाई, अन्य-अन्य भाषा या दुष्टात्माओं को निकालने के वरदानों को प्राप्त करने में लगे हैं (जिन्हें चंगाई की सेवा, अग्नि की सेवा या छुटकारे की सेवा के नाम से जाना जाता है), न कि एक बचाए गए विश्वासी को परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं को मानने के लिए विवश किया जाता है। क्या बाइबल इस बात पर बल देती है? अत: आइए देखें कि बाइबल हमें क्या सिखाती है:

- प्रभु ने कहा कि जब एक व्यक्ति का बपतिस्मा हो जाता है तब उसे **मत्ती 28:20** को पूरा करने की ओर आगे बढ़ना चाहिए ***'उन्हें वे सब बातें मानना सिखाओ जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है।*** *उसने* कभी नहीं कहा कि उन्हें यह सिखाओ कि दुष्टात्माऐं कैसे निकाली जाती हैं या अन्य चमत्कार कैसे किए जाते हैं। क्यों? क्योंकि यदि आप आज्ञाकारी हैं तो यह चिन्ह, प्रभु ने कहा स्वत: ही आपके पीछे हो लेंगे क्योंकि वे आज्ञाकारी चेलों के पीछे चलते हैं।

- **मत्ती 7:21-24** में प्रभु का उदाहरण याद रखें (जिसकी चर्चा) पहले की गई है) जब उसने एक दल से कहा कि "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना", जो सारे वरदानों में सबसे ऊपर था, परन्तु उसमें आत्मा के फल और परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता का आभाव था।

- हम यह भी देखते हैं कि प्रभु ने **लूका 10:20** में अपने चेलों को यह आज्ञा दी, "इससे आनन्दित मत हो कि आत्माएं तुम्हारे वश में हैं बल्कि इस बात से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।

- **मत्ती 11:20** में प्रभु यीशु ने उन नगरों का तिरस्कार किया जहां उसके अधिकांश चमत्मकार हुए थे-क्यों? क्योंकि वहां के लोगों ने वास्तव में अपने पुराने मार्गों से पश्चात्ताप् नहीं किया था।

- **आगे की सभी पत्रियां** मुख्यरुप से कलीसिया की उन्नति के

लिए लिखी गईं ताकि **'वे परिवर्तित जीवन'** को प्रकट कर सकें आत्मा के फल को प्रयोग करते हुए न कि केवल आत्मा के वरदान पर चलते हुए।

- **अन्त में, हम 1 कुरिन्थियों 13:1 में देखते हैं** जो कहता है कि एक व्यक्ति झनझनाती हुई झांझ और ठनठनाता हुआ पीतल है यदि उसके पास ये सारे वरदान हों लेकिन प्रेम न हो। बल्कि आगे के पद 2 में कहता है यदि हममें प्रेम नहीं है तो हम **कुछ भी नहीं हैं।**

तब आज क्यों उन बातों पर बल दिया जाता है जो समाप्त होने वाली हैं? इन वरदानों की चाह करना अच्छा है। याद रखें कि यह आत्मा का वरदान है न कि मनुष्य का वरदान। इसीलिए हम कभी-कभी ऐसी सभाओं में जाते हैं (बहुत से लोग परमेश्वर के महात्मय और उसकी बुद्धि को एक तरफ रख देते हैं और वे सोचते हैं कि उनके द्वारा बचाए गए विश्वासी में वे इन वरदानों को डाल दें) हो सकता है कि कभी-कभी हमें धोखे का वरदान मिल जाए जो परमेश्वर की ओर से न होकर दुष्टात्मा की ओर से हो और इसे पता करने में बहुत लम्बा समय लग जाए। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या हम परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर सकते जो इन वरदानों का देनेवाला है कि वह एक विश्वासी को उसके समय में वह वरदान दे जिसे वह उत्तम समझता है।

ऑस्वाल्ड चैम्बर्स की पुस्तक '*माई अटमोस्ट फॉर हिज हाईऐस्ट,* में एक परिच्छेद में उन्होंने हमारे जीवन में **'परमेश्वर के दृष्टिकोण'** के बारे में लिखते हुए एक शीर्षक एक कार्यकर्त्ता की बड़ी लगन के अन्तर्गत उन्होंने **2 कुरिन्थियों 5:9 लिखा है,** *"इसलिए हम परिश्रम करते हैं कि चाहे तुम्हारे पास हों या दूर, हम प्रभु का स्वीकार्य हो।"* एन.के.जे.वी. बाइबल कहती है, ***इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें चाहे न रहें, पर हम उसे भाते रहें।***

ऑस्वाल्ड चैम्बर्स अपने लेख में पुन: विचार से लिखते हैं, "इसलिए हम परिश्रम करते है...'यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने स्वामी के लक्ष्य को आगे रखें। इसका अर्थ है कि एक व्यक्ति अपने आपको उच्च आदर्श तक वर्ष के बाद वर्ष तक देखते हुए चलते जाना है, आत्माओं को जीतने का लक्ष्य

नहीं या कलीसियाओं की स्थापना का लक्ष्य नहीं या जागृति सभाओं का लक्ष्य नहीं, *परन्तु केवल एक ही उद्देश्य कि हम उसके द्वारा स्वीकारे जांए। यह आत्मिक अनुभव नहीं जिसकी कमी के कारण हम असफल होते हैं परन्तु परिश्रम के आभाव के कारण कि हम अपने आदर्श को सही बनाए रखें।"* सप्ताह में कम से कम एक बार अपने आपको परमेश्वर के सामने जांचे कि क्या आप अपने जीवन को उसकी इच्छानुसार स्तर तक रख रहे हैं। प्रेरित पौलुस एक ऐसे संगीतकार के समान है जिसे **अपने सुननेवालों के अनुमोदन** की आवश्यकता नहीं है, यदि उसे बस **अपने स्वामी का अनुमोदन मिल जाए।"**

ऑस्वाल्ड चैम्बर्स आगे कहते हैं, **"कोई भी लक्ष्य** जो बिल्कुल छोटा ही क्यों न हो उसके केन्द्र से दूर हो कि **'परमेश्वर का अनुमोदन' न मिले, हमारे द्वारा बहिष्कृत होगा *बाद में जाकर अन्त हो जाएगा।*** (जैसा **यूहन्ना 15:6** में है)। यह जांच करना सीखें कि **आपका लक्ष्य कहां जा रहा है,** और देखेंगे कि यह कितना आवश्यक है कि आप प्रभु यीशु मसीह का सामना करें। प्रेरित पौलुस ने कहा कि कहीं ऐसा न हो कि मेरी देह मुझे किसी और मार्ग पर ले जाए (यह याद रखते हुए कि प्रभु ने **मत्ती 7:13)** में चेतावनी दी है कि मैं अपने आपको लगातार जांचता हूं ताकि इसे वश में रखूं (**1 कुरिन्थियों 9:23-27**)। मुझे प्रत्येक ***बात को स्वामी के उद्देश्य से ही जोड़ना सीखना होगा*** और बिना रुके उसे स्थिर रखना होगा। प्रभु के साथ ***मेरा मूल्य वही है जो मैं एकान्त में हूं।*** क्या मेरा मुख्य लक्ष्य स्वामी को प्रसन्न करना है और उसे ग्रहणयोग्य बनना है? या यह इससे कम है ***चाहे वह कितना भी भला प्रतीत हो?***

❖ हमारे मार्ग में आने वाली सभी परीक्षाओं और रुकावटों को शैतान के काम की संज्ञा देने का फन्दा:

आज के युग में हम सब घड़ी के अनुसार चलने के आदी हो गए हैं कि जब जीवन में कुछ बातें ठीक नहीं होतीं तो हम तुरन्त कुढ़ने लगते हैं और कहने लगते हैं कि यह शैतान ही है जिसने हमारी योजनाओं को पूरा नहीं होने दिया और यह नहीं जानते कि वह परमेश्वर ही हो सकता है जिसने हमारी भलाई, सुरक्षा या हमें नम्र बनाने के लिए रुकावट डाल दी हो। बिलाम जब अपनी

गदही से क्रोधित हुआ जब वह आगे नहीं बढ़ रही थी, उसने चाहा कि यदि उसके पास तलवार होती तो वह उस (बेचारी) गदही को मार डालता, उसे नहीं मालूम था कि वहां "प्रभु का स्वर्गदूत था' जो उस गदही को आगे बढ़ने से रोक रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर बिलाम के जीवन को नाश कर दे।

गिनती 22:31-34 [31] *तब यहोवा ने बिलाम की आंखें खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब वह झुक गया, और मुंह के बल गिरकर दण्डवत् किया।* [32] *यहोवा के दूत ने उससे कहा,"तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूं, इसलिये कि तू मेरे सामने उल्टी चाल चलता है;* [33] *और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई। यदि वह मेरे समाने से हट न जाती, तो निःसन्देह मैं अब तक तुझे तो मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता।"* [34] *तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा,* ***"मैंने पाप किया है; मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मार्ग में खड़ा है।*** *इसलिये अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूं।"*

हम में से बहुत लोग 2 कुरिन्थियों 11:14 को गलत रुप से उद्धरित करते हैं *'यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुपधारण करता है।'* इस पद को बिना इसके सन्दर्भ में समझते हुए बहुतों के द्वारा भयानक रुप से उद्धरित किया जाता है।

यह वचन उन लोगों के लिए बोला गया जिन्होंने झूठे कार्यकर्त्ता होने के नाते अंधकार में चलने का जानबूझ कर फैसला किया है। यह निश्चित रुप से विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी लोगों के लिए नहीं है कि वे इसके फन्दे में फंस जाए जैसा हम इसे उस सन्दर्भ को मन में रखते हुए दूसरों के लिए उद्धरित करते हैं। क्योंकि यदि हम ऐसा सोचते हैं तो कोई भी किसी भी समय बिना किसी स्वैच्छिक पाप के धोखा खा सकता है। ठीक है?

2 कुरिन्थियों 11:13-15

[13] *क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रुप धरनेवाले हैं।* [14] *'यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है।'* [15]

इसलिये यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रुप धरें, तो कोई बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।

अत: हम ऊपर के वचन के 14वें पद को उद्धरित करते हुए बहुत स्पष्ट हो कि इसे ऐसा न समझा जाए कि एक विश्वासयोग्य कार्यकर्त्ता फन्दे में फंस गया है या दूसरों को फंसा रहा है, परन्तु इसे यही समझा जाए कि यह शैतान और उसके झूठे कार्यकर्त्ता हैं जो जानबूझ कर बुरे उद्देश्यों के साथ आते हैं और यह प्रकट करते हैं कि वे धार्मिकता के सेवक हैं।

कई बार बिलाम के मामले की तरह हम शैतान को हमारे मार्ग में रुकावट और गड़बड़ी डालने के लिए दोष देते हैं और उसके वास्तविक कारण को अलग कर देते हैं। हमें वास्तव में उन समयों में ऐसा करना चाहिए कि सबसे पहले प्रभु से यह पूछें, कि क्या यह प्रभु ही है जो उन रुकावटों को अथवा दिशा के बदलाव को हमारी भलाई के लिए और अपने बड़े उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमारे मार्ग में ला रहा है (जो हमारे मार्गों से बहुत ऊंचा है। **प्रेरितों के काम 16:6 में लूका लिखता है** *'वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्रात्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया।'*

मुझे दुख होता है जब मैं बहुत से मसीहियों को अपने जीवनों में शैतान और दुष्टात्माओं के प्रभुत्व के बारे में बोलते हुए सुनता हूं, परन्तु सत्य यह है कि उसका हमारे जीवन में कोई प्रभुत्व नहीं है, परन्तु परमेश्वर का है। क्योंकि शैतान सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अनुमति के बिना कुछ नहीं कर सकता है। और यदि हमारे जीवन में कुछ ठीक नहीं हो रहा है तो हमें सम्प्रभु सत्तासम्पन्न परमेश्वर के साथ जांच करनी चाहिए कि उसने क्यों यह अनुमति दी है। बजाय इसके कि हम शैतान के पाप के भय में रहें जैसा प्रभु यीशु ने स्पष्टत: से विश्वासियों को चेतावनी दी है कि केवल परमेश्वर से ही डरें, जो हमारे शरीर और आत्मा को नर्क में डाल सकता है-**मत्ती 10:28** ।

❖ कलीसिया भवन परियोजनाओं का फन्दा:

आज यह फन्दा हानि रहित लगता है लेकिन दूसरा फन्दा पूरे संसार में तेजी से फैल रहा है (छोटे छप्परवाले चर्च से लेकर सबसे बड़े चर्च तक)। कलीसिया भवन को सुन्दर बनाना और उसे विस्तृत करना (चाहे इसकी

आवश्यकता हो या न हो) आज केन्द्रीय उद्देश्य बन गया है। बजाय इसके कि हम अपने आपको देखें कि हम आत्मिक रुप से अपने आपको कैसा बना रहे हैं। हम इन भौतिक विस्तृतीकरण में व्यस्त हैं। मैं यह कहता हूं कि यदि इसकी वास्तव में आवश्यकता है तो कोई गलत नहीं है, परन्तु प्रायः ये मूर्तियां बन जाती हैं, घमण्ड के रुप में या कलीसिया की आन्तरिक प्रतिस्पर्धा में (यह कहते हुए कि हम अपने कलीसिया भवन को उससे बड़ा और बेहतर बनाएंगे) जिनके द्वारा दुर्भाग्यवश हमारा ध्यान उन बातों से हट जाता है जिनके लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमें बुलाया है।

आज कलीसिया के प्राचीन/परिषद/समिति और **प्रार्थना सभाऐं आर्थिक सभाऐं बन गई हैं और विश्वासयोग्यता से दिया गया अनुदान, आर्थिक योजना सभाओं में बदल गई है।** यह उद्देश्यहीन बातों में अपने आपको दिखावा में डालना है कि बड़े-बड़े भवन बनाएंगे जिसमें नमक बना रहे, परन्तु उनका परिणाम यह होता है कि हमारा नमकीनपन समाप्त हो जाता है और हमारी बुलाहट भी समाप्त हो जाती है, जैसी प्रभु यीशु ने हमें चेतावनी दी है। **इसके बजाय** हमें **परमेश्वर के द्वारा दिये गए स्त्रोतों का प्रयोग खोई हुई आत्माओं तक पहुंचने के लिए करना चाहिए**, और परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए मसीही कार्यकत्ताओं की मदद करना चाहिए और उन्हें सेवा हेतु भेजना चाहिए (बजाए इसके कि ये लम्बे, थकानेवाले और कभी-कभी अनुपयोगी आर्थिक परियोजनाओं में अपने आपको व्यस्त रखें)।

हम अपने आपको यह कह कर सही ठहराते हैं कि बड़ा कमरा या बड़ी कलीसिया भवन होगा तो अधिक आत्माऐं आएंगी। परन्तु बिना बाहर जाए और अपने समय को लगाए हम कैसे सोचते हैं कि यह सब पूरा होगा? आरम्भिक कलीसिया यीशु की आज्ञाकारी थी, 'तुम यरुशलेम, यहूदिया, सामरिया और संसार के दूर-दूर स्थानों में जाओ।' वे सताव के बीच में भी सुसमाचार प्रचार करने में व्यस्त रहे, जिसके कारण वे आगे बढ़ते गए न कि उन्होंने अपने तम्बू गाड़ लिए। **प्रारम्भिक कलीसिया/चेलों ने बड़े-बड़े आराधनालयों और भवनों को बनाने में समय बर्बाद नहीं किया कि उनमें नये विश्वासियों की बाढ़ आ जाएगी। तो वही दर्शन और लक्ष्य अब क्यों बदल गया?**

यह अपूर्ण रहेगा यदि मैं इसकी चर्चा न करूं कि आर्थिक हानि लोगों के बीच छोटी-छोटी गलतियों के कारण लम्बे समयों से चल रहे मुकद्दमों में होती है

जो बहुत सी कलीसियाओं और एक-दूसरे के बीच प्रतिद्वन्द्वता के कारण चल रहे हैं। न केवल भवन और सम्पत्तियों के ऊपर परन्तु कलीसिया में छोटी-छोटी बातों पर, जिनकी चर्चा मैं करना चहीं चाहता हूं, क्योंकि उनकी संख्या बहुत है और वे अलग-अलग कलीसियाओं और वर्गों के अलग-अलग मामले हैं **जो कलीसिया के स्वाद और उसके लिए परमेश्वर की बुलाहट को नाश कर रहे हैं जहां उसने कहा, 'वे तुम्हारे प्रेम के कारण जानें कि तुम मसीही हो।'** यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ये सब शैतान की योजना है, (अपरिपक्व मसीहियों को बन्धन में रखना जिनके जीवन में परमेश्वर का भय नहीं है) कि आपस में अनावश्यक रुप से कड़वाहट और अक्षमा उत्पन्न करे जिससे कलीसिया के लिए मसीह के दर्शन को डुबा सके सभी राष्ट्रों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें मसीह की सभी को आज्ञाओं को मानना सिखाओ।'

मसीह में प्रियो, क्या हम नहीं जानते और या **'परमेश्वर के वचन का भय नहीं है',** जो हमें स्पष्टरुप से अपने वचन में आज्ञा देता है:

- **1 कुरिन्थियों 6:1-6** *'[1] **क्या तुम में से किसी को यह हियाव है** कि जब दूसरे के साथ झगड़ा हो, तो फैसले के लिये अधर्मियों के पास जाए और पवित्र लोगों के पास न जाए? [2] क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? इसलिये जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं? [3] क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय न करें? [4] यदि तुम्हें सांसारिक बातों का निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं? [5] **मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूं।** क्या सचमुच तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाईयों का निर्णय कर सके? [6] **तुम में भाई-भाई में मुकद्दमा होता है, और वह भी अविश्वासियों के सामने।***
- **2 तीमुथियुस 2:1,3-4** *[1] इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा, [3] **मसीह यीशु के अच्छे योद्धा** के समान मेरे साथ दु:ख उठा। [4] **जब कोई योद्धा लड़ाई***

***पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे**, अपने आपको संसार के कामों में नहीं फंसाता।*

❖ कलीसिया में आराधना की टीम का फन्दा:

आज सच्ची मसीही आराधना का स्थान मसीही मनोरंजन ने ले लिया है। एक अच्छी क्वायर और संगीतकार होना कोई गलत नहीं है जो कलीसिया को पवित्र आराधना करने के लिए उत्तेजित और प्रोत्साहित करे।

परन्तु मैंने इस नए युग की आराधना की टीम को देखा है जिसने कलीसिया में सभी बातों के ऊपर अपना अधिकार जमा लिया है और ऐसा नहीं होना चाहिए। आधुनिक कलीसियाऐं अपनी गुणवत्तापूर्ण आराधना पर घमण्ड करती हैं। वे सब जगह प्रोजेक्टर लगाते, रिकार्डिग और टी.वी. मौनीटर आदि लगाते हैं और एक व्यक्ति ताज्जुब करता है कि आप आराधना करने आए हैं या 'आराधना की टीम' के दृश्यों को देखने आए हैं जिन्हें जीवन से भी बड़े-बड़े पर्दों पर दिखाया जा रहा है। जैसे हॉलीवुड में शूटिंग करते हैं और कैमरा आगे और पीछे रहता है और आराधना के ही स्वाद में हस्तक्षेप करते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कुछ लड़कियों का अभद्र पहनावा विशेषकर पवित्र आराधना के बिल्कुल विपरीत है जो बाइबल स्त्रियों के पहनावे के विषय में आज्ञा देती है जब वे आराधना के लिए आती हैं, जैसा हम **1 तीमुथियुस 2:9-10** में पढ़ते हैं। आरम्भिक कलीसिया में प्रत्येक जन सन्देश को बांटने, गीत और भजन गाने और रोटी तोड़ने में भाग लेते थे और यह सब कुछ, नम्रता और विनम्रता से पूर्ण सुहावने और पवित्रता के साथ किया जाता था।

आधुनिक आराधना उस प्रकार की आराधना से बहुत दूर है जिसकी हमें **भजनसंहिता 2:11 में आज्ञा दी गई है, *'डरते हुए यहोवा की उपासना करो, और कांपते हुए मग्न हो।'***

आज की कहानी बिल्कुल भिन्न है, जहां आराधना की टीम में लोगों का चुनाव उनके गुणों और वे कितने प्रसन्नचित हैं और वे सामने खड़े होकर कैसे अपने आपको प्रस्तुत कर सकते हैं, इसके आधार पर होता है, जबकि ऐसा

केवल मसीह के लिए उनकी लगन के आधार पर होना चाहिए (उनका अभिप्राय उसके आदर और सेवा के आधार पर)।

मैंने कुछ संगीतकारों को देखा है **जो एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में केवल मंच पर दृश्य दिखाने के लिए अवसर ढूंढ़ते फिरते हैं न कि 'आराधना के प्रति उनके आचरण के लिए।'** इनमें से बहुत से संगीतकार जब वे मंच पर होते हैं तो वे बहुत आनन्दित होते हैं, मजाक करते और खूब हंसाते हैं और वे यह आभास दिलाते हैं कि वे आनन्द को रोक नहीं पाते, परन्तु यदि आप उनसे सोमवार, मंगलवार या बुधवार को मिलें तो आप देखेंगे कि उनके पास यह आनन्द नहीं है। **वह सच्चा आनन्द नहीं है!** आप देखते हैं कि **बहुत सा बनावटीपन** मसीही आराधना में आ गया है।

मुझे बताया गया है कि आज मसीही संगीत एक बहुत बड़ा व्यापार बन गया है, विशेषकर अमरीका में। वे लोग जो इन मसीही आराधना के गीतों का उत्पादन करते हैं यह आवश्यक नहीं कि वह सब मसीही हों। कभी-कभी रचनाकार एक विश्वासी हो सकता है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि संगीतकार और गायक भी मसीही हों।

आज हमारे यहां व्यवसायिक समूह हैं (जो चारों ओर जाते रहते हैं) जो कलीसियाओं को उत्साहित करते हैं कि वे अपनी कलीसियाओं को आराधना के प्रशिक्षण हेतु कार्यशालाऐं आयोजित कराएं। एक विचार है, हमें कब से इस प्रकार की आवश्यकता पड़ी कि हमें परमेश्वर की आराधना के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है और यह हृदय की बात नहीं, मनुष्य और परमेश्वर के बीच और परमेश्वर के पवित्रात्मा की बात नहीं कि वे हमें आराधना करने में अगुवाई करें?

प्रभु यीशु ने पहले ही **मत्ती 15:7-9** में 'आराधना' पर अपनी समीक्षा सही रुप से स्पष्ट कर दी थी:

*[7] हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वणी ठीक ही की है: [8] 'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर **उनका मन मुझ से दूर रहता है। [9] और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,** क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'*

❖ यरुशलेम की मसीही पवित्र तीर्थयात्रा का आधुनिक युग का फन्दा:

एक और नया फन्दा है जो हाल ही में आया है और बढ़ता जाता है, वह है यरुशलेम की पवित्र तीर्थयात्राऐं! मैं भी रुचि के रुप में वहां जाना चाहता हूं (यदि ऐसा हो जाए)। परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण मैंने विश्वासियों को कहते सुना है कि वे 'पवित्रभूमि की यात्रा' हेतु धन बचा रहे हैं, **'मानो कि वे वहां अपने पवित्रीकरण के लिए जा रहे हों।** इससे मुझे दुख होता है।

एक हास्यापद बात यह है कि जब आप वहां जाते हैं तो आपके वर्ग और विश्वास के अनुसार कहानी और स्थान बदल जाते हैं। यदि आप केथोलिक हैं तो वे आपको मरियम से सम्बन्धित स्थानों और कहानियों के बारे में बताएंगे। एक व्यक्ति एक लकड़ी का टुकड़ा ले आता है और कहता है कि यह प्रभु यीशु की क्रूस का भाग है। मुझे ताज्जुब होता है कि उन्हें क्या लगता है कि प्रभु कितनी क्रूसों पर मरा कि प्रत्येक तीर्थयात्री को उसी क्रूस का एक-एक टुकड़ा मिला।

एक दिन मेरे एक हिन्दू मित्र ने बहुत दुखी होकर बताया जो मसीही बन गया था कि कभी-कभी मैं सोचता हूं कि मैं क्यों हिन्दू विश्वास से मसीहत में आ गया क्योंकि मसीहत में अधिकांश बातें वैसी ही हैं जैसे हिन्दू धर्म में है:

1. हमारे हिन्दु धर्म में गुरु होते हैं, और मैने देखा है कि मसीहियों के पास उनके पास्टर गुरुओं के रुप में होते हैं।
2. हम धार्मिक तीर्थयात्रा करते हैं और मैं देखता हू कि मसीही लोग अपनी पवित्र भूमि की तीर्थ यात्राऐं करते हैं।
3. हम अपनी नदियों से पवित्र जल लाते हैं और मैं देखता हूं कि मसीही लोग यर्दन नदी का पवित्र जल लाते हैं।

जब सामरी स्त्री प्रभु यीशु के पास आई और उसे पता चला कि वह यहूदी है तब उसने सबसे पहले कौन-सी बात कही?

(यूहन्ना 4:20-21, 23-24)

"तुम कहते हो कि <u>वह जगह जहां</u>

आराधना करनी चाहिए यरुशलेम में है।"

और ध्यान दें कि प्रभु यीशु मसीह का उसके लिए यह उत्तर था:
*'हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, **न यरुशलेम में।** तुम जिसे नहीं जानते, उसकी आराधना करते हो; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। **परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त** पिता की **आराधना आत्मा और सच्चाई** से करेंगे, **क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढ़ता है।***

आज प्रभु यीशु हम मसीही विश्वासियों के विषय में क्या सोच रहा होगा? जब उसने वही बात उस समय महसूस की कि यरुशलेम उसके लोगों के लिए एक विशेष चिन्ह के रुप में है जो एक मूर्ति के समान बनाया जा रहा था और उसने घोषणा की कि भविष्य में 'सच्चे आराधक' परमेश्वर पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे। तो क्या हम मसीही लोग सच्चे आराधक के रुप में व्यवहार करते हैं? क्या हम उसका इन्कार और तिरस्कार कर रहे हैं जिसे हमारे स्वामी और प्रभु परमेश्वर यीशु मसीह ने कहा कि 'सच्चे आराधकों' को **'आत्मा और सच्चाई'** से आराधना करना चाहिए न कि **'यरुशलेम'** में? नए नियम के विश्वासी होने के नाते हमारा विश्वास आत्मिक होना चाहिए अथवा क्या हम पीछे भौतिकता की ओर पुन: देख रहे हैं?

आप समझते हैं कि जब एक फन्दा आरम्भ होता है तो यह आरम्भ में हानिरहित प्रतीत होता है, बल्कि यह हमें अच्छा लगता है, बहुत से मस्तिष्कों में यह तार्किक लगता है, जैसे हव्वा को आरम्भिक पाप अदन की वाटिका में अच्छा लगा। जबकि हम मसीहियों को वास्तव में **'नए यरुशलेम'** की स्वर्ग से उतरते हुए आशा करनी चाहिए (**प्रकाशितवाक्य 21:1-3**), हम मसीही लोग पीछे की ओर जा रहे है। हम किसी से पीछे नहीं रहना चाहते हैं (जैसे संसार के अन्य धर्मों के अपने पवित्र तीर्थस्थान होते हैं), हम मसीही लोग भी उन विश्वासों की तरह करना चाहते हैं जो हमारे आसपास के लोग

करते हैं। इस्रायली राष्ट्र बार बार अपने पड़ोसी मूर्तिपूजक राष्ट्रों के अभ्यास का अनुसरण करने की परीक्षा में पड़ा और परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर भड़काया।

हम इन बातों को उन मसीहियों के बीच में करते हैं जो प्रतिदिन की रोटी कमाने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं और कभी-कभी उनके पास भोजन भी नहीं होता। और जब यह बातचीत आर्थिकरुप से पिछड़े मसीहियों तक जाती है तब वे अपने आपका अपर्याप्त महसूस करते हैं और वे ताज्जुब करते हैं कि क्या ऐसा करना आवश्यक है, तब प्रभु हमें क्या वास्तव में प्रेम करता है?

इन बातों का दुख का समय तब होता है जब हम ''पवित्र तीर्थ यात्रा'' की बात उन मसीही लोगों के बीच में करते हैं जो आर्थिक रूप से निर्बल है और ऐसी यात्राओं के बारे में निर्बल है और ऐसी यात्राओं के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं.

यह अन्तिम दिन का फन्दा अचानक मसीहत में आ गया है ओर तेजी से बढ़ता जाता है। आज यात्रा अभिकर्त्ताओं को छोड़िये, जिनका व्यापार ऊँचा होता जाता है। उन मसीही विश्वासियों की चाह के कारण जो यरूशलेम की यात्रा करना चाहते हैं इसके अलावा कलीसियाएं प्रार्थना समूह, मसीही विज्ञप्तियों में विज्ञापन और यहां तक कि पुलपिट से भी घोषणाऐं होती हैं जो इस नए फन्दे ''के विषय में'' यरुशलेम की पवित्र तीर्थयात्रा होती है।

मसीह में प्रियो, प्रभु यीशु के लिए भौतिकता (कुछ नहीं) का कोई अर्थ नहीं होता हे। यदि यह सही है, तो क्या यह हमसे यह चाहेगा कि हम किसी भी तरह से किसी भी भले या धार्मिक इरादों में उलझे रहें? आप देखें कि जब उसके चेले अपने चारों ओर की वस्तुओं और यहां तक कि यरुशलेम के मंदिर से प्रभावित हो रहे थे, तब प्रभु ने उनसे क्या कहा?

मत्ती 24:1-2

''जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिए उसके पास आए। [2] उसने उनसे कहा, **''तुम यह सब देख रहे हो न। मैं तुम से सच कहता हूं कि यहां**

पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।''

पुनः 2 कुरिन्थियों 5:15-17 हमें भौतिकता के आचरण के बारे में क्या बतता है? [15]

और वह इस निमित सबके लिए मरा कि जो जीवित हैं वे आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। [16] **अतः अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे।** यद्यपि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे। [17] इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, **पुरानी बातें बीत गई है;** देखा; सब बातें नई हो गई है।

क्यों ये नई सनक और नीतियां और भक्ति के रुप आ रहे हैं? इसीलिए क्योंकि कलीसिया अब उस अन्त के दिनों की भविष्यद्वाणी तक आ गई है जो **2 तीमुथियुस 3:1-9, 4:1-4 में लिखी है।**

जो भक्ति का भेष तो धरेंगे, परन्तु उसकी शक्ति को न मानेंगे। प्रश्न यह है कि क्या प्रभु अपने पुनः आगमन पर अपने शब्दों को पुनः दोहराएगें **''तुमने मेरे'' पिता के घर को डाकुओं की खोह बना दिया है?** क्या पत्रियों में भविष्यवाणी के वचन हम विश्वासियों पर पूरे होंगे जो परमेश्वर की संन्तान है, लेकिन उसके वचन के प्रति अनाज्ञाकारिता की सन्तान है?

इफिसियों 5:6

कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दें, क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है।

❖ **अन्तिम दिनों के विषय में खाने और पीने, शादी और विवाह के फन्देः**

प्रभु यीशु मसीह ने बड़ी स्पष्टता से **मत्ती 24:37-39** में भविष्यद्वाणी की है:

[37] ***जैसे नूह के दिन थे,*** *वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।* [38] *क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न*

चढ़ा, ***उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह होते थे।*** *और* [39] *जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।*

अपने चारों ओर देखें कि संसार मुख्य रुप से किन-किन बातों में व्यस्त हैं। वह हमारे व्यक्तिगत जीवन में व्यापारिक संसार, हमारा सामाजिक संगठन और विज्ञापन का संसार।

प्रभु ने दो बातों के विषय में विशेषरुप से भविष्यद्वाणी की है- **'खाने और पीने, शादी और विवाह'** आज मुख्य रुप से विज्ञापन के क्षेत्र के भाग हैं दूरदर्शन प्रर्दशन से लेकर इन्टरनैट तक, हमारे प्रतिदिन की बातों की सूची में सबसे ऊपर होता है। बहु-भोजनालय और पाक कला, भोजनकला के पाठ्यक्रमों और मुख्य भोजन बनानेवाले को कला प्रशिक्षण आदि देने की बातें चलती रहती हैं। **'खाने और पीने'** ने हमारे दिमागों को भर दिया है और आज भोजन बहुतों के लिए नए युग में ईश्वर बन गया है। दूसरी बात **'विवाह'** के बारे में है और यह बहुवचन में है, आज तलाक एक रिवाज अथवा शौक बन गया है और बहुविवाह सच्चाई बन गई है, जो आज लोगों की रुचि बन गई है।

यह बड़े दुख की बात है जो हम चारों ओर के संसार में देखते हैं और तब और भी अधिक दुख होता है जब मसीही लोग भी इन बुराईयों में लिप्त दिखते हैं।

मैं एक मसीही दम्पत्ति के बारे में जानता हूं जो 'विवाह बेबसाइट' से एक दूसरे को मिले थे। दुर्भाग्यवश (अब तक मैंने सुना है) पति अभी भी उस फन्दे से बाहर आने का प्रयास कर रहा है जहां वह अभी भी बहुत सी कुंवारी लड़कियों के सामने अपने आपको योग्य कुंवारों के रुप में प्रस्तुत कर रहा है क्योंकि अब यह उसकी लत बन चुकी है।

मेरे एक मित्र ने बताया कि उसकी कलीसिया के मुख्य पास्टर ने अपने सहपास्टरों से कहा कि वे किसी कारण अपने अपने जीवन साथियों के साथ खड़े हो जाएं, तब उन्हें पता चला कि आधे से अधिक पास्टर तलाकशुदा हैं। मुझे नहीं पता कि परमेश्वर के वचन ने हमारे जीवन में कब अपना महत्व खो दिया है। **1 तीमुथियुस 3:2** कहता है *'यह आवश्यक है कि*

अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो।' मैं नहीं जानता (सिखाना तो छोड़ो) कि हम कलीसिया में कौन सा नमूना रख रहे हैं। कुछ मसीही तो जोड़े बनाने में इतने व्यस्त हैं कि जैसे ही वे देखते हैं कि एक विवाह टूटने के कगार पर है, वे तुरन्त ही नए प्रस्ताव पर विचार करने लगते है।

मैं केवल इतना कह सकता हूं कि केवल बुद्धिमान ही **ध्यान देगा और तैयार रहेगा** यह जानते हुए कि यह सब प्रभु के पुनः आगमन के चिन्ह है, जैसा हम प्रभु की भविष्यद्वाणी **मत्ती 24:37-39** में देख रहे हैं जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं।

❖ आधुनिक बाइबल अनुवादों के फन्देः

लगभग पिछले 30-40 वर्षों में बाइबल के बहुत से आधुनिक अनुवाद हुए हैं। यह स्पष्टरुप से शैतान का काम है जो भरसक प्रयत्न करके परमेश्वर के वचन को आधुनिक सरल अनुवाद के द्वारा हल्का करना चाहता है जहां इस प्रक्रिया में अंग्रजी अनुवाद में बहुत से बाइबल के सत्यों को हटा दिया गया है। यह न केवल परमेश्वर के वचन **प्रकाशितवाक्य 22:18-19** का स्पष्ट उल्लंघन है, बल्कि दुख की बात है कि जहां केवल थोड़े ही लोग परमेश्वर के वचन को पढ़नेवाले हों, आज बहुत से लोग उन हल्के अनुवादों को पढ़ते हुए पाए जाते हैं। दुर्भाग्यवश इन अनुवादों के मूल अनुवादों में से बहुत से शब्दों को जोड़ा व हटाया गया है जो मुख्य रुप से अनुवादकों (मनुष्य) के हाथों में छोड़ा गया है कि वे जैसा ठीक समझें वैसा अनुवाद करें, बजाय इसके कि वे पाठक को मूल भाषा में परमेश्वर का वचन उपलब्ध कराऐं और पवित्रात्मा को अनुमति दें कि वह उन्हें समझाऐ (जैसा इसका प्रयोजन था)।

मुझे अंग्रेजी के कुछ अनुवादों को लिखने का बोझ है जो मेरी समझ के अनुसार उत्तम हैं कि आप उन्हें प्रयोग कर सकते हैं;

वे 'किंग जेम्स वर्जन', न्यू किंग जेम्स वर्जन, 'न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड वर्जन', 'रिवाइज्ड स्टैण्डर्ड वर्जन,' 'न्यू रिवाइज्ड स्टैण्डर्ड वर्जन', 'अमेरिकन स्टैण्डर्ड

वर्जन', यदि आप वास्तव में सरल अनुवाद पढ़ना चाहते हैं जिसमें परमेश्वर के वचन को बदला नहीं गया है तो वह है 'द लिविंग अनुवाद' या 'न्यू लिविंग अनुवाद'। कृपया ध्यान रखें कि ऊपर के वर्जन केवल अंग्रेजी अनुवाद के लिए ही हैं। जैसा पहले बताया गया है कि जहां तक अन्य भाषाओं के अनुवादों की बात है तो केवल उन्हीं अनुवादों का प्रयोग करें जो सीधे अधिकृत 'किंग जेम्स वर्जन' या 'न्यू किंग जेम्स वर्जन' से अनुवादित हों। क्योंकि मुझे बताया गया है कि देशी भाषा की बाइबल के अनुवाद भी शीघ्र ही इस कारण बदले जा रहे हैं कि सरल अनुवाद आ सकें।

❖ पवित्र बाइबल के वचनों को अन्य शास्त्रों के वचनों से मिलाने के फन्देः

सुसमाचार को फैलाने के नाम में हम कभी-कभी परमेश्वर की सीमा के बाहर पुल बनाते हैं। जब धनी युवक ने प्रभु यीशु मसीह के वचन का तिरस्कार किया तो प्रभु उसके पीछे दौड़कर नहीं गए कि एक पुल बनाकर किसी प्रकार उसे वापस लाए, परन्तु प्रभु ने उसे सत्य देकर उसे उसकी इच्छा पर छोड़ दिया। बल्कि प्रभु ने अपने चेलों से कहा कि अपने पैरों की धूल भी झाड़ लेना उन लोगों के नगर से बाहर जहां उन्होंने सत्य सुसमाचार की साधारण बातों का बहिष्कार किया है।

आज हम अपने चारों ओर के संसार में उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार सुसमाचार पहुंचाने के नाम पर हम परमेश्वर की उन सीमाओं को लांघते हैं जो उसने अपने लोगों के लिए बनाई हैं। उनमें से एक है कि हम परमेश्वर के पवित्र धर्मशास्त्र के वचनों के साथ-साथ अन्य विश्वासों के वचनों को भी मिलाते हैं। मैं समझता हूं उत्पत्ति बाइबल से आरम्भ हुई है और हम सब आदम और हव्वा से उत्पन्न हुए और इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर की कहानियां दूर-दूर तक फैल गई हैं। मेरे विचार से बातचीत को आरम्भ करने के लिए एक बिन्दु से शुरु करना ठीक है, परन्तु मसीह में प्रियो, मैं विश्वास करता हूँ शैतान और सत्य के बीच में केवल एक महीन पंक्ति है जिसे वह तोड़-मरोड़ देता है और 'घृणित' - 'पवित्रता' कहता है।

हमें (पवित्रात्मा के प्रति सम्वेदनशील होना है) सबसे पहले प्रभु परमेश्वर से पूछना है कि क्या वह इस प्रकार के तरीके से प्रसन्न है अथवा केवल मसीही

लोगों की संख्या बढ़ाने की बात है। क्योंकि परमेश्वर कभी भी संख्या से प्रभावित नहीं हुआ न होगा– वह विश्वासयोग्य विश्वासी की ओर देखता है जो सुसमाचार की साधारण सत्यता से उसके पास आता है और उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करता है।

मेरा एक मित्र है जो एक समय बहुत समर्पित मसीही था परन्तु अब वह इस हद तक पहुंच गया है कि दूसरे विश्वासों की मूर्तियों और चिन्हों को अपने कार्यालय में रखता है। वह कहता है कि इनसे सुसमाचार को समझाने में सहायता मिलेगी।

आप समझते हैं कि कभी-कभी उन पुलों को बनाने के प्रयास के कारण हम **अधर्मी वस्तुओं को धर्मी बनाते और घृणित वस्तुओं को पवित्र करके दिखाते हैं।** (जो परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है) मानो कि वे **पवित्रता से सम्बन्ध रखती हैं।**

उदाहरण के लिए, बहुत से मसीही लोगों ने झूठी शिक्षाओं को तोड़ दिया है और उनका विश्वास स्पष्टरुप से हमारे और बाइबल के समान ही है (बल्कि एक साधारण विश्वासी के लिए उसकी बाइबल और उनकी तोड़-मरोड़ की गई बाइबल के बीच अन्तर बताना कठिन होता है)। परन्तु क्या हम एक पुल बनाकर यह तो नहीं कहते कि हमारी बाइबल भी उनकी बाइबल के समान है? अथवा उनका तरोड़ा-मरोड़ा गया विश्वास हमारे विश्वास के समान है? ऐसे मामलों में क्या हम हिम्मत बान्धकर यह नहीं कहते कि शैतान ने कैसे सत्य को मरोड़ दिया है-**ठीक है?** अथवा यह उसके समान नहीं है कि एक व्यक्ति नकली शराब को अच्छी शराब में मिला देता है, जो स्पष्टरुप से पाप है, यह कहते हुए स्वीकार करना कि यह ठीक है क्योंकि इसकी उत्पत्ति नूह के समय से हुई थी?

प्रभु परमेश्वर के लिए 99% सत्य, सत्य नहीं है चाहे वह कितना भी पवित्र क्यों न दिखे। याद रखिए कि शैतान ने हव्वा के साथ सत्य को थोड़ा ही इधर-उधर किया और वह तथा आदम दोनों ही पाप में गिर गए। हम लैव्यव्यवस्था में पढ़ते हैं कि हारुन के पुत्र तुरन्त मर गए जब परमेश्वर ने स्वर्ग से आग डाली क्योंकि उन्होंने 'पवित्र आग' में थोड़ा ही बदलाव किया था जिसके बलिदान की आज्ञा परमेश्वर ने दी थी।

लैव्यव्यवस्था 10:1-3,10-11

*[1] तब नादाब और अबीहू नामक हारुन के दो पुत्रों ने अपना-अपना धूपदान लिया, **और उनमें आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग को** जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया। [2] तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दानों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए। [3] तब मूसा ने हारुन से कहा, "यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे।" और हारुन चुप रहा। [10] **जिससे तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सको।** [11] और इस्राएलियों को उन सब विधियों को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको बता दी हैं। और इस्राएलियों को उन सब विधियों को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको बता दी है।"*

बहुत सी नए युग की वस्तुऐं आ रही हैं। (जो पहले कभी नहीं थीं) और हमें बहुत सावधान होना है कि हम अनजान क्षेत्र में बिना प्रभु से सलाह लिए प्रवेश न करें (जो नवीनतम् मसीही सनकी लग सकता है) कहीं ऐसा न हो कि हम भी आग में भस्म हो जाएं।

बाइबल व्यवस्थाविवरण 7:25-26 में कहती है:

[25] उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियां तुम आग में जला देना; जो चांदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फंसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। [26]और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

और 2 कुरिन्थियों 6:14-18 में *बाइबल कहती है, ...और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव?" "...और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध?...इसलिये प्रभु कहता है "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा ..."*

दूसरे शब्दों में हमें अलग रहना चाहिए और पवित्र को अपवित्रता के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

प्रेरित पौलुस **रोमियों 1:16** में कहता है *"क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।*

1 कुरिन्थियों 1:17-18 कहता है:

17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे। 18 क्योंकि ***क्रूस की कथा*** *नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है।*

मसीह में प्रियो, प्रभु यीशु के साधारण परन्तु सामर्थी सुसमाचार में स्थिर रहें और आप कभी गलती नहीं करेंगे और निश्चय ही परमेश्वर का पक्ष प्राप्त करेंगे।

❖ टी. वी. कलीसियाओं के फन्दे

एक और नए युग की कलीसिया है जो आपके आरामदायक घरों की बैठक या प्रथम कक्ष में चलती है। मुझे बताया गया है कि इसका अर्थ क्या है, चूंकि जीवन बहुत व्यस्त है और लोग इसे सही मानकर अपने टी.वी. को आरम्भ करते और सीधे नेट के द्वारा इन मसीही प्रसारणों को देखते हैं जो पर्दे पर आते हैं और उन वक्ताओं को चुनते हैं जो उनके कानों की खुजली के अनुसार होते हैं।

2 तीमुथियुस 4:3-4 ठीक ही भविष्यद्वाणी करता है:

'क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर ***कानों की खुजली*** *के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार* ***अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे।'*[4] *और अपने कान सत्य से फेर कर कथा-कहानियों पर लगाएंगे।*

इस फन्दे का परिणाम यह होता है कि यह हमें अपना ही मसीही द्वीप बनाता

है और हम अन्य विश्वासियों की संगति की आत्मा को मारते हैं, जो एक मसीही जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

❖ पवित्रात्मा की ही प्रार्थना, उपासना और प्रशंसा करने और प्रभु यीशु और प्रभु परमेश्वर को एक तरफ हटा देने का फन्दा:

आधुनिक कलीसिया में बहुत से लोग पवित्रात्मा से प्रार्थना करने का छोटा रास्ता अपनाते हैं यह सोचते हुए कि यह उनकी समस्या का समाधान करने का आसान और शीघ्र तरीका है। याद रखें, परमेश्वर के बाइबल पर आधारित वचनों से हटना पतली बर्फ पर चलने के समान है।

आपने देखा कि इन सब फन्दों ने कलीसिया में मक्खियों की रेखा बना दी है और मुख्यत: बाइबल के शुद्ध ज्ञान के आभाव में जिसका एक परिणाम देखने को मिलता है, जो पवित्र त्रिएकता को अलग-अलग करते हैं, जैसे केवल यहोवा, केवल यीशु मसीह और अब केवल पवित्रात्मा।

सभी फन्दों का आरम्भ बहुत हानिरहित होता है, जैसे, हमें पवित्रात्मा से प्रार्थना करना और उसकी आराधना करने के लिए उभारा जाता है। आइए, अब इसका अध्ययन करें कि ये कितने भी हानिरहित क्यों न दिखें, क्या ये बाइबल पर आधारित हैं:

प्रभु यीशु ने यूहन्ना 16:23 में कहा:

*"....यदि **पिता से कुछ मांगोगे,** तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।"*

प्रभु ने पुन: यूहन्ना 14:14 में कहा:

*'यदि तुम मुझ से **मेरे नाम से कुछ मांगोगे,** तो मैं उसे करूंगा।'*

पूरी बाइबल में मैंने कहीं नहीं पढ़ा *'पवित्रात्मा के नाम से पिता से मांगो।'* न ही मैंने ऐसा लिखा हुआ पढ़ा है कि 'पवित्रात्मा से कुछ भी मांगो।' आप जानते हैं क्यों? क्योंकि जिस क्षण हम पवित्रात्मा से अलग से प्रार्थना करना और बोलना आरम्भ करते हैं, मैं विश्वास करता हूं कि हम अपने मस्तिष्कों में पहले ही प्रभु यीशु को उसके आत्मा से अलग कर देते हैं।

हमारी चेतावनी की घण्टी बन्द हो जाती है जब हम देखते हैं कि

अलग-थलग पड़े झूठे मत केवल यहोवा से मांगते हैं तो इसे क्यों बन्द करने की आवश्यकता नहीं है। जब हम त्रिएकता के केवल एक व्यक्ति पिता परमेश्वर से ही मांगना आरम्भ करते हैं? क्योंकि पवित्रात्मा और कुछ नहीं, परन्तु प्रभु यीशु का ही आत्मा है जिसे प्रभु ने हमारे लिए छोड़ा है। अपने पवित्रात्मा की भूमिका प्रभु यीशु ने स्वयं निम्नलिखित पदों में स्पष्ट की है:

यूहन्ना 14:26

*परन्तु सहायक अर्थात् **पवित्र आत्मा** जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें **सिखाएगा,** और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, **वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।***

यूहन्ना 16:12-16

*[12] मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। [13] परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का **मार्ग बताएगा, क्**योंकि **वह अपनी ओर से न कहेगा** परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और **आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।** [14] वह **मेरी महिमा करेगा,** क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। [15] जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैंने कहा कि **वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।***

❖ पास्टरों/प्रचारकों को परमेश्वर और उसके वचन से ऊपर रखने का फन्दा:

प्रभु यीशु ने कहा, 'मेरे पास आओ।' उसने कभी नहीं कहा कि अमुक व्यक्ति के पास जाओ। यदि परमेश्वर यह चाहता है कि आप किसी व्यक्ति के द्वारा सुने तो वह उस व्यक्ति को आपके पास लाएगा, जैसा हम पौलुस और हनन्याह के बारे में **प्रेरितों के काम 9** अध्याय में पढ़ते हैं। आप जानते हैं कि परमेश्वर एक आज्ञाकारी विश्वासी से कई तरीकों से बोल सकता है, यह एक व्यक्ति से उसके प्रात:कालीन बाइबल मनन के समय हो सकता है या यह एक पास्टर और प्रचारक के उपदेश के द्वारा हो सकता है। **आज हम मसीही लोग कभी-कभी इस्राएलियों के आचरण को अपनाते हैं जब वे जंगल में थे,** जब प्रभु परमेश्वर उनका परमेश्वर, राजा और याजक होना

चाहता था तब उन्होंने उसके साथ बातचीत करना न चाहा। उन्होंने मूसा से कहा कि वे मूसा के द्वारा सुनेंगे, परमेश्वर के द्वारा नहीं।

निर्गमन 20:19 *"वे मूसा से कहने लगे, " तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे: **परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे**, ऐसा न हो कि हम मर जाएं।"*

मैं अन्य विश्वासियों से सलाह लेने के विरुद्ध में नहीं हूं जो मसीह में परिपक्व हैं। यह पास्टर, प्रचारक, याजक, बिशप या सहविश्वासी हो सकता है और यह गलत नहीं है। परन्तु मैं बस इतना कह रहा हूं कि हमें सर्वज्ञानी परमेश्वर की इच्छा जानने में जांच करनी चाहिए जो हमारी परिस्थिति को मनुष्य से अधिक भली-भांति रुप से जानता है और यदि हम उसे खोजेंगे तो वह निश्चित रुप से हमसे वचन के द्वारा प्रत्यक्ष रुप से बोलेगा या अपने मार्ग में चलने में अगुवाई करेगा।

कई बार हम सुनते हैं कि परमेश्वर बोलता और चुनौती देता है कि हम उसके लिए विश्वास का कदम उठाऐं। दुर्भाग्यवश हम शैतान के (अच्छे और पुराने) हथकण्डों के शिकार हो जाते हैं, और उसकी आवाज हमारे कानों में आती है, 'क्या परमेश्वर ने वास्तव में यही कहा है।' (बजाए परमेश्वर पर भरोसा करने के) और मनुष्य से पूछते हैं जो कभी-कभी हमारी पृष्ठभूमि को भी नहीं जानता कि वह हमारे जीवन में **परमेश्वर की इच्छा** का चुनाव करने में हमारी सहायता करे। स्पष्टरुप से उसके सामने यह परीक्षा आएगी कि जो उसे सुहावनी बात लग रही है वह सलाह देते समय कहेगा और यह आवश्यक नहीं कि वही प्रभु परमेश्वर की इच्छा हो।

इसके साथ ही इन अन्तिम दिनों में बहुत से भेड़िए भेड़ों के भेष में हैं जैसे हम भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वक्तिनों के पास दौड़कर जाते हैं, और हम नहीं जानते कि वह सलाह परमेश्वर की पवित्र और सिद्ध इच्छा में है कि नहीं।

गिरने का कारण यह है कि उनके पास बाइबल (परमेश्वर के वचन) का ज्ञान नहीं है जो हमें प्रतिदिन सलाह देता है, झूठी शिक्षाओं और उन बातों को प्रकट कर देगा जो परमेश्वर की इच्छा में नहीं है।

विधर्मी प्रचार में जुड़ जाने के प्रति (जो बहुत से मसीही टी. वी. प्रसारण पर

आते हैं जो चौड़े मार्ग पर ले जाने के लिए अगुवाई करते हैं और कभी भी अपने दर्शकों को कायल नहीं करते कि वे धार्मिकता का पवित्र जीवन जीएं) चेतावनी प्रेरित यूहन्ना ने हमें दी है कि हम सावधान रहें:

1 यूहन्ना 2:28

अत: हे बालको, उसमें बने रहो कि जब वह प्रगट हो तो हमें हियाव हो, और ***हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।***

आज ऐसे झूठे प्रचारकों के द्वारा यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के वचन पूरे हो रहे हैं:

यिर्मयाह 23:17

17 जो लोग मेरा तिरस्कार करते हैं उनसे ये भविष्यद्वक्ता सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है, 'तुम्हारा कल्याण होगा' और ***जितने लोग अपने हठ ही पर चलते हैं, उनसे ये कहते हैं,*** *'तुम पर कोई विपत्ति न पड़ेगी।'*

प्रेरित पौलुस ने **1 थिस्सलुनीकियों 5:3 में बताया** है कि जब लोग यह कहने लगेगे कि **'शान्ति और सुरक्षा है'** तभी अचानक विनाश आ पड़ेगा जैसे एक स्त्री के ऊपर जच्चा की पीड़ाऐं होती हैं और वे बच नहीं पाएंगे।

प्रभु अपने लोगों की दशा पर दुखी होता है जब यिर्मयाह की एक और भविष्यद्वाणी पूरी होती है:

यिर्मयाह 8:7:

7 "आकाश में लगलग भी अपने नियत समयों को जानता है, और पण्डुकी, सूपाबेनी, और सारस भी अपने आने का समय रखते हैं; परन्तु मेरी प्रजा यहोवा का नियम नहीं जानती।"

यिर्मयाह 4:22

'क्योंकि मेरी प्रजा मूढ़ है, ***वे मुझे नहीं जानते;*** *वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं* ***जिनमें कुछ भी समझ नहीं।*** *बुराई करने को तो वह बुद्धिमान हैं परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते।'*

आज जबकि अनाज्ञाकारी पुत्रों पर परमेश्वर के क्रोध के आने के बहुत से चिन्ह प्रकट हो रहे हैं तौभी हम में से बहुत से मसीहियों के पास संसार में समयों और कालों को समझने का ज्ञान नहीं है।

आपके लिए सबसे बुद्धिमानी की बात यह है कि बिना देरी किए हम अपने घरों को ठीक कर लें। परमेश्वर के पवित्र भय में बढ़ते जाएं और मसीह यीशु के शीघ्र पुन:आगमन के लिए तैयार रहें, मूर्ख न बनें और अपने पुराने अपश्चात्तापी मार्गों में न पड़े रहें।

आइए, हम इस भाग को पुराने नियम के वचन को दे-कर समाप्त करें कि इससे हमारे जीवन में आत्मिक उन्नति हो और हम जानें कि प्रभु परमेश्वर अपने लोगों से क्या अपेक्षा करता है।

2 इतिहास 15:12-15

*[12] उन्होंने वाचा बान्धी कि हम **अपने सारे मन और अपने सारे जीव** से अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे; [13] क्या बड़ा क्या छोटा या स्त्री क्या पुरुष, जो कोई इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे, वह मार डाला जाए। [14] उन्होंने जयजयकार के साथ तुरहियां और नरसिंगे बजाते हुए ऊंचे स्वर से यहोवा की शपथ खाई। [15] यह शपथ खाकर सब यहूदी आनन्दित हुए क्योंकि उन्होंने अपने सारे मन से शपथ खाई और **बड़ी अभिलाषा से उसको ढूंढ़ा** और वह उनको मिला, और यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्राम दिया।'*

भाग 2:

परमेश्वर के वचन पर मनन करना

(न कि मनुष्यों के वचनों पर)

अध्याय 1

मसीह में प्रियो, उससे पहले कि मैं इस पुस्तक के अगले भाग में चलूं मैं यहां थोड़ा रुक कर उत्साह देना चाहूंगा। यदि आपमें से कोई थोड़ा निरुत्साहित महसूस कर रहा है या बाइबल के उन पदों के द्वारा कायल हुए हैं जिन्हें यहां बांटा गया है तब मैं कहूंगा कि प्रत्येक सच में पश्चात्तापी मसीही के लिये प्रभु यीशु के लहू में परमेश्वर की दया और प्रेम के कारण आशा है, जैसे हम नीचे पढ़ते हैं:

1 यूहन्ना 1:7

7 पद यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

1 यूहन्ना 2:1-2

1 हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह; 2 और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी।

अब इस पुस्तक के दूसरे भाग पर **परमेश्वर के वचन पर मनन करना, न कि मनुष्यों के वचनों** पर चलते हुए, मैं इस बात से आरम्भ करना चाहता हूँ कि एक विश्वासी के लिए परमेश्वर के वचन-बाइबल पर प्रतिदिन मनन करने की प्रक्रिया पर कोई समझौता नहीं होना चाहिए। यह एक तरीका है

जिससे एक विश्वासी–वास्तविक मसीही' सत्य और असत्य के बीच अन्तर कर सकता है।

याद रखें कि जब हम अन्ततः
इस बड़े महान और न्यायी परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगेः

यह महत्वपूर्ण नहीं होगा कि–आपने और मैंने क्या सोचा था, न ही यह महत्वपूर्ण होगा कि हमें क्या सिखाया गया था

परन्तु यह महत्वपूर्ण होगा कि क्या लिखा है

आमीन!

यहूदियों को बाइबल के विषय में (कम से कम अक्षरों में) हम आज के मसीहियों से अधिक अच्छा ज्ञान था, इस विषय में कि परमेश्वर के वचन–बाइबल में क्या लिखा है। आप जानते हैं कि प्रभु यीशु के समय में पृथ्वी पर कोई भी वार्तालाप, तर्क–वितर्क या स्पष्टीकरण सदैव इस बात पर निर्भर था कि 'बाइबल में क्या लिखा है।'

प्रभु का पहाड़ी उपदेश और लोगों को दी गई शिक्षाऐं उन बातों पर निर्भर थीं कि क्या लिखा है। प्रभु यीशु ने प्रायः उन बातों का सन्दर्भ दिया जो लिखी हुई थीं। प्रभु और फरीसियों तथा प्रभु और शैतान के बीच हुई वार्तालाप का आधार भी लिखित वचन पर था। 'यह लिखा है,' 'यह भी लिखा है...।'

प्रभु दुखी होता है कि यद्यपि उसने अपना लिखित वचन हमें पढ़ने के लिए दिया है, तौभी बहुत से लोग केवल मनुष्य के वचन सुनते हैं। इसके बारे में सोचें, यदि **परमेश्वर का वचन केवल सुनने के लिए होता** तो स्वयं प्रभु सीनै पर्वत पर उत्तर कर नहीं आता और अपनी अंगुली से 10 आज्ञाऐं नहीं लिखता। वह केवल मूसा को बता देता और उससे कहता कि मेरा सन्देश नीचे ले जाकर लोगों को दे देना। नहीं, परन्तु सर्वज्ञानी परमेश्वर जानता है कि उसका पवित्र लिखित वचन क्या कर सकता है जब लोग इसे पढ़ते हैं।

दुर्भाग्यवश, आज परमेश्वर के पवित्र और अद्भभुत वचन की अपेक्षा विश्वासी प्रचारक का अधिक सम्मान करते हैं और उसे ढूंढ़ते फिरते हैं।

प्रचारक को परमेश्वर से अधिक प्रत्यक्ष रुप से सुना जाता है, (जो लगातार हमसे प्रतिदिन के वचन और मनन के द्वारा बोलता है) क्यों? पहला, क्योंकि हम आलसी होने के कारण अल्पमार्ग ढूंढ़ते हैं बजाय इसके कि समय निकालकर परिश्रम से परमेश्वर के वचन को पढ़ें और स्वयं उसे जाने। दूसरा, हम अपने आपको मूर्ख बनाते हैं और हमें मूर्ख बनाया गया है कि परमेश्वर का वचन प्रत्यक्ष रुप से फल नहीं लाता, हमारे जीवन प्रतिदिन के जीवन में लागू नहीं होता और न ही इसका कोई महत्व है। हम इसे केवल एक इतिहास की पुस्तक समझते हैं।

मैं नहीं जानता कि हम किसे मूर्ख बनाते हैं यह सोचकर कि बाइबल केवल परमेश्वर की बातों का लिखित ब्यौरा है जो उसने अपने भविष्यद्वक्ताओं और उसके बाद अपने पुत्र के द्वारा उस समय के लोगों से बोली थी।

एक और मत है कि पुराना नियम यहूदियों के लिए और नया नियम उस समय की कलीसिया के लिए था।

यदि ऐसी बात है तो यशायाह भविष्यद्वक्ता के साधारण वचनों का उदाहरण लें, और अपने आप देखें कि इसका बड़ा भाग हमारे प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पूरा होने के लिए लिखा गया। नए नियम में पुराने नियम की बहुत सी भविष्यद्वाणियों का पूरा होना पाया जाता है जो प्रभु यीशु के जन्म, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जो एलिय्याह का प्रतीक था, कि वह मसीह प्रभु यीशु के आने का मार्ग तैयार करे, अन्य भविष्यवाणी जो प्रभु यीशु मसीह के प्रथम आगमन से सम्बन्धित थीं, वे चारों सुसमाचारों में लिखी हैं। प्रभु यीशु मसीह ने एक बार स्वयं माना कि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा लिखा गया है वह उसमें पूरा हो रहा है। उसने अपने जीवन में पुराने नियम की महान सामर्थ और उपयोगिता देखी थी, जैसा नीचे लिखा है:

लूका 4:16-21

16 फिर वह नासरत में आया, जहां पाला-पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। 17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई और उसने पुस्तक खोल कर वह जगह निकाली जहां यह लिखा था। 18 प्रभु का

*आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचारक करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं [19] और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं। [20] तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया; और आराधनालय के सब लोगों की आंखें उस पर लगीं थीं। [21] तब वह उनसे कहने लगा, **'आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।'***

यह हमारी पूर्ण ढीठता होगी कि हम कहें या सोचें कि 'पवित्रशास्त्र' (प्रभु यीशु मसीह के जीवन में इसकी प्रत्यक्ष उपयोगिता हो सकती है लेकिन) की भविष्यद्वाणी का हमारे जीवन में कोई अर्थ नहीं है। तौभी, दूसरी ओर हम पुराने नियम की बहुत सी प्रतिज्ञाओं का दावा करते हैं। दूसरी ओर, हम यह मानते हैं कि पुराने नियम की बहुत सी भविष्यद्वाणियां अभी भी पूरी होना बाकी है।

धर्मविज्ञान के द्वारा आज एक दोष आ गया है जो इस प्रकार है कि प्रत्येक वचन केवल उसके सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है (मैं इस बात से सहमत हूं कि यह सही होता है यदि हम इसे सन्दर्भ में समझें), परन्तु यह सोचना कि केवल यही तरीका है वचन को समझने का तो यह वचन पर जंजीर लगाने के जैसा है, जहां पवित्रात्मा को हमारे वर्तमान परिस्थिति में भविष्यद्वाणी के रुप में वचन से बोलने के लिए कोई अनुमति नहीं दी गई है, जिसके लिए वास्तव में परमेश्वर का वचन है।

प्रभु यीशु ने पुराने नियम का डेढ़ पद ही उद्धृत किया था और वह पद उस दिन पूरा हुआ। यदि आप इस वचन को पढ़ें जो प्रभु यीशु ने **लूका 4:17-21** में यशायाह से उद्धत किया था, इसके उसी समय, यह उसके किसी भी सन्दर्भ से नहीं जुड़ता क्योंकि यशायाह भविष्यद्वक्ता ने इसे भविष्यद्वाणी के रुप में बोला था। आगे आप देखेंगे कि जब प्रभु यीशु ने **यशायाह 61:1-2 को उद्धृत** किया था तब, प्रभु ने पद 2 को पूरी रीति से उद्धृत नहीं किया। क्यों? क्योंकि उसी पद का दूसरा भाग **यशायाह 61:2** में कहता है *'हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन'* यह भाग प्रभु यीशु के 'प्रथम आगमन' पर पूरा नहीं हुआ, परन्तु यह भाग प्रभु यीशु के बारे में 'दूसरे आगमन' पर पूरा होगा। एक

दिन इस पद का दूसरा भाग पूरा होगा और मेरा अनुमान है कि यह उस से शीघ्र होगा जैसा कि आप सोचते हैं।

आप देखेंगे कि पुराने नियम की लगभग प्रत्येक भविष्यद्वाणी स्पष्ट रुप से सन्दर्भ के बाहर प्रकट होती है जब वह बोली गई थी, उस समय वह पूरी नहीं हुई (विशेषकर यदि आप उन भविष्यद्वाणियों का अध्ययन करें जो मसीह के जीवन में पूरी हुई हैं) भविष्यद्वक्ता अचानक अपने विचार को तोड़ता हुआ भविष्यद्वाणी करता है।

आप समझें कि यही वह कारण था कि धर्मविज्ञानी यहूदियों ने उन भविष्यद्वाणियों को पूरा होते हुए सन्देह किया उन वचनों को जो प्रभु यीशु मसीह से सम्बन्धित थे। हमें सावधान होना है कि हम धर्मविज्ञान में इतने व्यस्त न हों कि वे हम पर नियन्त्रण करें, नहीं तो इतिहास मसीहियों के साथ दोहराया जाएगा और उन यहूदी धर्म ज्ञानियों की तरह हम भी इन्हें खो देंगे।

मैं विश्वास करता हूं कि प्रभु परमेश्वर के पवित्र वचन की कोई सीमा नहीं है। यह समय से परे है, यह उपयोगी है और यह लगातार प्रकाशन देता है और अनन्तकाल तक प्रकाशन देता रहेगा। मैं यह भी विश्वास करता हूं कि **परमेश्वर के वचन में वह क्षमता है कि उसका अपना विशेष और अद्भभुत प्रकाशन और लागूकरण हो जो किसी भी व्यक्ति, समूह, राष्ट्र और सम्पूर्ण संसार के लिए भविष्यवाणी के रुप में उपयोगी हो,** एक विशेष समय और क्षण के लिए **और यह एक बड़ा रहस्य है।**

इसीलिए आज आधुनिक धर्मविज्ञान को देखकर दुख होता है कि लगभग सारा धर्मविज्ञान धीरे-धीरे बाइबल को एक इतिहास की पुस्तक की तरह समझता है, जिसका एक व्यक्ति के जीवन पर कोई असर नहीं होता है।

जब प्रभु यीशु ने स्वयं पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को अपने जीवन की भविष्यवाणियों के रुप में पहचाना (जबकि वह स्वयं परमेश्वर है), हम मसीही कभी-कभी उसके वचनों को सीमित करते हैं (भविष्यद्वाणी होने से, यह कहते हुए कि ये वचन उसके समय के लोगों की उपयोगिता के लिए बोले गए थे) और उसके वचनों को भविष्द्वयक्ता के वचन से भी कम मानते हैं, जबकि अन्य कुछ विश्वासों के लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह को कम से

कम एक भविष्यद्वक्ता के रुप में हमसे अधिक सम्मान देते हैं। **यह हम मसीहियों के लिए लज्जा की बात है!**

यह सब कारण रुकावटों की तरह आते हैं जो बहुत से मसीहियों को उनकी बाइबल पढ़ने से उन्हें रोकते हैं।

यह परमेश्वर का चरित्र है जब उसके लोग उसको या उसके पवित्र वचन को अपनी सोच के अनुसार सीमित करते हैं तो वह उन्हें अन्धा कर देता है। परमेश्वर का वचन कहता है *'बात को छिपाना परमेश्वर को आदर देना है' परन्तु बाइबल यह भी कहती है कि 'परमेश्वर अपनी गुप्त बातें उन पर प्रकट करता है जो उससे डरते हैं।* परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा इसे प्रकट करता है।

1 कुरिन्थियों 2:10-16

*10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया है **क्योंकि आत्मा सब बातें वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।** 11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता केवल परमेश्वर का आत्मा। 12 परन्तु हमने संसार की आत्मा नहीं परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। 13 जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला-मिलाकर सुनाते हैं 14 **परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता,** क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है **क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।** 15 आत्मिक जन सब कुछ जांचता है परन्तु आप वह किसी से जांचा नहीं जाता। 16 क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए? परन्तु हम में मसीह का मन है।*

एक सामान्य अवधारणा यह है कि 'यीशु मसीह के दृष्टान्त' सामान्य लोगों के लिए समझने का सरल तरीका है परन्तु यह बात उसके बिल्कुल उल्टी है जो प्रभु यीशु ने कही कि उसने क्यों दृष्टान्तों में बातें कीं।

मरकुस 3:11

*उसने उनसे कहा, 'तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, **परन्तु बाहरवालों के लिये** सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं।"*

परमश्वेर के वचन के प्रति इसी आचरण के कारण कलीसिया में बहुत से आत्मसन्तुष्ट मसीही बैठे हैं। दूसरी ओर बाइबल प्रत्येक मसीही की सर्वप्रथम सुरक्षा की 'तलवार' होनी चाहिए जैसा हम इफिसियों 6:17 में पढ़ते हैं।

कुछ लोग यह महसूस करते हैं कि बाइबल में चेतावनियां बिना उद्धार पाए हुए अविश्वासियों के लिए हैं और हम मसीहियों के लिए नहीं हैं। ऐसा सोचते हुए हम कितनी मूर्खता करेंगे कि सर्वज्ञानी परमेश्वर अपने नियमों को अविश्वासी लोगों के लिए लिखेगा जो उसमें विश्वास नहीं करते और शायद वे कभी भी बाइबल नहीं पढ़ेंगे!

नए नियम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के भविष्यद्वाणी के वचनों में से एक और उदाहरण लेते हुए, मैं विश्वास करता हूं कि वे शब्द हमारी पीढ़ी के लिए बोले गए न कि उनके लिए जिनको वे पहली बार बोले गए थे।

'प्रभु का मार्ग तैयार करो'

मैं विश्वास करता हूं कि वे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के वे वचन भविष्यद्वाणी के वचन लूका 3:3-9 में हमारी ही पीढ़ी के लिए थे। इसकी दो झलक हैं जो यह दिखाती है कि ये भविष्यद्वाणी के वचन थे और केवल उसी पीढ़ी के लिए नहीं थे। क्योंकि वह दो वक्तव्यों का प्रयोग करता है जो उस पीढ़ी में पूरे नहीं हुए, परन्तु उस पीढ़ी में जिन पर युग का अन्त आया है:

1. **लूका 3:6** *'हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा'* उस समय सब लोगों ने परमेश्वर के उद्धार को नहीं देखा था। सारे लोग परमेश्वर के उद्धार को प्रभु यीशु को 'राजा के रुप' में आते हुए देखेंगे, जब प्रत्येक घुटना टिकेगा और प्रत्येक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है।

2. **लूका 3:7** *'हे सांप के बच्चो, तुम्हें किसने जता दिया कि आनेवाले क्रोध से भागो?'* इसके विपरीत उस समय लोगों का क्रोध प्रभु यीशु के ऊपर पड़ा था।

ऊपर के दो पद वास्तव में प्रभु के दूसरे आगमन पर पूरे होंगे: 'सारे लोग परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे' और 'परमेश्वर का क्रोध सभी आज्ञा न माननेवालों पर भड़केगा (प्रकाशितवाक्य 19:11-15)। जैसा प्रभु ने **यूहन्ना 3:36** में कहा, *'जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।'*

लूका 3 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने **पद 9** का अन्त यह कहते हुए किया, *अब कुल्हाड़ा पेडों की जड़ पर धरा है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।* **यही है जो स्पष्टरुप से प्रभु यीशु ने यूहन्ना 15:4-8 में सब** विश्वासियों के लिए कहा जो अपने जीवन में कोई फल नहीं ला रहे हैं, जो सूखी हुई डालियां बन गई हैं और दाखलता से काटकर नर्क की आग में न्याय के दिन डाले जाने के लिए तैयार हैं।

प्रभु यीशु की अपने स्वर्गीय पिता से चेलों के लिये **यूहन्ना 17:17** में की गई प्रार्थना 'अपने सत्य के द्वारा उन्हें शुद्ध कर।' ***तेरा वचन*** *सत्य है।* यदि हम मसीही लोग **'वचन'** को नहीं पढ़ते हैं (और अपने मन में बहुत से बहाने बनाने या केवल आलस्य के कारण) तो हम शुद्ध नहीं किये जा रहे हैं क्योंकि यह **'वचन'** ही है जो हमें शुद्ध करता है।

एक मसीही को जल्दबाजी और पारम्परिक तरीके से बाइबल नहीं पढ़नी चाहिए, परन्तु बाइबल के अद्भभुत परमेश्वर को और अधिक जानने की भूख रखते हुए पढ़ना चाहिए प्रभु ने **मत्ती 5:6** में कहा, *'धन्य हैं वे जो धर्म के* ***भूखे और प्यासे हैं*** क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।' आज हम इसलिए नहीं तृप्त होते हैं क्योंकि हममें से कितने लोग हैं जो सच में धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं? और कुछ जो उसके वचन को प्रतिदिन पढ़ते हैं दुर्भाग्यपूर्ण वे जल्दबाजी शीघ्रता में पढ़ते हैं।

हममें से बहुत से विश्वासी प्रतिदिन नियमित रुप से **प्रभु परमेश्वर के साथ एकान्त में व्यक्तिगतरुप से समय नहीं बिताते हैं।** न केवल प्रतिदिन मनन

और बाइबल अध्ययन समूह से नोट्स बनना (जो ठीक है), परन्तु हमें अपना व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन करना चाहिए। परमेश्वर के वचन को उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक नियमित रुप से पढ़ना चाहिए।

केवल इसी के द्वारा हम परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत और गहरी समझ और सम्बन्ध बना सकते हैं। यह देखकर परमेश्वर अपने वचन को हमारे सम्मुख खोलना आरम्भ करेगा जैसा उसने पहले कभी नहीं किया था। परमेश्वर कहता है, 'तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे।' यह सब से महत्वपूर्ण बात है जो प्रभु हमसे चाहता है जो सम्पूर्ण बाइबल में प्रकट होता है।

क्या आप जानते हैं कि **प्रभु एक बात की इच्छा रखता है और उसमें आनन्दित होता है?** यह है कि हम उसकी महिमा करें कि हम उसे जानते हैं।

यिर्मयाह 9:23-24 में प्रभु यहोवा कहता है:

[23] बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; [24] ***परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे कि वह मुझे जानता और समझता है,*** *कि मैं ही वह यहोवा हूं जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है;* ***क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं।'***

तौभी हममें से कितने लोग समय निकालकर उसे जानना चाहते हैं, उसी उद्देश्य के लिए जिसके लिए प्रभु अपने बच्चों को बुलाता है। बाइबल में परमेश्वर के लोगों को उसके पवित्र वचन और आज्ञाओं पर मनन करने की महत्वता पर बहुत सारे पदों को पाया जाता है। हममें से बहुत लोग यह सोचते हैं कि हमने मसीही वक्ता को सुनने में समय व्यतीत् किया है वही परमेश्वर के साथ व्यतीत किया है। बल्कि इसके विपरीत, हो सकता है कि एक मसीही प्रसारण को सुनने में जो हमने समय बिताया है केवल वही समय हमने प्रभु के साथ व्यतीत किया हो, **जो दुर्भाग्यवश धोखा खाना है।**

आप जानते हैं कि प्रभु यीशु ने अपने बचपन से ही परमेश्वर के वचन को जानने का अल्पमार्ग नहीं लिया, वह बुद्धि और ज्ञान में बढ़ता गया और उसी के द्वारा प्रतिदिन जीवन बिताता था। **लूका 2:40** कहता है, *वह बालक* ***बढ़ता***

*और बलवन्त होता और **बुद्धि से परिपूर्ण होता गया;** और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।*

यीशु हमारा प्रभु भोर का समय अपने पिता के साथ बिताया करता था और उसने कभी नहीं सोचा कि उसकी दिनभर की सुसमाचार की सेवा परमेश्वर के साथ बिताए गए समय का विकल्प है। यदि आप यह सोचते हैं कि आपकी सेवा का समय ही वह समय है जो आपने परमेश्वर के साथ बिताया है तो मैं आपको बताना चाहता हू कि पुराना शत्रु आपको मूर्ख बना रहा है कि आप यह विश्वास करें और इसमें ताज्जुब की बात नहीं कि आप को पता नहीं है कि आप अन्दर से सूख रहे हैं। यदि ऐसी बात है तो मैं आपको सुझाव दूंगा कि आप कम से कम एक या दो दिन उपवास और प्रार्थना में प्रभु के साथ बिताएं कि आप परमेश्वर के पास उसके वचन पर अर्थपूर्ण मनन करने के लिए वापस आएं।

हममें से बहुत लोग एक मसीही सभा से दूसरी सभाओं में जाते हैं या हम एक मसीही चैनल से दूसरे चैनल पर सुसमाचार सुनते हैं। तौभी 'इब्रानियों का लेखक' **इब्रानियों अध्याय 5 और अध्याय 6** में बहुतों को देखकर दुखी हुआ कि वे अभी भी दूध के स्तर पर ही पहुंच पाए हैं जो प्रारम्भिक बातों पर ही टिके हैं और उनके कान बार-बार यही सुनना चाहते हैं कि 'यीशु उन्हें प्रेम करता है' और यह कि 'यीशु उनके पापों के लिए मरा' परन्तु वे कभी उस स्तर तक नहीं पहुंचते कि उस प्रभु के लिए कुछ करें जो उनको प्रेम करता है और उनके लिए मारा गया, जिसके लिए सबसे पहले हमें अपने आप का इन्कार करना और उसका आज्ञाकारी बनना सीखना आवश्यक है।

मुझे यह कहने की अगुवाई हो रही है कि आधुनिक मसीहत में पाखण्ड की आत्मा प्रतीत होती है। हमारे प्रभु परमेश्वर को नकली प्रेम के विषय में मूर्ख नहीं बनाया जा सकता जिसका भेष धार्मिकता का है परन्तु उसकी शक्ति का इन्कार करता है। बल्कि परमेश्वर ऐसे पाखण्ड से नफरत करता है। बाइबल हमें आदेश देती है कि हम ऐसे विश्वासियों के साथ मेल-मिलाप न रखें- **2 तीमुथियुस 3:5, 1 कुरिन्थियों 5:9-11 ।**

हम में से बहुत से लोग सह-मसीहियों के साथ खेल खेलते हैं। मेरा अर्थ यह है कि हम मसीहियों के पास पहनने के लिए विभिन्न प्रकार की टोपियां हैं

और दुर्भाग्यवश मसीहत में बहुत नाटक भी है। हम अपने आस-पास के लोगों के वातावरण के अनुसार अपने विश्वास को नकलची की तरह प्रस्तुत कर सकते हैं। हमारी सामूहिक प्रार्थना और आराधना, कलीसिया के समूह को बदलती है जो हमारे आस-पास है, उन्हें प्रभावित करने के लिए बजाय इसके की हम परमेश्वर के पवित्र भय में उसे प्रसन्न करने के लिए सजग हों। प्रभु परमेश्वर हमें अपने वचन के द्वारा चेतावनी देता है कि **वह किसी भी पाखण्डी और पक्षपाती के साथ संगति नहीं रखेंगे बल्कि सच्चे, विश्वासयोग्य और निष्ठावान हृदय वाले आराधक के साथ संगति करेगा।**

2 इतिहास 19:7,9 कहता है:

*[7] अब यहोवा का भय तुम में बना रहे; चौकसी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में **कुछ भी कुटिलता नहीं।** और न वह किसी का पक्ष करता है और न वह घूस लेता है [9] उसने उसको आज्ञा दी, **यहोवा का भय** मानकर **निष्कपट मन** से ऐसा करना।*

सम्पूर्ण पुराने नियम में वही दो प्रकार के परमेश्वर के लोग थे। बहुत से लोग भीड़ के साथ चौड़े रास्ते पर चल रहे थे परन्तु बहुत कम ऐसे थे जो स्थिर रह कर केवल वही कर रहे थे जिसे प्रभु परमेश्वर उन्हें करने की अगुवाई कर रहा था।

प्रभु यीशु ने हमें भी चेतावनी दी है कि हम भी परमेश्वर के प्रति विभिन्न प्रकार के पाखण्डों से सावधान रहें-**मत्ती 6:1-8,16** । मुख्य निष्कर्ष यह है कि यदि हम कुछ भी बिना मनुष्य और परमेश्वर को प्रेम किये हुए करेंगे तो हम निश्चय ही प्रतिफल खो देंगे।

इसलिए बाइबल कहती है कि तुम्हारा प्रेम निष्कपट हो-

रोमियों 12:9-10

*प्रेम **निष्कपट** हो, बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो। जितने परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।*

1 पतरस 2:1-3 कहता है:

*[1] इसलिए सब प्रकार का बैर-भाव और छल और कपट और डाह और निन्दा को दूर करके [2] नए जन्मे हुए बालकों की नाई **निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो** ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ। [3] क्योंकि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।*

मसीह में प्रियो, यदि हम सच में परमेश्वर को प्रेम करते हैं तो हम उसे पूरे हृदय से खोजना चाहेंगे और ऐसा करने का सर्वोत्तम तरीका यह है कि हम उसे उसके वचन में ढूंढे-अपने पांव के लिए दीपक और अपने मार्ग के लिए उजियाला के रुप में। मैं विश्वास करता हूं कि जो समय हम उसके वचन में बिताते हैं वह इस बात से सम्बन्ध रखता है कि हम परमेश्वर को कितना प्रेम करते हैं।

आज जबकि हमारे चारों ओर बहुत से सिद्धान्त और विधर्म हैं, तो यह और अधिक आवश्यक हो जाता है कि हम स्वयं परमेश्वर के वचन पर मनन करें। मैं विश्वास करता हूं कि झूठे धर्मों में अधिकांश वे **मसीही चले जाते हैं जिनको बाइबल का कम ज्ञान होता है और वे इस प्रकार के झूठे धर्मों के लिए आसान और अनुकूल लक्ष्य होते हैं।**

प्रेरित यूहन्ना ने पहले से ही अपने भविष्यद्वाणी के वचन के द्वारा चेतावनी दी है:

1 यूहन्ना 2:24-28

*[24] **जो कुछ तुमने आरम्भ से सुना है** यदि वह तुम में बना रहे जो तुमने आरम्भ से सुना है यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में और पिता में बना रहेंगे [25] और जिसकी उसने हम से प्रतिज्ञा की है वह **अनन्त जीवन है।** [26] मैंने ये बातें तुम्हें उन के विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं; [27] परन्तु तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; **और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया है तुम्हें सब बातें सिखाता है,** और यह सच्चा है और झूठा नहीं; और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम **उसमें बने रहते हो।** [28] अतः हे*

बालको, उसमें बने रहो कि जब वह प्रगट हो तो हमें ***हियाव हो,***
और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हो।

1 यूहन्ना 2:24-28 से <u>पांच बातें स्पष्ट होती हैं</u> जिसे हमने अभी सारांश के लिये पढ़ा था:

1. **विश्वासियों के लिए यह महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि वे अपने प्रेम और विश्वास को पकड़े रहें**, जब वे पहली बार विश्वास के पास आए, अपने हृदय में परमेश्वर की बुलाहट के प्रत्युत्तर में, उस <u>वास्तविक विश्वास</u> और उस आशा को <u>जो परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन</u> की है, जो उनके जीवन में अन्य सभी वस्तुओं से ऊपर राज्य करती है।

2. **प्रत्येक नया मत/ सिद्धान्त/शिक्षा** के द्वारा न घुमाए जाएं जो आपके सामने हो और जो आपको उकसाए या फुसलाए जो आपको परमेश्वर के वचन के अनुसार परिवर्तित जीवन जीने के लिए चुनौती न दे।

3. **सुसमाचार के सत्य को थामे** रहें न कि उसे दबाएं।

4. यह जानने के लिए कि **पवित्रात्मा हमारा सर्वसम्पन्न शिक्षक है।** प्रभु यीशु ने कहा कि पवित्रात्मा तुम्हें सब बातों में सत्य की ओर अगुवाई करेगा। उसने ऐसा नहीं कहा कि मनुष्य सत्य में तुम्हारी अगुवाई करेगा (यूहन्ना 16:13)।

5. **यह चेतावनी देने के लिए कि जब तक हम लगातार परमेश्वर के पवित्र वचन की सत्यता में नहीं चलेंगे तो** *हम अचानक उसके आने पर पीड़ा में पड़ेंगे।*

प्रेरित पौलुस **गलातियों 1:11-12 में कहता है:** [11] *हे भाइयो, मैं तुम्हें बताए देता हूं कि* ***जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं।*** [12] *क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला।*

यूहन्ना 8:34-35 में
प्रभु यीशु ने कहा:
'यीशु ने उनको उत्तर दिया, 'मैं तुम से सच-सच कहता

हूं कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है। ***दास सदा घर में नहीं रहता;*** *पुत्र सदा रहता है।'*

यह विशेष पद इससे और अधिक स्पष्ट नहीं किया जा सकता कि एक उद्धार पाए हुए पापी को पवित्रता में चलने की आवश्यकता है! आज दुख के साथ कहना पड़ता है कि हममें से कुछ मसीही बाइबल के मूलभूत सत्यों को भी नहीं समझते हैं और वे विभिन्न प्रकार के बन्धनों में पड़े रहते हैं (लतों, लालसाओं, क्रोध, अक्षमा, लालच आदि) क्योंकि हम अभी तक वास्तव में स्वतन्त्र नहीं किये गए हैं।

आज हममें से बहुत लोग सत्य को नहीं जानते हैं। क्यों? क्योंकि हमारा जीवन योजनाबद्ध और परिश्रम के साथ बाइबल पर मनन करनेवाला नहीं है।

आप देखें कि **यूहन्ना 8:36** कहता है *'इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतन्त्र हो जाओगे।'* **'यीशु'** के नाम का अर्थ है **'वह जो अपने लोगों को उनके पापों से बचाता है'-मत्ती 1:21।** और किसी भी रीति से **'यीशु'** का अर्थ यह नहीं है कि वह 'ऐसा व्यक्ति है जो पाप को समायोजित करता है' और यह भी अर्थ नहीं है कि 'वह पापों' को नजरअन्दाज करता है।'

मत्ती 1:21

वह पुत्र जानेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, ***क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।***

प्रश्न यह है, 'क्या हम अपने पाप भरे जीवन से स्वतन्त्र हैं? और क्या हम जानते हैं कि शरीर में हम कैसे उस देह से 'स्वतन्त्र' हो सकते हैं जो बार-बार जीवित होने का प्रयास करता है? **प्रभु यीशु ने यूहन्ना 8:31 में कहा कि हम केवल तभी सच्चाई से स्वतन्त्र हो सकते हैं यदि हम लगातार मसीह के वचनों में बने रहेंगे।** जी हां, हम जानते हैं कि बाइबल कहती है कि यीशु ही वचन है (**यूहन्ना 1:1-3**)। अत: इसका उत्तर सरल है, वह है कि प्रतिदिन वचन को पढ़ना और लगातार उनमें चलना।

बाइबल ही एक ऐसी पुस्तक है कि जब जब आप इसे खोलते हैं तब तब आप इसके लेखक से मिलते हैं। **बाइबल भी इतिहास की अन्य पुस्तकों की तरह होगी जब तक कि आप स्वयं इसके लेखक से न मिलें,** और यह चुनाव आपका है और आपका ही रहेगा।

बाइबल वास्तव में एक त्रुष्टिहीन और असीमित इतिहास की पुस्तक है, जिसके अधिकार पर अब तक बड़े से बड़े आलोचक ने प्रश्न नहीं उठाया है। इन सब के ऊपर, सम्पूर्ण मानवजाति ने अपने धर्मों और विश्वासों के बावजूद भी इसकी समय रेखा को माना है (ईसा पूर्व/ईस्वी सन्)। यह बिना पक्षपात के, बिना मिलावटी और त्रुटिहीन है। इन सब के ऊपर, यह परमेश्वर के द्वारा प्रेरित वचन है। जिसके पवित्र लेख एक व्यक्ति को बुद्धि देकर उसे अनन्त उद्धार देने के योग्य हैं, उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु में है।

चारों सुसमाचार के विभिन्न आयामों की भिन्नताओं का एक और उदाहरण लेते हुए हम देखते हैं, कि वे **किसी भी प्रकार से मुख्य घटनाओं और सत्यों का विरोध नहीं करते जो** चारों सुसमाचारों में सामान्य हैं। बल्कि वे बाइबल को सच्चाई प्रदान करते हैं कि कोई भी व्यक्ति जो इतिहास को लिख रहा था वह कुछ छिपा रहा था और न ही वह ब्यौरे में सामान्य सहमति लाने का प्रयास कर रहा था। इसी प्रकार बाइबल के नायकों की कमियों और पापों को न तो तोड़ा-मरोड़ा गया है, न ही उनको मिटाया गया है जो लिखे न जाते। बल्कि उन्हें पूर्ण **सच्चाई** में लिखा गया है (पवित्रात्मा की प्रेरणा के द्वारा)।

याकूब 1:21 कहता है

*'...उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो **तुम्हारे हृदय में बोया गया है** और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है*

शैतान की युक्ति यह है कि वह परमेश्वर के बच्चों को परमेश्वर के वचन को पढ़ने में रुकावट डालने और हमें अज्ञानी बनाए रखने के द्वारा नपुसंक बना दे (*हमें परमेश्वर के बोए गए वचन से वंचित कर दे*)। उसकी रुकावट का आरम्भ हानिरहित प्रतीत होता है जैसे अपने परिवार और मित्रों के साथ कहीं घूमने जाने के समय अपनी बाइबल को घर में छोड़ देना, इस प्रकार धीरे से हमारे बाइबल अध्ययन पर दाग बन जाता है जिसे हमने लम्बे समय से लगातार प्रात:कालीन मनन की तरह बनाया है।

जब हम परमेश्वर के वचन में कमजोर होते हैं, शैतान तब आता है और वही वचन लेकर हमें सकरे रास्ते में चलने से रोकता है और हम विश्वासियों

को परीक्षा में डालता है कि हम चौड़े मार्ग पर चलें, जैसा उसने प्रथम मनुष्य के साथ किया और वैसा ही उसने दूसरे आदम- स्वयं हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ करने का प्रयास किया। पर आप समझें कि हमारे प्रभु ने उन परीक्षाओं पर विजय प्राप्त की क्योंकि उसे वचन का लगातार और अधिक ज्ञान था।

यदि आप मसीही बन गए हैं और अपनी ही पवित्र बाइबल नहीं पढ़ते हैं; **प्रतिदिन** बाइबल, तब क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं। तब आप किससे यह आशा करेंगे कि वह आपको बदले? क्या आप वैसे ही नहीं रहेंगे जैसे संसार में अन्य अच्छे गैर-मसीही हैं जो न तो प्रभु को जानते न उसके वचन की आज्ञाओं में बने रहते जो **उन्हें परिवर्तित जीवन की ओर ले जाते हैं?**

हम में से बहुतों के लिए मसीही बनने के बाद भी परिवर्तित जीवन के विरोध करने का कारण यह है कि हमारी देह की यह आदत है कि वह पुराने गिरे हुए स्वभाव में लिपटी रहती है। **हम सब अपनी आत्मा में यह जानते हैं कि परमेश्वर के पवित्र वचन में वह सामर्थ है कि हमारे जीवनों को बदल दे** और इसलिए दुर्भाग्यवश इस बात की जानकारी होना हमारे जीवन में हस्तक्षेप लाता है, और इसे पीछे फेंक देता है (शायद इससे कभी-कभी हमारी जीभ के स्वाद के कारण हमारे मुंह में पानी आ जाता है)। परमेश्वर के वचन को परिश्रम के साथ प्रतिदिन खोजने का अनुभव हमारे जीवन में वास्तव में विपरीत हो जाता है। यह हमारे प्रतिदिन के जीवन में 'नए मार्ग और आचरण' में दिशा को बदलता है। बाइबल से अपना सम्बन्ध हटा ले और पुराने जंगली पौधे इतने जल्दी उगना आरम्भ करेंगे कि वे अच्छे पेड़ को दबा देंगे, अन्ततः हमें पीछे की ओर धकेल देंगे (आगे ले जाने की अपेक्षा), और हमें अपनी स्वयं की भलाई और शक्ति पर निर्भर रहने के लिए छोड़ देंगे।

हमारी प्रवृत्ति यह है कि हमें परमेश्वर की आवाज सुनने से रोक दे। तौभी प्रत्येक समय जब आप बाइबल पढ़ते हैं तो 'चार बातों' में से एक का होना आवश्यक है: या तो परमेश्वर का वचन आपको **'शान्ति और उत्साह'** देगा अथवा वह वचन आपको एक **'आज्ञा'** की ओर चुनौती देगा जिसके प्रति प्रभु आपकी आंखों को खोल रहा है कि आप उसका पालन करें अथवा यह

आपको **'कायल और चेतावनी'** दे अथवा वहां सीधा-साधा एक **'सत्य'** हो सकता है जो आपके जीवन में लागू करने के लिए प्रकट किया जा रहा है। यदि आप वचन का विरोध करेंगे तो आप पुनः अकेले ही अपनी समस्याओं रुपी दलदल की मिट्टी में धंसते जाएंगे, बहुत से बिना प्रश्नों के उत्तर के आप निराश हो जाएंगे।

भजनसंहिता 1 आज और सदैव एक मसीही जीवन में **नं. 1** ही बना रहेगा।

भजनसंहिता 1:1-6

क्या ही धन्य है *वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता,*
और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की
मण्डली में बैठता है [2] *परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न*
रहता; ***और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।***
[3] *वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया*
गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी
मुरझाते नहीं। ***इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता***
है। [4] दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस *भूसी के समान होते* हैं, जो
पवन से उड़ाई जाती है। [5] इस कारण *दुष्ट लोग अदालत में स्थिर*
न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे; [6]
क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, *परन्तु दुष्टों का मार्ग*
नष्ट हो जाएगा।

अध्याय 2

परमेश्वर के वचन के प्रति अज्ञानता के फन्दे!

पवित्रशास्त्र कहता है कि परमेश्वर का वचन हमारे प्राणों को उद्धार दे सकता है:

याकूब 1:21-22

[21] इसलिए सारी मलिनता और बैरभाव की बढ़ती को दूर करके उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो ***तुम्हारे हृदय में बोया गया है और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।*** *[22] परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।*

1 पतरस 2:1-2

[1] इसलिए सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और निन्दा को दूर करके [2] नए जन्मे हुए बच्चों के समान ***निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो*** *ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ।*

आप समझें कि परमेश्वर के वचन के प्रति अज्ञानता हमें मनुष्यों के द्वारा बनाए गये मसीही रीति-रिवाजों की ओर सम्वेदनशील बनाती है। आपको एक विचार देना चाहता हूं कि तब क्या होता है जब मनुष्य के शब्द और समझ को मसीहत में जोड़ा जाता है। मैं बड़े दिन के समय का एक उदाहरण दूंगा और यह देखेंगे कि इसका आरम्भ कहां से हुआ और इसे बाइबल के दृष्टिकोण से देखेंगे। इससे आपको ताज्जुब होगा जैसे मैं उन की सूची नीचे बनाऊंगा:

1. पहला, बाइबल में कहीं भी ऐसी चर्चा नहीं की गई है कि प्रारम्भिक कलीसिया ने प्रभु का जन्म दिवस जो आज बड़ा दिन कहलाता है,

मनाया हो।

2. प्रभु यीशु मसीह का जन्म 25 दिसम्बर को होना प्रश्नगत है (लूका 1:26)।
3. कहीं भी 3 राजाओं की चर्चा नहीं है, वे तीन ज्ञानी पुरुष थे, यह माना जा सकता है और कहीं यह चर्चा नहीं है कि वे तीन थे-मत्ती 2:1
4. उन ज्ञानी पुरुषों ने प्रभु यीशु मसीह का दर्शन उस दिन नहीं किया जिस दिन चरवाहों (चरनी में) ने किया था, परन्तु बाद में जब मरियम और यूसुफ एक घर में चले गए और प्रभु यीशु उस समय बालक नहीं थे-मत्ती 2:11

बड़ा दिन आज बहुतों के लिए विशेष गीत, सैन्टाक्लॉज, मौज-मस्ती बन गया है। मसीह का जन्म इन दन्तकथाओं की परम्परा और मॉल्स में भीड़ लगना और लालच से भर गया है।

हम कहते हैं कि इस मौसम का कारण यीशु है, परन्तु क्या यह सच है? बिशप याजक अर्ल काउण्ट ने बड़े दिन के 12 दिनों तक उपहार वितरित करने और मूर्तिपूजक बेबीलोन की प्राचीन परम्परा के साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध को बताया है जिसकी उत्पत्ति वहां हुई।

प्रारम्भिक मसीही लोग इससे भी भली-भांति परिचित थे कि आन्नदोत्सव (saturnalia) और प्राचीन रोमी पर्व जो दिसम्बर में शनि देवता, जो कृषि का देवता था, उसके आदर में मनाया जाता था। रोम में आन्नदोत्सव में शराब पीना, पथभ्रष्ट और अन्य प्रकार के अभ्यास शामिल थे। इसी कारण धीरे-धीरे-क्राइस्ट-मास एक्स-मास में बदल गया, जैसा आज इसे बहुत लोग इसी इरादे से मसीह को उस बड़े उत्सव से हटा देते हैं। एक तरीके से यह ठीक है, क्योंकि प्रभु ने कभी नहीं चाहा था कि वह इस दन्तकथा उत्सव का भाग बने।

बाद में मसीहियों ने जर्मन scandinavian पर्व जो मूर्तिपूजकों का सदाबहार वृक्षों को सजाने और उन पर बड़े दिन के लिए मिसलटो टांगने का त्यौहार था, मनाना आरम्भ किया।

पूरे अपने इतिहास में बड़े दिन ने शराब की पार्टियों को और आधुनिक अवकाश के पैकेज को प्रेरित किया है और बच्चों को विवश किया है कि वे अपने माता-पिता को खिलौने आदि खरीदने के लिए परेशान करें। इसलिए मसीह की उपासना सूची में सबसे नीचे पहुंच गई, यदि ऐसा है भी तो बहुत कम लोगों के लिए उसका नाम सूची में है।

विभागीय भण्डारों के द्वारा प्रयोजित सैण्टाक्लॉज, आधी छूट की बिक्री, टी. वी., वाणिज्य से भरा बड़ा दिन लेखाकार के लिए निष्कर्ष बन गया न कि परमेश्वर की उपासना का त्यौहार।

तब प्रश्न यह उठता है कि हम यीशु मसीह को कैसे बड़े दिन के मौसम में रख सकते हैं? उत्तर बिल्कुल सरल है-वह इसके आरम्भ से कभी भी इसका भाग नहीं था।

और अब मुझे आपको ईस्टर के उत्सव और मनुष्य के द्वारा इसमें जोड़े गए 'ईस्टर बन' और 'ईस्टर अण्डे' के विषय में बताने दीजिए।

अपनी समझ को परमेश्वर के वचन में अपनी धार्मिकता के स्तर से कुछ जोड़ने की परीक्षा एक अपवित्रीकरण बन सकती है। परमेश्वर ने शाऊल राजा का अभिषेक किया, उसने वही करने का प्रयास किया और उसका राज्य एक चरवाहा लड़के के हाथ में चला गया (1 शमूएल 13:8-14)।

प्रभु यीशु ने उन लोगों को सम्बोधित किया जो वचन में किसी विशेष बात पर स्पष्टीकरण चाह रहे थे, यीशु ने कहा, कि पवित्रशास्त्र की समझ और उनकी सीमा ही गलत है (इस बात पर प्रश्न को तो छोड़ो)।

मरकुस 12:23-25

*[23] अत: जी उठने पर वह उनमें से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।' [24] यीशु ने उनसे कहा,' **'क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न ही परमेश्वर की सामर्थ को?*** [25]क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो वे न विवाह

करेंगे और न विवाह में दिए जाएंगे, परन्तु स्वर्ग में दूतों के समान होंगे।

हम देखते हैं कि कुछ लोग आरम्भिक कलीसिया में भी इस मूर्खता में पड़े थे जिसे:

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 10:1-3 में सम्बोधित किया था:

*[1] 'हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उनके लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं। [2] क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूं कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है, **परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।** [3] क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, **और अपनी धार्मिकता स्थापित करने का यत्न करके,** परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए।*

प्रेरित पतरस ने 2 पतरस 3:16-17 में सम्बोधित किया है:

*[16] वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की **अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।** [17] इसलिये हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों का जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फंसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दो।*

एक सामान्य परीक्षा आती है कि जब पवित्रशास्त्र नहीं समझा जाता तो हम अपना स्वयं का विचार उसमें डाल देते हैं और इसीलिए आज मसीही संसार में बहुत सारे मानव-निर्मित सिद्धान्त, वर्गों और मतों का जन्म हो गया है। पवित्रशास्त्र को एक पाठ्यक्रम के रुप में संस्थागत नहीं किया जा सकता है।

क्योंकि वचन को आत्मिक रुप से समझा जाता है और कितने भी शिक्षक आपके लिए ऐसा नहीं कर सकते हैं क्योंकि पवित्रात्मा की आवश्यकता होती है कि वह इसे समझाए और उसे खोले - **1 यूहन्ना 2:25-26**

प्रत्येक संस्था में पवित्रशास्त्र को संस्थागत किया गया है अतः आज यही

अव्यवस्था है। क्योंकि जब ऐसा होता है पवित्रशास्त्र की अपनी सामर्थ समाप्त हो जाती है जब इसे पवित्रात्मा की सामर्थ के बजाय मनुष्य के द्वारा समझा जाता है जिसके लिए यह मूलरुप से बनाया गया था।

दुर्भाग्यवश बहुत से लोग धर्मज्ञान के साथ दिमाग के ज्ञान का ढेर रखकर आते हैं- लोगोस परन्तु बहुत कम रेमा (लोगोस और रेमा में यह अन्तर है कि लोगोस लिखित वचन का ज्ञान है जबकि रेमा वचन के प्रकाशन का ज्ञान है)।

जवान बढ़नेवाले मसीही कार्यकर्त्ता जो सबसे पहले इन सेमिनरी स्कूलों में प्रभु के लिए अपने हृदयों में आग भरकर लाते हैं, परन्तु धीरे-धीरे, मुझे बताया गया है (और मैंने बहुतों को देखा है) कि वे छोड़ जाते हैं, अपने विश्वास को खो देते हैं या उस नमूने में ढल जाते हैं कि खेल खेलने लगते हैं। प्राय: ये सेमिनरी इन नए मसीही कार्यकर्त्ताओं में सेवा की आत्मा को संस्थागत कर देती हैं, यदि पूरी रीति से उनके अन्दर आत्मा का चलन मारते नहीं हैं, तो धुंधला तो कर ही देते हैं। पवित्रात्मा के साथ लगातार अपने जीवन को चलाते रहना एक धर्मी के लिए बहुत आवश्यक है **(रोमियों 8:14)।**

धर्मविज्ञान की संस्थाऐं प्रभु यीशु के प्रथम आगमन से पहले आरम्भ हुई थीं (और अपनी चरम सीमा पर थी) जिन्होंने धार्मिक फरीसियों और सदूकियों को उत्पन्न किया। तौभी मूसा को व्यवस्था दिये जाने तक, दाऊद से सुलैमान तक और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं तक कोई भी सेमिनरी कॉलेज नहीं था। यह अजीब सी बात है कि आज बहुत सारे बाइबल कॉलेज तीव्रता से बढ़ते जा रहे हैं जबकि प्रभु यीशु का दूसरा आगमन द्वार पर ही है और दुर्भाग्यवश वे आत्मिक उच्चता की स्वीकृति/मान्यता की मोहर बन गए हैं जिनकी वास्तव में कोई आवश्यकता नहीं है।

मसीह में प्रियो, हमें उस सत्य की ओर जागृत होना है कि आरम्भिक कलीसिया के सताए जाने के पूरे समय के दौरान कोई भी **'मसीही धर्मविज्ञान कॉलेज'** नहीं थे और लोग पवित्र आत्मा की सामर्थ में बढ़ते गए।

आप समझें कि ये धर्मविज्ञान प्राप्त छात्र नहीं थे परन्तु चुने हुए मछुवारे

थे जिनके कारण मछुवारों को यह मालूम हो गया था कि यीशु ही मसीह है (मत्ती 16:13-17)। दूसरी ओर उस समय के धर्मवैज्ञानिकों ने यीशु को मसीह होने से इन्कार कर दिया, क्योंकि जो कुछ उन्होंने सैमिनरी में सीखा था उसके अनुसार प्रभु यीशु मसीह के दावे उनके छोटे मानवीय मस्तिष्कों में नहीं समाए।

मुझे अपने इन विचारों को संक्षेप में बताने दीजिए। मुझे बाइबल कॉलेजों से कोई आपत्ति नहीं है (बल्कि कुछ अच्छे भी हैं जहां परमेश्वर के महान लोगों जैसे ऑस्वाल्ड चैम्बर्स ने व्याख्यान दिये), जहां तक उन्हें मसीह की सेवा में नम्रता से एक और प्रयास करना पड़ता है, जहां जवान मिश्नरियों को सेवा के लिए तैयार किया जाता है, बनाया जाता है और उनका मार्गदर्शन किया जाता है (तौभी मैं व्यक्तिगत रुप से यह महसूस करता हूं कि यह मिश्नरियों के लिए नहीं है- जिन्हें सेमिनरी के पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं है परन्तु उन्हें एक हिम्मतवाले हृदय और तैयार मुंह की आवश्यकता है जो सुसमाचार का प्रचार कर सके।

जैसा प्रेरित पौलुस ने कहा:

गलातियों 2:6

फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे चाहे वह कैसे भी थे मुझे इससे कुछ काम नहीं, परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता-परन्तु जो कुछ समझे जाते थे उन्होंने मेरे जीवन में कुछ नहीं जोड़ा

पौलुस ने यह अंगीकार किया कि परमेश्वर के विषय में उसका ज्ञान प्रभु की ओर से आया है।

गलातियों 1:11- 12

[11] हे भाइयो मैं तुम्हें बताए देता हू कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है वह मनुष्य का नहीं। [12] क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा और न मुझे सिखाया गया, पर प्रभु यीशु

मसीह के प्रकाशन से मिला।

हमें यह जानने की आवश्यकता है कि इन बाइबल कॉलेजों को किसी भी प्रकार से ऐसा नहीं मानना चाहिए कि वे **पवित्रात्मा के काम पर आत्मिक रुप से अपने आपको सर्वोच्च समझ कर राज्य करें, एक ऐसी मोहर/प्रमाणपत्र के रुप में संस्थागत न बनाएं जो उन्हें पवित्रात्मा के काम के ऊपर/नीचे अधिकार दे।** दुर्भाग्यवश बहुत से लोग (यदि सब नहीं) बाइबल कॉलेज में इसलिए आते हैं कि उन्हें ऐसा ही प्रस्तुत किया जाए और समझा जाए।

मैं इस अध्याय को 'आत्मिक सलाहकारों' के विषय में बात करते हुए समाप्त करना चाहता हूं जो आज हमारे पास बहुत सारे हैं। मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर दुखी होता होगा जब बहुत से मसीही अपने जीवन भर 'आत्मिक सलाहकारों' को बनाए रखते हैं। यह उस समय उचित हो सकता है जब हम प्रभु में बच्चे थे परन्तु जैसे प्रभु हमें मसीही गति में परिपक्वता की ओर ले चलता है तब हमें पवित्रात्मा की अगुवाई में चलना चाहिए।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कभी-कभी परमेश्वर का एक धर्मी भविष्यद्वक्ता भी मूर्ख बन सकता है जैसा हम **1 इतिहास 17:1-4** में पढ़ते हैं, आखिरकार वह भी एक मनुष्य ही है। दाऊद राजा के जीवन में उसके पास विभिन्न समयों में परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता प्रभु की ओर से वचन लेकर पहुंचे। शमूएल भविष्यद्वक्ता से लेकर नातान भविष्यद्वक्ता और गाद भविष्यद्वक्ता, इन समयों के अलावा, राजा दाऊद अपने जीवन में किसी भी काम को करने से पहले परमेश्वर को पूछा करता था।

मसीह में प्रियो, आप में से कोई भी यदि जो परिपक्व हैं, अभी भी आत्मिक सलाहकारों को रखे हुए हैं, जिनके पास आप हर बात को पूछने के लिए जाते हैं, आपके मनपसन्द गुरु के पास, इतने लम्बे समय तक प्रभु के साथ चलने के बावजूद भी उनके पास आप छोटे और बड़े सन्देहों के लिए जाते हैं, (केवल इसलिए कि आप आलसी और अधीर हैं कि प्रभु की ओर से उत्तर सुनने की

प्रतीक्षा करें) तो आपको सावधान होने की आवश्यकता है कि कहीं आपके जीवन में वे परमेश्वर का स्थान न ले ले। यदि ऐसी ही बात है जैसा मैंने कहा इससे प्रभु को गहरा दुख होता है। **रोमियों 8:14** कहता है *'इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'* यहां यह नहीं लिखा *'कि जितने लोग एक आत्मिक सलाहकार के द्वारा चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं'*-ठीक है?

हम में से कुछ लोगों के पास कोई भी आत्मिक सलाहकार नहीं हो सकता परन्तु तौभी वे परमेश्वर को इस घमण्ड के कारण दुख पहुंचाते हैं कि हम अमुक व्यक्तियों के आत्मिक गुरु हैं, बिना उन्हें यह बताए हुए कि वे वास्तव में मसीह की भेड़ें हैं और मसीह एक अच्छा चरवाहा है और उन्हें सबसे अधिक मसीह को जानने और उसे खोजने की आवश्यकता है- **मत्ती 23:8-12** ।

मत्ती 23:8-12

[8] परन्तु तुम रब्बी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरू है और तुम सब भाई हो [9]पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है जो स्वर्ग में है। [10]और स्वामी भी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है अर्थात् मसीह। [11]जो तुम में बड़ा हो वह तुम्हारा सेवक बने, [12]जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा।

अध्याय 3

'व्यस्तता' आत्मिक उन्नति को रोकती है!

दानिय्येल 12:4

"परन्तु हे दानिय्येल, तू इस
पुस्तक पर मुहर करके इन
वचनों को

अन्त समय तक के लिये बन्द रख। बहुत से
*लोग **पूछ-पाछ और ढूँढ़-ढाँढ़ करेंगे,***
और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा।"

जैसे मैं इस विषय पर बात करता हूं, मुझे अपने बहुत से मसीह में भाई बहनों को देखकर पीड़ा होती है कि वे ***पूछ-पाछ और ढूँढ़-ढाँढ़ करनेवाली*** 'अन्तिम समय' की भविष्यद्वाणी में इतने जकड़े हुए हैं।

दानिय्येल 12:4 में जो **'बहुत'** शब्द आया है, मैं विश्वास करता हूं कि इससे परमेश्वर के लोगों का अर्थ नहीं है, जो इसमें व्यस्त हैं। इसे इस तरह से कहें जैसे यीशु ने **'बहुतों'** शब्द का प्रयोग किया जो **'चौड़े रास्ते'** पर चलेंगे। यह 'सच्चे आज्ञाकारी चेलों' के लिए नहीं है।

यह एक सबसे खराब जटिल फन्दे है जो हमारे आत्मिक जीवन को अपंग बना रहा है और बढ़ता जा रहा है और परमेश्वर के राज्य को बनाने में रुकावट डाल रहा है। इसके साथ ही संसार की तरह परमेश्वर के लोग भी इस फन्दे से अनिभज्ञ हैं इसके साथ ही कुछ लोग अपने आप में घमण्ड करते हैं कि वे बहुत व्यस्त हैं! (जैसे हम आज के संसार में बहुत से बिना उद्धार पाए हुए लोगों को देखते हैं कि वे इसमें घमण्ड करते हैं)।

व्यस्तता आत्मिक जीवन के लिए बहुत हानिकारक है। आज दुर्भाग्यवश, मैं यहां तक देखता हूं कि सेवानिवृत मसीही लोग भी व्यस्तता के जुए में अपने आपको किसी न किसी तरीके से जोतते हैं बजाय इसके कि वे इसे परमेश्वर प्रदत्त काल को एक शान्त होने का सुन्दर अवसर मानें, परमेश्वर की सुनें, परमेश्वर की बातों पर ध्यान लगाएं, जहां वह उन्हें बुलाए वे उसकी सेवा करें।

प्रभु परमेश्वर कभी कभी हमें आत्मिक आराम देता है। (उसके मार्ग हमारे मार्गों से ऊंचे हैं) अस्थाई रुप से हमें नौकरी-विहीन करके अथवा व्यापार में गिरावट, बीमारी के द्वारा हमारे जीवनों में अनन्तकालीन बड़े उद्देश्यों को पूरा कर सकता है। बहुत से लोग यह मानते हैं कि इन सब के अन्त में यह सब कुछ बहुत आत्मिक बल प्रदान करने वाला समय रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि वे प्रभु परमेश्वर के बहुत निकट आ गए।

दुर्भाग्यवश, दूसरी ओर, ऐसे समयों के दौरान कुछ ऐसे हैं जो लगातार खिसियाने और कुड़कुड़ाने लगते हैं और उन सुन्दर अवसरों को छोड़ देते हैं जो प्रभु के साथ शान्त होने और उसमें लीन होने के लिए होते हैं। बजाय इसके वे पीछे हटकर इधर-उधर घूमने की लालसा में पड़ जाते हैं और शीघ्र ही वे इसके बाहर हो जाते हैं।

मैंने कई बार सुना है कि परमेश्वर किसी विश्वासी से यह चाहता है कि वह रुक जाए और उसकी बात सुने, यदि वह विश्वासी सुनने से इन्कार करता है तो वह परमेश्वर के पिता रूपी प्रेम से बाहर हो जाता है, वह उसके उन्मादी व्यस्त जीवन में विभिन्न प्रकार से विराम लगाता है **जहां वह उस विश्वासी का सम्पूर्ण ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और एक-एक करके उससे बोलता है।**

प्रभु यीशु के 'बड़े भोज' के दृष्टान्त में वे लोग जो **'भोज' में शामिल नहीं हो पाए थे** यही वे लोग थे जो **जीवन के काम की मांगों में बहुत व्यस्त हो गए थे।** बजाय इसके कि वे इस 'बड़े भोज' के महत्वपूर्ण निमन्त्रण के लिए तैयार होते, वे उसे खो देते हैं जब संसार की अन्य वस्तुऐं उनके जीवन में प्राथमिकता ले लेती

हैं और मार्ग में रुकावट डालती हैं। प्रभु यीशु ने कहा कि वे लोग इस 'बड़े भोज' के योग्य नहीं है।

लूका 14:16-20

*16 उसने उससे कहा, 'किसी मनुष्य ने बड़ा भोज दिया और बहुतों को बुलाया। 17 जब भोजन तैयार हो गया तो उसने अपने दास के हाथ आमन्त्रित लोगों को कहला भेजा, 'आओ, अब भोजन तैयार है'। 18 पर वे सब के सब क्षमा मांगने लगे। पहले ने उससे कहा, **'मैंने खेत मोल लिया है,** और अवश्य है कि उसे देखूं; मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे क्षमा कर दे।' 19 दूसरे ने कहा, **'मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं,** और उन्हें परखने जाता हूं; मैं तुझ से विनती करता हूं, मुझे क्षमा कर दे।' 20 एक और ने कहा, **'मैंने विवाह किया है,** इसलिये मैं नहीं आ सकता।'*

आत्मिक उन्नति का सबसे बड़ा शत्रु 'व्यस्तता' है, जो प्राय: सांसारिकता का परिणाम है। (प्रतिदिन के काम सामाजिक और धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भागा-दौड़ी का जीवन जीना और तथाकथित दान एकत्रित करने की प्राथमिकताऐं) ये सब परमेश्वर के साथ समय बिताने की कीमत पर किया जाता है कि शान्त गुणवत्ता का समय उसके साथ और वचन पर मनन करने से अभी भी हमारे जीवन में उसकी आवाज और उसकी इच्छा सुनने के लिए पर्याप्त है जिसे कभी भी बदला नहीं जा सकता चाहे वह कितनी भी भली प्रतीत क्यों न हो। जब एक व्यक्ति व्यस्त है, तो उसका मस्तिष्क भी व्यस्त है और वह पवित्रात्मा के द्वारा दिखाए गए **हमारे जीवन की आत्मिक स्थिति की जांच करने के लिए असम्वेदनशील है।**

यद्यपि प्रभु यीशु के पास भी तीन महत्वपूर्ण वर्ष पूरे संसार के लिए उनकी बड़ी और अद्भभुत सेवा के लिए थे, तौभी वह अपने व्यस्त जीवन में कभी भी अपने पिता के साथ समय बिताने में असफल नहीं हुए। भोर को, सुबह से लेकर रात के समय तक जिसमें उन्होंने प्रार्थनाएं और उपवास किए। जी

हां, प्रभु यीशु ने अपनी सेवा को कभी भी अपने पिता परमेश्वर के साथ समय बिताने के बीच में नहीं आने दिया।

व्यस्तता आत्मिक पियक्कड़पन की स्थिति है, और विभिन्न फन्दों के रूप में आती है, जैसे सांसारिक चिन्ताऐं, अपव्यय और सेवा के कार्यों में अत्यधिक व्यस्तता।

आज जबकि प्रत्येक वस्तु बटन दबाने की दूरी पर है तो हमें अपने व्यस्त जीवनों में जानबूझकर रुकने की आवश्यकता है। यह हमारे सामाजिक कार्यो/समयों, टी.वी. और कम्प्यूटर पर बिताए जानेवाले समयों में से बहुत अधिक समय हटाना पड़े (चाहे ये मसीहत से ही सम्बन्धित क्यों न हों) और यहां तक कि आपको बहुत सी सेवा हेतु आए हुए निमन्त्रणों में से चुनाव करना पड़े और इसके लिए चाहे परमेश्वर के वचन को प्रचार करने की बात ही क्यों न हो।

भविष्यद्वक्ताओं से लेकर पुराने नियम के विश्वास के योद्धाओं और प्रभु यीशु तक और प्रेरित पौलुस और प्रेरित यूहन्ना तक उनके पास सबसे **सामर्थी और प्रभावशाली समय वही थे जब उन्होंने अपना शान्त समय परमेश्वर के साथ जंगल में, जेलों में या टापुओं में बिताया।** प्रेरित पौलुस और प्रेरित यूहन्ना की पत्रियां और पत्र **विशेष कर ऐसे शान्त समयों में लिखी गई थीं** जो बहुत सी कलीसियाओं तक उस समय पहुंची और अभी भी जा रहीं हैं, ये सब उन्हीं शान्त और स्थिर समयों के कारण ही हो पाये हैं। प्राय: केवल जब आप शान्त होते हैं उसी समय परमेश्वर से सबसे अधिक सुन पाते हैं!

प्रभु यीशु ने कहा कि उसका आना एक **'चोर'** की तरह होगा और यह चेतावनी **उन** सब के लिए है **जो जीवन की व्यस्तता में जकड़े हुए हैं** और अपने जीवन में प्रतीक्षा व चौकसी नहीं कर रहे हैं। बाइबल में चार जगहों पर लिखा हुआ है कि प्रभु का आना एक 'चोर' की तरह होगा- **मत्ती 24:23, 1 थिस्सलुनीकियों 5:2, 2 पतरस 3:10** और **प्रकाशितवाक्य 3:3** । दुर्भाग्यवश हममें से बहुत से लोग यह सोचकर गलती करते हैं कि प्रभु यीशु

मसीह अपने समर्पित चेलों के लिए भी चोर की तरह आएंगे। परन्तु यह सत्य नहीं है, वह उनके लिए एक **दूल्हा** की तरह आएगा और तैयार किए हुए मसीहियों के लिए चोर की तरह नहीं आएगा यह केवल उन मसीहियों के लिए होगा जो आत्मिक रुप से सोए हुए हैं और आत्मिक सन्तुष्टि में जी रहे हैं कि मसीह का आना उनके लिए अचानक चोर की तरह होगा।

यह पर्याप्तरूप से परमेश्वर के वचन में लिखा है। (तौभी बहुत से लोग लगातार यह अंगीकार करते हैं कि वह एक 'चोर' की तरह ही आएगा)। एक तरीके से, जी हां दुर्भाग्यवश उनके लिए जो ऐसा अंगीकार करते हैं।

आप उनसे अगले वचनों में देखेंगे कि एक सच्चा और समर्पित मसीही आश्चर्य में **नहीं पड़ेगा**। आइए, नीचे लिखे हुए वचनों का अध्ययन करें ताकि हम अपनी भलाई के लिए अपनी सोच से उन बादलों को हटाएं:

मत्ती 24:37-39 से आरम्भ करते हुए प्रभु ने कहा,

*'[37] जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। [38] क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग **खाते-पीते** थे, और उनमें विवाह होते थे। [39] और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को **बहा न ले गया,** तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।'*

हम जानते हैं कि नूह 'वे' और 'उन' का भाग नहीं था जैसे हम जो 'मसीह' में हैं। पद 42-44 भी स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं कि हमें चौकस रहना है और अपने घर में सेंध लगने नहीं देना है।

तब 1 थिस्सलुनीकियों 5:4-5 में हम देखते हैं:

*'[4] **पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े।** [5] क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो; हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं'*

इस पद का व्याख्यान करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर का वचन साधारण और स्पष्ट होता है जो कहता है कि वे सब विश्वासी जो ज्योति में चल रहे हैं उन्हें अचम्भा नहीं होगा जैसा बहुतों को प्रभु के आने पर होगा।

2 पतरस 3:3-7 पर बढ़ते हुए:

'[3] पहले यह जान लो कि अन्तिम दिनों में हंसी ठट्टा करनेवाले आएंगे जो अपनी ही अभिलाषाओं में अनुसार चलेंगे [4] और कहेंगे, 'उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?' [5] वे तो जान बूझकर यह भूल गए कि परमेश्वर के वचन के द्वारा आकाश प्राचीन काल से विद्यमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है, [6] इसी के कारण उस युग का जगत जल में डूब कर नष्ट हो गया। [7] पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि जलाए जाएं; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।'

आज्ञाकारी विश्वासियों को 'वे जो जानबूझकर भूल जाते हैं' के साथ नहीं रखा गया है और इनका अर्थ अधर्मी लोगों से है। क्योंकि नूह उस अचानक आनेवाले भय का भाग नहीं था और वह स्पष्टरूप से जानता था कि बाढ़ कब आएगी-बाढ़ आने से सात दिन पहले-**उत्पति 7:4**

अन्तिम वचन पर आते हुए जो कहता है कि प्रभु का आना

एक चोर की तरह होगा लेकिन केवल उनके लिए जो तैयार नहीं हैं, जैसा हम प्रकाशितवाक्य 3:3 पढ़ते हैं:

*'इसलिये स्मरण कर कि तूने कैसी शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी, और उसमें बना रह और मन फिरा। **यदि** तू जागृत न रहेगा **तो मैं चोर के समान आ जाऊंगा,** और तू कदापि न जान सकेगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा'।*

कृपया इस वचन का ध्यानपूर्वक आत्मा में होकर अध्ययन करें और आप इसमें से बड़ा प्रकाशन आते हुए देखेंगे। मैं आपको इसमें से होकर ले जाना चाहता हूं क्योंकि जब प्रकाशन आता है तो वास्तव में यह बहुत सरल भी होता है (अपरिचित और रहस्यपूर्ण जैसा परमेश्वर का पवित्र वचन है)। वह एक अक्षर *'यदि'* सत्य को प्रकट करता है। वह कहता है, 'इसलिए *'यदि' तुम जागते न रहो तो मैं चोर की नाई तुम्हारे पास आऊंगा और तुम उस घड़ी के बारे में नहीं जानते कि मैं कब तुम्हारे पास आऊंगा।'*

प्रकाशितवाक्य 3:3 यह हमारे पास बिल्कुल साधारण व्याकरण में आता है और इसमें कोई भी रौकेट का विज्ञान नहीं है। अब इसे सकारात्मक रुप से देखें- *'. .....'* मुझे अनुमति दें कि मैं यह आपके लिए पूरा करूं ***'वह एक दुल्हन की तरह आएगा (और चोर की तरह नहीं) और मुझे वह समय पता चल जाएगा'*** जैसे 'नहू' को बाढ़ आने से पहले मालूम हो गया था- **उत्पत्ति 7:4** आइए कुछ समय के लिए विचार करे- मसीह हमारे लिए दूल्हा है न कि वह हमारे लिए चोर है। ठीक है?

दस कुंवारियों के विषय में प्रभु का दृष्टान्त -मत्ती 25:1-11, आगे इसी बात को दृढ़ करते हुए पर्याप्त रुप से इसे स्पष्ट करते हैं कि 5 बुद्धिमान कुंवारियों के लिए वह एक दूल्हे के रुप में आया, उन्होंने उसे देखा, उनके लिए द्वार खुला था और वे उनमें प्रवेश कर गई और फिर द्वार बन्द किया गया।

परन्तु उन पांच मूर्ख कुवारियों के लिए प्रभु एक चोर की तरह आया, **ऐसा जैसे एक व्यक्ति जो चोर को आते और जाते नहीं देखता है।**

यीशु दस कुंवारियों के दृष्टान्त के विषय में स्पष्ट थे। आप समझते हैं कि सभी दस कुंवारियां विश्वासी थीं, वे सभी प्रभु को प्रेम करने का दावा करती थीं यह दिखाते हुए कि वे उसकी प्रतीक्षा कर रहीं हैं। परन्तु अन्तर केवल इतना ही था कि कुछ 'अपने भले कामों' के द्वारा तैयार थीं (उन्होंने अपनी कुप्पी में तेल भर लिया था) और अन्यों ने उसी के साथ उसकी प्रतीक्षा की

जो उनके पास था (उद्धार की प्रतिज्ञा के विषय में उनकी ढीठता)।

प्रभु यीशु ने पहली पांच को 'बुद्धिमान' और दूसरी पांच को 'मूर्ख' कहा:

मत्ती 25:11-12

*[11] इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगी, **'हे स्वामी!', 'हे स्वामी!' हमारे लिए द्वार खोल दे!** [12] उसने उत्तर दिया मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं तुम्हें नहीं जानता।*

जैसा नूह के दिनों में था। (कलीसिया की) पांच मूर्ख कुंवारियां द्वार पर खटखटाती हुई यह कहते हुए छूट जाएंगी कि 'प्रभु!' 'प्रभु!'- **मत्ती 25:11-12,** (जैसे लोग नूह के जहाज के द्वार पर थे जब बाढ़ आ गई तो पुकार उठे, नूह, नूह, द्वार खोल दे, नूह! नूह अब मैं तेरा विश्वास करता हूं)- परन्तु वह कभी नहीं खोला गया!

जी हाँ, द्वार बन्द किया गया! जैसे इन पांच मूर्ख कुंवारियों के लिए बन्द किया गया है वैसे ही यह नूह के समय के अधर्मी लोगों के लिए भी बन्द किया गया।

प्रकाशितवाक्य 3:15-22 कहता है कि आज हमारा अवसर है विशेषकर यदि हम गुनगुने हैं, **अपने हृदय का द्वार खोलें कि मसीह** हमारे जीवनों में 'एक स्वामी और राजा' की तरह आ सके-जबकि वह अभी खटखटा रहा है- **उससे पहले कि बहुत देर हो जाए** और उसका समय आ जाए कि वह द्वार बन्द कर दे।

उत्पत्ति 7:1,7, 15-16

तब यहोवा ने नूह से कहा, 'तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा क्योंकि मैंने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि में धर्मी पाया है। [7] *नूह अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत जल-प्रलय से बचने के लिए जहाज में गया।* [15] *जितने प्राणियों में जीवन का प्राण था उनकी सब जातियों में से दो-दो नूह के*

पास जहाज में गए। [16] और जो गए, वे परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब जाति के प्राणियों में से नर और मादा गए। ***तब यहोवा ने जहाज का द्वार बन्द कर दिया।***

मत्ती 25:10

जब वे मोल लेने को जा रही थीं तो दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं वे उसके साथ विवाह के घर में चली गई ***और द्वार बन्द किया गया।***

प्रभु यीशु ने हमें भी दस कुंवारियों के दृष्टान्त के माध्यम से यह चेतावनी दी है कि हमारे लिए भी एक दिन द्वार बन्द किया जाएगा और विशेषकर उसने इसका संदर्भ अपने पुनः वापस आने के विषय में दिया है जैसा नूह के दिनों में होता था:

मत्ती 24:37-39

[37] जैसे नूह के दिन थे वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा [38] क्योंकि जैसे जल प्रलय के दिनों में जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा उस दिन तक लोग खाते-पीते थे और उनमें विवाह होते थे [39] और जब तक जल-प्रलय उन सब को आकर बहा न ले गया तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा। ***वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।***

जब तक हम सावधान नहीं रहेंगे हमें भी अचानक इस घटना का सामना करना पड़ेगा 'जैसे नूह के दिनों में होता था।' मुझे यह कहने की आवश्यकता इसलिए है कि बहुत से मसीही लोग कुछ नाटकीय घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं उससे पहले की वे प्रभु यीशु की ओर मुड़ें, परन्तु ऐसा नहीं है! यह ऐसा नहीं होगा। दुर्भाग्यवश जब वह नाटक, जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे हैं खोला जाएगा तब बहुत देर हो चुकी होगी, 'जैसे एक चोर रात को आता है' वे नहीं जान पाते कि वह कब आया और कब गया।

मसीह में प्रियो, मार्ग 'अत्यन्त सकरा है' और बहुत कम विश्वासयोग्य लोग हैं जो अनन्तकालीन स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करेंगे- ये मेरे शब्द नहीं हैं परन्तु प्रभु यीशु के शब्द हैं:

लूका 13:24

सकेत द्वार *से प्रवेश करने का यत्न करो क्यों मैं तुम से कहता हूं कि बहुत से* ***प्रवेश करना चाहेंगे*** *पर न कर सकेंगे।*

तौभी आज हमारी बारी है कि हम प्रवेश करने का यत्न करें विशेष कर यदि 'हमारा सम्बन्ध मसीह के साथ गुनगुना है, **अपने हृदय के द्वार को मसीह यीशु के प्रवेश करने के लिए खोलें** कि वह हमारे जीवनों में 'प्रभु और राजा' की तरह आए और हम पर राज्य करे- जबकि वह खटखटा रहा है-**इससे पहले कि बहुत देर हो जाए** और उसकी बारी आ जाए कि वह हमारे लिए द्वार बन्द कर दे। प्रभु ने यह भविष्यद्वाणी की पुकार अन्तिम दिनों की कलीसिया, अपने सभी लोगों को **प्रकाशितवाक्य 3:15-22** में दी है।

प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं ही लूका 21 में पहले से ही चेतावनी दी है, **कि व्यस्तता का फन्दा अन्त के दिनों में सब पर आ पड़ेगा।**

लूका 21:34-36

[34] इसलिए सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन ***खुमार*** *और* ***मतवालेपन*** *और इस* ***जीवन की चिन्ताओं*** *से सुस्त हो जाएं और वह दिन तुम पर फन्दे के समान अचानक आ पड़े। [35] क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। [36] इसलिए* ***जागते*** *रहो और हर समय* ***प्रार्थना*** *करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से* ***बचने*** *और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।*

- हममें से बहुत लोग आज **जीवन में खुमारीपन से दबे हैं।**

- हममें से बहुत लोग आज **जीवन के पियक्कड़पन से दबे हैं।**
- हममें से बहुत लोग **जीवन की चिन्ताओं से दबे हैं।**

बहुतों के लिए जीवन में देने के लिए बहुत कुछ है जैसा कि बहुत लोग कहते हैं *'मेरा जीवन अभी आरम्भ ही हो रहा है।'* आज संसार के पास जीवन में देने के लिए बहुत कुछ है। लोग अपने जीवन को पर्याप्तरूप से भटकने और आकर्षित होने के द्वारा जी सकते हैं। सच में मसीह के भविष्यद्वाणी के वचन पूरे होते हैं जब उसने चेतावनी दी 'सावधान रहो कि *तुम्हारे मन* ***खुमार*** *और* ***मतवालेपन*** *और इस* ***जीवन की चिन्ताओं से*** सुस्त न हो जाएं।'

प्रभु यीशु ने **लूका 21** में कुछ महत्वपूर्ण सामर्थी सत्य प्रकट किए हैं जो प्रभु यीशु के भविष्यद्वाणी के वचन हैं और यह आज की कलीसिया के लिए ठीक समय पर आए हैं। केवल एक ही तरीका है कि इनका सामना किया जाए **'जागते रहने'** के द्वारा-जिसका अर्थ है कि प्रतिदिन की व्यस्तता के फन्दों के प्रति हम चौकस रहें और **'प्रार्थना** करते रहें कि इसमें न पकड़े जाएं' और उसके महिमामय प्रकट होने के समय उसके सामने खड़े होने के योग्य पाए जाएं।

प्रभु यीशु ने **लूका 21:34-36** *में चेतावनी दी है:*

[34] इसलिए ***सावधान रहो*** *ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन और इस* ***जीवन की चिन्ताओं*** *से सुस्त हो जाएं और वह दिन तुम पर* ***फन्दे के समान*** *अचानक आ पड़े। [35] क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। [36] इसलिए* ***जागते*** *रहो और* ***हर समय प्रार्थना करते रहो*** *कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से* ***बचने*** *और* ***मनुष्य के पुत्र के सामने*** *खड़े होने के योग्य बनो।*

सावधान रहो- अपने जीवन की रखवाली करें, अपने जीवन की चौकसी करें, अपने विचारों की चौकसी करें और धार्मिकता का अभ्यास करें जैसा **1**

यूहन्ना 3:7 कहता है। उन लोगों से सावधान रहें जो भेड़िए के भेष में आते हैं और मसीह और उसकी आज्ञाओं का इन्कार करते हैं। मैं चौकस रहूँ कि मैं परमेश्वर का वचन पढ़ूं और लगातार उसके अनुसार जीवन जीऊं। चौकस रहने का एक बड़ा भाग यह है कि उसके आने के 'चिन्हों' के प्रति भी हम सतर्क रहें।

प्रार्थना करते रहो- प्रार्थना करें कि प्रभु मुझे प्रतिदिन सामर्थ दे कि मैं अपने शरीर की अभिलाषाओं, अपनी इच्छाओं, अपनी लालसाओं, अपनी बुद्धि का इन्कार करूं और उसकी इच्छा की क्रूस को उठाऊं, उसके वचन में बढ़ते हुए मसीह की नम्रता, दयालुता और दीनता में, जैसा मसीह ने मुझे स्वयं उससे सीखने के लिए बुलाया है,- बढ़ता जाऊं-**मत्ती 11:29**।

'सदैव प्रार्थना' करने का अर्थ यह है कि हम हर अवसर पर उसके अनुग्रह और उसके मार्गदर्शन को खोजें और ऐसा आज के दुष्ट और ढीठ संसार में और अधिक करें ताकि हम प्रभु यीशु के लिए खड़े हो सकें। यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमें विजयी बनाए न कि किसी समूह-संस्कृति और दबाव के लिए जो हमारे चारों ओर हैं।

आज जब तक आप और मैं प्रभु यीशु के द्वारा ऊपर दी गई चेतावनियों और आज्ञाओं को पूरा नहीं करते विशेषकर ([36] ***इसलिए सावधान रहो और सदैव प्रार्थना करते रहो)*** खुमारीपन, मतवालेपन और जीवन की दैनिक चिन्ताऐं हमें अपने फन्दे में फंसा लेंगी। हम द्वार के बाहर छोड़े जाने की जोखिम में रहेंगे और यह कहते हुए द्वार को खटखटाते रहेंगे, हे स्वामी! हे स्वामी! हमारे लिए द्वार खोल दे! इसके विषय में सोचें कि यदि एक विश्वासी के लिए यह आवश्यक नहीं होता तो प्रभु यीशु क्या अपना समय इस चेतावनी को देने के लिए बर्बाद करता?

वह दिन शीघ्र आ रहा है और इसका आना अचानक होगा, एक फन्दे की तरह या जैसे चोर आता है। क्योंकि यह कहता है, 'यह सब पर आएगा- अर्थात् आप पर और मुझ पर- उन सब पर जो इस पृथ्वी पर रहते हैं। प्रश्न

यह है- कि हम मसीह यीशु के उन वचनों को कितनी गम्भीरता से लेते हैं? और क्या हम सर्वज्ञानी परमेश्वर के मार्ग को चुनते हैं-**'लगातार प्रार्थना करने और चौकस रहने के द्वारा'** कि प्रभु हमारी आत्माओं की रक्षा करे। अथवा हम यह बहाना करते हुए अपने सिरों को धूल में छिपा लेते हैं कि हमने कभी मसीह के उन वचनों को न तो सुना है और न जाना है अथवा हम संसार की चमकाने वाली प्रत्येक वस्तु का और प्रत्येक क्षण का आनन्द उठाने में लगे हैं।

प्रभु यीशु ने लूका 21 के सम्पूर्ण अध्याय के द्वारा हम विश्वासियों के समक्ष अन्त के दिनों से सम्बन्धित अपनी बड़ी भविष्यद्वाणियों में से एक को खोला है। परन्तु इस अध्याय के अन्त में प्रभु ने हमें दिखाया है कि जितनी महत्वपूर्ण यह भविष्यद्वाणी कलीसिया के लिए है, **एक व्यक्ति की व्यक्तिगत आत्मिक तैयारी केवल इन अलौकिक भविष्यद्वाणियों के समझने से बढ़कर है।**

अध्याय 4

परमेश्वर की प्रतीक्षा करना–महत्वपूर्ण और अत्मिक रूप से बहुत बल प्रदान करने वाली है।

परमेश्वर के महान् लोग जिनकी चर्चा बाइबल में की गई है उन्हें केवल परमेश्वर की बाट जोहते हुए ही सामर्थ मिली। इब्राहीम, इसहाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता, पौलुस, यूहन्ना आदि उन महान लोगों के कुछ उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी सामर्थ परमेश्वर के साथ शान्त समय बिताने से प्राप्त की। हमारे प्रिय प्रभु यीशु ने अपनी सेवा को आरम्भ करने से पहले धैर्यपूर्वक तीस वर्षों तक प्रतीक्षा की (उसने अपने स्वर्गीय पिता से कभी यह कहते हुए प्रश्न नहीं किया कि 'मेरा समय समाप्त होता जा रहा है')।

आज कितनों के पास समय है कि वे प्रभु से पूछें और तब उसकी ओर से तब छोटे और बड़े फैसले करें? यह तो दुर्भाग्यपूर्ण बहुत पुराना फैशन लगता है, तौभी इन बातों का बहिष्कार करना हमारे आत्मिक जीवनों के लिए बड़े गड़हे बन गए हैं। और यदि कुछ ऐसे हैं भी जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं वे प्रायः प्रभु को अन्तिम तिथि दे देते हैं।

बाइबल प्रत्येक विश्वासी को इन पदों में निर्देश देती है **रोमियों 12:12, 1 कुरिन्थियों 7:29-31, इफिसियों 6:18, 1 पतरस 1:13, 1 पतरस 4:7, 1 पतरस 5:8** आप इन्हें पढ़कर अपने आप में सामर्थ पा सकते हैं। ये प्रत्येक आज्ञाकारी विश्वासी के लिए आज्ञाऐं हैं। तौभी कितने इन्हें जानते हैं और इनका अनुसरण करते हैं। इसीलिए परमेश्वर का वचन ठीक ही कहता है, *'मेरे लोग ज्ञान के न होने से नाश हुए जाते हैं।'*

उपर्युक्त वचन के अतिरिक्त, निम्नलिखित पद आपको उत्साहित कर सकते हैं कि प्रभु चाहता है कि आप और मैं **शान्त हों ताकि हम परमेश्वर की बात सुन सकें:**

- **नीतिवचन 8:34** [34] *'क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन् मेरी डेवढ़ी पर प्रतिदिन खड़ा रहता और मेरे द्वारों के खंभों के पास **दृष्टि** लगाए रहता है।'*

- **यशायाह 30:15** [15] *' प्रभु यहोवा, इस्राएल का पवित्र यों कहता है, **'लौट आने** और **शान्त रहने** में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है।' परन्तु तुम ने ऐसा नहीं किया।'*

- **यशायाह 40:31** [31] *' **परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं,** वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।'*

- **मत्ती 11:28-29** [28] *'हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; **मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।** [29] मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं **और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।'***

क्या आज आप और मैं उसके समय की प्रतीक्षा करने के लिए इच्छुक हैं? जबकि बाइबल कहती है, 'वह सब काम **अपने समय** में सुन्दर करता है (**हमारे समय में नहीं**)' हम इसमें कभी-कभी गड़बड़ी करते हैं और सर्वोत्तम को नहीं प्राप्त करते केवल इसलिए कि हमने उसके समय की प्रतीक्षा नहीं की है।

आइए हम अपनी बुद्धि का प्रयोग न करें उन सब बातों के लिए जो हमारी आंखों को चौराहे पर अच्छी लगती हैं। यह मानवजाति की पहली मूर्खता थी जैसा हम उत्पत्ति की पुस्तक में पढ़ते हैं।

उत्पत्ति 3:6

*[6] अत: जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और **देखने में मनभाऊ,** और बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।*

नीतिवचन 16:25 कहता है: *ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।'*

जब आस-पास के गिबोनियों ने देखा कि इस्राएल एक बड़ी सेना है, उनसे भी बड़ी बाइबल कहती है कि उन्होंने चालाकी की और कुछ लोगों को यहोशू के पास भेजा मानो वे बहुत दूर से आए हैं, वे फटे हुए कपड़े, फटी हुई चप्पल पहने हुए थे और पुरानी मश्कें लिए हुए थे, यह बहाना करते हुए कि वे बहुत दूर देश से आए हैं। यहोशू और इस्राएल ने उनकी कहानी सुनी और उन बातों पर विश्वास किया जो उनकी आंखों ने देखा था।

यहोशू 9:14-16 *[14] तब उन पुरुषों ने **यहोवा से बिना सलाह लिये** उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया। [15] तब यहोशू ने उनसे मेल करके उनसे यह वाचा बांधी कि तुम को जीवित छोड़ेंगे; और मण्डली के प्रधानों ने उनसे शपथ खाई। [16] उनके साथ वाचा बांधने के तीन दिन के बाद उनको यह समाचार मिला, कि वे हमारे पड़ोस के रहनेवाले लोग हैं, और हमारे ही मध्य में बसे हैं।'*

मैंने अभी पवित्रशास्त्र के तीन वचनों को लिया है जो उत्पत्ति, नीतिवचन और यहोशू से है, इसका कारण यह है कि हम देख सकें कि हमें **परमेश्वर की सन्तान होने के कारण सदैव छोटे और बड़े फैसले लेने से पूर्व परमेश्वर के साथ उनकी जांच करनी चाहिए,** चाहे यह हमारे भविष्य के चुनाव, जीवन साथी का चुनाव, अपने घर का चुनाव, अपने स्थानान्तरण, यहां तक कि अपनी कलीसिया में बाहर के पास्टर को बुलाने (बिना उनके धर्मज्ञान के सिद्धान्त की जांच किए) या अपनी सेवा, वे दृश्य जिन्हें हम देखते हैं, वे खेल जिन्हें हम खेलते हैं; वह संगीत जिसे हम सुनते हैं, वे मित्र जो हमारे पास हैं आदि चुनाव करने की बात हो। *(ध्यान रखें इनमें से कोई भी आपके आत्मिक जीवन को गिराने का कारण हो सकता है)।*

प्रभु की प्रतीक्षा करना हमारे मसीही जीवन की चाल में अत्यन्त महत्वपूर्ण है (यद्यपि यह चुनौतीपूर्ण है)। प्रभु परमेश्वर दुखी होता है कि आज उसके बहुत से लोग उसकी प्रतीक्षा और उससे पूछने की महत्वता को नहीं जानते हैं।

यशायाह 40:30-31

[30] तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं; [31] ***परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे,*** *वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।*

आपने समझा कि बाइबल कहती है कि परमेश्वर के पास हममें से प्रत्येक के लिए एक योजना है एक ऐसी योजना जो हमारी उन्नति की है न कि हानि की, हमें आशा और अच्छा भाविष्य देने की है। क्योंकि परमेश्वर की योजना हमारे लिए कभी अल्पदृष्टि की नहीं है जैसे हम हैं। उसके मन में सदा अनन्तकाल और उसका राज्य रहता है।

मैं सोच रहा था, कि यदि प्रभु यीशु अपने पिता से गतसमनी के बाग में कहता, *'पिता तेरी इच्छा थोड़ी कठिन लगती है और मैं भी सोचता हूं कि यदि मैं और रुक जाऊं और थोड़ा सुसमाचार फैलाऊं जिसने अभी-अभी ख्याति प्राप्त करना आरम्भ ही किया है और जब मैं ऐसा करता हूं तो मैं अपने चेलों को और अधिक तैयार और प्रशिक्षित कर दूंगा क्योंकि वे अभी भी संसार का सामना करने में अपरिपक्व हैं। इसलिए कृपया मेरी इच्छा पूरी होने दे न कि तेरी इच्छा पूरी हो।'* ऐसा कहते हुए, यदि प्रभु यीशु क्रूस पर नहीं जाते, तो क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या होता? अनन्तकाल की मृत्यु प्रथम आदम से लेकर समस्त मानवजाति तक जारी रहती। मानवजाति के लिए परमेश्वर के उद्धार की योजना सदा के लिए बन्द हो जाती और आप और मैं नर्क में यह कहते हुए जलते रहते कि अच्छा होता कि प्रभु यीशु पिता की इच्छा पूरी करता और अपनी इच्छा पूरी न करता।

तौभी हम यह सोचने की हिम्मत करते हैं कि हम बच जाएंगे और उस दिन मसीह के सामने खड़े होंगे, जब कि हम उसके पहले से बताई गई **'इच्छा और योजना'** को अपने जीवनों में पूरा करने में असफल हुए हैं। परमेश्वर से निवेदन करने का प्रयास कर रहे हैं (असफल होने पर भी) यह कहते हुए, 'प्रभु, प्रभु हमने तेरे नाम से यह किया या वह किया जो मैंने अपनी बुद्धि में यह सोचा कि उस समय यह ठीक होगा।' मसीह जो स्वयं परमेश्वर

है उसने परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए कुश्ती लड़कर संघर्ष किया। तौभी उसने अपने आपको नम्र किया और पिता की इच्छा को पूरा किया, हमारे लिए एक उदाहरण देते हुए।

यशायाह 30:21 कहता है:

'जब कभी तुम दाहिनी या बांईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, ***'मार्ग यही है, इसी पर चलो।'***

प्रेरित पौलुस ने **रोमियों 8:14 में यशायाह 30:21** को पूरा किया, *'इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के* ***आत्मा के चलाए चलते हैं,*** *वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'*

जब तक आपका और मेरा जीवन पवित्रात्मा के चलाए नहीं चलता, तो हमारे जीवन के अन्त में हमें बड़ा अचम्भा होगा-**मत्ती 7:21-24।**

प्रभु यीशु मसीह ने ठीक ही लूका 18:8 में भविष्यद्वाणी की है:

'मैं तुम से कहता हूं, वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा।
तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा,
तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?'

यह भी याद रखें कि **केवल बाइबल का ज्ञान स्वत:** ही एक **मसीही चरित्र** को नहीं बना पाएगा।

परन्तु जैसा **2 पतरस 1:10** कहता है कि हमें उन बातों का **'व्यवहार'** करना होगा जिन्हें हमने वचन से सीखा है और **पद 11** कहता है, *'वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।'* क्योंकि **याकूब 2:14 और 17** कहता है कि विश्वास बिना कर्म (अभ्यास) के मरा हुआ है और वह विश्वास हमें नहीं बचा सकता है।

जब योजना 'अ' (परमेश्वर की योजना) सर्वोत्तम है तो हमें अपने लिए योजना 'ब' क्यों खोजनी चाहिए। यिर्मयाह 29:11, *'क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय में करता हूं उन्हें मैं जानता*

हूं, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं। और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।'

जैसे मैं इस पुस्तक के 'दूसरे भाग' -**'परमेश्वर के वचन पर मनन करना' 'न कि मनुष्य के वचन पर का समापन कर रहा हूं',** मैं चाहता हूं कि हम में से प्रत्येक मसीही इस बात को स्मरण रखे कि कलीसिया के इतिहास में, अन्धकार का समय प्रारम्भिक रूप से **उस समय की ओर संकेत करता है जब परमेश्वर का वचन पुलपिट से बन्धा हुआ था।** यह केवल तभी हुआ जब पवित्रशास्त्र को इसका सही स्थान दिया गया सुधार निकल पड़ा और लोग औपचारिक धर्म की जंजीरों से स्वतन्त्र हो गये।

मसीह में प्रियो, आज यह एक भिन्न कहानी है; आज हमारे पास परमेश्वर के पवित्र और अद्भभुत वचन को पढ़ने की स्वतन्त्रता है।

अत: जैसे हम इस भाग को अन्त करते हैं **क्या मैं आप से यह निवेदन कर सकता हूं** (मसीही प्रेम में) कि आज ही से योजनाबद्ध तरीके से बाइबल पढ़ना आरम्भ करें (वर्ष-प्रति-वर्ष) इस पर मनन करते हुए (*रात और दिन*) **उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक**-जब तक मसीह प्रकट न हो या जब तक आप प्रभु के पास न जाएं।

जैसा किसी ने कहा है, प्रतिदिन **एक घण्टा** परमेश्वर के वचन पर मनन करने से हमारा पुराना पापमय शरीर पुनर्जीवित होने से रुक जाता है।

काश मसीह का वचन
तुममें सारी बुद्धि के
साथ निवास करे!

भाग 3

परीक्षाऐं और कष्ट

(एक विश्वासी के जीवन में)

अध्याय 1

प्रभु यीशु 'मसीह' के विषय
में भविष्यद्वाणी करते हुए

यशायाह 53:3 कहता है:

*[3] वह **तुच्छ** जाना जाता और मनुष्यों का **त्यागा** हुआ था; **वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी;** और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना।*

जब हम अपने प्रभु यीशु के गुणों के बारे में सोचते हैं तो सामान्यरुप से एक विश्वासी के मस्तिष्क में क्या आता है? शान्ति का राजकुमार, छुड़ानेवाला, हमारी चट्टान, हमारी ढाल, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अच्छा चरवाहा, परन्तु बहुत कम हमारे मस्तिष्कों में उसकी तस्वीर एक **'पीड़ित सेवक'** के रुप में आती है। **यशायाह 53:3** ने इसी 'पीड़ित सेवक' के विषय में कुछ बातें लिखी हैं जिन्हें हमने अभी पढ़ा है।

'मसीही पीड़ाऐं और मसीही सताव' के विषय न केवल नजरअन्दाज किए गए हैं बल्कि दुर्भाग्यवश उनका जन-साधारण और पुरोहित वर्ग दोनों ने तोड़-मरोड़ करके, गलत अनुवाद और गलत प्रस्तुतीकरण किया है।

मैं यहां सुझाव दूंगा कि इस पुस्तक के महत्वपूर्ण भाग में आने से पहले एक लम्बी सांस लें। बाइबल कहती है:
2 तीमुथियुस 3:12:

पर **जितने** मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे **सब** सताए जाएंगे

यह ऐसा नहीं कहता, कि वे सब जो मसीह यीशु में धार्मिकता का जीवन जीना चाहते हैं 'शायद वे सताए जा सकते हैं,' परन्तु यह कहता है, 'वे सताए जाएंगे।'

प्रभु यीशु ने मत्ती 11:29 में कहा:
मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं ***नम्र और मन में दीन हूं।*** *और* ***तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।***

यह अभी हाल ही में मेरे साथ हुआ जब प्रभु यीशु ने कहा, 'मुझ से सीखो' और तब उसने अपने दो गुण बताए, तब मुझे महसूस हुआ कि वे सब पीड़ाऐं जो प्रभु परमेश्वर एक विश्वासी के जीवन में अनुमति देता है वे उन्हें 'मसीह की दो' विशेषताओं को लाने के लिए करता है जो **'नम्रता/दीनता'** और **'निम्न/विनीत'** है। इसे संक्षेप में करते हुए मसीह में प्रियो, यही मसीह के समान होने का सच्चा अर्थ है!

एक बचाए गए विश्वासी के जीवन में नम्रता और दीनता लाना प्रभु की सूची में सबसे प्रथम स्थान पर है, और इसके बाद, जैसे मसीह ने प्रतिज्ञा की ***'कि हम अपने प्राणों में विश्राम पाएंगे।'*** बशर्ते कि हम उनमें पाए जाएं-**मत्ती 11:29 ।**

इन्ही पीड़ाओं, परीक्षाओं और कष्टों के द्वारा हम परिशुद्ध, निष्कलंक, बेदाग किए जाते हैं और **अनन्तकाल में प्रवेश करने के लिए उसकी वास्तविक सन्तान बनते हैं-और अपनी आत्माओं में विश्राम पाते हैं'** प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि वह उसमें से पत्थर का हृदय निकालकर मांस का हृदय दे ताकि वह हमें नम्र और मसीह की समानता में बनाए।

इब्रानियों की पुस्तक **मसीह की अद्भभुत नम्रता** को प्रकट करती है और हमें दिखाती है कि हमारे प्रभु ने स्वयं कैसे नम्रता सीखी।

इब्रानियों 5:8-9:

*[8] पुत्र होने पर भी **उसने दु:ख उठा-उठाकर आज्ञा मानना सीखी,** [9] और सिद्ध बनकर, अपने **सब आज्ञा माननेवालों के लिये** सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।*

प्रेरित पतरस **मसीह के दुख हमारे लिए नमूने** के लिए पुन: प्रकट करता है कि हम उनका अनुसरण करें जैसा हम निम्न पद में पढ़ते हैं:

2 पतरस 2:21:

*और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दु:ख उठाकर **तुम्हें एक आदर्श दे गया है** कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो।*

मसीह में प्रियो, एक व्यक्ति और क्या कह सकता है, परमेश्वर का वचन बहुत स्पष्ट और साधारण है जिसे हमने ऊपर पढ़ा है। अब यह समय है कि हम रुककर अपने आप को जांचे जैसा परमेश्वर का वचन हमें **2 कुरिन्थियों 13:5** में उत्साहित करता है, यह पूछते हुए कि *क्या हम वास्तव में मसीह में हैं।* आइए अपने अन्दर खोजें कि क्या हमने सच्चाई से परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में समझा है?

आज बहुत से लोगों ने पवित्रशास्त्र की सामर्थ को गलत प्रस्तुत करके **इसे सांसारिक और शारीरिक बना दिया है।** जैसे चेलों ने किया था जब प्रभु यीशु ने उनसे कहा-'*फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहो।*' चूंकि उस समय भोजन उनकी सूची में प्रथम स्थान पर था, उन्होंने आपस में विचार किया कि प्रभु शायद रोटी के विषय में कह रहा है जिसे वे लाना भूल गए थे। तब प्रभु ने उन्हें डांटा और कहा कि वे अपना विश्वास बढ़ाऐं और कहा कि वे उसके वचनों को सांसारिक मस्तिष्कों से न समझें, परन्तु वह उन्हें बता रहा था कि वे फरीसियों और सदूकियों की शिक्षाओं से सावधान रहे (मत्ती 16:5-12)। **प्राय: हम अपने सांसारिक मस्तिष्कों से 'पवित्रशास्त्र की सामर्थ' का गलत अर्थ लगाते हैं और हमें परमेश्वर के दृष्टिकोण से पवित्रशास्त्र को समझने**

की आवश्यकता है।

'चंगाई' के अर्थ का एक और उदाहरण लें जिसे आधुनिक मसीही संसार में सबसे अधिक गलत समझा जाता है। परमेश्वर की मुख्य इच्छा आत्मिक चंगाई के बारे में है, लेकिन आज केवल शारीरिक चंगाई पर ही बल दिया जाता है। आप स्वयं देख सकते हैं कि बहुत से तथाकथित 'प्रेरणादायक वक्ता' सदैव आत्मिकता की अपेक्षा शारीरिकता पर जोर डालते हैं। यदि वे इसे अच्छा आत्मिक बनाते भी हैं, वे इसका अर्थ आपकी भौतिक सम्पन्नता और स्वास्थ्य से ही लगाते हैं। **हम कितनी बार उस विश्वास का सन्देश सुनते हैं जिससे हम अपने पापों से चंगे हो जाएं?**

हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि **बाइबल भौतिकता की अपेक्षा अधिक आत्मिक है, *और* अस्थाई की अपेक्षा अधिक अनन्त है!**

(जी हां, जब हम अपनी अनन्तकाल की महिमा में पहुंचेंगे तब वहां कोई दुख, रोना, दर्द, बीमारी और मृत्यु न होगी। वहां भौतिक और आत्मिक आशीषें अपनी परिपूर्णता में होंगी)।

2 कुरिन्थियों 4:16-18 कहता है:

16 इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। 17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और ***अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।*** *18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं;* ***क्योंकि देखी हुई वस्तुऐं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।***

यह प्रभु परमेश्वर की इच्छा है कि एक विश्वासी पाप के लिए मर जाए और आत्मिक रुप से चंगा हो जाए ताकि उसके लिए धार्मिकता का जीवन जीए, यद्यपि थोड़े समय का सताव आए ताकि एक विश्वासी के जीवन में अनन्त महिमा की अधिक बढ़ती होती जाए।

एक और पद जिसे इसकी परिपूर्णता में नहीं समझा गया है:

1 पतरस 2:24-25

[24] वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर ***धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं:*** *उसी के मार खाने से* ***तुम चंगे हुए।*** *[25] क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, पर अब* ***अपने प्राणों के रखवाले*** *और अध्यक्ष के पास लौट आए हो।*

इसके बारे में सोचें कि **'उसके कोड़ों के द्वारा'** वह हमें अपने पापों से चंगाई देने आया **ताकि हम धार्मिकता का जीवन जी सकें** जैसा बाइबल कहती है। वह हमें सम्पूर्ण देह देने के उद्देश्य से नहीं आया, ठीक है?

इसीलिए प्रभु यीशु ने हमसे कहा है कि हम उन लोगों से न डरें जो केवल शरीर को हानि पहुंचा सकते हैं, बल्कि अपनी आत्माओं को नाश होने से बचाने के लिए सावधान रहे **(मत्ती 10:28)**।

पिछले कुछ पद जो हमने अभी पढ़े हैं वे हमें अपने जीवन में कष्ट और चुनौतियों का सामना करने के लिए सही दृष्टिकोण और सामर्थ देते हैं और कष्टों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को सही दिशा देते हैं।

मैं यहां रुकना चाहता हूं और यह कहता हूं कि हमें यह जानने की आवश्यकता है कि **'मसीही कष्ट' 'मसीही सताव'** से भिन्न हैं। 'मसीही सताव' वह है जब एक विश्वासी अपने जीवन में परमेश्वर के 'वचन और इच्छा' के लिए खड़ा होता है चाहे लोग उनके बारे में कुछ भी कहें, सोचें या करें। मसीही जांच वह है जब एक विश्वासी को परमेश्वर के द्वारा परखा जाता है और इस परख का उद्देश्य होता है कि परमेश्वर एक विश्वासी को परिशुद्ध, नम्र और मसीह की समानता में बनाए।

'मसीही कष्ट' और 'मसीही सताव' के लिए एक विश्वासी को **विजय पाने की आत्मा की आवश्यकता है** और जैसे बाइबल इसे कहती है **'अच्छी कुश्ती लड़ना।'** दुख की बात है जैसा मैंने कहा बहुत से नाश हो जाते हैं बजाए इसके कि वे विजयी हों। हम अपने विश्वास में कड़वे और निरुत्साहित हो जाते हैं बजाय इसके कि हम विश्वास में परिपक्व और मजबूत हों।

प्रभु यीशु ने इसे (एक उदाहरण देते हुए) स्पष्ट किया कि जीवन में तेज हवाऐं और बाढ़ें हमारे घर पर टक्करें मारेगी, परन्तु 'बुद्धिमान' जो मसीह के वचन में जड़ पकड़े हैं और उसके वचन के अनुसार काम कर रहे हैं, वे चट्टान की तरह स्थिर रहेंगे। दूसरी ओर, 'मूर्ख' जो वचन को सुनता है परन्तु परमेश्वर के वचन पर नहीं चलता और उसके अनुसार जीवन नहीं बिताता, वह बालू में डूबने की तरह होगा जब उनके मार्ग में ऐसे कष्ट और विपत्तियां आएंगी- **मत्ती 7:24-28।**

जी हां, 'सताव' और 'परख' अपने आप में दर्दनीय होती हैं वे टूटापन लाती हैं जो प्रभु परमेश्वर के निकट हमें लाने के लिए आवश्यक तत्व होती हैं, जो अपने वचन **भजनसंहिता 51:17 में कहता है कि टूटे और पिसे हुए हृदय को वह तुच्छ नहीं जानता है।**

आप देखते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवनों में टूटापन आने देता है यह जानते हुए कि केवल टूटापन ही एक विश्वासी को उसके प्रति सम्पूर्ण समर्पण के योग्य बनाता है। यह हमारे शरीर को घमण्ड के द्वारा कठोर होने से भी बचाता है।

यह दुख के साथ कहना पड़ता है हममें से बहुत से लोग यह शीघ्रता से अंगीकार करते हैं कि हमारे जीवनों में शैतान यह कष्ट लाया है, वे हमारे जीवनों में सर्वसामर्थी परमेश्वर की प्रभुसत्ता को नहीं पहचानते हैं।

बल्कि हमें सबसे पहले उसे खोजना चाहिए, यह पूछते हुए *'क्यों भले परमेश्वर ने मेरे जीवन में इसे अनुमति दी है 'या' वह मुझे इस कष्ट, परख, सताव या कठिन अनुभव के द्वारा क्या बताना या सिखाना चाह रहा है?'* क्योंकि हमारे जीवन में से एक विपत्ति या कांटा या जो कुछ भी हो, प्रभु के लिए निकालना केवल एक रात में ही हो सकता है यदि यह तुरन्त नहीं होता है।

याद रखें कि प्रभु यीशु को भी पवित्रात्मा जंगल में ले गया ताकि परमेश्वर उसकी परीक्षा करे।

मत्ती 4:1 कहता है:

तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इबलीस से उसकी परीक्षा हो।

जब अय्यूब की परीक्षा हुई, उसने यह कह कर धन्यवाद दिया कि वह परीक्षा के योग्य ठहरा जैसा हम पढ़ते हैं:

अय्यूब 7:17-18 में अय्यूब ने कहा, *[17] 'मनुष्य क्या है कि तू उसे महत्व दे, और अपना मन उस पर लगाए, [18] और प्रति भोर को उसकी सुधि ले, और प्रति क्षण उसे जांचता रहे?*

सभी मामलों में नहीं, तौभी बहुत से मामलों में यह प्रभु ही है जो एक विश्वासी के जीवन में पीड़ाऐं और सताव आने देता है न केवल अपने लोगों को अनुशासित करने के लिए (जैसा एक सांसारिक प्रेमी पिता अपने बच्चों के साथ करता है) बल्कि अपने प्रति हमारा प्रेम, आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता को भी परखता है और हमें सोने और चांदी की तरह परिशुद्ध करता है। मेरे विचार नहीं परन्तु जैसे हम निम्नलिखित पदों को परमेश्वर के वचन से एकत्रित करते हैं:

रोमियों 5:3-5 कहता है:

[3] केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, [4] और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; [5] और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

बाइबल इस विषय पर इससे अधिक और स्पष्ट नहीं हो सकती है **कि ईश्वरीय विपत्तियां और सताव आत्मिक पवित्रीकरण** का भाग है। मैं कभी कभी गम्भीरता से सोचता हूं कि हममें से कुछ कौन सी बाइबल पढ़ते हैं, जो इसके साथ सहमत नहीं होते (मानो कि वे बाइबल पढ़ते हैं)।

1 पतरस 4:12-16 कहता है:

[12] हे प्रियो, जो दुःख रुपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इससे यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। [13] पर जैसे-जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और

मगन हो। [14] फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है। [15] तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दु:ख न पाए। [16] पर यदि मसीही होने के कारण दु:ख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।

अत: मैं आपसे पूछता हूं, **आज आपका धन कहां है?** क्या यह भौतिकता में है (आपके आस-पास जो शीघ्र समाप्त हो जाएगा) या अनन्त जीवन की बातों में हैं? क्या आपको प्राय: उसकी इच्छा पूरी करते हुए देखा जाता है या अपनी इच्छा पूरी करते हुए?

स्वर्ग का मार्ग वास्तव में सकरा है और कभी कभी यह कस कर बन्धी हुई रस्सी के समान होता है जिस पर चलना पड़ता है। परन्तु प्रश्न यह है- क्या यह योग्य है? जी हां, मैं विश्वास करता हूं कि इस पर चलना भला है, तभी हम दूसरी ओर पहुंचेगे।

1 कुरिन्थियों 2:9

परन्तु जैसा लिखा है, 'जो बातें आंख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।

उपर्युक्त पद कहता है कि परमेश्वर ने उन लोगों के लिए महान वस्तुऐं तैयार की हैं जो उससे प्रेम करते हैं, और उनकी परीक्षा 'जो उसे प्रेम करते हैं, **यूहन्ना 14:15** के पूरा करने में पाई जाती है। बाकी लोग अवैध सन्तानों की तरह फेंके जाने की जोखिम में हैं।

क्या आज आप परमेश्वर में इस बात से निरुत्साहित हैं कि वह आपकी प्रार्थनाओं/निवेदनों का इन्कार कर रहा है या देरी कर रहा है? **याद रखें कि परमेश्वर आपके निवेदन को ठुकरा सकता है परन्तु वह आपके विश्वास को जो उसमें है कभी निराश न करेगा।**

उस प्रोत्साहन को देखें जिसे हम निम्नलिखित वचन से लेते हैं, प्रेरित पौलुस के आचरण को देखते हुए कि वह अपने कष्टों के बीच में भी अपनी ऊंची बुलाहट में लगातार आगे बढ़ता जा रहा था:

2 कुरिन्थियों 7:10

*"क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा **पश्चात्ताप् उत्पन्न करता है** जिसका परिणाम **उद्धार है** और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता। परन्तु सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।"*

2 कुरिन्थियों 12:10 कहता है:

10 इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं में, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूं।

2 कुरिन्थियों 1:3-5,7

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। 4 वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। 5 क्योंकि जैसे मसीह के दु:खों में हम अधिक सहभागी होते हैं, वैसे ही हम शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होते हैं। 7 हमारी आशा तुम्हारे विषय में दृढ़ है; क्योंकि हम जानते हैं कि तुम जैसे हमारे दुखों में, वैसे ही शान्ति में भी सहभागी हो।

हमें इन पदों से अपने आपको उत्साहित करने, याद दिलाने और सदैव यह अपने मस्तिष्क में रखने की आवश्यकता है कि हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु के आगमन पर इन सारी सांसारिक पीड़ाओं का अन्त हो जाएगा और इसीलिए (जैसा बाइबल कहती है), हम उसके आने की बाट उत्सुकता से जोह रहे हैं (दुर्भाग्यवश, आज की कलीसिया में बहुत से लोगों का इसके प्रति आचरण धुंधला पड़ गया है)।

प्रेरित पौलुस अपनी सेवा के अन्त में **2 तीमुथियुस 4:7-8** में धार्मिकता के मुकुट के बारे में बात करता है जो न केवल उसकी प्रतीक्षा कर रहा है क्योंकि उसने अपने कष्टों के बीच में विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ी थी, परन्तु उसने कहा कि यह उन सब के लिए है जो मसीह यीशु के वापस आने की प्रतीक्षा करते हैं।

2 तीमुथियुस 4:7-8

7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की हैं। 8 भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके ***प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।***

मसीह के महिमामय आगमन के प्रति **हमारा आचरण** हमारी वर्तमान पीड़ाओं, हमारी प्राथमिकताओं, हमारे दर्शन, पवित्र जीवन जीने के लिए हमारी प्रेरणा के प्रति हमारा आचरण निर्धारण करेगा (आशा के साथ और बिना निरुत्साहित हुए)।

इब्रानियों 12:1-3 कहता है:

1 'इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, 2 और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, ***जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था,*** *लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा। 3 इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।*

2 कुरिन्थियों 4:7-9 कहता है:

7 'परन्तु हमारे पास वह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से

ठहरे। [8] *हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर* ***संकट में नहीं पड़ते;*** *निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते;* [9] *सताए तो जाते हैं,* ***पर त्यागे नहीं जाते;*** *गिराए तो जाते हैं,* ***पर नष्ट नहीं होते।***

ऊपर के वचनों से हम जो सीख सकते हैं वह यह है कि एक आज्ञाकारी मसीही ऐसी परिस्थितियों में से होकर गुजर सकता है जहां उसे दबाया जाए, उलझन में पड़े, सताया और गिराया जाए, तौभी प्रतिज्ञा यह है कि वे नाश नहीं होंगे, निराशा में छोड़े जाने में और इन सब में नाश न होंगे, क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

मसीह में अतिप्रियो, मैं इस प्रोत्साहित करनेवाले वचन के साथ यहां अन्त करना चाहता हूं:

भजनसंहिता 34:17

धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है,
और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है।

अध्याय 2

परमेश्वर के चुने हुए पात्र-क्रूस उठाएं!

1 पतरस 2:21 कहता है

*'और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी **तुम्हारे** लिये दु:ख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है **कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो।***

जब इस प्रकार के पद हमारे मार्ग में आते हैं तो क्या हम यह कहते हैं, 'वे वचन मुझ पर लागू नहीं होते और मैं उन पदों के **'तुम'** और **'हम'** में नहीं आता हूं।

यदि ऐसी बात है तो हमें यह जानना आवश्यक है कि केवल वे ही जो अपने आपको उस पद के 'तुम और हम' में रखते हैं वे ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे और अन्य सब बचे हुए लोगों की बस छूट जाएगी। **मैं ऐसा क्यों कहता हूं?** क्योंकि परमेश्वर के वचन में कोई मोलभाव नहीं है जो यह कहता है:

1 यूहन्ना 5:3

'क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।

जी हां, चुने हुए पात्रो-क्रूस उठाओ और यह भारी नहीं है!

प्रेरितों के काम 14:22 कहता है:

*और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो; और यह कहते थे, **'हमें बड़े क्लेश उठाकर** परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।'*

प्रेरित पौलुस के विश्वास को देखें, यहां तक कि पत्थरवाह किए जाने और नगर से बाहर तक घसीटे जाने के बाद भी (**प्रेरितों के काम 4:19-21**), वह विश्वास में निराश नहीं हुआ, लेकिन वह वहां से निकल कर विश्वासियों को लगातार विश्वास में सुदृढ़ और उत्साहित करता रहा। अद्भभुत है न?

आज हम कितनी बार प्रेरित पौलुस की तरह सन्देश सुनते हैं जो विश्वासियों को उत्साहित करता है कि बहुत सी कठिनाईयों को सहकर ही हम परमेश्वर में राज्य में प्रवेश करेंगे? पिछले पचास वर्षों पहले, जी हां, परन्तु आज...?

1 कुरिन्थियों 11:32 में बाइबल कहती है:
'परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, ***इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।***

जब हम परीक्षाओं और कठिन बातों में से होकर गुजरते हैं और सब कुछ ठीक नहीं होता है, तो हमें सबसे पहले अपने अंदर सर्वसत्ता सम्पन्न परमेश्वर से दो बातें पूछते हुए खोज करनी चाहिए:

1. प्रभु क्या मेरे जीवन में कोई पाप है जिसके लिए आप मेरी ताड़ना कर रहे हैं?
2. या, प्रभु क्या यह मेरी परीक्षा है कि आप मेरे विश्वास के स्तर को ऊंचा उठाने और अपनी समानता में लाने के लिए मुझे नम्र बना रहे हैं?

दाऊद राजा प्राय: अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख खोलता था-वह उससे कुछ नहीं छिपाता था और अपने और अनन्तकाल के बीच में किसी को नहीं आने देता था:

भजनसंहिता 139:23-24
[23] हे परमेश्वर, मुझे जांचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! [24] और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं,
और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।

अनन्तकाल का राज्य दाऊद के जीवन की सूची में सर्वोपरि था और वह

उसे किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहता था। उसने इस्राएल के जीवन में बहुत सी बातों को सीखा था और वह उन्हें किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहता था। वह जानता था कि जो कुछ परमेश्वर उसके बारे में सोचता था वह उसकी अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण था जो लोग उसके बारे में सोचते थे।

आज उस अनन्तकालीन राज्य के लिए आपका कैसा आचरण है? बल्कि नया नियम बचाए हुए विश्वासियों को चेतावनी देता है (एसाव के उदाहरण के साथ), कि वे अपने उद्धार को हल्के रूप में न लें, जिनके पास उनका उद्धार उनके जन्मसिद्ध के रूप में है जैसा कि हम इब्रानियों की पुस्तक में पढ़ते हैं:

इब्रानियों 12:14-17

14 'सब से मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। 15 ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। 16 ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। 17 तुम जानते हो कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला।

प्रभु यीशु ने कभी भी अपने 'चेलेपन' को थोपा नहीं था, परन्तु लोगों को चुनाव करने का अवसर दिया था। उसने कभी भी हमारे कन्धों पर क्रूस नहीं रखी लेकिन वह आज्ञाकारी और विश्वासयोग्य सेवकों से आशा करता है कि वे 'अपना क्रूस उठाऐं।'

लूका 9:23:

*23 उसने सब से कहा, '**यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे,** तो अपने आपे से इन्कार करे और **प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए** हुए मेरे पीछे हो ले।*

तब प्रभु आगे कहते हैं कि वे लोग जो अपने आपको सच्चा अनुयायी और

आज्ञाकारी कहते हैं वे अपने जीवनों को **यूं ही जाने देंगे और उन्हें उसके हाथों में सौंप देंगे** (इसके विपरीत हम दूसरी तरफ से भले हैं अपने हाथों में अपने जीवनों को रखे रहें) जैसे वह अपने **अनन्त उद्देश्य** हमारे जीवन में पूरा करता है।

लूका 9:24-25

*[24] क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा **वह उसे खोएगा,** परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा **वही उसे बचाएगा।***

[25] यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे या उसकी हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?

प्रभु यीशु की न समझौता की गई बुलाहट प्रत्येक सच्चे और विश्वासयोग्य मसीही के जीवन में है, जैसे **लूका 9:23-24** में लिखा है:

- ***'वह अपने आपका इन्कार करे'***- कोई भी जन जो अपने आप का इन्कार करने के लिए तैयार नहीं है वह वास्तव में यीशु मसीह का सच्चा चेला और अनुयायी होने का दावा नहीं कर सकता है।
- ***'अपनी क्रूस उठाए'***-यह अपने आपका इन्कार उस सीमा तक करने के लिए प्रकट करता है जहां आवश्यकता पड़ने पर मरना भी पड़े। इसका अर्थ यह है कि एक समर्पित अनुयायी के पास प्रभु के प्रेम से कुछ भी छिपाने के लिए नहीं होता।
- ***'अपने जीवन को खोता है... वह उसे बचाएगा-'*** यह समझने में गड़बड़ी सी लगती है यदि यह विरोधाभास न हो, परन्तु यह हमारे प्रभु की ओर से एक चेतावनी भी है, वे सब जो आराम का जीवन और संसार की ओर से स्वीकृति पाने में लगे हुए हैं, वे अपने अनन्तजीवन को खोने की जोखिम में हैं। परन्तु दूसरी ओर वे लोग जो मसीह यीशु और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएंगे वे अन्ततः अनन्तजीवन में उसे पाएंगे।

आज संसार की क्या दशा है? संसार धन और सामर्थ के पीछे भाग रहा है, परन्तु दुख की बात आज यह है कि मसीही लोग भी उन्हीं के कदमों में चल रहे हैं।

वे अन्यजातियों को उनके धन का आनन्द लेते हुए, पापमय जीवन जीते हुए देखते हैं और उनके जीवनों में कुछ भी गलत होते हुए नहीं देखते हैं। परन्तु परमेश्वर जो न्यायी है, वह कभी-कभी मूर्तिपूजक को अपने मार्ग पर चलने देता है यह जानते हुए कि वह अन्ततः एक ऐसे स्थान में फेंका जाएगा जहां आग नहीं बुझती और कीड़ा नहीं मरता। हमारे लिए इसका जीवित उदाहरण प्रभु यीशु का वह दृष्टान्त है जो उसने धनी व्यक्ति और लाजर के विषय में कहा था।

क्या आप और मैं मसीही भी इस कीमत पर धन, सम्पत्ति और नाम कमाना चाहते हैं? अतः अब वास्तविक प्रश्न यह है, क्या हमारे जीवन में परमेश्वर के प्रेम से अधिक धन का प्रेम है? बाइबल कहती है कि धन का लोभ सारी बुराईयों की जड़ है। प्रभु यीशु प्रत्येक सच्चे मसीही से यह चाहते हैं कि वह हमारे आत्मिक राज्य को देखे और उससे लिपटा रहे उस दृष्टान्त के द्वारा जो उसने उस व्यक्ति के बारे में कहा जिसने अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को खरीद लिया जिसमें खजाना छिपा था।

बहुत शीघ्र ही संसार सपन्याह भविष्यद्वक्ता की भविष्यवाणी को पूरा होते हुए देखेगा जो **सपन्याह** और प्रभु यीशु के अन्तिम भविष्यद्वाणी के वचन **प्रकाशितवाक्य** में दर्ज हैं।

सपन्याह 1:7,12-18

*7 परमेश्वर यहोवा के सामने शान्त रहो! क्योंकि **यहोवा का दिन निकट है;** यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया है, और अपने पाहुनों को पवित्र किया है।*
*12 "उस समय मैं दीपक लिए हुए यरुशलेम में ढूंढ़-ढांढ़ करुंगा, और जो लोग दाखमधु के तलछट तथा मैल के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि **यहोवा न तो भला करेगा और न बुरा,** उनको मैं दण्ड दूंगा। 13 तब उनकी धन-सम्पत्ति लूटी जाएगी, और उनके घर उजाड़ होंगे; वे **घर तो बनाएंगे,** परन्तु उन में रहने न पाएंगे; और वे दाख की **बारियां लगाएंगे,** परन्तु उन से दाखमधु न पीने पाएंगे।" 14 यहोवा का भयानक दिन निकट है, वह बहुत वेग से समीप चला आता है; यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है, वहां वीर दुःख के मारे चिल्लाता है।*

*[15] **वह रोष का दिन होगा,** वह संकट और सकेती का दिन, वह उजाड़ और विनाश का दिन, वह अन्धेर और घोर अन्धकार का दिन, **वह बादल और काली घटा का दिन होगा।** [16] वह गढ़वाले नगरों और ऊंचे गुम्मटों के विरुद्ध **नरसिंगा फूंकने और ललकारने का दिन होगा।** [17] मैं मनुयों को संकट में डालूंगा, और वे अन्धों के समान चलेंगे, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है; उनका लहू धूलि के समान और उनका मांस विष्ठा के समान फेंक दिया जाएगा। [18] यहोवा के रोष के दिन में, न तो चांदी से उनका बचाव होगा, **और न सोने से** क्योंकि उसके जलन की आग से सारी पृथ्वी भस्म हो जाएगी; वह पृथ्वी के सारे रहनेवालों को घबराकर उसका अन्त कर डालेगा।*

सपन्याह 2:3

*हे पृथ्वी के सब नम्र लोगो, हे यहोवा के नियम के माननेवालो, उसको ढूंढ़ते रहो; **धर्म को ढूंढ़ो, नम्रता को ढूंढ़ो;** सम्भव है कि तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ।*

इसके बारे में सोचें, यदि प्रभु यीशु जिसका पूरा विश्व है वह नीचे आया और सामान्य व्यक्ति के समान रहा और कभी-कभी उसके पास सिर रखने के लिए स्थान भी नहीं था और वह खेतों में होकर गया और वहां से कुछ दाने भोजन के रूप में खाए, तब हमें वास्तव में जांचने की आवश्यकता है कि हम किसका अनुसरण कर रहे हैं। क्योंकि हम उन वचनों में से कुछ निकाल नहीं सकते जो हमारे लिए लिखें हैं:

1 यूहन्ना 2:15-17 कहता है:

*[15] तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। **यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है।** [16] क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है। [17] संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, **पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा।***

क्या हमारा भी आचरण वैसा ही है जैसा प्रभु यीशु ने अपने दृष्टान्त में कहा:

मत्ती 13:44

*"स्वर्ग का राज्य खेत में **छिपे हुए धन के समान है,** जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, **और मारे आनन्द के जाकर** अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया।"*

मसीह *आज* और अभी हमारे जीवन का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए। प्राय: हम एक मसीही के जीवन का मुख्य लक्ष्य (एक आज्ञा भी है) भूल जाते हैं और वह यह है कि पहले उसके राज्य और धर्म की खोज करें जैसा मसीह ने प्रत्येक विश्वासी को **मत्ती 6:33** में आज्ञा दी है, *'इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।'*

इसके बजाय हम मसीही लोग इस आज्ञा को नजरअन्दाज करते हुए प्रतिदिन की बातों में व्यस्त हो जाते हैं जिनके पीछे अन्यजाति लोग भाग रहे हैं। **(मत्ती 6:32** *'क्योंकि अन्यजातीय इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है')।*

आज दुर्भाग्यवश बहुत से मसीही अपना भविष्य और किसी भी कीमत पर बिना परमेश्वर के स्वयं का राज्य बनाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देने से पीछे नहीं हटता है; मुझे गलत न समझें। उड़ाऊ पुत्र का पिता बहुत धनी व्यक्ति था, परन्तु यदि, उस उड़ाऊ पुत्र की तरह केवल धन और आराम के ही चाहने वाले हों और वही हमारा **एकमात्र उद्देश्य और आकांक्षा बने** तब हमने मसीही जीवन को उल्टा समझा है। बाइबल हमें निम्न पदों में चेतावनी देती है:

याकूब 5:1-3, 5

*[1] हे धनवानो, सुन तो लो तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला-चिल्लाकर रोओ। [2] तुम्हारा धन बिगड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए हैं। [3] तुम्हारे सोने-चांदी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग के समान तुम्हारा मांस खा जाएगी। **तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है।** [5] **तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा;***

तुम ने इस वध के दिन के लिये अपने हृदय का पालन-पोषण करके उसको मोटा-ताजा किया।

उड़ाऊ पुत्र परमेश्वर के अनुग्रह का सम्पूर्ण उदाहरण है। जब आप अपने मस्तिष्क में प्रभु यीशु के इस उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त की तस्वीर बनाते हैं, क्या आप इसमें एक पश्चात्तापी आत्मा को देखते हैं या केवल एक ढीठ आत्मा को यह कहते देखते हैं, मेरे पिता, मेरे पापा, मेरे अप्पा जिसने मुझे क्षमा किया है, क्या मेरे पुराने, अपश्चाताप् और अंगीकार न किए गए पाप में मुझे लगातार बने रहना ठीक होगा? उत्तर है-नहीं। हम उस उड़ाऊ पुत्र की ऐसी तस्वीर कभी नहीं बना सकते हैं कि वह पुनः अपने पुराने जीवन के पाप में चला गया हो। **वह उड़ाऊ पुत्र जो एक समय अंधकार में चल रहा था** लेकिन जब उसे होश आया, तो मैं विश्वास करता हूं कि उसने अपना बाकी जीवन यह मालूम करने में बिताया कि पिता को (प्रत्येक तरह से) प्रतिदिन क्या पसन्द है।

इफिसियों 5:8-10 कहता है:

[8] क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ***ज्योति की सन्तान के समान चलो।*** *[9] (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है), [10] और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है।*

हाग्गै भविष्यद्वक्ता ने उन लोगों को झिड़का जो अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को छोड़कर सांसारिक बातों का पीछा कर रहे थे।

हाग्गै 1:3-5:

[3] फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुंचा, [4] 'क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है? इसलिये अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपनी अपनी ***चालचलन पर ध्यान करो!***

परमेश्वर का पिता का हृदय सारे संसार के लिए सदैव खुली बाहों से प्रतीक्षा कर रहा है यदि हम पश्चात्ताप् करें और यह जानें कि परमेश्वर हमें पवित्र और धर्मी जीवन जीने के लिए बुला रहा है। जी हां, परमेश्वर अपने प्रेम में

होकर हमें ऐसी परिस्थितियों के द्वारा पश्चात्ताप् के बिन्दु तक लाता है।

हमें परमेश्वर के अनुग्रह की अपने जीवनों में बदलाव लाने और बाकी जीवन को प्रभु को प्रसन्न करने के लिए आवश्यकता होनी चाहिए। जैसा **इफिसियों 5:10** कहता है *'[10] यह मालूम करो कि प्रभु को क्या भाता है।'*

प्रभु यीशु ने इसी प्रकार का जीवन जीया था–

यूहन्ना 8:29

*'मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि **मैं सर्वदा वही काम करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता है।'***

प्रेरित पौलुस ने इसी प्रकार का जीवन जीया था–

गलातियों 1:10

'अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता।'

और अन्त में बाइबल प्रत्येक आज्ञाकारी विश्वासी को यह आज्ञा देती है कि वह भी इसी प्रकार का जीवन जीए:

2 कुरिन्थियों 5:9

*'इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें चाहे अलग रहें, **पर हम उसे भाते रहें।'***

1 पतरस 1:14-17

[14] आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो [15] पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। [16] क्योंकि लिखा है, 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। [17] और जबकि तुम 'हे पिता' कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ।

अध्याय 3

अग्नि के द्वारा बपतिस्मा का वास्तविक अर्थ क्या है?

कुछ लोग 'अग्नि के द्वारा बपतिस्मा' के विषय में गलत धारणा रखते हैं और गलत व्याख्यान करते हैं।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपने चेलों को यीशु जो मसीह है, के विषय में **मत्ती 3:11 में लिखा है:**

> *मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें* ***पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा*** *देगा।*

अत: पवित्रात्मा और अग्नि के द्वारा बपतिस्मा का क्या अर्थ है? कुछ लोग समझते हैं कि 'अग्नि का बपतिस्मा' अन्य भाषाओं में बोलना होता है। परन्तु यह दुर्भाग्यपूर्ण (पूर्ण आदर के साथ) परमेश्वर के वचन में हमारी गलत समझ है जिन्हें आप निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के पदों में देखेंगे।

परन्तु इससे पहले कि मैं आगे कुछ कहूं, मैं कुछ बातों को स्पष्ट करना चाहूंगा:

1. मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि एक विश्वासी के जीवन में अन्य भाषाओं का वरदान पवित्रात्मा का एक वरदान है जो बाइबल में बहुत स्पष्टता से लिखा गया है (**1कुरिन्थियों 12:4-11**)।

2. दूसरी बात, (जैसा मैंने पहले कहा है) कि परमेश्वर के वरदान मनुष्य के द्वारा न तो बांटे जाते हैं और न ही कमाए जा सकते हैं,

जैसे वचन स्पष्ट करता है, यह परमेश्वर की ओर से वरदान है, जो अपनी इच्छानुसार किसी को भी दे देता है (**1 कुरिन्थियों 12:28-29**)।

3. तीसरी बात कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी विश्वासी अन्य भाषा में बोलें जैसे कि बाइबल इस विषय में भी बहुत स्पष्ट है (**1 कुरिन्थियों 12:30**)। आगे इसके द्वारा एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से आत्मिक उच्चता नहीं आंकी जा सकती है (**1 कुरिन्थियों 12:31**)।

4. अन्त में, कोई भी वरदान एक व्यक्ति के उद्धार की गारण्टी नहीं देता है (**मत्ती 7:21-23**), बल्कि हमें पवित्र आत्मा का फल चाहिए ताकि हम दाखलता में बने रहें जो एक विश्वासी के जीवन में आवश्यक है (**1 कुरिन्थियों 13:1-13**)।

'अग्नि के बपतिस्मे' पर पुनः आते हुए, प्रभु यीशु ने इसे अन्य भाषा का वरदान कभी नहीं बताया। जैसे आप निम्नलिखित दो वचन पढ़ेंगे जहां प्रभु यीशु ने 'बपतिस्मा' और 'आग' शब्दों का सन्दर्भ दिया है, इससे बहुत गड़बड़ी शान्त हो जाएगी।

प्रभु यीशु ने मरकुस 9:49 में कहा:
*"क्योंकि हर एक जन **आग से** नमकीन किया जाएगा।"*

मरकुस 10:38-39

*[38] यीशु ने उनसे कहा, "तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? **और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या तुम ले सकते हो?"** [39] उन्होंने उससे कहा, "हम से हो सकता है।" यीशु ने उनसे कहा, **"जो कटोरा मैं पीने पर हूं, तुम पीओगे,** और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, उसे लोगे।*

लूका 12:49-51

मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं; और क्या चाहता हूं
*केवल यह कि अभी सुलग जाती। [50] **मुझे तो एक***
***बपतिस्मा लेना है,** और जब तक वह न हो ले तब तक मैं*
किसी व्यथा में रहूंगा।

मसीह ने 'अग्नि' का सन्दर्भ प्रभु परमेश्वर के लिए अपनी पीड़ाओं के अगले स्तर से किया है। वह 'प्याला' जिसके विषय में प्रभु यीशु ने कहा वह कुछ और नहीं बल्कि क्रूस ही है। प्रत्येक चेले ने (जो उसके वचन के प्रति सच्चा है) अन्ततः अपने-अपने मार्गों में उसकी पीड़ाओं का स्वाद चखा है।

मैं इस वचन के साथ ही इसे समाप्त करूंगा जो
फिलिप्पियों 1:29 में पाया जाता है:

क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि
*न केवल उस पर विश्वास करो **पर उसके लिये दुःख***
भी उठाओ।

भाग 4

मूर्ख कुंवारियां

अध्याय 1

धार्मिक मसीही बनाम विश्वासयोग्य मसीही

मसीह में अतिप्रियो, इससे पहले कि मैं इस पुस्तक का 'चौथा और अन्तिम भाग' आरम्भ करूं (जो निष्कर्ष से पहले है), **मैं यहां रुककर कहना चाहता हूं** कि यदि आप में से कुछ लोग ऐसा महसूस करते हैं कि यह पुस्तक एक तरफा है, जो केवल विभिन्न प्रकार की चेतावनी और प्रभु परमेश्वर के पवित्र वचन की अनाज्ञाकारिता के परिणाम (आज्ञाऐं और विधियां) जो बाइबल में लिखी हैं, उन्हीं के बारे में बात की जा रही है और यह पुस्तक आशीषों के बारे में कुछ नहीं कहती जिनसे बाइबल भरी पड़ी है तो ऐसा प्राथमिकरुप से तीन कारणों से है:

- पहला, प्रभु यीशु ने हमें यह आज्ञा नहीं दी कि हम उसकी आशीषों को सिखाऐं (जो पापियों के लिए उसकी मृत्यु और जी उठने के द्वारा स्पष्ट है) बल्कि वह हमें आज्ञा देता है कि हम **उसकी आज्ञा मानना सिखाऐं,** जैसा **मत्ती 28:20 में लिखा है,** *उन्हें वे सब बातें मानना सिखाओ जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है'* क्योंकि जब आज्ञा मानेंगे तो आशीषें स्वत: ही आएंगी (आप उन्हें खोएंगे नहीं केवल इसलिए कि आपने उन पर दावा नहीं किया, जैसा कुछ नए युग की शिक्षाऐं हमें ऐसा करने के लिए कहती हैं)। पुन: इस पर विचार करें **क्या परमेश्वर एक आशीष को रोके रखेगा केवल इसलिए कि आप इसे जानते नही हैं?** आपको और मुझे मेरी अन्य बातों से अधिक यह आवश्यकता है कि हम उन आज्ञाओं को जानें जो

बाइबल में हैं क्योंकि उनको पूरा करने से ही हमारे अनन्तकाल का निर्णय होगा जैसे प्रभु यीशु ने कलीसिया को **प्रकाशितवाक्य 2:26** में चेतावनी दी है न कि आशीषों को जानना जो गाड़ी को घोड़े के आगे लगाने की कहावत का सटीक उदाहरण है।

- दूसरा, हम मसीहियों को **परमेश्वर की उन असंख्य आशीषों** को सिखाए जाने की आवश्यकता नहीं है जो बाइबल में लिखी हैं। हम बाइबल की प्रतिज्ञाओं का दावा करने में बहुत अच्छे हैं, परन्तु बहुत कम बाइबल की शर्तों को जो 'यदि' और 'लेकिन' हैं, पूरा करते हैं कि उन आशीषों और प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करें।

- और अन्त में, जैसा मैंने पहले कहा है कि मुझे अपनी आत्मा में आभास हो रहा है (जैसा हम देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य निकट है और वे सब बातें जो पुराने भविष्यद्वक्ताओं ने कहीं वे सब प्रभु यीशु ने अन्तिम दिनों के विषय में कही थीं उनके साथ पूरी हो रही हैं) कि **हम प्रभु के भविष्यद्वणी के वचनों को पूरा होने की ऋतु में आ गए हैं** जैसा **मरकुस 1:15** में लिखा है, '*समय पूरा हुआ और परमेश्वर का राज्य निकट है,* ***पश्चात्ताप् करो*** *और सुसमाचार में विश्वास करो।*' मैं विश्वास करता हूँ कि ये प्रभु यीशु के विशेष वचन अन्तिम समय के लिए भविष्यद्वाणी के वचन हैं, यह प्रत्येक सच्चे मसीही विश्वासी के लिए पुकार है कि वह अपने वस्त्रों को **बुद्धिमान कुंवारियों** की तरह धोकर तैयार रहे, उससे पहले कि दूल्हा और स्वामी, मसीह यीशु वापस आए- **प्रकाशितवाक्य 3:1-6 ।**

प्रभु यीशु मसीह ने अपने 'दस कुंवारियों' के दृष्टान्त में पांच को 'बुद्धिमान' और पांच को 'मूर्ख कुंवारियां' कहा:

मत्ती 25:1-2, 8-12

"[1] स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। [2] ***उनमें पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं।*** *[8] और मूर्खों ने समझदारों से कहा, 'अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जा रही हैं।' [9] परन्तु समझदारों ने*

*उत्तर दिया, कदाचित यह हमारे और तुम्हारे लिए पूरा न हो; भला तो यह है कि तुम बेचने वालों के पास जा कर अपने लिये मोल ले लो।' [10] जब वे मोल लेने को जा रही थीं तो दूल्हा आ पहुंचा, **और जो तैयार थी, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं** और द्वार बन्द किया गया। [11] इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगी, **'हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे!** [12] उसने उत्तर दिया मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।*

अत: क्या प्रभु यीशु का अर्थ यह है कि उसकी कलीसिया में बुद्धिमान और मूर्ख लोग होंगे? **और पढ़ें।**

प्रभु यीशु एक और दृष्टान्त में बताते हैं कि कौन 'बुद्धिमान व्यक्ति' है और कौन 'मूर्ख व्यक्ति' है:

मत्ती 7:24, 26

[24] "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस **बुद्धिमान मनुष्य** के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।

[26] *"परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता **वह उस निबुद्धि मनुष्य के समान है** जिसने अपना घर बालू पर बनाया।"*

हमारा प्रभु यीशु इन दृष्टान्तों के द्वारा हमें क्या चेतावनी दे रहा है? क्या इनसे यह स्पष्ट नहीं है, कोई व्यक्ति जो प्रभु के वचन और उसकी आज्ञाओं को जानता है और वह उनका पालन नहीं करता वे अपने आपको बड़ा मूर्ख ठहराते हैं, और उनके मुंह के सामने अनन्तकाल का द्वार उनके लिए बन्द कर दिया जाएगा।

जैसा प्रभु यीशु ने कहा, **'मेरी भेड़ें मेरी आवाज सुनती हैं और वे मेरे पीछे चलती है और मैं उन्हें जानता हूं।'**

हममें से कुछ बहुत अच्छे विश्वासी हो सकते हैं परन्तु शायद **अनुयायी और चेले नहीं हैं।** प्रभु यीशु की आज्ञा **मत्ती 28:19 में थी**-*'इसलिये तुम जाओ, चेले बनाओ।' जी हाँ, पुकार चेले बनाने की थी न कि विश्वासी बनाने की।*

दुर्भाग्यवश, आज कलीसिया में बहुत से ***विश्वासी हैं न कि चेले।*** *क्यों? क्योंकि आज हममें से कितने हैं जो प्रभु की उस योग्यता को पूरा करते हैं, कि हम उसके सच्चे चेले बनें जैसा* **लूका 9:44** में लिखा है?

लूका 9:23

''तब उसने सबसे कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप से इन्कार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो लें।

इसके बारे में सोचें। जब प्रभु यीशु ने निम्नलिखित वचन बोले थे तो उसके सुननेवाले कौन लोग थे?

लूका 13:24-25

'[24] सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे। [25] जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, 'हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे,' और वह उत्तर दे, 'मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो?'

आप समझ गए कि प्रभु यीशु वास्तव में ये वचन बोलकर एक विश्वासी को सम्बोधित कर रहे थे- 'प्रवेश करने का यत्न करो।' आप समझिये कि बाइबल में 'यत्न करो, 'धैर्य रखो', विजय प्राप्त करो, 'शैतान को झिड़को' 'अपने विश्वास में दृढ़ रहो' आदि **सारे वचन आज्ञाकारी बुद्धिमान विश्वासी के लिए हैं।**

मैंने 'धनी जवान व्यक्ति' पर ध्यान दिया जो प्रभु यीशु के पास आया था, उसके पास कुछ अच्छे गुण थे जिनसे हममें से बहुत लोग अभी भी बहुत दूर हैं।

आगे, उसके पास अनन्त जीवन पाने की इच्छा थी। किसी भी व्यक्तिगत आवश्यकता से बढ़कर वह प्रभु यीशु के पास आया और उससे सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा, **'हे उत्तम गुरु अनन्तजीवन पाने के लिए मैं क्या करूं (मरकुस 10:17)**? ध्यान दीजिए कि उसके पास बहुत धन था तौभी

उसके हृदय में अनन्त जीवन की बातें मालूम करने की इच्छा थी (क्या हमारे पास वही आचरण और प्राथमिकता है?)। दूसरा, उसने सामान्यत: सारी मुख्य आज्ञाओं को पूरा किया था **(मरकुस 10:19-20**), क्या हमने ऐसा किया है? **मरकुस 10:21** में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने उस पर तरस खाया और उसे प्रेम किया (यह देखकर कि वह सच्चा व्यक्ति है), **तौभी उसने उसके जीवन में केवल एक ही मूर्ति की ओर संकेत किया,** जो उसके और प्रभु के बीच में आ रही थी-धन का प्रेम।

क्या यह आज हमारी समस्या के समान नहीं है? हम न केवल प्रभु परमेश्वर को प्रेम करते हैं और उसे प्रसन्न करने के लिए बहुत से काम करते हैं, परन्तु तौभी वस्तुओं को छोड़ने और इन्कार करने के लिए तैयार नहीं हैं जिन्हें प्रभु हमसे समर्पित करने या छोड़ने के लिए कहता है जो हमारे जीवन में मूर्तियों की तरह बन गई हैं (और यह आवश्यक नहीं कि यह धन ही हो)।

हम प्राय: उस धनी व्यक्ति की तरह दुखी होते हैं (**मरकुस 10:22**), जब हम पवित्रात्मा को यह कहते हुए सुनते हैं कि हम प्रभु के लिए कुछ छोड़ दें जिसे हम बहुत प्रिय जानकर अपने हृदय से चिपकाए रहते हैं। हम एक गुनगुना जीवन प्रभु के लिए जीते रहते हैं, जीवन की बेकार की वस्तुओं से चिपके हुए जो हमें यह नाश्वान संसार देने का प्रस्ताव रखता है।, ये सब प्रभु के उस बड़े और भयानक दिन में हमारे लिए एक सड़न की तरह होगा जब हम प्रभु के सामने खड़े होंगे, तब हमें यह आभासहोगा कि जब वह हमें 'मूर्ख' कहेगा और तब बहुत देर हो चुकी होगी। अभी भी हम शुतुरमुर्ग की तरह अपना सिर धूल में छिपाकर यह कहते हैं, 'नहीं, यह मेरे साथ नहीं हो सकता है। इसीलिए प्रभु का भविष्यद्वाणी का वचन कलीसिया के लिए था- जाग उठो। (कृपया निम्नलिखित वचनों को पढ़ने के लिए समय निकालें-**सपन्याह 1:11-18; प्रकाशितवाक्य 2:4-7, प्रकाशितवाक्य 3:11, 15-17)।**

प्रभु ने ठीक ही कहा है कि 'सकरा है वह मार्ग' जो स्वर्ग को पहुंचता है और बहुत 'थोड़े' हैं जो उसमें प्रवेश करते हैं। आज जैसा मैंने कहा है और एक बार पुन: कहता हूं, हममें से बहुत से लोग कलीसिया में विश्वासी हैं, परन्तु क्या हम सच में मसीह यीशु के चेले हैं?

जैसा प्रभु यीशु ने स्वयं उन लोगों से कहा जो **मरकुस 10:24** में उसके पीछे चलने के लिए आए थे:

'परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है।'

क्या आप सोच रहे हैं कि प्रभु यीशु के वे शब्द आपके लिए नहीं हैं क्योंकि आप नया जन्म पाए हुए विश्वासी हैं? यदि ऐसा है, तो क्या नए जन्म पाए हुए का यह अर्थ है कि प्रभु के वचन जैसे 'कठिन', 'सकरा', 'कठोर' और अन्य वचन जो प्रभु ने कहे जैसे 'अपने आप का इन्कार करो', और 'प्रतिदिन अपना क्रूस उठाओ' क्या वास्तव में एक नए जन्म पाए हुए व्यक्ति के जीवन में लागू नहीं होते? यदि नहीं तो प्रभु यीशु के वचन किस पर लागू होते हैं? और आप कहते हैं क्योंकि आप बचाए गए हैं तो आपके विश्वास को किसी भले कामों की आवश्यकता नहीं है और क्या ऐसा विश्वास आपको बचा लेगा?

उन वचनों को याद रखें जो बाइबल **याकूब 2:14,17** में उद्धार पाने के बाद भले कामों के बारे में कहती है, *'[14] हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो इससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? [17] वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।*

जल-प्रलय आने से ठीक पहले नूह ने अपने देश में कई वर्षों तक वचन को प्रचार किया लेकिन लोगों ने परमेश्वर के वचन पर ध्यान नहीं दिया। एक दिन जल-प्रलय आया और द्वार परमेश्वर के द्वारा बन्द कर दिया गया।

यदि हमारा मसीही जीवन आग की तरह प्रभु के लिए नहीं है, बल्कि आधा पैर संसार में और आधा वचन में तो ऐसी सन्तुष्टि के गम्भीर परिणाम होंगे।

जैसा मैं ने कहीं पढ़ा था कि मसीही लोग बिना दुख के आत्मिक उन्नति की अपेक्षा नहीं कर सकते। आत्मिक उन्नति केवल तभी होती है जब हम एक ऐसे स्वामी का अनुसरण करने के लिए तैयार होते हैं जो हमें यह आज्ञा देता है कि हम अपने जीवन के पुराने मार्गों और आचरणों के अनुमानों का मूलत: परीक्षण करें।

दुर्भाग्यवश बहुत से मसीही लोग आज भी अपने पुराने मार्गों में चल रहे है जैसे खोई भेड़, अपने पंसीदीदा पापों और पुरानी जीवनचर्या के साथ जिसे वे छोड़ना नहीं चाहते हैं। प्रश्न यह है कि क्या हम वास्तव में उन्नति चाहते हैं? यदि नहीं, तो क्या हम उस धर्मी न्यायी का सामना करने के लिए तैयार हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामों के अनुसार बदला देगा?-**मत्ती 16:27।**

यह मुझे उन मसीहियों के बारे में भी याद दिलाता है जो '**बाहरी बलिदानों से परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम दिखाते हैं** और एक सुसमाचार सभा से दूसरी सभा में, एक संगति से दूसरी संगति, एक बाइबल अध्ययन समूह से दूसरे बाइबल अध्ययन समूह में, एक क्रूसेड से दूसरे, एक वक्ता को सुनते और फिर दूसरे वक्ता को सुनते (जो अपने आप में अच्छा है), परन्तु वे अपने पापों से फिर कर क्रूस के निकट नहीं आते और परमेश्वर को अनुमति नहीं देते जो उन्हें बदले कि वे प्रतिदिन वचन की अधीनता में आज्ञाकारी रहे; क्योंकि प्रभु यीशु की भविष्यद्वाणी उनमें पूरी हो रहीं हैं जो निम्नलिखित है:

मत्ती 13:14-15

[14] उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है:

'तुम कानों से सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। *[15] क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं,* ***और मैं उन्हें चंगा करूं।'***

भविष्यद्वक्ता शमूएल ने राजा शाऊल को उन बातों के लिए झिड़का जो अच्छी और मनभावनी लग रही थीं, 'परन्तु प्रभु की आज्ञाओं को वह पूरा करने में असफल' रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि उसका राज्य छीन लिया गया-

1 शमूएल 15:22-23

[22] शमूएल ने कहा, 'क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? ***सुन, आज्ञा मानना तो बलि चढ़ाने से,*** *और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। [23] देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही*

समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तूने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।'

हमारे प्रभु परमेश्वर के निकट हमारे बलिदान कोई अर्थ नहीं रखते यदि हममें आज्ञाकारिता नहीं है।

1 शमूएल 13:13

*शमूएल ने शाऊल से कहा, **'तूने मूर्खता का काम किया है;** तूने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता।*

अत: मैं यहां रुककर आपसे पूछना चाहता हूं कि वह कौन सी वस्तु या वस्तुऐं हैं जिनके विषय में आज परमेश्वर का आत्मा आपसे आज्ञाकारिता के बारे में कह रहा है? अथवा क्या आप इसके आज्ञाकारी हैं? हम मसीही लोग अपना आधा पैर संसार में और आधा पैर परमेश्वर की बातों में रखने में निपुण हैं। परन्तु प्रभु ने **प्रकाशितवाक्य 3** में कहा है कि हम न तो गर्म हैं और न ही ठण्डे हैं और वह अपने मुंह से हमें उगलने पर है।

यशायाह 1:18-20 कहता है:

*[18] "यहोवा कहता है, "आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम के समान उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे। [19] **यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो, [20] तो इस देश के उत्तम पदार्थ खाओगे;** और यदि तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे; यहोवा का यही वचन है।"*

2 पतरस 2:20-22 कहता है:

[20] जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फंसकर हार

गए, तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है। [21] ***क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता*** *कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी।* [22] *उन पर यह कहावत ठीक बैठती है:*

'कि कुत्ता अपनी छांट' की ओर और नहलाई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये चली जाती है।

मत्ती 6:24 में यीशु ने कहा:

'कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। ***तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।'***

दुर्भाग्यवश बहुत से मसीही यह नहीं पहचानते कि संसार के दृष्टिकोण और वचन के दृष्टिकोण में बड़ा अन्तर है। संसार के दृष्टिकोण और राज्य के दृष्टिकोण की दिशा अलग-अलग है।

बहुत से मसीही आज बहुत दयनीय दशा में हैं जैसा **1 कुरिन्थियों 15:19 कहता है:**

'यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आश रखते हैं ***तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।***

प्रभु यीशु ने लूका 9:24 में कहा:

'क्योंकि ***जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा*** *परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।'*

कभी-कभी हम सोचते हैं कि यीशु बहुत सुन्दर उपदेश **(या लोरी) दे रहा था और हम प्राय: उसके मुंह से निकले हुए वचनों की अनाज्ञाकारिता** के गम्भीर परिणामों को नजरअन्दाज करते हैं। उसके वचन में जीवन और मृत्यु दोनों की शक्ति है। हमें गड़बड़ी में नहीं पड़ना चाहिए उन नम्र तरीकों के कारण जिनमें उसने उन्हें प्रस्तुत किया है, परन्तु यह मानना चाहिए कि इनके अनन्तकालीन परिणाम होंगे जैसा उसने कहा था, ***'जो कोई अपने प्राण***

बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा।' प्रभु जो कह रहे हैं वह यह है कि यदि हम अपना जीवन पृथ्वी पर बचाना चाहेंगे तो हम उसे अनन्त जीवन में खो देंगे, पर यदि हम अपना पृथ्वी पर का जीवन प्रभु के लिए खोते हैं, सकरे मार्ग में चलने के द्वारा तब हमें अनन्त जीवन मिलेगा। या तो हम **उसके वचनों को अभी स्वीकार करें अथवा तिरस्कार करें और उस दिन अनन्तकाल में संगीत सुनते रहें।**

नूह के दिनों में लोग सांसारिक भोग विलास में व्यस्त थे (लूत अपने आस-पास के लोगों को जो सदोम और अमोरा में रहते थे देखकर दुखी होता था)। प्रभु यीशु कलीसिया को चेतावनी देता है कि वह संसार के भोग विलास में न पड़े, जिसने कहा कि 'उसके वापस' आने से ठीक पहले ये बातें संसार पर आ पड़ेगी।

प्रभु यीशु ने मत्ती 24:37-39 में चेतावनी दी है:

*[37] **जैसे नूह के दिन** थे वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। [38] क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा उ**स दिन तक** लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। [39] और जब तक **जल-प्रलय आकर** उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; **वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।***

प्रभु यीशु ने नूह का **उदाहरण दिया कि हम मसीहियों को चेतावनी दे** कि परमेश्वर का अनुग्रह किसी भी रुप में परमेश्वर के स्तर का तिरस्कार नहीं करता है और हमारे जीवन में पवित्रता की मांग करता है (आज बहुत से मसीहियों की यह गलत धारणा है)।

नीचे एक बहुत **सामर्थी अन्त के समय का वचन** है कि हमारा इन अन्तिम दिनों में कैसा आचरण (उच्च बुलाहट) होना चाहिए:

1 कुरिन्थियों 7:29-31

*'[29] **हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि समय कम किया गया है,** इसलिये चाहिए कि जिन के पत्नी हों, वे ऐसे हों मानो उन के पत्नी*

नहीं; [30] और रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते नहीं और आनन्द करनेवाले ऐसे हों, मानो आनन्द नहीं करते; और मोल लेनेवाले ऐसे हों, मानो उनके पास कुछ है ही नहीं। [31] और इस संसार के साथ व्यवहार करनेवाले ऐसे हों कि संसार ही के न हो लें; ***क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं।***

ऊपर के पवित्रशास्त्र से परमेश्वर का वचन जो कह रहा है जिसे हमने कभी पढ़ा है कि इन अन्तिम दिनों में कोई घमण्ड न करे, प्रतिदिन की संसार की वस्तुओं की लालसा में न पड़े, एक दूसरे को न ठगे या इस संसार की वस्तुओं को प्रेम न करें, बल्कि एक शान्त जीवन जीए, अपने चारों ओर के फन्दों से सतर्क रहे और डरते और कांपते हुए अपने उद्धार का काम पूरा करे ताकि उस महान दिन वह योग्य पाया जाए जो शीघ्र आ रहा है।

मैं भविष्यद्वाणी के वचनों से समाप्त करता हूं जो होशे 14:9 में पाया जाता है:

जो बुद्धिमान हो, वही इन बातों को समझेगा; जो प्रवीण हो, वही इन्हें बूझ सकेगा; क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं, ***और धर्मी उनमें चलते रहेंगे,*** *परन्तु अपराधी उनमें ठोकर खाकर गिरेंगे।*

अध्याय 2

रविवारीय और सामान्य मसीही!

यदि मसीही लोग धर्म के वर्ग की श्रेणी में पड़ जाते हैं, केवल धर्म का झण्डा लिए हुए, तो बाइबल कहती है कि ऐसा विश्वास उन्हें अनन्तकाल के दण्ड से नहीं बचा सकता है जिसे परमेश्वर ने संसार के बाकी अनाज्ञाकारी लोगों के लिए सुरक्षित रखा है।

आज प्रभु परमेश्वर को जो दर्द देता है वह यह नहीं है कि हमारे पास विभिन्न वर्ग हैं, परन्तु यह कि प्रत्येक वर्ग के मसीही यह सोचते हैं कि केवल उनका वर्ग ही स्वर्ग में जाएगा। **सबसे अधिक दुखदाई बात यह है कि वर्गों के मध्य में आत्मिक उच्चता की भावना का होना है** जो एक दूसरे को नीचा दिखाते हैं केवल इसलिए कि कोई सिद्धान्त उनके पास है या फिर आवश्यकता से अधिक है जिसमें वे अटके पड़े हैं या उसमें उलझे हैं।

किसी कलीसिया का भाग होने में कोई गलती नहीं है (बल्कि यह महत्वपूर्ण है), परन्तु यह सोचना कि 'यह मेरी कलीसिया' है बजाय 'सार्वभौमिक कलीसिया' के जो मसीह की देह का भाग है। यह एक चिन्ता का विषय है। जी हाँ, कुछ ऐसे सिद्धान्त और रीति-रिवाज हो सकते हैं जिनसे कलीसिया को चलाया जाता है, परन्तु ये ठीक हैं जब तक वे लिखित वचन/ बाइबल को नजरअन्दाज नहीं करते। इसके अन्त में मैं विश्वास करता हूं कि प्रभु परमेश्वर सभी वर्गों के प्रत्येक व्यक्ति का हृदय देखेगा जो सच में प्रतिदिन उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए समर्पित है, और वह उसे अन्तिम दिन जिला उठाएगा।

यद्यपि मैं एक नगर की कलीसिया का सदस्य हूं (जिसके प्रति मैं समर्पित हूं), परन्तु मैं इस बात का ध्यान रखता हूं कि अन्य कलीसियाओं में भी जाऊं और मसीह की विभिन्न देहों में संगति करूं जो अन्य समुदाय की हैं ताकि मैं केवल उसी कलीसिया का हठी न बना रहूं जहां मैं जाता हूं। इसी प्रकार मैं जानबूझ कर विभिन्न समुदायों से अपने मित्र बनाता हूं यह जानते हुए कि हम सब एक

ही मसीह की देह के भाग हैं।

कुछ अन्य उपासना पद्धति पर आधारित कलीसियाऐं हैं जिनके बारे में हम सब जानते हैं और उनसे हमें दूर रहने की आवश्यकता है। परन्तु यह कहने के बाद, मैं **बैपटिस्ट, यूनाइटिंग, असैम्बलीज ऑफ गॉड, प्रेस्बिटेरियन, पेन्टीकोस्टल या ब्रेद्रन या और कोई ऐसे वर्ग** में आराधना करने में आरामदायक हूंगा जो मसीह की देह में हैं। प्रभु यीशु की प्रार्थना **(उसने पहले से की थी)** हम सब विश्वासियों के लिए यह थी कि हम एक हों जैसे वह और उसका पिता एक है, बिना किसी सामुदायिक पहचान के।

जी हाँ, कलीसिया-मसीह की देह जब तक वह एक व्यक्ति उस कलीसिया या समुदाय में है तब तक वह **निम्नलिखित बातों पर विश्वास करता या सिखाता है:**

- **यह कि बाइबल परमेश्वर का प्रेरित, सुदृढ़ और अधिकारिक वचन है** और वह पुराने नियम और नए नियम दोनों से मिलकर बना है (मत्ती 5:18)। बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से बिना किसी त्रुटि के विश्वास और अभ्यास के लिए सम्पूर्ण और अन्तिम अधिकारी है (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

- **यह कि परमेश्वर एक है और वही जीवित, सभी का सृष्टिकर्त्ता है** (व्यवस्थाविवरण 4:35; 6:4; 32:39; यशायाह 45:14; 46:9; यूहन्ना 1:1-3; यूहन्ना 10:30; 1 कुरिन्थियों 8:4-5), जिसने अपने आपको पवित्र त्रिएकता में प्रकट किया है- तीन विभिन्न व्यक्तित्वों में -पिता, पुत्र और पवित्रात्मा (2 कुरिन्थियों 13:14; इफिसियों 4:4-6; 1 यूहन्ना 5:7)।

- **यह कि वे प्रभु यीशु मसीह के ईश्वरत्व में विश्वास करते हैं:** वह परमेश्वर के रुप में है जो मानव के रुप में पृथ्वी पर आया परमेश्वर पिता का प्रतिरुप है जो स्वयं परमेश्वर है वह मनुष्य बन गया ताकि यह प्रकट करे कि परमेश्वर कौन है और मानवजाति के लिए उद्धार का साधन प्रदान करे (मत्ती 1:21; यूहन्ना 1:1-3, 18; फिलिप्पियों 2:5-11; कुलुस्सियों 1:15)। यह कि प्रभु यीशु

मसीह पवित्रात्मा की सामर्थ के द्वारा कुंवारी मरियम से उत्पन्न हुआ; और वह सच में पूरा परमेश्वर था और पूरा मनुष्य था; और उसने सिद्ध और पापरहित जीवन जीया। यशायाह 7:14; मत्ती 1:23), सारी मानवजाति के स्थान पर पर वह क्रूस पर (1 यूहन्ना 2:2) बलिदान के रुप में मर गया (यशायाह 53:5-6) और उसकी मृत्यु सारे लोगों को उद्धार देने के लिए पर्याप्त है जो उसे उद्धारकर्त्ता के रुप में स्वीकार करते हैं (यूहन्ना 1:12; प्रेरितों के काम 4+12; प्रेरितों के काम 16:31); और यह कि हमारी धार्मिकता उसके द्वारा बहाए गए लहू में है न कि हमारे कामों के द्वारा है (रोमियों 5:8-9; इफिसियों 2:8-9); और यह कि वह मृतकों में से जी उठा (मत्ती 28:6; 1पतरस 1:3) और वह अब परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है (मत्ती 26:64; मरकुस 14:62; रोमियों 8:34) और अब वह अपने पिता की महिमा में अपने स्वर्गदूतों के साथ आनेवाला है कि मनुष्य को उसक कामों के अनुसार प्रतिफल दे (मत्ती 16:27)।

- **यह कि पवित्रात्मा परमेश्वर का तीसरा ईश्वरत्व है** जो हमारा शान्तिदायक और समस्त सच्चाई और हमारी अगुवाई करने में पूर्ण सक्षम है (यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 16:13,15; गलातियों 1:11-12; 1 यूहन्ना 2:27)। पवित्रात्मा प्रभु यीशु की महिमा करता है, प्रभु यीशु मसीह की बातें हम पर प्रकट करता है। यह कि पवित्रात्मा प्रत्येक उद्धार पाए हुए आज्ञाकारी विश्वासी को सब की भलाई के लिए विभिन्न सेवाओं का प्रकटीकरण करता है और इसी के लिए वह आत्मिक वरदानों को बांटता है (1 कुरिन्थियों 12:1-11)।

- **यह कि कलीसिया मसीह की देह है** (कोई विशेष वर्ग समुदाय नहीं) एक आत्मिक संगठन जो वर्तमान युग के सभी विश्वासियय़ों से मिलकर बना है (1 कुरिन्थियों 12:12-14; 2 कुरिन्थियों 11:12; इफिसियों 1:22-23; 4:4, 5:25-27), जो विश्वासियों के नियमों में विश्वास करते हैं जैसे पानी के बपतिस्मे के द्वारा मसीह की गवाही और उसके साथ पहचान, और प्रभु भोज मसीह की मृत्यु की यादगार और उसके द्वारा बहाये गए लहू और यीशु

मसीह का वापस आना है (मत्ती 28:19-20, प्रेरितों के काम 2:41-42, 18:8; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

- **परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार मसीहियों के पास यह जिम्मेदारी है कि वे सुसमाचार** और परमेश्वर के वचन के सत्यों की **गवाही दें।** परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को सम्पूर्ण संसार में प्रचार किया जाना हैं और हम जो परमेश्वर के चेले हैं, उस आज्ञा के भाग हैं जिसमें यह भी शामिल है कि उन्हें उन बातों को सिखाना है जिनकी आज्ञा प्रभु यीशु ने दी है (मत्ती 28:19-20; प्रेरितों के काम 1:8; 2 कुरिन्थियों 5:18-20)।

- **कि सच्चे विश्वासियों को न केवल यह विश्वास करना है परन्तु यीशु मसीह के वापस आने के लिए ईमानदारी और उत्सुकता से इच्छा भी रखनी चाहिए** (तीतुस 2:13; 2 तीमुथियुस 4:8), जिसका आना महत्वपूर्ण है (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; प्रकाशितवाक्य 22:17,20) और उन्हें अनुग्रह के उद्धार के काम को पूरा करते जाना है, डरते और कांपते हुए उसके वचन की अगुवाई में जड़ पकड़ते, उसमें बने रहने के द्वारा जो प्रतिदिन उसके वचन बाइबल को पढ़ने और मनन करने के द्वारा होता है (यहोशू 1:8; भजनसंहिता 1:1-3; मत्ती 7:21-27; 1 कुरिन्थियों 9:24-27; फिलिप्पियों 2:12-13, 15-16; फिलिप्पियों 3:11-15; 2 तीमुथियुस 4:7; याकूब 2:14,24; प्रकाशितवाक्य 3:2-6)।

प्रभु यीशु के लिए, एक मसीही की यह पहचान है कि वह सच्चाई से 'उसकी' धार्मिकता का भूखा और प्यासा होगा' (मत्ती 5:6) क्योंकि प्रभु ने कहा कि समस्त संसार को प्राप्त करने का कोई अर्थ नहीं होगा यदि हम अंनत में अपने प्राण को खो दें। सभी वस्तुओं से ऊपर परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजना ही सच्ची मसीहत है। यह किसी वर्ग समुदाय की बात नहीं है, परन्तु यह प्रत्येक विश्वासी का एक व्यक्तिगत फैसला और आचरण है। इसीलिए सन्तों के एकत्रित किये जाने के समय (जिसे सामान्यत: रैप्चर के नाम से जाना जाता है) जैसा मैं विश्वास करता हूं और बहुतों ने स्वपनों और दर्शनों के द्वारा देखा है कि बहुत सी विभिन्न कलीसियाओं में से

'उठाऐ गए' और 'एकत्रित' किए गए, जबकि उन्हीं कलीसियाओं में से बहुत से छूट गए।

हम इन सब की जड़ को देखते हैं क्योंकि हम मसीही लोग धार्मिकता में चलने के अभ्यास में असफल हैं। इब्रानियों की पुस्तक कहती है, 'हममें से कुछ मसीही लोग बोतलों के द्वारा दूध पीने के इतने शौकीन हैं कि हम प्रारम्भिक शिक्षाओं से आगे नहीं बढ़ना चाहते हैं जैसे कि हम पहले कैसे बचाए गए, कैसे मसीह हमारे लिए मरा, अपने बपतिस्मे के अनुभव आदि के बारे में, परन्तु परिपक्वता की ओर नहीं बढ़ना चाहते हैं। वचन के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन जीएं और यही दूसरों को भी सिखाऐं। यह कहता है जब तक कि हम आज्ञाकारिता का जीवन जीने का फैसला नहीं करेंगे (प्रत्येक कदम पर परमेश्वर को खोजना और तब उसमें चलते रहना), तब तक हमें ज्ञान नहीं होगा क्योंकि आत्मिक परख परमेश्वर का वरदान है जो केवल उन्हीं के लिए है जो आज्ञाकारिता और धार्मिकता का जीवन जीते हैं।

इब्रानियों 5:11-14

*[11] इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है, **इसलिये कि तुम ऊँचा सुनने लगे हो।** [12] समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी यह आवश्यक हो गया कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि **शिक्षा फिर से सिखाए।** तुम तो **ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।** [13] क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो **धर्म** के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है [14] पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियां **अभ्यास करते-करते भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।***

और इब्रानियों 6:1-2 कहता है:

*[1] इसलिये आओ **मसीह की शिक्षा की आरम्भ** की बातों को छोड़कर हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, [2] और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षा रुपी नींव फिर से न डालें।*

जब तक हम मसीही लोग धार्मिकता का अभ्यास करना नहीं सीखेंगे (**जो**

कुछ हमने सीखा है उसे अभ्यास में लाएं), तब तक हम मसीही लोग धीरे-धीरे सूख जाएंगे और मूलभूत मसीही परख का आभाव होगा।

प्रभु यीशु ने मत्ती 13:15 में भविष्यद्वाणी की है:

*' क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और **फिर जाएं,** और मैं उन्हें **चंगा** करूं।*

प्रभु का अर्थ क्या था जब उसने **'फिरो'** शब्द का प्रयोग किया? जैसा कि भजनकार ने कहा कि हृदय सबसे अधक दुष्ट होता है। हमारे जीवन में कई क्षेत्र हैं जिन्हें **चंगाई** और पूर्ण रुप से **बदलने** की आवश्यकता है।

हम कैसे समझते हैं जब प्रभु ने **'चंगाई'** शब्द का प्रयोग किया? क्या प्रभु उन लोगों के लिए चिन्तित था जो अभी तक शारीरिक रुप से चंगे नहीं हुए थे जब उसने **'चंगाई'** शब्द का प्रयोग किया या फिर वह **'आत्मिक चंगाई'** के विषय में कह रहा था?

बहुत बार हम मसीही लोग परख को न्याय में मिला देते हैं और परिणामस्वरुप यह कहते हैं कि हमें न्याय नहीं करना चाहिए। वे उन सारी वस्तुओं को स्वीकार कर लेते हैं जिसमें मसीही फीता लगा होता है। कुछ कलीसियाऐं और प्रार्थना समूह किसी को भी अपनी कलीसियाओं और सभाओं में बिना उनके सिद्धान्तों की जांच किए बुलाते हैं।

आप जानते हैं कि परमेश्वर के बहुत से सत्य मुहरबन्द हैं और वे केवल उन्हीं पर खोले जाते हैं जो आज्ञाकारिता का अभ्यास करते हैं। जैसे ही आप आज्ञाकारी बनते हैं वैसे ही उसके वचन का प्रकाश और बुद्धि चमकने लगती है। मसीही जीवन परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में आना है, सदैव उसकी आज्ञाकारिता में चलते हुए। आज्ञाकारिता से फिर जाने से अंधकार काम करने लगता है और जैसा प्रभु यीशु ने **मत्ती 13:15** में कहा 'अपने हृदयों को सूखा बना और अपने कानों को बहरा बनाकर उसकी न सुनने का परिणाम मृत्यु (अनन्त मृत्यु) की प्रतीक्षा करना है जो शीघ्र ही आनेवाली है।

प्रभु यीशु ने **'बीज बोनेवाले के दृष्टान्त'** में कहा कि अच्छी भूमिवाले के

लिए वह अपने भेद खोलता है और कठोर भूमि के लिए वह उन्हें बंद करता है।

मरकुस 4:8-12

[8] परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और वह उगा और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया। [9] तब उसने कहा, 'जिसके पास सुनने के लिये कान हों, वह सुन ले।' [11] उसने उनसे कहा, 'तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिये सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। [12] इसलिये कि, 'वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएं।'

'पहाड़ी उपदेश' में सब कुछ 'सांसारिक दृष्टि' से सुरक्षित है जिसे सांसारिक मस्तिष्क नहीं चाहता। परमेश्वर का वचन सदैव उनको मूर्ख बताता है जिनका हृदय सांसारिक धन सम्पत्ति में लगा रहता है जिसके गम्भीर परिणाम होते हैं।

लूका 12:20-21

'[20] परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, 'हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकठ्ठा किया है वह किसका होगा?' [21] ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।

याकूब 5:1-5

'[1] हे धनवानो, सुन तो लो, तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला-चिल्लाकर रोओ। [2] तुम्हारा धन बिगड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए हैं। [3] तुम्हारे सोने-चांदी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग के समान तुम्हारा मांस खा जाएगी। तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है। [5] तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा; तुम ने इस वध के दिन के लिये अपने हृदय का पालन-पोषण करके उसको मोटा-ताजा किया।

मसीह जो समस्त विश्व का स्वामी है उसने अपनी शक्ति का प्रयोग इसके आनन्द उठाने के लिए नहीं किया। इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर अपने लोगों को आशीषित नहीं करता और उनकी आर्थिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है। परन्तु निष्कर्ष यह है कि आज हमारा धन कहां है? क्या यह उन वस्तुओं में है जिनसे परमेश्वर आशीषित करता है या यह मसीह में है जो स्वयं हमारा इनाम है?

अत: आज आपका धन कहां है? क्या यह आपके धन, आपके चेहरे, आपके ज्ञान, आपकी भलाई, आपके व्यवसाय, आपके मित्रो, आपके बच्चों में है? प्रभु ने कहा कि जहां तेरा धन है वहीं तेरा मन भी लगा रहेगा।

मत्ती 25:31-34

'[31] जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। [32] और सब जातियां उसके सामने इकठ्ठी की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। [33] वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा। [34] तब राजा अपनी दाहिनी ओरवालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है:

मत्ती 3:12

*'उसका सूप उसके हाथ में है, **और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और** अपने गेहूं को तो खत्ते में इकठ्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।'*

अध्याय 3

उपाधियों और नामों का अगुवापन (आत्म-प्रशंसक) बनाम सेवक-अगुवापन!

प्रभु यीशु ने मरकुस 10:42-45 में अपने चेलों को आज्ञा दी कि उनका आचरण ऐसा होना चाहिए :

मरकुस 10:42-45

42 यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, 'तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। 43 पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; 44 और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। 45 क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।'

हम अगुवों को शर्म आनी चाहिए जो अपने आपको बहुत ऊंचा समझते हैं जबकि मसीह ने जो स्वयं परमेश्वर है और जीवित परमेश्वर का सच्चा प्रतिरुप है अपने आपको नम्र किया, और सेवा करने आया न कि सेवा करवाने **(इब्रानियों 1:3),** यह कुछ ऐसा है जिससे बहुत कुछ सीखना है।

प्रभु यीशु ने हमें उपाधियों और नामों के विषय में चेतावनी दी है। (जैसा हम नीचे लिखे वचन को पढ़ते हैं) जो हममें घमण्ड उत्पन्न करते जो आज के मसीही संसार में प्रचलित है:

मत्ती 23:6-12 कहता है:

6 भोज में मुख्य-मुख्य स्थान और सभा में मुख्य-मुख्य आसन, 7

बाजारों में नमस्कार ***और मनुष्यों में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है।***
[8] परन्तु तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है, और तुम सब भाई हो। [9] पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। [10] और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। [11] ***जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।*** *[12] जो कोई अपना आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।*

मसीही अगुवों में उपाधियां पाने की चाह तेजी से बढ़ती जा रही है कि उन्हें पास्टर बिशप, भविष्यद्वक्ता आदि के नाम से जाना जाए। यह सब वे मनुष्यों की ओर से पहचान चाहते हैं। दुर्भाग्यवश कुछ लोग सेमिनरी में **केवल** मनुष्य के द्वारा दिए गए और मनुष्य द्वारा निर्धारित की गई उपाधियों को प्राप्त करने ही जाते हैं। ध्यान दीजिए कि पौलुस, याकूब, पतरस और यहूदा ने अपने आपको पत्रियों में कैसे परिचित कराया–**परमेश्वर के बन्धुए सेवक!**

बहुत से प्रचारक और पास्टर अपनी उपाधियों और नामों के ऊपर ही लटके हुए हैं। मैं बहुत से पास्टर और प्रचारकों को देखता हूं जो **अपने आपकी स्वयं प्रशंसा करते हैं** जहा–जहां वे गए उनके सन्देश (सब मनुष्यों के द्वारा) पसन्द किये गए। दुख की बात है (यद्यपि वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे) कि वे उन्हीं फरीसियों के समान हैं जो प्रभु के इस पृथ्वी के जीवन के समय में थे।

2 कुरिन्थियों 10:18 कहता है:
'क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है वह नहीं, परन्तु जिसकी बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है।'

आपको और मुझे प्रथम बनने के लिए कभी–भी संघर्ष नहीं करना चाहिए। क्योंकि यदि हम ऐसा करेंगे तो हम अन्तिम होंगे, क्योंकि प्रभु यीशु के वचन कभी गलत नहीं हो सकते और न ही होंगे और वे निश्चित रुप से पूरे होंगे। मैं यह विचार आपके साथ छोड़ना चाहता हूं–हम आज किसकी ओर देख रहे

हैं कि वह हमारा मूल्यांकन करें- मनुष्य या परमेश्वर?

प्रभु यीशु ने लूका 13:30 में कहा:
*'और देखो, कुछ पिछले हैं वे पहले होंगे, **और कुछ जो पहले हैं, वे पिछले होंगे।'***

और पुन: **मत्ती 23:11-12 में कहा:**
*[11] जो तुम में बड़ा हो, वह, वह तुम्हारा सेवक बने। [12] **जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा:** और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।*

मसीह के पास आने के बाद हमें सदैव याद रखना चाहिए कि हममें मसीह की पहचान होती है न कि हमारी अपनी पहचान जो कोई अर्थ नहीं रखती।

कुलुस्सियों 3:1-4 कहता है:
*[1] अत: जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है [2] पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ [3] **क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।** [4] जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।*

दुर्भाग्यवश, दूसरी ओर ये 'नाम और उपाधियां' मानवीय संस्थानों की ओर से आती हैं। **इसके विषय पर वापस लौटते हुए, क्या यीशु ने इसे किसी भी प्रकार से पाना चाहा?** एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करना चाहता हूं। किसी व्यक्ति को मैं बहुत लम्बे समय से जानता हूं, जब मैं पहली बार उससे एक सेमिनरी में मिला था, वह बहुत नम्र और कायर था। आज वह एक कलीसिया का पास्टर है और आज कहानी बिल्कुल भिन्न है। मुझे हाल ही में उसके और उसके मित्र के साथ काम करना था, जो स्वयं एक पास्टर था। यह बड़ी गड़बड़ी और अजीब सी बात लग रही थी कि मैं उनके प्रथम नामों से उनको सम्बोधित कर रहा था क्योंकि मैं उन्हें उसी प्रकार जानता था, जबकि वे एक

दूसरे को 'पास्टर' की उपाधियों के साथ सम्बोधित कर रहे थे 'कि पास्टर अमुक यह कह रहे थे' और 'अमुक पास्टर ने अभी यह कहा था। हम इन उपाधियों के प्रति क्यों इतने सजग हैं कि मसीहियों के बीच में यह नाटक करें, विशेषकर तीन मित्रों के बीच में।

मुझे याद है कि जब मैं एक कलीसिया में गया जहां पति और पत्नी दोनों ही पास्टर थे, जो अपनी कलीसिया के सामने एक दूसरे को पास्टर की उपाधि के साथ सम्बोधित कर रहे थे न कि एक दूसरे का नाम लेकर जैसे वे अपने घरों में एक दूसरे को पुकारते हैं। 'पास्टर' कहलवाने में कोई गलती नहीं है, परन्तु मैं एक पास्टर के दृष्टिकोण से बोल रहा हूं, और आइए, हम इस बात में ईमानदारी से सहमत हो कि ये उपाधियां घमण्ड के फन्दे न बन जाएं जो दुर्भाग्यवश कुछ लोगों के लिए बन गए हैं।

यह दुख की बात है कि जब हम जानते हैं कि पास्टर की अलग बुलाहट है (बहुत से पास्टर भी इसको नहीं समझते हैं) और प्रचारक की अलग बुलाहट है और शिक्षक की अलग बुलाहट है। परन्तु बाइबल कभी भी इनमें से किसी को एक से ऊपर या नीचे नहीं रखती जैसे प्रभु यीशु ने **मत्ती 23:11** में कहा और **मत्ती 23:8** में कहा है, 'परन्तु तुम रब्बी न कहलाना' क्योंकि तुम्हारा एक ही शिक्षक है और वह मसीह है और तुम सब भाई हो। वचन में कहीं और यह लिखा है कि हम सब विश्वासी और याजक हैं।

फिलिप्पियों की पुस्तक इस बात को स्पष्ट करती है:

फिलिप्पियों 2:3-7

*[3] विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर **दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।** [4] हर एक अपने ही हित की नहीं, **वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।** [5] जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो [6] **जिसने परमेश्वर के स्वरुप में होकर** भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप*

धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

एक और बात है जो आज **पास्टर और प्रचारकों के बीच सनकी बन गई है कि वे अपनी तस्वीरों को भी छापने लगे हैं** (यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नियों की भी तस्वीरें छापते हैं) आप उन्हें विज्ञप्तियों, मनन के कागजों, बैनर्स, नए वर्ष के कलैण्डर, पोस्टर्स आदि में देखेंगे। मैं पुनः कहता हूं कि यह हमारे लिए शर्म की बात है। क्या आपने देखा कि हमारा प्रभु यीशु अपनी बड़ी-बड़ी तस्वीरों या अपने बैनरों के साथ सारे नगरों और गांवों में गया ताकि लोग उसके भौतिक चेहरे को पहचान सकें?

ऐसा प्रतीत होता है कि हम पवित्रशास्त्र के मूलभूत सत्य को भूल गए हैं। दुख के साथ कहते हैं, जैसा मैंने पहले कहा है, मैं अचम्भा करता हूं कि पास्टर, प्रचारक और आराधक कौन सी बाइबल पढ़ते हैं, कि वे अपने सन्देश के तीन बिन्दुओं पर ताली बजवा सकें।

क्योंकि बाइबल हमें निर्देश देती है कि हमें बहुत सावधान होना चाहिए कि लोग हमारा भौतिक और शारीरिक रुप न जान पाएं।

2 कुरिन्थियों 5:15-17

*15 और वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएं परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा। 16 अतः अब से हम किसी को **शरीर के अनुसार न समझेंगे।** यद्यपि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार नहीं जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे। 17 इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: **पुरानी बातें बीत गई हैं;** देखो, सब बातें नई हो गई हैं।*

प्रायः हम वक्ताओं को सुनते हैं कि वे अपने विषय में अधिक और मसीह के बारे में कम बोलते हैं। हम बाइबल के परमेश्वर की अपेक्षा उनके बारे में अधिक जानते हैं। मैं आजकल देखता हूं कि वे परमेश्वर की सामर्थ के बजाय अपने आप में बहुत भरे हुए हैं। परन्तु निपुण डींगमारी और निपुण परमेश्वर की महिमा को स्वयं के लिए प्राप्त करने का थोड़ा सा भी प्रयास

बता सकता है कि वे केवल आपसे **'वाह-वाह'** चाहते हैं, ताकि वह दिन उनके लिए लाभदायक बन जाए।

तौभी प्रेरित पौलुस में अन्तर देखिए जो

2 कुरिन्थियों 4:5 कहता है:
'क्योंकि हम अपने को नहीं परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के 'कारण' तुम्हारे सेवक हैं।'

2 कुरिन्थियों 1:17-18
*'[17] क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी **शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं,** ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे। [18] क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ है।*

हम इन धाराप्रवाह वक्ताओं और प्रचारकों द्वारा चलाए जाते हैं जो **बुद्धि के वचन** बोलते हैं और सुनना चाहते हैं, 'वाह! क्या सन्देश उसने दिया है; उसकी आवाज कितनी अच्छी है!' तौभी प्रेरित पौलुस ने कहा कि वह परमेश्वर के सत्य वचन के साथ आया है जिसे केवल मानवीय बुद्धि से नहीं समझा जा सकता है परन्तु केवल आत्मिक बुद्धि से।

एक और नए युग की सामान्य बात आप देखेंगे कि ये प्रचारक **बल्कि विश्वासी** भी इस आदत में पड़ गए हैं कि **एक दूसरे के वचनों को ले लेते हैं,** न केवल सामान्य मसीहत के **अनाप-शनाप शब्दों और मुहावरों को**, बल्कि कभी-कभी दूसरों के मजाकिया उच्चारण भी चाहे वे उनमें सटीक ठहरें या न ठहरें। वे एक दूसरे के शब्दों, मुहावरों, तरीकों को चुराते हैं। यिर्मयाह ने ठीक ही कहा है:

यिर्मयाह 23:30

*'यहोवा की यह वाणी है, देखो, जो भविष्यद्वक्ता मेरे **वचन दूसरों से चुरा-चुराकर बोलते हैं,** मैं उनके विरुद्ध हूं।*

एक और उदाहरण **1 राजा 22 से लेते हैं जहां मीकाय्याह अकेला चार सौ झूठे भविष्यक्ताओं के विरुद्ध था** जब उसे इस्राएल और यहूदा के राजाओं के सम्मुख परमेश्वर की ओर से वचन लाने के लिए बुलाया गया था। उसे मार्ग में बताया गया था कि झूठे भविष्यद्वक्ता राजाओं को प्रसन्न करने के लिए भविष्यद्वाणी कर रहे हैं अत: तेरे वचन भी उनके समान हों। परन्तु मीकाय्याह भविष्यद्वक्ता अपने स्थान पर खड़ा रहा और उसने कहा कि वह केवल उन्हीं बातों को बोलेगा जो प्रभु उसे बताएगा। चाहे उनसे राजा प्रसन्न न हो। मैं उस वचन के भाग को यहां लिख रहा हूं:

1 राजा 22:12-14

*[12] और सब नबियों ने इसी आशय की भविष्यद्वणी करके कहा, 'गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ में कर देगा। [13] जो दूत मीकाय्याह को बुलाने गया था उसने उससे कहा, 'सुन, भविष्यद्वक्ता एक मुंह से राजा के विषय में शुभ वचन कहते हैं **तो तेरी बातें उनकी सी हों;** तू भी शुभ वचन कहना।' [14] मीकाय्याह ने कहा, 'यहोवा के जीवन की शपथ जो कुछ यहोवा मुझ से कहे, वही मैं कहूंगा।'*

क्या यह आज के प्रचार में नहीं दिखता है (केवल उत्साह करनेवाले वचन बोले जाते हैं)? पौलुस ने माना कि किसी मनुष्य के तरीके को अपनाने से क्रूस के साधारण सन्देश (सुसमाचार) की सामर्थ हट जाती है जिसके द्वारा और माध्यम से परमेश्वर कार्य करता है।

1 कुरिन्थियों 2:1-7

*हे भाईयो,, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो **शब्दों या ज्ञान की उत्तमता** के साथ नहीं आया। [2] क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर*

चढ़ाए हुए मसीह को छोड़कर और किसी बात को न जानूं। [3] मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा; [4] ***और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं,*** *परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो। [6] फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं,* ***परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं;*** *[7] परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया।*

ये प्रेरित करनेवाले वक्ता (जिनके विषय में हमने ऊपर पढ़ा है वे **वाकपटु होते हैं**–वे महान कहानीकार होते हैं) परमेश्वर की पवित्र महिमा की बिल्कुल चिन्ता नहीं करते हैं। बल्कि वे थोड़ा बहुत अपनी वाह–वाही की इच्छा में बने रहने का प्रयास करते हैं या अपने सार्वभौमिक प्रचार से लोगों को लुभाना चाहते हैं (न कि अपने स्थानीय समाज में प्रचार करने और उन तक सुसमाचार पहुंचाने और अपनी कलीसिया को मजबूत करने के लिए कुछ करते हैं)।

ये तथाकथित मसीही वक्ता बहुत अच्छे और अपने ऊपर ध्यान केन्द्रित करने में प्राय: सांसारिक प्रबन्धन गुरू से भी आगे हैं विशेषकर **'व्यक्तित्व निर्माण के** सम्मेलनों में। परमेश्वर का वचन **कुलुस्सियों 3:3** में हमें बताता है कि ***'तुम मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के द्वारा परमेश्वर में छिपा है'*** जी हां, ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि मैं जीवित हूं, परन्तु मसीह मुझमें जीवित है, मसीह के प्रत्येक सेवक का यही आचरण होना चाहिए। क्योंकि यह हमारे विषय में नहीं है, परन्तु यह मसीह और उसके द्वारा क्रूस पर पूरे किए गए कार्य के विषय में है कि हम सुसमाचार सुनाएं क्योंकि समय निकलता जा रहा है। क्योंकि हमने उद्धार का सर्वोच्च वरदान पाया है और उसके बदले में थोड़ा सा सताव, पीड़ा या कभी–कभी नीचा देखना ठीक है। क्यों? क्योकि बहुत शीघ्र ही, जैसा **कुलुस्सियों 3:4** में कहता है 'जब मसीह जो हमारा जीवन है **प्रकट होगा,** तब तुम भी महिमा में उसके साथ प्रकट होगे।

ये प्रचारक अपने दर्शकों को एक बिन्दु के सन्देशों के चारों ओर घुमाते रहेंगे (आप देखेंगे कि वे परमेश्वर के वचन की गहराई में नहीं जाते और आपको अधर में रखते हैं, उसी दूध पीने की स्थिति में, केवल प्रारम्भिक शिक्षाओं पर रहते हुए)। यह एक दूसरे का मनोरंजन करना है। यह ऐसा है 'मैं तुम्हारा मनोरंजन करता हूं और उसके बदले में तुम हृदय खोलकर हंसना और मेरे मजाक पर ताली बजाना या प्रत्युत्तर देना। दुर्भाग्यवश ये सब परमेश्वर की पवित्र वेदी से उसकी मण्डली को कहा जाता है जो परमेश्वर की आराधना और उसके पवित्र वचन को सुनने आती है।

परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर की बातों के लिए गम्भीर होने के लिए कहता है। क्यों? दो कारणों से:

1. प्रभु परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र हमारे लिए एक बहुत गम्भीर काम के लिए भेजा था और उस काम की कीमत बहुत गम्भीर थी। उसकी क्रूस पर असहनीय पीड़ा को सहना), **ये सब हमारे लिए उसके गम्भीर प्रेम के कारण हुआ।** क्या वह गम्भीरता मसीह तक समाप्त हो गई? नहीं। परन्तु यह गम्भीरता आरम्भिक चेलों के साथ रही और आज भी लगातार चलती रहनी चाहिए।

2. दूसरी, यह जानते हुए कि समय निकलता जा रहा है जैसा हम देखते हैं कि अन्तिम दिनों की भविष्यद्वाणी हमारे संसार में पूरी हो रही है, हजारों लोग साम्प्रादयिक हिंसा, दैवीय विपत्तियों, युद्धों में मर रहे हैं, और विभिन्न प्रकार से आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर से अनन्तकाल के लिए अलग हो रहे हैं, केवल इसलिए कि उन्होंने सुसमाचार नहीं सुना। क्या हम इन सबसे जागृत होंगे और परमेश्वर के वचन का तिरस्कार करेंगे जो हमें **लूका 6:25** में आज्ञा देता है, *'...हाय तुम पर जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे।'* और जैसे **1 पतरस 4:7** में कहता है, *'सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिये संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो।* हम वास्तव में प्रभु के भविष्यद्वाणी किए हुए क्रोध के निकट आ गए हैं जो वह पूरी पृथ्वी पर उड़ेलने वाला है और यह निश्चित रुप से ठ्ठठा और मनोरंजन का समय नहीं है, मसीह में प्रियो, विशेषकर कलीसिया में।

ये कलीसियाऐं सामान्य तौर से '**मनोरंजक कलीसियाओं**' के नाम से जानी जाती हैं **और बहुतों को उस चौड़े मार्ग में ले जा रही हैं**-क्यों? क्योंकि हमारे प्रभु यीशु ने **मत्ती 7:13-14** में भविष्यद्वाणी की थी कि ऐसा होगा, *'सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। 14 क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।* जी हाँ, यह केवल विश्वासियों में से बचे हुए लोग होंगे जो ऐसा करते हुए पाए जाएंगे- **1 कुरिन्थियों 10:1-11**। जैसे हम कलीसियाओं में बड़ी गिरावट देखते हैं जो हमारी आंखों के सामने हो रही है, प्रभु यीशु के भविष्यद्वाणी के वचन **मत्ती 24:13** हमारे सामने याद दिलाने के लिए आए हैं, *'जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा।'*

ये मनोरंजक कलीसियाऐं बहुत प्रसिद्ध और मण्डली में बहुतों के लिए प्रतिष्ठा का चिन्ह बन गई हैं जो घमण्ड करते हैं कि हम अमुक-अमुक कलीसिया के सदस्य हैं। दुख की बात है कि कलीसिया का बड़ा हिस्सा ऐसे मसीहियों का होता है जो या तो परमेश्वर के वचन को ठीक से नहीं जानते हैं लेकिन अपनी अपनी बाइबल को लिए हुए और आराधना के दौरान हाथ उठाकर धार्मिकता का रुप धारण करते हैं या वहां ऐसे कुछ लोग हैं जो 'वचन' को जानते हैं परन्तु धार्मिकता का व्यवहार नहीं करते हैं।

जैसा मैंने पहले कहा है कि आज की कलीसिया घटिया मजाकों या आसुंओं की कहानियों से मनोरंजन करना चाहती है। आप इन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में बताऐं और वे उनमें से एक भी सुनना नहीं चाहते हैं। **मसीह का लक्ष्य कलीसिया के लिए यह है कि वह भेड़ों को भोजन दे न कि बकरियों का मनोरंजन करे** (जिसे बहुत से प्रचारक और पास्टर भूल गए हैं)। परमेश्वर की आज्ञा जो इस पुस्तक में बार-बार बताई गई है- उन्हें वे सब बातें मानना सिखाओ जिसकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है- (मत्ती 28:20)।

जैसे मैंने पहले बताया है कि **आप कितनी बार इस प्रकार के सन्देश वेदी** से इन प्रचारकों से सुनते हैं **जब वे यह बताते हैं कि ऐसी महान आज्ञा के लिए हमारा प्रत्युत्तर क्या होना चाहिए।**

ऐसे सन्देश जो परमेश्वर के वचन के प्रकाश में पाप के विषय में निरुत्तर,

परमेश्वर के वचन पर मनन करना, और तब उसके वचन में दी गई आज्ञाओं का पालन करना, केवल परमेश्वर की इच्छा को खोजने का महत्व, प्रभु यीशु के वापस आने के प्रति एक बचाए गए विश्वासी का आचरण आदि, यदि कभी नहीं तो बहुत कम इन प्रचारकों से सुनने को मिलता है। मसीह के आरम्भिक प्रेरित इन बातों से भली-भांति परिचित थे जो आप में और कलीसिया में घुस आए हैं जिनके सन्दर्भ पत्रियों में पाए जाते हैं। प्रेरित यूहन्ना ने चेतावनी दी है कि हम **मसीह के प्रकट** होने के समय में इन प्रचारकों के साथ नाश होने की जोखिम में हैं, यदि हम ऐसी स्थिति विधर्मी कलीसियाओं और संगति के भाग होंगे -**1 यूहन्ना 2:24-28 ।**

प्रभु यीशु के वचन हममें से प्रत्येक जन के लिए तेज चेतावनी और स्मरणार्थ हेतु आते हैं कि हम उस दिन के पहले सुधर जाऐं। जब हम प्रभु! प्रभु! कहते हुए पकड़े जाए और वह हमें जानने से इन्कार कर दे।

प्रभु यीशु ने लूका 6:26 में कहा:
***'हाय तुम पर** जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उनके बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।'*

इसके विपरीत हम **प्रेरितों के काम 14:14** में पढ़ते हैं कि प्रेरित पौलुस और बरनबास ने अपने कपड़े फाड़े जब लोग जीवित परमेश्वर की बजाय इन्हें महिमा देने लगे जिसकी सारी महिमा है।

आज की कलीसिया अपनी आत्मिक पर्याप्तता पर भरोसा करती है बजाय अपनी अपर्याप्तता पर। तौभी प्रभु यीशु ने जोर देकर कहा कि एक विश्वासी के जीवन में अपर्याप्तता का होना उसकी उन्नति की गुंजाइश को प्रकट करता है।

पहाड़ी उपदेश में प्रभु ने **मत्ती 5:3** में कहा, *'धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'*

प्रभु यीशु के उस दृष्टान्त को लें जहां दो लोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए आए थे, एक कर वसूलनेवाला और दूसरा फरीसी चुंगी

लेनेवाले ने परमेश्वर के समक्ष अपनी अपर्याप्तता को प्रकट किया जबकि फरीसी ने कहा कि उसने सब कुछ पूरा किया है। प्रभु यीशु ने कहा कि फरीसी की बजाय चुंगी लेनेवाला धर्मी ठहराया गया और घर चला गया।

प्रभु ने अपने आपको अच्छा गुरु बताते हुए उन प्रशंसाओं का इन्कार करते हुए कहा,' कोई भी अच्छा नहीं।' प्रभु ने अपने चेलों को भी चेतावनी दी, (जैसा हमने पहले पढ़ा है) कि अपने जीवनों में आत्मा के वरदानों को प्रदर्शित होते हुए देखने पर आनन्दित न हों, पवित्र आत्मा की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालने पर, परन्तु उन्हें बताया कि वे इस बात से आनन्दित हों कि उनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं।

प्रेरित पौलुस **1 थिस्सलुनीकियों 4:11** में कलीसिया से यह कहते हुए आग्रह करता है **'कि तुम भी चुपचाप अपना जीवन बिताओ।'** प्रेरित पतरस ने **1 पतरस 4:7** में यह सन्देश दिया है *'सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; **इसलिये संयमी होकर** प्रार्थना के लिये सचेत रहो।'*

प्रेरित पौलुस ने कहा कि उसकी निर्भरता पवित्रात्मा पर थी न कि बड़े नामों पर:

गलातियों 2:6

*'फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे वे चाहे कैसे भी थे मुझे इससे कुछ काम नहीं; परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता-**उनसे जो कुछ समझे जाते थे, मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ।'***

आप आरम्भिक चेलों की नम्रता और आचरण को देखेंगे जो उनके जीवनों में थी जिन्होंने लोगों को झिड़का जब उन लोगों ने चेलों के नामों को ऊंचा उठाना और मनपसन्द वक्ताओं को भिन्न वर्गों में बांटना आरम्भ किया था जैसा हम नीचे पढ़ते हैं:

1 कुरिन्थियों 3:1-11,18-23

'[1] हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसा आत्मिक

लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो **मसीह में बालक हैं।** [2] **मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया;** क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो, [3] क्योंकि अब शारीरिक हो। इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? [4] क्योंकि जब एक कहता है, 'मैं पौलुस का हूं', और दूसरा, 'मैं अपुल्लोस का हूं,' तो क्या तुम मनुष्य नहीं?

[5] **अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है?** केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया। [6] मैंने लगाया अपुल्लोस न सींचा,

परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। [7] इसलिये न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, **परन्तु परमेश्वर ही सब कुछ है जो बढ़ानेवाला है।** [8] लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा। [9] क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो। [10] परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। [11] क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।

[18] **कोई अपने आप को धोखा न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए।**

[19] क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है,

जैसा लिखा है, 'वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फंसा देता है,' [20] और फिर, 'प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है कि वे व्यर्थ हैं।' [21] इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है: [22] क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, [23] ***और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।***

यदि आप अपने बारे में बहुत बार अच्छी-अच्छी बातें सुनते हैं, तब आप कृपया अपने जीवन को मसीह के साथ जांचे। आपको अपने आप से एक प्रश्न पूछने की आवश्यकता है। क्या आप अपने शिक्षक और स्वामी मसीह यीशु से बड़े हैं? आपको अपने आपको स्वामी के ऊपर लिखित वचनों को याद दिलाना पड़ेगा कि क्या हम वास्तव में उसके घराने और राज्य में हैं?

आइए हम **लिटमस जांच करें** कि हम किस श्रेणी में पाए जाते हैं अपने जीवन के सम्बन्ध में निम्न वचन के द्वारा और देखें कि हम उसके वचन में कहां खड़े हैं!

लूका 6:22-26 **में प्रभु ने पुनः कहा:**

[22] ***'धन्य हो तुम*** *जब मनुष्य के पुत्र के कारण* ***लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे,*** *और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे। [23] ' उस दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है; उनके बाप-दादे, भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी वैसा ही किया करते थे। [24] ' परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। [25] 'हाय तुम पर जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होगे। 'हाय तुम पर जो अब हंसते हो, क्योकि शोक करोगे और रोओगे। [26]* ***'हाय तुम पर***

जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उनके बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।

1 पतरस 2:4-5 कहता है:

[4] उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया ***परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है,***
[5] तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिसमें याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का ग्राह्य हैं।

परमेश्वर का वचन **1 पतरस 2:4-5** के भाग से स्पष्ट हो जाता है जो हमें सोचने पर मजबूर करता है, कि यदि हमारे प्रभु यीशु का मनुष्यों ने तिरस्कार किया था, तौभी वह परमेश्वर के लिए बहुमूल्य था, तो हम जो अपने आपको उसका चेला कहते हैं, नहीं चाहते कि लोग हमें अस्वीकार करें परन्तु चाहते हैं कि सब लोग आदर करें (मनुष्यों की ओर से प्रशंसा पाने का प्रयास करते है)। क्या हम अपने स्वामी से बड़े होने का प्रयास करते हैं?

प्रभु यीशु के वचन जो मत्ती 10:24-25 में हैं उन्हें स्मरण करें

[24] 'चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता; और न दास अपने स्वामी से। [25] ***चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है।*** *जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहेंगे!*

अध्याय 4

मूर्ख कुंवारियां 'सुसमाचार' को अपने तक ही सीमित रखती हैं!

मसीह में प्रिय, इस पुस्तक का यह महत्वपूर्ण भाग उन मूर्ख कुंवारियों के बारे में बताता है जो 'सुसमाचार' को अपने तक ही (दबाकर) सीमित रखती हैं, परन्तु बुद्धिमान अपने चारों ओर बढ़ाती हैं। सुसमाचार को बताने का बोझ एक **सेवा** है जिसे प्रत्येक सच्चाई से बचे हुए विश्वासी को पूरा करना चाहिए। आप जानते हैं कि परमेश्वर का वचन प्रत्येक उद्धार पाए हुए विश्वासी को आज्ञा देता है कि वे **मेलमिलाप की सेवा के राजदूत** इस खोए हुए संसार में बनें।

2 कुरिन्थियों 5:17-21

*'[17] **इसलिये, यदि कोई मसीह में है** तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। [18] ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और **मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।** [19] अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उसने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। [20] **इसलिये हम मसीह के राजदूत हैं;** मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो। [21] जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।*

उद्धार का वचन **'इसलिए, यदि कोई मसीह में है,** से आरम्भ होता है। यदि आप और मैं यह दावा करते हैं कि हम मसीह में हैं, तब बाइबल कहती है, जैसा हमने ऊपर पढ़ा है, कि **परमेश्वर ने हमें मेलमिलाप की सेवा दी है और** इसलिए **अब हम मसीह के राजदूत हैं।**

यदि हम यह दावा करते हैं कि हम प्रभु यीशु के चेले हैं तो प्रभु की महान आज्ञा का बोझ प्रत्येक चेले पर आता है, कि एक सह चेला बनाऐं और आगे बढ़ें-**मत्ती 28:18-20** । मसीह यीशु की महान आज्ञा केवल कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही नहीं थी, परन्तु यह प्रत्येक सच्चे चेले, वर्तमान और भविष्य के लिए है। न ही इसे पूर्णकालिक सेवकों को सहायता राशि देने के द्वारा बदला जा सकता है।

पौलुस ने कहा हम जो कुछ करते हैं उन सब में सबसे ऊपर यही होना चाहिए यहां तक कि खाने और पीने में भी।

1 कुरिन्थियों 10:31-33

*31 इसलिये **तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।** 32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो। 33 जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं **कि वे उद्धार पाएं।***

पौलुस ने सब कुछ किया कि **लोगों का उद्धार हो,** क्या हम ऐसा करते हैं? हम मसीही लोग आपस में मसीह को बांटने में निपुण हैं (हम प्रभु की भलाई के बारे में आपस में बातचीत करने में घण्टों व्यतीत करते है-अच्छा है) परन्तु जब हम बाजार में या अपने कार्य स्थानों पर जाते हैं तो मुंह बन्द किए हुए रहते हैं और शर्माते हैं कि अपने चारो ओर के लोगों के द्वारा मसीही के रुप में न जाने जाएं।

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 1:16 में कहा

*क्योंकि **मैं सुसमाचार से नहीं लजाता,** इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।*

प्रभु यीशु ने कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह ***अपने आप का इन्कार करे।*** हम प्रभु के चेले नहीं हो सकते हैं यदि हम अपने स्वामी प्रभु यीशु की पहली आज्ञा का पालन नहीं करते-अपने आप का इन्कार करें। **सुसमाचार**

को फैलाना ही प्रथम लिटमस जांच है जो अपने आप का इन्कार करना है। यह एक प्रकार से यह भी जांच करने का तरीका है कि क्या हम **मत्ती 22:37-38** की पहली दो महत्वपूर्ण आज्ञाओं का पालन कर रहे है जो अपने प्रभु को पूरे हृदय से प्रेम करने और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करने के बारे में है। इसके बारे में सोचें कि सुसमाचार सुनाने में ये दोनों आज्ञाऐं पूरी होती हैं।

हम मसीहियों की मसीह के लिए 'अपने आप का इन्कार' करने की बात छोड़िए **हम इस संसार की किसी वस्तु से अपने आपको अलग रखना भी नहीं चाहते हैं।**

प्रेरित पौलुस इन विश्वासियों को सम्बोधित करते हुए **1 कुरिन्थियों 3:1-3** में कहता है, *[1] हे भाईयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु **जैसे शारीरिक लोगों से,** और उनसे जो मसीह में बालक हैं। [2] मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो, [3] **क्योंकि अब तक शारीरिक हो।** इसलिये कि जब तुम में **डाह और झगड़ा है,** तो क्या शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?*

कभी-कभी हम प्रभु के लिए बहुत से काम करना चाहते हैं, परन्तु जब 'अपने आप का इन्कार' करने की बात आती है, और अपने जीवन में प्रभु की इच्छा को पूरी करने की बात आती है तो हम उसे बुरी तरह असफल कर देते हैं। जैसा मैंने पहले कहा था, इसीलिए परमेश्वर के लिए काम करने और उसे अपने जीवन में काम करने के लिए आमन्त्रित करने में जमीन आसमान का अन्तर है। **बड़ा अन्तर है!**

हम सुसमाचार सुनने में निपुण हैं बल्कि बहुत सा समय और प्रयास 'सुसमाचार का प्रचार कैसे करें' आदि सेमिनार में प्रशिक्षण लेने में खर्च करते हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश फिर भी इस काम के लिए अपने आपको अपर्याप्त और अयोग्य समझते हैं।

पुनः पौलुस का उदाहरण देते हुए, जैसे ही प्रेरित पौलुस का उद्धार अनुग्रह के द्वारा हुआ और प्रभु यीशु की बुलाहट अपने जीवन में प्राप्त की तब, उसने

इन्तजार नहीं किया परन्तु सब जगह सुसमाचार सुनाया। प्रारम्भ में उसने केवल वही बताया जो वह जानता था कि 'यीशु मसीह क्रूस पर तुम्हारे पापों के लिए मारा गया' और जहां-जहां उसे अगुवाई हुई उसने उन सब को यह सुनाया। वह कहता रहा कि यद्यपि उसका सन्देश बहुत सरल था, तौभी पवित्रात्मा की सामर्थ ने उसके ऊपर नियन्त्रण लेकर यह किया ताकि उसका विश्वास उसी पर न हो लेकिन पवित्रात्मा की सामर्थ पर जो लोगों के जीवन में उद्धार का काम करता है जिसकी हम गवाही देते हैं। मैं आपको दो वचन दे रहा हूं:

पौलुस 1 कुरिन्थियों 2:1-5 में कहता है:

'[1] हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। [2] क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं। [3] मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा; [4] ***और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था,*** *[5] इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।'*

मुझे यहां थोड़ी देर रुकने और (कुछ बातें ध्यान में रखने योग्य है जब हम सुसमाचार सुनाते है) बताने दीजिये क्योंकि यह मसीही सुसमाचार का विषय मेरे हृदय में बहुत निकट का है।

आप जानते हैं कि जब जब आप सुसमाचार प्रचार करना आरम्भ करते हैं सम्पूर्ण स्वर्ग आपकी ओर होता है और याद रखें कि यह आपकी वाकपटुता या आपकी बुद्धि से नहीं होता, परन्तु आपकी परमेश्वर के प्रति साधारण आज्ञाकारिता में वह प्रचार करना चाहता है और बाकी का कार्य वह करेगा जैसे ही आप अपनी जीभ को खोलेंगे। सदैव याद रखें कि **प्रभु परमेश्वर बहुत कम उन लोगों को बुलाता है जो तैयार हैं लेकिन वह प्रायः बुलाए हुए को तैयार कर लेता है।**

आपके विश्वास को बांटना सांसर्गिक होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने हमें विश्वास हमारे स्वयं के लाभ के लिए नहीं दिया है। आरम्भ में अपने विश्वास को बांटना कठिन लग सकता है, लेकिन मैं आपको उत्साहित करूंगा

क्योंकि नीतिवचन कहता है 'मनुष्य का भय शत्रु का फन्दा होता है।' दूसरे शब्दों में, जब आप बाहर जाकर सुसमाचार सुनाने की योजना बनाते हैं तब शत्रु आपके मन में 'क्या होगा यदि...' विचार ला सकता है। परन्तु याद रखें कि प्रभु यीशु ने कहा कि तुम्हारे सिर के सारे बाल गिने हुए हैं और उनमें से एक भी बिना परमेश्वर की अनुमति के नहीं गिरेगा। प्रभु यीशु ने कहा कि उसका काम सुसमाचार प्रचार था–

मरकुस 1:38

*[38] आओ; हम और कहीं आस-पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, **क्योंकि मैं इसीलिये निकला हूं।'***

यदि हम उसके चेले होने का दावा करते हैं तो हमारी बुलाहट उससे कैसे भिन्न हो सकती है जिसे हम अपना स्वामी कहते हैं?

आरम्भ करने के लिए, अपने विश्वास को **प्रत्येक** के साथ बांटने का एक तरीका है यह है कि अपने चारों ओर के लोगों को केवल इतना बतायें कि आप प्रभु यीशु के अनुयायी/चेले हैं (और यह अंगीकार करने में कभी नहीं शर्मायें)। जब जब आप कर सकें या जब भी आप करें तो उन लोगों के बीच में एक पुल के रूप में काम करें जो इच्छुक हैं। '**प्रत्येक**' में आपके पड़ोसी से लेकर जो आपके साथ आपके कार्यस्थल तक जा रहा है, दुकानदार जिससे आप सौदा लेते हैं जो आपके साथ काम करते हैं या सहपाठी हैं, वे सब **शामिल** हैं।

मसीह में एक चीनी भाई ने मुझे बताया जो प्रभु को बहुत प्रेम करता है और मुझे हाल ही में मिला था, कि जब प्रभु ने उसे पहली बार बुलाया तो वह सुसमाचार सुनाने लगा। वह आस्ट्रेलिया के शॉपिंग मॉल्स में गया और वह बहुत से चीनी लोगों को सुसमाचार सुनाने लगा। एक दिन उसने प्रभु की आवाज सुनी जिसने **यूहन्ना 3:16** के द्वारा उससे बातें कीं और उस वचन के द्वारा उसे याद दिलाया कि वचन में यह नहीं लिखा है 'परमेश्वर ने चीनी लोगों से इतना प्रेम किया।' बल्कि यह लिखा है, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया। उसने कहा कि उसी दिन से वह **सबके पास** हियाव के साथ सुसमाचार सुनाने के लिए जाने लगा।

हमें सुसमाचार सुनाने के किसी भी अवसर को खोना नहीं चाहिए जबकि प्रभु ने इसके लिए द्वार खोला है। बहुत से लोग अपनी सुविधा के अनुसार अपने सोचने में मिश्रण कर देते हैं और कहते हैं, 'मैं अपना जीवन जीऊंगा और अपने चारों ओर लोगों को दिखा सकूंगा कि मैं प्रभु यीशु को प्रेम करता हूं।' **सुनिए! हम किसे मूर्ख बना रहे हैं?** मसीह के लिए संसार तक पहुंचना और सदैव संसार को अपने से चिपकाए रहने में **बहुत अन्तर है।**

याकूब 4:4 कहता है कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बैर करना है। वे कैसे मसीह को जानेंगे जब तक कि आप और मैं अपना मुंह खोलकर उन्हें सुसमाचार न सुनाऐं।

रोमियों 10:13-15

*[13] क्योंकि, 'जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा'। [14] फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय में सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? **और प्रचारक बिना कैसे सुनें?** [15] और यदि भेजे न जाएं, तो कैसे प्रचार करें? जैसा लिखा है, 'उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, **जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!**'*

आप समझें कि कोई गुप्त मसीही नहीं होता या मसीहत का कोई गुप्त ऐजन्ट भी नहीं होता है।

रॉक संगीत प्रर्दशन का सिनेमा या सोशल नेटवर्किंग में लगे रहना और अपने विश्वास का अंगीकार न करना कि आप मसीह के हैं, यह न केवल बुरा और अनुचित है बल्कि मसीहियों के लिए एक कलंक है जिन्हें परमेश्वर अपने लिए अलग करने के लिए बुलाता है।

एक और उदाहरण है। हममें से कुछ लोग सांसारिक फिल्में यह कल्पना करते हुए देखते हैं कि वे हमें दूसरों के प्रति अधिक सम्वेदनशील बनाती हैं। हम वहां जाते हैं और एक काल्पनिक फिल्म या टेलीविज़न का कार्यक्रम देखते हुए ढेरों आंसू बहाते हैं और अपने बारे में सोचते हैं कि हम कितने सम्वेदनशील लोग हैं। परन्तु जब हम उस काल्पनिक संसार से वास्तविक जीवन में आते हैं, तब छोटी-छोटी बातों पर हम फूट पड़ते हैं या दूसरों के प्रति अक्षमा का कदम उठाते हैं। मैंने यह देखा कि वे फिल्में जो कुछ हमारे

लिए करती हैं वह यह है कि वे हमें अपने प्रति अधिक सम्वेदनशील और नम्र बनाती हैं न कि हमारे पड़ोसी के प्रति!

बहुत से मसीही यह नहीं जानते कि परमेश्वर प्रत्येक सच्चे विश्वासी को आज्ञा देता है कि वे अविश्वासियों से अलग रहें एक विशेष राष्ट्र की तरह। सच्ची मसीहत हमें यह सिखाती है कि हम संसार में रहें लेकिन संसार हममें न रहे। परमेश्वर की बुलाहट अपने लोगों के लिए अलग रहने के विषय में न केवल पुराने नियम में है परन्तु नए नियम में कई बार दी गई है जैसा कि हम पढ़ते हैं:

2 कुरिन्थियों 6:14-18

*[14] **अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो,** क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? [5] और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? [16] और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है,*

*" मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।' [17] **इसलिये प्रभु कहता है,***

***"उनके बीच में से निकलो और अलग रहो;** और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा; [18] और मैं तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होंगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।'*

मूसा को मालूम था कि वह एक इब्री है और यद्यपि वह फिरौन के महल में ज्ञान से पला था, तौभी उसे मालूम था कि उसे यहां से भाग कर अपने भाइयों इस्राएल राष्ट्र में जाना है (जैसा कि वचन बताता है) ***न कि मिस्र के समाप्त होने वाले धन के पाप का आनन्द उठाना है।***

इब्रानियों 11:24-27 कहता है:

विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। [25] इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के

सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना अधिक उत्तम लगा। [26] ***उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा,*** *क्योंकि उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी थीं।* [27] ***विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उसने मिस्र को छोड़ दिया,*** *क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा।*

अतः हम ऊपर लिखित बाइबल के वचन को कितनी गम्भीरता से लेते हैं जैसा हमने अभी ऊपर पढ़ा है? जैसा मैंने पहले कहा था कि मसीह के लिए संसार तक पहुंचने और संसार को गले लगाए रखने में बहुत अन्तर है। यह मैं उन लोगों से कह रहा हूं जो सच्चाई से नया जन्म पा चुके हैं। मैंने ऐसे बहुत से मसीही विश्वासियों को देखा है जिनकी उंगलियां अब जल रही हैं (यह बाद में पता चलता है) जो विवाह या व्यापार या किसी अन्य प्रकार की साझेदारी में अविश्वासियों के साथ असमान जुए में जुत गए हैं।

आज वह भविष्यद्वाणी पूरी हो रही है *'वे भक्ति का भेष तो धरेंगे लेकिन उसकी शक्ति का इन्कार करेंगे।'* किसकी शक्ति का इन्कार करेंगे? परमेश्वर के वचन की शक्ति अपने जीवनों में लागू करने और उसके अनुसार जीने का इन्कार करेंगे। विश्वास की सामर्थ तभी काम करती है जब हम उसके अनुसार जीते हैं जो हमने सुना है।

आज हमने बाइबल के सत्यों को सुनना बन्द कर दिया है और हमें कभी-कभी दूसरों को दोषी ठहराने से पहले अपने आपको दोष देना चाहिए कि हमें कहां से पोषित किया जा रहा है। हम जानते हैं कि यदि ये शिक्षाऐं कलीसिया में वापस आ जाएं तो हम सत्य को जान लेंगे और सत्य हमें स्वतन्त्र करेगा और जागृति लाते हुए हमें पुनः वापस प्रभु के पास लौटा ले आएगा। ऐसी जागृति नहीं जैसी आधुनिक कलीसिया सोचती है, परन्तु जागृति वह है कि 'पश्चाताप् करके बाइबल के सत्यों का आज्ञापालन करने के लिए वापस लौट' आएं।

परमेश्वर का वचन बहुत सामर्थी रुप में याकूब में बड़ी सामर्थ के साथ आता है।

याकूब 4:4-5

*[4] हे व्यभिचारिणियो, **क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है?** अत: जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है। [5] क्या तुम यह समझते हो कि पवित्रशास्त्र व्यर्थ कहता है, 'जिस आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है जिसका प्रतिफल डाह हो।'*

ऐसा सोचना कि प्रभु का अनुग्रह परमेश्वर के वचन के प्रति अनाज्ञाकारिता को समझेगा और नजरअन्दाज कर देगा, एक ऐसे मामले की तरह है जैसे एक बच्चे और टब में नहाने के पानी दोनों को खिड़की के बाहर फेंकना।

हम मसीही लोग संसार के कामों में इतने उलझे हुए हैं और संसार में रहने के लिए अच्छा स्थान बनाने में लगे हुए हैं यह सोचते हुए कि हम परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं (सामान्य दृष्टिकोण)। दुर्भाग्यवश यह परमेश्वर के मार्गों, विचारों और आज्ञाओं से बिल्कुल भिन्न है (वचन के दृष्टिकोण)- **2 तीमुथियुस 2:1-4, इब्रानियों 11:13** कहता है कि बाइबल में विश्वास के लोगों ने परमेश्वर की सन्तुति प्राप्त की यह मानते हुए कि वे इस संसार में अजनबी और पराए हैं।

मसीह में प्रियो, गलती न करें, केवल परमेश्वर के पवित्र वचन और आज्ञाओं पर चलने द्वारा ही वह हमें बदलता है और अपनी इच्छा के अनुसार सम्वेदनशील लोग बनाता है (प्रभु यीशु के उदाहरण से सीखते हैं)।

या तो हम मसीह में हैं या मसीह के बाहर हैं, चुनाव हमारा है। **मसीह में होने का अर्थ है कि उसके सारे वचनों और शिक्षाओं में बने रहना-मत्ती 28:20** ।

जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला प्रचार करने गया तो वह अन्यजातियों के पास नहीं परन्तु खोई हुई 'भेड़ों' के पास गया था जो भटक गई थीं कि उन्हें बताए कि वे पश्चात्ताप् करें क्योंकि कुल्हाड़ी उन सब पेड़ों की जड़ पर रखी है जो फल नहीं लाते, जो सच्चा पश्चात्ताप् नहीं करते। सच्चा सुसमाचार प्रत्येक विश्वासी को अपने जीवन का लेखा रखने और लगातार किसी भी पाप से

पश्चात्ताप् करने के लिए पुकारता है। मैं विश्वास करता हूं कि यदि हम उद्धार पाए हुए हैं तो हमने अवश्य ही एक पापी की तरह पाप से पश्चात्ताप् किया होगा जब हम प्रकाश में आए थे (शायद आल्टर कॉल के समय)। एक प्रश्न हमें अपने आप से पूछना है कि क्या हम किसी प्रकार धीरे-धीरे पीछे तो नहीं हट गए?

प्रभु यीशु जो बाइबल के किसी भी भविष्यद्वक्ता से बड़ा है जो स्वयं परमेश्वर है, उसने भविष्यद्वाणी की कि कलीसिया को 'पश्चात्ताप् करने और अपने प्रथम प्रेम पर लौटना आवश्यक है'- जो भविष्यद्वाणी की पुस्तक **प्रकाशितवाक्य 2:2-5** में यह लिखा है (नहीं तो वे काट डाले जाएंगे)।

मेरा एक मसीही मित्र है जिसे मैं जानता हूं जो प्रभु यीशु को बहुत प्रेम करता है। तौभी उसने अपने पहले कार्यस्थल पर कभी नहीं बताया था कि वह एक मसीही है (प्रभु की स्तुति हो कि अब वह बताता है)। यद्यपि वहां उसका जीवन आदर्श था। दुर्भाग्यवश उसके सहकर्मियों ने यह कभी नहीं जाना कि उसकी सफलता के पीछे प्रभु यीशु मसीह ही कारण था, तो यदि वह जब कभी सफलता पाता और प्रभु को महिमा देता तो शायद वे मसीह के पीछे चलने को तैयार होते।

मैं विश्वास करता हूं कि यही प्रभु यीशु का अर्थ था जब उसने कहा, '*मनुष्यों के सामने तुम्हारी ज्योति ऐसे चमके ताकि लोग तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की प्रशंसा करें।*

हम प्राय: मिश्नरीज़ और मसीही संस्थाओं के लिए प्रार्थना करते हैं और उनको दसमांश और दान देकर सहायता करते हैं और दूरदराज गांवों, आदिवासी क्षेत्रों में निर्भय और बिना थके हुए सुसमाचार को फैलाने के काम की सराहना करते हैं (यह अच्छा है), परन्तु क्या हमारे चारों ओर 'पड़ोस' और 'बाजार के स्थानों' में कार्यक्षेत्र नहीं हैं?

इसके विषय में सोचें। उदाहरण के लिए यदि कोई भी मिश्नरी जिसकी हम सहायता करते हैं वह एक दिन मुकर जाए और हमसे कहने लगे, '*मुझे प्रभु परमेश्वर की ओर से आशीष के रुप में अचानक धन मिल गया है। अत: इस समय, मैं आपके कार्य स्थल और बाजार में आपको प्रचार करने के लिए*

प्रार्थना की सहायता प्रदान करूंगा? तब आप उससे क्या कहेंगे? शायद आप उसे बताएंगे, 'आप कब चाहते हैं कि मैं वह आरम्भ करूं? या आप बहुत से बहाने बनाएंगे कि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं।

मैं उन सब के लिए यह भी कहना चाहूंगा जो वास्तव में सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं कि वे अपने मस्तिष्क में रखें कि आप का और हमारा अकेले प्रचार करना हमें आज्ञाकारी चेला नहीं बनाता है, परन्तु जो आपको और मुझको आज्ञाकारी चेला बनाता है वह है उन **सब बातों को मानना** जिसकी प्रभु ने हमें आज्ञा दी है।

एक सच्चे आज्ञाकारी विश्वासी को अपने जीवन के हर एक क्षेत्र में निर्दोष रहना चाहिए और सभी समय ईमानदारी का उच्च स्तर प्रकट करना आवश्यक है।

आप सुसमाचार का प्रचार नहीं कर सकते हैं यदि आप एक पिता, माता, पति, पत्नि, पुत्र, पुत्री, मालिक और नौकर के रुप में असफल हैं। उदाहरण के लिए, जैसे घर में या कार्यस्थल पर क्रोध करना या शरीर और आंखों की अभिलाषा में डूबे होने या जीवन का घमण्ड या कुछ बुरी आदतों या लतों में पड़े रहना।

पुनः आप सुसमाचार प्रचार नहीं कर सकते हैं यदि आप सोचते हैं कि आप परमेश्वर के साथ एक हैं और फिर भी अपने अन्दर, अपने पड़ोसी या एक मसीही भाई के विरुद्ध अपने मन में कड़वाहट, बुरी दृष्टि, जलन, या अक्षमा आदि रखते हैं। एक आज्ञाकारी चेला होने का अर्थ यह नहीं कि आप केवल सुसमाचार सुनाएं (जो अपरिवर्तीनय है) परन्तु सदैव याद रखें कि महान आज्ञा प्रत्येक यीशु मसीह के चेले के लिए एक आज्ञा है जिसके साथ एक बड़ी आज्ञा और जिम्मेदारी आती है (जो महान आज्ञा का एक भाग है) जैसा प्रभु यीशु ने कहा- **उन सब बातों को मानना जिनकी मैनें तुम्हें आज्ञा दी है।**

मत्ती 28:19-20

*[19] इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो [20] **और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ;** और देखो मैं*

जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं।' (आमीन!)

दुर्भाग्यवश आज वे मसीही पश्चिमी देश जो एक समय में बहुत मजबूत थे उन देशों में कलीसियाऐं दिन पर दिन पिट रही हैं (कुर्की हो रही है)-क्यों? मूलभूत रुप से इसलिए कि हम स्वयं प्रभु यीशु के वचनों का पालन करने में असफल हो गए हैं जो कहते हैं **'उन सब बातों को मानना जिनकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है' मत्ती 28: 19-20)** वह है सुसमाचार को इसकी सम्पूर्णता में अगली पीढ़ी में प्रचार करना। याद रखें कि बाइबल के 'चार सुसमाचार' हमारी अलमारियों में रहेंगे जब तक कि आप और मैं (जैसा किसी ने कहा है) जो पांचवा सुसमाचार' है मसीह के प्रेम के सुसमाचार को हियाव के साथ अपने नाश होनेवाले पड़ोसियों को नहीं सुनाएंगे।

अध्याय 5

क्या कलीसिया आज सो रही है?

वास्तव में आज कलीसिया (जैसा किसी ने कहा था) **शिमशोन की तरह दलीला की गोद में सो रही है।**

जब प्रभु यीशु ने कहा, 'उन सब बातों को मानना जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है,' तब उसका अर्थ था 'सब'। क्योंकि जो कुछ उसने कहा वह उसका अर्थ रखता है और जो उसने जो कुछ कहा वही कहा जिसका अर्थ होता है। आप जानते हैं कि परमेश्वर के वचन के साथ कोई मोल-भाव नहीं होता, न ही इसके साथ मोलतोल और मोल-भाव होता है। या तो हम **मसीह में 'हैं'** -या नहीं। या तो हम उसकी शिक्षाओं में हैं, या नहीं हैं।

प्रभु यीशु ने यूहन्ना 14:23-24 में बड़ी स्पष्टता से कहा है:

[23] 'यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे और उसके साथ वास करेंगे। [24] ***जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता;*** *और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है जिसने मुझे भेजा।'*

परन्तु अब कोई कह सकता है कि यह कैसे सम्भव है कि हम प्रभु की सारी शिक्षाओं का पालन कर सकें। ठीक है। क्या हमने नहीं सुना कि लिखा है 'परमेश्वर से सब बातें सम्भव हैं? और क्या हमने नहीं सुना जो लिखा है, 'मैं उसमें जो मुझे सामर्थ देता है, सब कुछ कर सकता हूं'?

यदि आप कह रहे हैं कि मैं जानता हूं कि बाइबल सब बातों को मानने के लिए कहती है, परन्तु सोच रहे हैं कि यह कैसे होगा? तो इसका उत्तर **यूहन्ना 14:26** में है, जहां प्रभु यीशु कहते हैं, मैं पवित्रात्मा विशेष करके इसीलिए दे रहा हूं जो हमें उसकी सारी शिक्षाओं को याद दिलाएगा।

यूहन्ना 14:26

परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

अत: आप देखते हैं कि हमारे पास कोई बहाना नहीं है, यदि हम पवित्रात्मा की अगुवाई की अवज्ञा करेंगे और स्पष्टरुप से परमेश्वर को प्रेम नहीं करते जैसी मसीह की परिभाषा **यूहन्ना 14:23-24** में है।

हममें से बहुत से मसीही आज उथले पानी में डुबकी लगा रहे हैं, जो उनकी स्वयं के आराम के क्षेत्रों में है। यह वास्तव में खोखला जीवन जीने के समान है या अन्य शब्दों में 'खोखली मसीहत' है। परन्तु प्रभु हमारी प्रतिष्ठा को सदैव हिलाता है और यदि हम इस बात को ध्यान देने के प्रति सम्बेदनशील हैं तो हम उसके वचन का पालन करेंगे। जैसा प्रेरित पतरस ने यह कहते हुए किया *'प्रभु यदि तू कहता है तो मैं फन्दे डालूंगा।'* यह केवल तभी होता है जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, वह हमारे जीवन में अद्भभुत रीति से काम करता है कि हम केवल खड़े होकर अचम्भा कर सकते हैं (जैसे पतरस ने ढेर सारी मछलियों के पकड़े जाने पर किया था)। परन्तु प्रश्न अभी भी है कि क्या हम अपने फन्दों को नीचे डालने के लिए तैयार हैं जैसे मसीह हमें भी चुनौती दे रहा है?

मैं 'खोखली मसीहत' के बारे में थोड़ा और एक छोटे उदाहरण के द्वारा बांटना चाहता हूं। आज के मसीहियों को देखकर हृदय बहुत दुखी होता है कि वे प्रतिदिन ढेर सारे ईमेल को प्राप्त करने और उन्हें दूसरों तक पहुंचाने में लगे हैं जिसमें इस नाशवान संसार की समस्याऐं और उनके समाधान होते हैं बजाए इसके कि वे मसीह के हिम्मतवाले सिपाही बन कर यीशु मसीह के सुसमाचार को बांटते, यह जानते हुए कि खोई हुई आत्माओं तक पहुँचने के लिए बहुत कम समय रह गया है। परन्तु दूसरी ओर, दुख की बात है कि बहुत से मसीही सहयोगी और राजनैतिक रुप से सही ठहरने के लिए बड़े चौकस हैं कि अपने चारों ओर के संसार को खुश रख सकें।

आरम्भिक कलीसिया को देखें। आप जानते हैं कि प्रेरित पतरस, पौलुस,

यूहन्ना, याकूब और मसीह के अन्य चेलों ने सताव के दौरान भी सुसमाचार प्रचार कभी बन्द नहीं किया जिसके कारण धन्यवाद सहित आप और हम आज मसीही हैं। तो क्यों वह आग आज बुझ गई है या फिर केवल कुछ मसीही लोगों के हाथ में ही है? क्या हम सब को उसी कार्य में शामिल होने के लिए नहीं बुलाया गया है? यदि आरम्भिक चेले राजनैतिक रुप से अपने आपको सही ठहराने की कोशिश करते तो वे सुसमाचार प्रचार करना बन्द कर देते क्योंकि उनको कोड़े मारे गए थे और अधिकारियों ने उन्हें आदेश दिया था कि वे यीशु मसीह का सुसमाचार न सुनाएं। नहीं। परन्तु जैसे ही उन्हें पीटा गया वे नगर के चौक पर आए और उन्होंने हियाव के साथ पुनः सुसमाचार प्रचार करना आरम्भ कर दिया।

हमें इस बात से चौकस रहना चाहिए कि हम यह न सोचें कि हमारी खोखली मसीहत के बावजूद हमारे लिए उद्धार निश्चित है और तब आपको पुनः सोचने की आवश्यकता है जैसे आप प्रेमी परन्तु गम्भीर परमेश्वर यीशु मसीह के वचन पढ़ते हैं:

प्रकाशितवाक्य 3:15-22

15 मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: भला
होता कि तू ठंडा या गर्म होता। 16 ***इसलिये कि तू गुनगुना है, और***
न ठंडा है और न गर्म मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं। *17*
तू कहता है कि मैं धनी हूं और धनवान हो गया हूं और मुझे किसी
वस्तु की घटी नहीं; और यह नहीं जानता कि तू अभागा और तुच्छ
और कंगाल और अंधा और नंगा है। 18 इसीलिये मैं तुझे सम्मति देता हूं
कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले ले कि पहिनकर तुझे
अपने नंगेपन की लज्जा न हो, और अपनी आंखों में लगाने के लिये
सुर्मा ले कि तू देखने लगे। 19 मैं जिन-जिन से प्रेम करता हूं, उन सब
को उलाहना और ताड़ना देता हूं; ***इसलिये सरगर्म हो और मन***
फिरा। *20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा*
शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ
भोजन करूंगा और वह मेरे साथ। 21 जो जय पाए मैं उसे अपने साथ
अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के
साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। 22 जिसके कान हों वह सुन ले कि

आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

1 यूहन्ना 3:7 कहता है:
हे बालको, ***किसी के भरमाने में न आना। जो धर्म के काम करता है,*** *वही उस के समान धर्मी है।'*

क्या आप और मैं धार्मिकता का व्यवहार करते हैं?

बाइबल इस विषय में बहुत स्पष्ट है कि विश्वासियों को धार्मिकता का 'व्यवहार' करना चाहिए। आप जानते हैं कि 'व्यवहार' एक क्रिया है और एक काम करना है और यह स्वेच्छा है न कि विवशता। परन्तु यह एक लगातार चुनाव है कि पाप न करें लेकिन पवित्रता में चलें। जब हमारे जीवन धार्मिकता का व्यवहार नहीं करते तब हम अधर्मी हैं। यह बहुत सरल है–इसमें कोई रॉकेट का विज्ञान नहीं है।

जैसे किसी ने कहा है आज का सन्त बीते हुए कल का पापी है, आज का पापी बीते हुए कल का सन्त हो सकता है। यह हमारे प्रतिदिन के चुनाव पर निर्भर है जिन्हें हम करते हैं। इसीलिए प्रभु यीशु ने प्रत्येक को जो उसके अनुयायी होना चाहते हैं यह आज्ञा दी है कि वे प्रतिदिन धार्मिकता का व्यवहार करें। उसके वचन इस बात को और स्पष्ट करते हैं:

लूका 9:23
उसने सब से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और ***प्रतिदिन*** *अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।*

मैं उन सब से पूछना चाहता हूं जो इसके विपरीत सोचते हैं, क्या **मत्ती 5 में प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाऐं** एक उद्धार पाए हुए व्यक्ति पर लागू नहीं होतीं? या हम कह रहे हैं कि तथाकथित 'बचाये गये मसीही' पर वे परिणाम लागू नहीं होंगे जिन्हें मसीह ने नर्क की अग्नि में डालने के लिए ठहराया है यदि वह अपने भाई/बहन को **'अरे मूर्ख'** कहता/कहती है या **'किसी पर कुदृष्टि डाले** और वह इन पापों से सच्चा पश्चात्ताप् न करे और लगातार बिना पश्चात्ताप् किए हुए जान-बूझकर पापी जीवन जीए?

बाबइल में ऐसा कहीं भी सुझाव देखने को नहीं मिलता जहां एक मसीही को

यूं ही उद्धार की निश्चयता दी गई हो चाहे वह प्रतिदिन कैसा भी जीवन जीए।

गलातियों 6:7-9 कहता है:

[7] धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्टों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। [8] क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। [9] हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।

हमें **जाग उठने** और अपने परमेश्वर को व्यवस्थाहीन और पक्षपाती न बनाने की आवश्यकता है। हममें से बहुत से लोग परमेश्वर और उसके चरित्र की गलत कल्पना करते हुए **बड़ी मूर्खता** करते हैं जो हम अपने स्तरों से करते हैं जो बाइबल में नहीं पाई जाती है। हम अपनी समझ के अनुसार परमेश्वर को बना लेते हैं बिना बाइबल को पढ़े हुए, बिना उसे जाने हुए (वचन की अज्ञानता के कारण) और एक तरीके से अपने अन्दर एक मूर्ति बना लेते हैं और यह मूर्ति-आत्म धार्मिकता की है। वह मूर्ति जो हमारी अच्छी और बुरी सोच के परिणामस्वरुप बनती है न कि परमेश्वर के स्तर से जो लिखा हुआ है। यह हमारे पापमय मस्तिष्क और संसार के दृष्टिकोण का दूषित परिणाम है जो वचन के दृष्टिकोण में सही नहीं पाई जाती है। हम ऐसी बातें कहते हैं जैसे 'मैं नहीं सोचता हूं कि परमेश्वर चाहता है कि हम उसे करें', ऐसा करके हम परमेश्वर को अपने पापमय मस्तिष्क और आत्म-धार्मिकता के परिपेक्ष में एक स्तर देते हैं।

इस्राएलियों ने सोने का बछड़ा बनाकर ऐसा ही किया था उन्होंने अपने मन में परमेश्वर की कल्पना की क्योंकि वे मिस्र में रहे थे, और अभी-अभी वे वहां से बाहर आए थे।

यह समय है कि हम जाग जाएं और पश्चात्ताप् करें। **2 पतरस 3:11-18** हमें उन कुछ लोगों के बारे में चेतावनी देता है जो परमेश्वर को एक व्यवस्थाहीन परमेश्वर की उपमा देते हैं, जो हमारे जीवनों से कुछ मांग नहीं करता है (बाइबल के परमेश्वर के विपरीत जो एक उद्धार पाए हुए आज्ञाकारी विश्वासी से चाहता है कि **वह पवित्र, निर्दोष और निष्कलंक जीवन जीए**)।

हममें से कुछ लोग इस धोखे में हैं कि एक बचाया गया पापी फिर कभी

पाप में नहीं गिर सकता है या लगातार पाप में नहीं रह सकता है। हमें पत्रियों को पढ़ने की आवश्यकता है जो परमेश्वर के संतों को लिखी गई हैं, जहां पौलुस उनके साथ कठोरता से बर्ताव करता हैं (उन लोगों को उत्साहित करता है जो प्रभु के साथ ठीक चल रहे हैं), वह कहता है विश्वासी लोगों ने कुछ बातें कलीसिया में की हैं उनकी चर्चा करना लज्जा की बात है, ऐसे पाप तो अविश्वासियों में भी नहीं पाए जाते हैं।

2 पतरस 3:11, 14

[11] जबकि ये वस्तुऐं इस रीति से पिघलनेवाली हैं, ***तो*** *तुम्हें पवित्र चाल-चलन* ***और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए।*** *[14] इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो, तो* ***यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो,***

प्रभु यीशु धर्मी न्यायी की तरह अपनी सारी महिमा में आएगा (न कि पक्षपाती की तरह), वह प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार बदला देने के लिए आएगा।

मत्ती 16:27

' [27] मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय 'वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।'

एक व्यक्ति का पवित्र जीवन उसके परिवर्तन के अनुभव से ऊपर होना चाहिए। **रोमियों 11 अध्याय सोती हुई कलीसियाओं को कठोर चेतावनी देता है।** यह कहता है कि यदि परमेश्वर ने स्वभाविक शाखाओं (चुनी हुई यहूदी जाति) को उनकी अनाज्ञाकारिता के लिए नहीं छोड़ा तो वह हमें, गैर-यहूदी मसीहियों, को भी नहीं छोड़ेगा जो जंगली शाखाऐं थीं, बाद में उसमें साटी गईं यदि हम उसकी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे। कृपया ध्यानपूर्वक निम्नलिखित वचन को पढ़ें ताकि हम उद्धार के विषय में अपनी सोच की अज्ञानता में वही मूर्खता न दोहराऐं जो इस्राएल राष्ट्र ने की थी।

रोमियों 11:17-22

[17] पर यदि कुछ डालियां तोड़ दी गईं, और तू जंगली जैतून होकर उनमें साटा गया, और जैतून की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है,

[18] तो डालियों पर घमण्ड न करना; और यदि तू घमण्ड करे तो जान
कि तू जड़ को नहीं परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है। [19] फिर तू कहेगा,
'डालियां इसलिये तोड़ी गईं कि मैं साटा जाऊं।' ठीक है, वे तो
अविश्वास के कारण तोड़ी गईं, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है
इसलिये अभिमानी न हो, परन्तु भय मान, [21] **क्योंकि जब परमेश्वर ने
स्वाभाविक डालियों को न छोड़ा तो तुझे भी न छोड़ेगा।** [22] इसलिये
परमेश्वर की कृपा और कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, **यदि तू उसमें
बना रहे, नहीं तो तू भी काट डाला जाएगा।**

आपने समझा है कि प्रेरित पौलुस ने जो **रोमियों 11** में कहा है वही बात प्रभु यीशु ने **यूहन्ना 15:1-6** में कही है कि उसमें जोड़े जाने के बाद यदि हम लगातार अपने बदले हुए जीवन/पवित्र जीवन के द्वारा फल नहीं लाते **तो हमें काट डाला और आग में फेंका जाएगा।**

प्रभु यीशु ने इस बात को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में बहुत बार बहुत स्पष्ट किया है (**प्रकाशितवाक्य 2:4-5; 2:7; 3:1-5**) कि यदि हम लगातार विजयी जीवन नहीं जीएंगे तो वह हमारा दीपक उसके स्थान से हटा देगा, जीवन के वृक्ष से हमें फल खाने से रोक देगा और हमारे नाम जीवन की पुस्तक से काट देगा।

1 पतरस 4:17-19

*[17] क्योंकि वह समय आ पहुँचा है कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय
किया जाए; और **जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा** तो उनका
क्या अन्त होगा जो **परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?** [18] और
'यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनाई से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी
का क्या ठिकाना?' [19] **इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार
दुःख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए** अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य
सृजनहार के हाथ में सौंप दें।*

*जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।*

अध्याय 6

बच्चों का बपतिस्मा बनाम विश्वासियों का बपतिस्मा

मैं यहां रुककर उन सभों से जिन्होंने प्रभु यीशु को यह कहते हुए सच्चाई से अपना उद्धारकर्त्ता मान लिया है, 'मैंने प्रभु यीशु का अनुसरण करने का फैसला किया है, अब मैं पीछे नहीं लौटूंगा' (वे जो अन्ततः परमेश्वर के साथ गम्भीर हैं), यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपने पानी के बपतिस्मे के बारे में कभी विचार किया है? तब मैं ऐसों को चुनौती दूंगा कि वे उस बात को पूरा करें जिसकी आज्ञा बाइबल देती है, बपतिस्में **के पानी में प्रवेश करते हुए यह प्रकट करें कि आप प्रभु यीशु के प्रति समर्पित हैं और उसके मार्गों पर चलेंगे** (यदि आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है)।

यह सोचते हुए कि आप अन्य लोगों से अच्छे हैं ऐसा नहीं करते, परन्तु चूंकि आप परमेश्वर से विनती कर रहे हैं कि वह आपके समर्पण को जो आपने सकरे मार्ग में चलने के लिए किया है, उस मार्ग में सीधे चलने में आपकी सहायता करे। प्रेरित पतरस ने बपतिस्मा की आवश्यकता को बड़ी सुन्दरता के साथ लिखा है:

1 पतरस 3:21

उस पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है; इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।

अन्य शब्दों में, हम परमेश्वर के मागों में चलने की प्रतिज्ञा करते हैं क्योंकि अब मसीह हमारी सामर्थ हो गया है।

मसीह में अति प्रियो, मैं चाहता हूं कि आप यह जानें कि यदि आपके माता-पिता ने आपको बचपन में मसीही बना दिया है, मुझे क्षमा करें, यह 'पानी के बपतिस्मे' की विधि को पूरा करना नहीं है, बल्कि यह माता-पिता की ओर से अपने बच्चे के समर्पण का कार्य है (न कि बच्चे को मसीही

बनाना) जो उन्होंने निश्चय किया है कि वे अपने बच्चे को मसीही विश्वास में बढ़ाएंगे। क्योंकि बाइबल स्पष्टता से कहती है कि **'पश्चात्ताप् करो और बपतिस्मा लो' या 'विश्वास करो और बपतिस्मा लो'।**

क्योंकि एक बच्चे की तरह उस समय आपके पास प्रभु यीशु में विश्वास करने का ज्ञान नहीं था कि यीशु आपके पापों के लिए मरा और न ही आपने पश्चात्ताप् किया कि आप पापी हैं और मसीह के लहू के द्वारा आपको उद्धार की आवश्यकता है। बाइबल इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट है कि बपतिस्मा विश्वास और पश्चात्ताप् के बाद आता है न कि **विश्वास और पश्चात्ताप् से** पहले। जैसा मैंने पहले कहा है परमेश्वर के वचन से कोई मोलभाव नहीं होता है न तो हमारे पृथ्वी पर के समय में है, और जब हम उसके सामने खड़े होंगे, तब।

अच्छा, पहले इसकी जड़ में चलते हैं। इसके बारे में सोचें। क्यों लगभग सभी मसीही समुदायों ने इस बात को माना है कि किसी न किसी प्रकार का बपतिस्मा एक मसीही के लिए महत्वपूर्ण है (बड़ों का या बच्चों का)? केवल इसीलिए कि यह प्रत्येक विश्वासी के लिए प्रभु की आज्ञा है और प्रत्येक समुदाय ने इसे माना है। क्योंकि प्रधान चरवाहे और हमारे विश्वास के स्वामी ने इस धार्मिकता को पूरा करके हमारे सामने एक उदाहरण रखा है कि हम उसका अनुसरण करें।

मत्ती 3:13-15

*[13] उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। [14] परन्तु यूहन्ना यह कह कर उसे रोकने लगा, 'मुझे तो मेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया?' [15] यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, 'अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें **इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।**' तब उसने उसकी बात मान ली।*

पानी का बपतिस्मा' वह है जो प्रभु ने प्रत्येक विश्वासी को आज्ञा दी है जैसा उसने किया जैसा हम **मत्ती 28:19** में पढ़ते हैं।

एक बच्चे को मसीही बनाने से वह मसीही विश्वासी नहीं बनेगा। क्योंकि मसीही विश्वास में प्रभु यीशु का कोई चेला जन्म से नहीं होता है। मसीहत यहूदावाद की तरह वंशानुगत नहीं है, न ही मसीहित एक संगठन की सदस्यता है जो पिता से पुत्र को मिल जाएगी। प्रत्येक पीढ़ी को यीशु के अनुयायी होने का चुनाव करना होगा अन्यथा यह अन्य धर्मों की तरह धर्म का लेबल लगा हुआ होगा जो अनन्तकाल का उद्धार नहीं ला सकता है।

एक चेला वह है जो चेला बनने के लिए चुनाव करता है। इसलिए हमें बहुत स्पष्ट होना चाहिए कि यह एक व्यक्तिगत, बुद्धिपूर्ण और समझबूझकर उठाया गया कदम है (हमारे जीवन के किसी भी पड़ाव में) कि यीशु मसीह को अपने जीवन के **प्रत्येक क्षेत्र** में उसे प्रभु बनने के लिए अनुमति दें।

इसलिए प्राय: एक विश्वासी का वपतिस्मा होने बाद पानी से तुरन्त बाहर आते हुए यह गीत गया जाता है; ''यीशु के पीछे मैं चलने लगा, न लौटूंगा, न लौटूंगा।''

पानी का बपतिस्मा उसके लोगों के लिए प्रभु परमेश्वर की प्रभुसत्ता और अचूक 'इच्छा और योजना' में था जो उसके नाम के कहलाते हैं और इस बात को बहुत गम्भीरता से लेने की आवश्यकता है।

जब प्रभु ने अपने चेलों और अनुयायियों के लिए अपना उदाहरण रखा, तब उसका अर्थ आपसे और मुझसे भी था कि हम पानी के बपतिस्मे की विधि का अनुसरण करें जैसे आरम्भिक अनुयायियों ने किया था। इस प्रकार का कोई सुझाव न था कि जब पहले चेले इसका अनुसरण कर चुके होंगे तो तब अगले चेले इसका अनुसरण करेंगे और तब अगली पीढ़ी ऐसा करेगी, तब उसके बाद यही रीति उनके बच्चों के द्वारा बपतिस्मा लिए जाने के द्वारा पूरी होगी। तौभी बात यह है कि आज बपतिस्मा बच्चों का बपतिस्मा की रीति-रिवाज और धार्मिक अनुष्ठान बन गया है जिसका अर्थ ऐसा कभी नहीं था। यह कार्य आपके और मेरे माता-पिता का नहीं था कि वे हमारे लिए करें लेकिन उसके अनुयायी होने के नाते यह हमारी **स्वतन्त्र इच्छा** में होना चाहिए। नए नियम में अन्य सभी बातों की तरह **'बपतिस्मा भी स्वतन्त्र इच्छा से आना चाहिए।**

कुछ लोग (परमेश्वर के पवित्र आत्मा के नम्र स्पर्श के द्वारा) विवश होते हैं

कि वे पानी के बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर के आज्ञाकारी हों। लेकिन बाद में दुर्भाग्यवश मसीही समाज उन पर दबाव डालता है कि वे यह विचार करें कि उनका समुदाय क्या कहना चाहता है कि क्या परमेश्वर का वचन हमारे ऊपर है या सामुदायिक दबाव और रीति-रिवाज इसके ऊपर हैं?

हमें नए मसीही विश्वासियों के हियाव को देखकर चुनौती लेना चाहिए जो अन्य विश्वासों से आए हैं और बहुत विरोध के बाद भी वे पानी के बपतिस्मा में प्रवेश करते हैं। यह हमारे लिए वास्तव में लज्जाजनक बात है कि हमारा जन्म मसीही परिवारों में हुआ है और हम लम्बे समय से झिझक रहे हैं जबकि परमेश्वर के आत्मा ने हमें कायल किया है, तौभी हम अपने-अपने समुदायों के घोसलों में आराम के साथ बैठे रहते हैं।

आज हम 'खतनारहित गैर यहूदी मसीही नहीं होते यदि प्रेरित पतरस अपने समय के मसीही समाज के दबाव में झुक जाता, उसके उस बड़े दर्शन के बावजूद जो उसने उस छत पर देखा था कि प्रभु ने उसे चुनौती दी है कि परमेश्वर के अनुग्रह का द्वार यीशु मसीह के द्वारा गैर-यहूदियों के लिए खुल गया है।

प्रेरितों के काम 11:1-4

*[1] फिर प्रेरितों और भाईयों ने जो यहूदिया में थे सुना कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है। [2] अतः जब पतरस यरुशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उससे वाद-विवाद करने लगे [3] **'तूने खतनारहित लोगों के यहां जाकर** उनके साथ खाया'। [4] तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया:*

एक और उदाहरण है। आज हम मसीही लोग इस बाइबल के साथ आशीषित नहीं होते जो हमारी अपनी भाषा में अनुवादित है (उस बाइबल के अतिरिक्त जो मूलरुप से इब्रानी और यूनानी में थी) यदि विलियम टिण्डेल मसीही समाज के दबाव में झुक जाते क्योंकि उस समय कलीसिया ने उन्हें बाइबल का अनुवाद करने से रोका था। बल्कि वे शहीद हुए यह सब इसलिए हुआ कि उन्होंने वह सोचा और करने की हिम्मत की जो परमेश्वर का आत्मा उन्हें बता रहा था, पहली बाइबल का अंग्रेजी में अनुवाद करने का काम।

मार्टिन लूथर के विषय में क्या है जिन्होंने (घोर दबाव के बीच) विरोध करने की हिम्मत की क्योंकि उस समय के रुढ़िवादी पुरोहित वर्ग मसीहियों का विश्वास परमेश्वर के लिखित वचन बाइबल से मेल नहीं खाता था।

मैं ढेर सारे उदाहरणों को लिख सकता हूं। परन्तु प्रश्न यह है कि **जब प्रभु अपने दोषरहित वचन से एक सत्य को प्रकट करता है तो क्या आप और मैं उसके प्रति आज्ञाकारी होकर उसे करेंगे या फिर तर्क-वितर्क करके उसका विरोध करेंगे?** यदि हम उसका विरोध करते हैं तो यह इसलिए है कि हम अपने समुदाय के विचारों को परमेश्वर के लिखित वचन से ऊपर रखते हैं।

कभी-कभी एक नए विश्वासी के लिए (एक पश्चात्तापी पापी) यह बहुत आसान होता है कि वह प्रभु यीशु में अपने सादा विश्वास के साथ आकर (बपतिस्मा के बारे में) उसकी आज्ञाओं और मांगों को स्वीकार करे, जैसा बाइबल में लिखा है अपेक्षाकृत हमारे जो मसीही परिवारों में उत्पन्न हुए हैं और कलीसिया के भाग रहे हैं, जिनके अन्दर रीतिरिवाज़ और परम्पराऐं कूट-कूट कर भर दी गई हैं।

यह उसी के बहुत समान है जिसे लूका ने लिखा है जो प्रभु यीशु ने कहा था:

लूका 7:29-30

*[29] और सब साधारण लोगों ने सुनकर और चुंगी लेनेवालों ने भी यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। [30] परन्तु फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उससे बपतिस्मा न लेकर **परमेश्वर के अभिप्राय को अपने विषय में टाल दिया।***

हम उन सब का निष्कर्ष निकालेंगे जो अभी हमने ऊपर पढ़ा है कि वे लोग जो आज्ञाकारी हैं परमेश्वर के सत्य को मानेंगे और स्वतन्त्र होंगे और जो अनाज्ञाकारी होंगे वे इसका तिरस्कार करेंगे। फरीसी केवल तर्क-वितर्क करने, दोष ढूंढ़ने या बहाने बनाने में रुचि रखते थे, न कि सत्य को खोजने और स्वतन्त्र होने में। वे लोग जो आज परमेश्वर के वचन के सत्यों का विरोध करते हैं वे किसी भी रीति से प्रभु यीशु के पृथ्वी पर के समय के फरीसियों से भिन्न नहीं हैं।

अत: मैं आपसे पूछता हूं क्या आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना

का तिरस्कार कर रहे हैं? या जैसा मैंने परिचय में चर्चा की है, कि हममें से कुछ अभी भी उन लोगों के समान हैं जो प्रभु यीशु के समय में थे:

यूहन्ना 12:42-43

[42] तौभी अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, ***परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे,*** *कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालय में से निकाले जाएं: [43]* ***क्योंकि मनुष्यों की ओर से प्रशंसा उनको परमेश्वर की ओर से प्रशंसा की अपेक्षा अधिक प्रिय लगती थी।***

प्राय: हम अपने मुंह से यह अंगीकार करते हैं कि हम प्रभु को प्रेम करते हैं। परन्तु ऐसे समय (जो लिटमस जांच की तरह आते हैं) सिद्ध करते हैं कि क्या हम वास्तव में उसे प्रेम करते हैं। यीशु ने अपने शब्दों में कहा, कि यदि हम कहते हैं कि हम उसे सच में प्रेम करते हैं तो अपना सच्चा प्रेम उसकी आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा प्रकट करेंगे (**यूहन्ना 14:15**)। जैसा प्रभु यीशु ने पतरस से पूछा '*क्या तू इन सब से बढ़कर मुझे प्रेम करता है?*' ये **'इन सब'** हमारे चारों ओर के दबाव हो सकते हैं जो हमें अपनी गर्दन को सीधा रखने से रोकते हैं, उन क्षेत्रों में प्रवेश करने की हिम्मत जुटाते हैं जो परमेश्वर का आत्मा मुझसे और आपसे करने के लिए कह रहा है उसके नाम के लिए मैं विश्वास करता हूं कि पानी का बपतिस्मा हम प्रभु यीशु के द्वारा हमारी आज्ञाकारिता की परख है जिसकी उसने हम मसीहियों को आज्ञा भी दी है (**मत्ती 28:19**)।

मसीह में अतिप्रियो, पुराने नियम में परमेश्वर और उसकी सन्तान के बीच बहुत से नियम हैं **परन्तु नए नियम में प्रभु परमेश्वर ने केवल दो मुख्य भौतिक नियमों को ठहराया हैं** (जिन्हें मैं वाचाऐं कहता हूं) जो उसके सच्चे प्रेम के प्रति हमारी आज्ञाकारिता/समर्पण का प्रकटीकरण है और **बपतिस्मा उनमें से एक है** और दूसरा प्रभु भोज है।

प्रभु परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी को अपनी स्वतन्त्र इच्छा से अभिव्यक्त करने का सौभाग्य देता है और हमें इस परमेश्वर प्रदत्त सौभाग्य को कभी खोना नहीं चाहिए जो एक प्रकार से आत्मिक विवाह के समान है। जैसा मैंने कहा कि वह कभी भी हम पर दबाव नहीं डालेगा। जी हां, यह परमेश्वर द्वारा दी गई प्रत्येक विश्वासी को एक आज्ञा है जो प्रभु यीशु में अपने पुराने पापों

का अंगीकार करके पश्चाताप् करता है जो इसे 'बपतिस्मा' और 'रोटी तोड़ने' में भाग लेने -पवित्र भोज' के द्वारा अभिव्यक्त करता है।

जैसी कई बार चर्चा की गई है **यह पूर्णरुप से अनन्तकालीन भयंकर विनाश हो सकता है** यदि हम अपना मस्तिष्क लागू करें (यह सोचते हुए कि हमने मसीहत और परमेश्वर के वचन को अपने जीवन भर माना है) और यह समझने में असफल रहें कि उसके विचार और मार्ग सदैव हमारे विचारों और मार्गो से ऊपर होते हैं। प्रभु के लिए यह है कि जब **वह अपने समय** में एक प्रकाशन लाता है तो वह केवल इतना चाहता है कि हम उसका **तुरन्त पालन करें** और उस बात के लिए हम तर्क-वितर्क या वाद-विवाद न करें जिसे करने के लिए वह हमें बुला रहा है।

पतरस का एक और उदाहरण लें- वह प्रभु यीशु के पीछे इतनी निकटता से चलता था लेकिन आरम्भ में उसने उस काम के लिए इन्कार कर दिया जिसे प्रभु उससे करवाना चाहता था, प्रभु यीशु के द्वारा उसके पांवों को धोया जाना। इसके लिए प्रभु ने पतरस को चेतावनी दी कि यदि वह इस काम में भाग लेने से मना करेगा तो पतरस प्रभु यीशु के साथ सम्बन्ध रखने की जोखित उठाएगा-**यूहन्ना 13:8**

विश्वासियों के बपतिस्मे के अध्याय को अन्त करते हुए, मैं यह कहना चाहता हूं कि हम प्रभु यीशु को बहुत प्रेम कर सकते हैं और मैं कोई नहीं होता कि इस पर प्रश्न करूं और हम बाइबल को बहुत अच्छी तरह जान सकते हैं, पूरे दिन किसी बात को सिद्ध करने के तर्क-वितर्क कर सकते हैं, परन्तु याद रखें कि यहूदी (बहुत) भी अपनी बाइबल को हम सबसे अधिक अच्छी तरह जानते थे तौभी उन्होंने अपने ही मसीहा को नहीं पहचाना।

मेरी प्रार्थना यह है कि आप केवल परमेश्वर को खोजें न कि मनुष्य को **और तब बिना हिचकिचाए और देरी के उन बातों के प्रति आज्ञाकारी बनें जिन्हें पवित्रात्मा आपको बता रहा है।**

यह मेरे लिए बहुत कठिन है कि मैं आपके साथ (परन्तु बहुतों के लाभ के लिए मैं बाटूंगा) एक भयंकर घटना को बांटू जो यह दिखाती है कि शायद दूसरा अवसर न मिले। मेरे निकटतम् मित्र के माता-पिता हाल ही में अपने पुत्र के पास

कुछ समय बिताने आए। एक रविवार को मैं उसके पिता से मिला और कलीसिया के बाद उन्हें चुनौती देने लगा कि क्या वे अगले सप्ताह कलीसिया में होने वाले बपतिस्मों में भाग ले सकते हैं जिनके नामों की घोषणा की गई थी। वह बहुत उत्साहित दिख रहे थे और उन्होंने मुझे बताया कि कुछ समय से पवित्रात्मा उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए प्रेरित कर रहा था। उन्होंने अपने पास खड़ी अपनी पत्नि और पुत्र की ओर देखते हुए उन्हें बताया कि मैं उनसे क्या कह रहा था। बाद में मैंने अपने पास्टर से कहा कि वह उनसे सम्पर्क करें। यह जानकर कि मेरे मित्र के पिता भी बपतिस्मा लेने के लिए बहुत उत्सुक हैं और उनसे पूछें कि क्या वे उस सप्ताह बपतिस्मा लेना चाहेंगे। कुछ दिनों के बाद पास्टर ने मुझे फोन करके बताया कि मेरे मित्र के पिता जी अपने देश में वापस जाएंगे और वहां किसी से बपतिस्मा लेंगे जो उनके मन में है। एक सप्ताह के बाद वह समय आया जब उन्हें अपने देश वापस जाना था और जब वह जहाज में बैठे तो उनके देश में वह जहाज रनवे की रोड़ी से टकराया और मेरे मित्र के पिता का एक भयंकर हार्ट अटैक हुआ और वह अपनी सीट पर बैठे हुए ही मर गए।

मैं न्याय नहीं कर रहा हूं और मैं न्याय करने वाला कोई नहीं होता हूं कि उनकी आत्मा कहां होगी परन्तु बस इतना कह रहा हूं कि कभी-कभी विलम्ब करना बहुत महंगा पड़ता है।

परमेश्वर का वचन इब्रानियों 4:6-7 में कहता है:
6 तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहले सुनाया गया ***उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया,*** *7 इसलिये वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे 'आज का दिन' कहता है। जैसे पहले कहा गया,* ***'यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।'***

मैं आपके साथ नीचे कुछ बाइबल के पदों को छोड़ रहा हूं ताकि आप स्वयं उन्हें पढ़ें और उन पर विचार करें जो बाइबल के सत्य पानी के बपतिस्मा के बारे में है (शायद आपके प्रातःकालीन मनन के समय) ताकि

आप इस महत्वपूर्ण कार्य और परमेश्वर की आज्ञा को मानने में देरी, ढुलमुलपन और विलम्ब न करें, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। मैं विश्वास करता हूं कि यदि आप अपने आप निम्नलिखित वचनों को पढ़ेंगे जो बपतिस्मा से सम्बन्धित है **आप बिना किसी सन्देह के यह जानेंगे** कि आप 'जो विश्वासी हैं' आपको 'वयस्क विश्वासी का बपतिस्मा' लेने की आवश्यकता है। यह कहते हुए दुख होता है, कि आप यह भी जानेंगे कि पारम्पारिक बच्चों का बपतिस्मा, जो आपके स्थान पर लिया गया है, जो केवल औपचारिकता को पूरा करता है, लेकिन दुर्भाग्यवश मसीह की आज्ञा, जो कलीसिया के लिए है जो सुसमाचार को सुनाने के साथ है, पूरा नहीं करता है।

नीचे लिखे पद आपको अध्ययन के लिए बिना उन्हें विस्तृत किये देने के पीछे दो कारण हैं। पहला, मैं विश्वास करता हूं कि एक विश्वासी की तरह यदि आप गम्भीरता से सत्य को जानने के इच्छुक हैं तो यह सबसे अच्छा होगा कि हम सबसे पहले अपने मस्तिष्क, इन्द्रियां और हृदय का अभ्यास करें ताकि स्वयं सत्य को **खोज सकें और पा सकें**। दूसरा, इस प्रकार के वचनों को उनकी सम्पूर्णता में स्वयं अपनी बाइबल में पढ़ने से ठीक प्रकार से समझे जाते हैं।

क्या आप इस पृष्ठ को पलटकर यह कहते हुए इस पुस्तक के अगले अध्याय पर चले जाएंगे कि आगे इस पुस्तक को पढ़ें', या आप थोड़ा रुककर नीचे लिखे हुए प्रत्येक वचनों को पढ़ेंगे यह कहते हुए कि आओ पता करें कि **बपतिस्मा** *के बारे में मेरे लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है?*

अतः आइए इस बाइबल पर आधारित खोज को आरम्भ करें
कि क्या बच्चों का बपतिस्मा
बनाम
वयस्क विश्वासी का बपतिस्मा
कलीसिया के लिए मसीह की आज्ञा को पूरा करता है?

(क्योंकि हमारे विश्वास के लिए बाइबल और मसीह ही अंतिम फैसला होना चाहिए न कि मनुष्य या समुदाय-ठीक है?)

पुराने नियम की भविष्यद्वाणी जो **यहेजकेल 36:25-27** में है,
से आरम्भ करते हुए

प्रभु यीशु की आज्ञा जो **मत्ती 28:18-20** में पाई जाती है तक

प्रेरितों के काम की पुस्तक जो आरम्भिक कलीसिया जैसे **प्रेरितों के काम 2:41; प्रेरितों के काम 8:35-38; प्रेरितों के काम 9:17-19; प्रेरितों के काम 10:47-48; प्रेरितों के काम 16:14-15, 27-34; प्रेरितों के काम 18:8,24-28; प्रेरितों के काम 19:1-8; प्रेरितों के काम 22:12-16**

और तब हम अन्त में पत्रियों में पढ़ते हैं

रोमियों 6:3-8; गलातियों 3:26-27; कुलुस्सियों 2:12; इब्रानियों 10:22; 1पतरस 3:21

जब आप आज्ञाकारिता का यह कदम उठाते हैं तो मैं आपको उत्साहित करते हुए कहता हूं कि मैं सच में विश्वास करता हूं कि परमेश्वर आपके अन्दर अग्नि जलाएगा और उस दिन से आप केवल उसी के लिए जीना चाहेंगे। परन्तु याद रखें कि उसके बाद यह आप पर निर्भर है कि आप उस आग को जलते रहने देते हैं या 'मूर्ख कुंवारियों' की तरह बुझा देते हैं।

अध्याय 7

मसीही भाईचारे के प्रेम का आभाव-एक बड़ी घातक/ अयोग्यता!

इस बहुत महत्वपूर्ण अध्याय पर आते हुए- आज मसीहियों के बीच में 'मसीही भाईचारे के प्रेम का आभाव-एक बड़ा घातक और अयोग्यता है।' इब्रानियों की पुस्तक बहुत से विश्वासियों को चेतावनी देती है कि वे केवल इसी मूर्खता के कारण अयोग्य ठहरे:

इब्रानियों 12:14-17

*[14] सब से मेल **मिलाप रखो,** और उस **पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।** [15] ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि **कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए,** या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा **बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।** [16] ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। [17] तुम जानते हो कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही तो **अयोग्य गिना गया,** और आंसू बहा-बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला।*

ऊपर का पद बहुत स्पष्ट है कि यदि मसीहियों के बीच में कोई कड़वी जड़ है तो वे परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित हैं, दूषित हो गए हैं और अन्त में परमेश्वर के द्वारा तिरस्कृत हो जाएंगे।

इस सातवें और अन्तिम अध्याय में मैं बताना चाहता हूं कि हम विश्वासियों को मूर्ख बनकर अपने मुकुटों को सबसे बड़ी और खतरनाक अयोग्यता के कारण नहीं खो देना चाहिए जिसके कारण आज **'बहुत से लोग परमेश्वर की दृष्टि में दूषित'** हो गए हैं।

इब्रानियों 12:14-17 जैसे अभी हमने पढ़ा, जिसमें पुराने नियम से एसाव का

उदाहरण लिया है, जिसने अज्ञानतावश एक छोटी सी बात के कारण 'परमेश्वर प्रदत्त पहिलौठे का अधिकार' बेच दिया, जैसे भोजन का एक निवाला। यह **मसीही विश्वासियों को सावधान करता है** जो मूर्खतापूर्ण परमेश्वर प्रदत्त अपने उद्धार को फेंक देते हैं-जो एक मुफ्त वरदान है, केवल इसलिए कि वे आपस में एक दूसरे के विरुद्ध कड़वाहट रखते हैं-यह एक मसीही भाई या बहन या परिवार के सदस्य या पड़ोसी के विरुद्ध होती है। हमारा आत्मिक विरोधी इस बात को भली भांति जानता है और हमारे अक्षमा, निन्दा और कड़वाहट के विचारों को बढ़ाता रहता है।

रोमियों 12:9 कहता है

प्रेम निष्कपट *हो; बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो।*

मुझे बताया गया था कि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रतिवर्ष बहुत से पास्टर विश्वास से भटक रहे हैं और बहुत-सी कलीसियाऐं बंद हो रही हैं-क्यों? यह इसलिए हो रहा है कि दुर्भाग्यवश मसीहियों के बीच एकता कम और फूट अधिक हो रही है। परिणाम यह है, कुछ लोग एक मन होकर प्रार्थना और आराधना में जमा होते हैं (जो हमारे मसीही विश्वास की रीढ़ की हड्डी होनी चाहिए) और फिर उनमें भी बंटवारा और गड़बड़ी हो जाती है। यदि वहां संगति होती भी है तौभी वहां दुर्भाग्यवश स्पष्टरुप से भाईचारे की बकवास और झूठी निन्दा होती है। **बहुत दुख की बात है!**

प्रेरित यूहन्ना ने आरम्भिक कलीसिया में इसी प्रकार की कमी को देखकर एक चेतावनी दी जो बड़ी स्पष्ट है कि इस 'भाईचारे के प्रेम के आभाव' के कारण **हमें बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।**

1 यूहन्ना 3:14-15

[14] हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं; क्योंकि हम भाईयों से प्रेम रखते हैं। ***जो प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है।*** *[15]* ***जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है;*** *और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।*

हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस भी इसी बात को सम्बोधित करता है:

1 थिस्सलुनीकियों 4:6-9

[6] कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दांव चलाए,

क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है; *जैसा कि हमने पहले ही तुम से कहा और चिताया भी था। [7]* ***क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है।*** *[8] इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है। [9]* ***किन्तु भाईचारे की प्रीति*** *के विषय में यह आवश्यक नहीं कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं,* ***क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है।***

जी हाँ, हमें मसीहियों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हम एक दूसरे को प्रेम करें क्योंकि हमें वास्तव में हमारे प्रभु यीशु मसीह ने प्रेम करना सिखाया है।

मत्ती 22:37-40

[37] उसने उससे कहा, 'तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। [38] बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। [39] और उसी के समान यह दूसरी भी है कि ***तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।*** *[40] ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।'*

यूहन्ना 15:12

'मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

दुर्भाग्यवश उस दिन बहुत से मसीही इस सबसे बड़े अनाज्ञाकारिता के पाप के विषय में दोषी पाए जाएंगे। **जी हाँ, प्रभु की आज्ञा के अनाज्ञाकारी।** मेरे लिए तो मैं जान गया हूं कि प्रभु यीशु मसीह ने जो भी कहा है वह एक आज्ञा है (न केवल एक सुझाव) और उसे बहुत गम्भीरता से लेना चाहिए। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि उसने इस विशेष **आज्ञा** को स्पष्टरुप से बताया है।

प्रभु यीशु का उदाहरण लें और देखें कि उसने कैसे अपने चेलों और प्रभु में साथी भाईयों पर अपना प्रेम प्रकट किया–यहूदा इस्क्रोयिती पर (जिसने उसे पकड़वाया था)।

अपने चेलों के पैरों को धोने से पहले प्रभु यहूदा को उपरौठी कोठरी को छोड़ने के लिए कह सकता था (अपने चेलों को अपने प्रेम और सेवा की अभिव्यक्ति करते हुए), या प्रभु उससे कह सकता था कि 'अन्तिम भोज' से पहले ही वह वहां से चला जाए। परन्तु नहीं, उसने यहूदा के पैर भी धोए और उसके साथ रोटी तोड़ी तभी यीशु ने कहा कि अब वह उपरौठी कोठरी से चला जाए।

प्रभु का वचन न केवल हमें भाईयों को प्रेम करने के लिए कहता है
परन्तु उन्हें **'अधिक'** प्रेम करने के लिए कहता है

1 पतरस 1:22 कहता है:

अत: जबकि तुमने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, **तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।**

जिस प्रेम के विषय में प्रेरित पतरस कह रहा है उसका अर्थ 'बिना शर्त का प्रेम था।' ***अधिक प्रेम करने का अर्थ है*** कि सीमा पार प्रेम, *अर्थात् भाईयों को तब भी प्रेम करो जब उन्होंने* आपके साथ कठोरता, अन्याय और शत्रुता का व्यवहार किया हो।

तौभी इस प्रेम का यह अर्थ नहीं कि आप एक सह विश्वासी को ठीक नहीं करेंगे यदि आप उसे गलत करते हुए देखते हैं। परन्तु उनके लिए आपका प्रेम उन्हें सत्य बताने के लिए विवश करेगा। **मत्ती 18:15** *'यदि तेरा भाई पाप करे तो जो और एकान्त में उसका पाप उसे जता दे, यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को जीत लिया है।'*

तौभी मुझे यह स्पष्ट करने दीजिए कि इस प्रेम को उस में मिश्रित करने और बांटने की आवश्यकता नहीं है जो भाई पाप में पड़ा है, क्योंकि **1 कुरिन्थियों 5:11–12** हमें चेतावनी देता है।

1 कुरिन्थियों 5:11-12 कहता है:

[11] पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी या मूर्तिपूजक या गाली देना या पियक्कड़ या अंधेर करनेवला हो तो उसकी संगति मत करना वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। [12] क्योंकि मुझे बाहर वालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतर वालों का न्याय नहीं करते।

बाइबल **1 यूहन्ना 4:16-17** में बहुत स्पष्ट है कि हमारे जीवनों में केवल प्रेम की महान उपस्थिति ही के कारण हम प्रभु के सम्मुख न्याय के दिन हियाव के साथ खड़े हो पाएंगे।

1 यूहन्ना 4:16-17 कहता है

*[16] जो **प्रेम परमेश्वर** हम से रखता है उसको हम जान गए हैं और हमें उसका विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है [17] इसी से **प्रेम हममें सिद्ध हुआ है कि हमें न्याय के दिन हियाव हो**, क्योंकि जैसा वह है वैसे ही संसार में हम भी हैं।*

जैसे मैं इस प्रेम से सम्बन्धित अध्याय के अन्त में आ गया हूं, हमें पवित्र भय के साथ यह याद रखना है कि 'परमेश्वर के वचन में' न्याय के दिन जीवन और मृत्यु की सामर्थ है।

हम सब उस प्रार्थना को जानते हैं जो प्रभु ने हमें करने के लिए सिखाई है 'हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है...। परन्तु क्या हम जानते हैं कि उससे अगला ही पद प्रभु की प्रार्थना में इस प्रकार है:

मत्ती 6:15

और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

और इसमें एक उद्धार पाए हुए विश्वासी को शामिल करने या छोड़ देने के विषय में कोई चर्चा नहीं है

प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 4:20-21 में कहा:

*[20] **यदि कोई कहे**, 'मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा **प्रेम नहीं रख सकता** [21] उससे हमें यह आज्ञा मिली है जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है **वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।***

दूसरे शब्दों में, प्रेरित यूहन्ना ऊपर कहता है, हमारा प्रत्येक दावा जो परमेश्वर को प्रेम करने के बारे में है वह बेकार है यदि इसके साथ दूसरे मसीह में विश्वासी जन के लिए निस्वार्थ और बिना शर्त प्रेम न हो (या अपने पड़ोसी के लिए)।

1 थिस्सलुनीकियों 3:12-13

*[12] और प्रभु ऐसा करे जैसा हम तुमसे प्रेम रखते हैं **वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में** और सब मनुयों के साथ बढ़े और उन्नति करता जाए। [13] **ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु** पवित्र लोगों के साथ आए **तो वे** हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।*

दुर्भाग्यपूर्ण बहुत से मसीही लोग सामाान्य मसीही दृष्टिकोण के कारण गड़बड़ी में पड़े हैं और भ्रष्ट हो गए हैं, जो सामान्यरुप से ठीक लगता है लेकिन परमेश्वर के उस दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न है जैसा हम **1 कुरिन्थियों 13:1-8** में पढ़ते हैं:

परमेश्वर के प्रति प्रेम का 'सामान्य दृष्टिकोण' यह है कि जब लोगों के पास आत्मा के वरदान होते हैं, तब हम ऐसे लोगों के बारे में यह कहते हैं, 'ये लोग प्रभु के कितने अधिक निकट हैं इसीलिए प्रभु इन्हें महान रुप से प्रयोग कर रहा है। परन्तु परमेश्वर इसे कैसे देखता है, यह निम्नलिखित पदों में पाया जाता है:

1 कुरिन्थियों 13:1-2

[1] यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ हूं और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान

को समझूं और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं ***परन्तु प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं।***

प्रेम का सामान्य 'सर्वोत्तम दृष्टिकोण' यह माना जाता है - निर्धनों की सहायता करना, अपने शरीरों को पवित्र तीर्थस्थानों की यात्रा में दुख देना, शरीर को चीरना, कोयलों की आग पर चलना, पहाड़ों की चोटियों के ऊपर बने हुए मन्दिरों से भारी बोझ बांधकर गिरना कि कोई अलौकिक शक्ति दिखे आदि आदि।
परन्तु आपकी आंखें खुल जाएं कि प्रभु परमेश्वर इसे कैसे देखता है:

1 कुरिन्थियों 13:3
[3] *यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं या मैं अपनी देह जलाने के लिए दे दूं* ***और प्रेम न रखूं तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।***

अतः वास्तव में प्रेम के प्रति 'परमेश्वर का दृष्टिकोण' क्या है जो निम्नलिखित वचन में है:

1 कुरिन्थियों 13: 4-8 जिसे परमेश्वर प्रेम कहता है:
[4] ***प्रेम*** *धीरजवन्त है, और कृपाल है, प्रेम डाह नहीं करता प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं* [5]*और अनरीति नहीं चलता, झुझंलता नहीं, बुरा नहीं मानता।* [6] *कुकर्म से आनन्दित नहीं होता परन्तु सत्य से आनन्दित होता* [7] *वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातें की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।* [8] ***प्रेम कभी टलता नहीं***

भविष्द्धाणियां हो तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाऐं हो तो जाती रहेंगी, ज्ञान हो तो मिट जाएगा।

अन्त में मुझे अपने आपको **यशायाह 55:8-9** को पुनः याद दिलाने की अगुवाई हो रही है जो कहता है कि 'परमेश्वर के मार्ग और विचार मनुष्यों के

मार्गों और विचारों से बहुत ऊपर हैं। मसीह में प्रियो, मनुष्य के लिए परमेश्वर के मार्गों को जानने का एक ही तरीका है और वह है- 'सम्पूर्ण बाइबल को उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक परिश्रम के साथ पढ़ने के द्वारा।'

1 यूहन्ना 5:3 में यीशु हमारा प्रभु कहता है:
क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है *कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। और उसकी आज्ञाऐं कठिन नहीं।*

निष्कर्ष

(तुम प्रभु का मार्ग तैयार करो)

यशायाह 40:3

परमेश्वर सम्पूर्ण संसार के विश्वासियों को पुकार रहा है कि 'वे पश्चात्तप् करें और लौट आए' और उसके लिए मार्ग तैयार करें हमारे मसीह ख्रीष्ट यीशु के शीघ्र और भव्य पुनः आगमन के लिए। जिसकी प्रभु यीशु ने अपनी सेवा के आरम्भ में **मरकुस 1:15 में गवाही दी जिसे हम नीचे पढ़ेंगे;** वह आज भी पुनः सारे संसार की कलीसियाओं को गवाही दे रहा है–जिसे मैं बाइबल की **'पवित्र आधार पंक्ति'** कहता हूं जो **प्रकाशितवाक्य 22:12** में पाई जाती है!

समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।'

(मरकुस 1:15)

'देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।'

(प्रकाशितवाक्य 22:12)

भविष्यद्वाणी के वचन आज हमारे पास आते हैं जैसे **प्रेरितों के काम 17:30-31** में हैं:

[30] इसलिए परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, ***पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है*** *[31] क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिला कर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।*

इससे अच्छा समय हमारे लिए प्रभु के प्रति अपने प्रथम प्रेम के समान लौट आने का नहीं होगा, जबकि संसार ओबद्याह भविष्यद्वक्ता की भविष्यद्वाणी को पूरा करने की ओर चल रहा है:

ओबद्याह 1:15

'क्योंकि सारी जातियों पर ***यहोवा के दिन*** *का आना* ***निकट है।*** *जैसा तूने किया, वैसा ही तुझ से किया जाएगा तेरा व्यवहार लौट कर तेरे ही सिर पर पड़ेगा।'*

यह चेतावनी कि 'जैसा तुमने किया है वैसा ही तुम्हारे साथ किया जाएगा, स्पष्टता से यह दिखाता है कि जो कुछ काम हमने किए हैं उनकी कीमत चुकानी पड़ेगा। यह कई बार विशेषकर हमारे प्रभु यीशु के वचनों में भी स्पष्टता से आया है।

पुन: हममें से बहुत लोग यह सोचते हैं कि इसमें हम उद्धार पाए हुए विश्वासी शामिल नहीं हैं **परन्तु ऐसे सब लोग गलती पर हैं।** यह प्रकट है जैसे हम निम्नलिखित वचन को पढ़ते हैं कि न्याय धर्मी न्यायी के द्वारा किया जाएगा प्रत्येक व्यक्ति के '**कामों**' के अनुसार।

प्रकाशितवाक्य 2:5

'इसलिए स्मरण कर कि तू कहां से ***गिरा है, और मन फिरा, पहले के समान काम कर यदि तू मन न फिराएगा*** *तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूंगा।*

मत्ती 16:27

'क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय ***वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।'***

प्रकाशितवाक्य 22:12

'देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और ***हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।'***

गलती न करें, सारे **'काम'** जो पवित्रात्मा की अगुवाई में किए गए हैं (जो परमेश्वर ने संसार की नींव पड़ने से पहले बनाए हैं ताकि हम उनमें चल सकें) वे ही **'भले काम'** हैं।

अन्य सभी 'काम' जो किए गए हैं यहां तक कि उद्धार पाने के बाद अच्छे इरादे के साथ वे सब अभी भी मैले चिथड़ों के समान हैं जिनके साथ यह जोखिम है कि प्रभु यीशु हमसे कह देंगे **'मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना'**, यह हमारे ऊपर ऊंचा डंडा होता है (इफिसियों 2:10; मत्ती 7:21-24; मत्ती 25:11-12; रोमियों 8:14; 1 यूहन्ना 2:17; प्रकाशितवाक्य 2:2-7)। अतः सोचिये कि आपके और मेरे लिए यह कितना आवश्यक है प्रभु के साथ हम सदैव अपने आप को जांचते और पूछताछ करते रहें (उसकी प्रतीक्षा करते रहें) क्या हम उन सब कामों में जो हम करते हैं उसकी इच्छा में हैं या नहीं।

'परमेश्वर की इच्छा' को पूरा करने को बाइबल ***'श्वेत वस्त्र'*** कहती है जो बेदाग और बिना झुर्री के हैं। **'श्वेत वस्त्र' या 'विवाह के वस्त्रों'** का सन्दर्भ भविष्यद्वाणी के रुप में है जो 'धार्मिक कार्यों या अच्छे कामों' के साथ उसके प्रकट होने के समय पाए जाएंगे। यह वास्तव में एक रहस्य है। पुराने नियम की दानिय्येल की भविष्यद्वाणी से लेकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचारों के सन्दर्भ तक। काश कि पवित्रात्मा निम्नलिखित बाइबल के वचनों को परिपूर्णता में **खोले** जैसे आप उनमें से प्रत्येक का अध्ययन करते है:

मत्ती 22:11-14

*[11] जब राजा अतिथियों को देखने भीतर आया तो उसने वहां एक मनुष्य को देखा, जो **विवाह का वस्त्र** नहीं पहने था।*

*[12] उसने उससे पूछा, हे मित्र; तू **विवाह का वस्त्र** पहने बिना यहां क्यों आ गया? उसका मुंह बन्द हो गया। [13] तब राजा ने सेवकों से कहा, इसके-हाथ पांव बांधकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो वहां रोना और दांत पीसना होगा*

[14] क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं ***परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।***

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रभु यीशु पुनः श्वेत वस्त्रों का सन्दर्भ देते हैं:

प्रकाशितवाक्य 3:4-6

*[4]पर हां, सरदीस में तेरे यहां कुछ ऐसे लोग हैं **जिन्होंने अपने-अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए,** वे **श्वेत वस्त्र पहने हुए मेरे साथ घूमेंगे** क्योंकि वे इस योग्य हैं।*

*[5] **जो जय पाए** उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा। पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के समाने मान लूंगा।*

*[6] जिसके कान हों वह सुन ले कि **आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'***

प्रकाशितवाक्य 3:18-19,22

*[18] इसीलिए मैं तुझे सम्मति देता हूं कि आग में ताया हुआ सोना मुझसे मोल ले कि तू धनी हो जाए और **श्वेत वस्त्र ले ले** कि **पहनकर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो,** और अपनी आंखों में लगाने के लिए सुर्मा ले कि तू देखने लगे।*

[19] मैं जिन-जिन से प्रेम करता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिए सरगर्म हो मन फिरा।

*[22] **जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है***

प्रकाशितवाक्य के अध्याय 19 और अध्याय 22 इस सत्य को स्पष्ट करते हैं कि श्वेत वस्त्र किस बात को प्रकट करते हैं:

प्रकाशितवाक्य 19:7-8

7 आओ हम आनन्दित और मग्न हों और, उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेमने का विवाह आ पहुंचा है और ***उसकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है***

8 उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया है। ***क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।***

प्रकाशितवाक्य 22:14

14 ***धन्य वे हैं जो अपने वस्त्र धो लेते हैं*** *क्योंकि उन्हें* ***जीवन के वृक्ष*** *के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।*

यीशु के बहुत से दृष्टान्तों में, हम देखते हैं कि लोग स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए आश्वस्त थे, परन्तु उन्हें अचम्भा हुआ यह देखकर कि उन्हें बाहर अन्धकार में डाला गया (दुर्भाग्यवश हमारा आश्वस्त होना कोई फर्क नहीं ला सकता है केवल पवित्र और आज्ञाकारी जीवन फर्क लाता है)।

इब्रानियों 9:28 मेरे मनपसन्द वचनों में से एक है क्योंकि इसमें बड़ी सुन्दरता से लिखा है कि मसीह के आने पर अपने उद्धार के लिए एक विश्वासी को किन-किन बातों के साथ पाया जाना आवश्यक है। बल्कि यह पद संक्षेप में सम्पूर्ण सुसमाचार को अपने अन्दर समाए हुए है और पुनः वही कहता है जो प्रभु यीशु ने **यूहन्ना 14:23-28** में कहा था।

इब्रानियों 9:28 कहता है

वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए ***एक बार*** *बलिदान हुआ; और जो लोग* ***उसकी बाट जोहते हैं*** *उनके उद्धार के लिए दूसरी बार* ***बिना पाप*** *उठाए हुए* ***दिखाई देगा।***

यह इब्रानियों का भाग बाइबल के सुसमाचार के तीन सत्यों को

प्रकट करता है:

1. मसीह ने स्वयं अपने आपको हमारे पापों को हटाने के लिए **एक ही बार** बलिदान दिया और अब बार-बार बलिदान के लिए नहीं आएगा।
2. एक सच्ची और विश्वासयोग्य दुल्हन अपने दूल्हा के वापस आने के लिए **उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगी** (2 तीमुथियुस 4:8; प्रकाशितवाक्य 22:17)। अपने प्रभु यीशु को चाहना और उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करना प्रत्यक्ष रुप से बाइबल में पहली आज्ञा की साक्षी है जो सिखाती है 'हम अपने प्रभु परमेश्वर से सारे हृदय, प्राण और शक्ति से प्रेम रखें।
3. उसके प्रकट होने पर हमें **'पाप से रहित' विजयी** के रुप में पाया जाना चाहिए न कि इससे कम बार-बार जानबूझकर और बिना अंगीकार किये हुए पापों में (1 यूहन्ना 1:7-10; 1 यूहन्ना 3:7-11; प्रकाशितवाक्य 2:4-7; 3:2-5)।

बाइबल कहती है:

*[26] **क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद** यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। [27] हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग की ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगी।*

(इब्रानियों 10:26-27)

कलवरी के दो पहलू!

कलवरी निश्चित रुप से संसार के लिए **परमेश्वर के अकथनीय प्रेम का प्रकटीकरण है**

परन्तु कलवरी-

एक 'पवित्र परमेश्वर' की याद दिलाती है जो पाप को सहन नहीं कर सकती है।

और यह समानता किसी समय नहीं बदलती हैं, हमारे लिए भी नहीं जो उद्धार पाए हुए हैं, जिनसे यह आशा की जाती है कि वे पवित्रता और परमेश्वर के भय में जीवन बिताएंगे अपना सच्चा पश्चात्ताप् करते हुए - **तीतुस 2:11-12**।

मसीह में प्रियो, मैं इस पुस्तक को यह कहते हुए समाप्त करना चाहता हूं, शायद इस पुस्तक के कुछ भाग में ऐसी बातें हों जिनके विषय में आपने पहले कभी नहीं सोचा और न ही पहले कभी सिखाया गया, जिसके कारण ये सत्य आपकी आंखे खोलने वाले हो सकते हैं। और शायद कुछ के लिए कुछ भाग असहमति के रुप में आ सकते हैं। ऐसे सब लोगों के लिए मैं नम्रता से यह निवेदन करूंगा कि 'इन बातों में प्रभु के विचारों को खोजें (न कि मनुष्य के विचारों को) और प्रतीक्षा करें जब तक वही स्वयं आपको उत्तर न दे।

अथवा मुझे दूसरे तरीके से कहने दीजिए, यदि आपके पास इस पुस्तक ***'बाइबल के सत्य खोल गए'*** की किसी भी विषय वस्तु पर कोई प्रश्न है तो कृपया उसे यह समझकर एक तरफ न रख दें कि यह उससे मेल नहीं खाता जो आपको सिखाया गया है, आपके धर्म सिद्धान्त, समुदाय या आपकी परम्परा क्या है (क्योंकि याद रखें आप प्रभु यीशु मसीह के विश्वास में अपने समुदाय या किसी मनुष्य के कारण नहीं आए हैं)। क्या मैं नम्रता से आपको एक बार पुनः चुनौती दे सकता हूं कि प्रभु को खोजें (मनुष्य को नहीं) ताकि इन बातों की पुष्टि पवित्र आत्मा करे और तब अपने **कामों में** हियाव के साथ इनका अनुसरण करें।

जैसा मैंने कई बार पहले कहा है **कि जब हम उस अन्तिम दिन प्रभु परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे** तब हमारा न्याय होगा या धर्मी ठहराए जाएंगे (जैसा मैंने कहा कि यह इसके आधार पर नहीं होगा कि आपने और मैंने क्या सोचा था और हमें क्या सिखाया गया था) परन्तु इस आधार पर होगा **कि क्या लिखा है!**

प्रभु यीशु ने ***यूहन्ना 12:47-50*** *में कहा:*

47 ***यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने*** *तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता; क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूं। 48 जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है; अर्थात्* ***जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।***

49 क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं कीं; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या-क्या कहूं और क्या-क्या बोलूं 50 ***और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है।*** *इसलिए मैं जो कुछ बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसा ही बोलता हूं।*

पुन: प्रभु **मत्ती 7:23-24, 26, 27** *में कहते हैं:*

23 तब मैं उनसे खुल कर कह दूंगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ। 24 इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। ***26परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा*** *जिसने अपना घर बालू पर बनाया। 27 और मेंह बरसा और आंधियां आईं और बाढ़ें आईं और उस घर पर टक्करें लगीं, वह गिर गया। और* ***यह महान विनाश था!***

हम प्रभु यीशु के वचनों को यूं ही नजरअन्दाज नहीं कर सकते हैं, कहीं ऐसा न हो कि वह हमें अपने प्रकट होने के समय

नजरअन्दाज़ कर दे!

मैं यह समझता हूं किसी और से पहले मैं सर्वप्रथम प्रभु की परियोजना हूं, अपने आपको यह याद दिलाता हूं कि मैं वही पापी हूं जिसे मसीह यीशु बचाने आया। यह कि परमेश्वर अपने पवित्रीकरण का काम मुझमें लगातार करता रहेगा जैसे मैं उसके **'अद्भभुत वचन'** को प्रतिदिन पढ़ते हुए कुछ सीखता हूं और कुछ भूलता हूं। वह **अभी भी मुझमें काम करता है।!**

दानिय्येल 12:10 कहता है:

बहुत से लोग तो अपने-अपने को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएंगे; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे ही समझेंगे।

*[20]**अब शान्तिदाता परमेश्वर**, जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लहू के गुण से मरे हुओं में से जिला कर ले आया,*

*[21] **तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो,** और जो कुछ उसको भाता है उसे यीशु मसीह के द्वारा हममें उत्पन्न करे। उसी की* **महिमा युगानयुग होती रहे। आमीन्।**

(इब्रानियों 13:20-21)

यदि बाइबल के सत्यों ने जो इस पुस्तक में हैं आपके मसीही जीवन को चुनौती दी है, तो सारी महिमा प्रभु परमेश्वर को मिले जो एकमात्र सारी महिमा के योग्य है। तब क्या मैं आपसे यह निवेदन कर सकता हूं कि आप इस पुस्तक को अपने मसीही मित्रों के साथ बांटे। मैंने निम्नलिखित बेवसाइट आप तक पहुंचा कर यह सुविधाजनक कर दिया है जो **'निःशुल्क ईबुक' है जिसे आप** डाऊनलोड **कर सकते हैं। प्रभु परमेश्वर आपको आशीष दे और आपको अपने प्रकट होने तक पवित्र, निर्दोष और निष्कलंक रखे।**

www.bibletruthsunlocked.com

कुछ और छपी हुई पुस्तकें हैं जो निःशुल्क बांटने के लिए उपलब्ध हैं और कुछ पुस्तकें मसीही पुस्तक भण्डार और पुस्तकालय के लिए प्रकाशित और छापी जाएंगी जो भण्डार/पुस्तकालय और लेखक के बीच लिखित अनुबन्ध के तहत होगा, जैसा लेखक ने स्पष्ट किया है। तौभी यदि कोई कलीसिया, मिशन संस्थान या प्रार्थना समूह इस पुस्तक को अपने सदस्यों तक उपलब्ध कराना चाहता है (जिसमें अन्य भाषा में अनुवाद भी शामिल है), तो मैं ऐसा करने की अनुमति उन सबको देता हूं जो ऐसा करना चाहते हैं। वे बस बेवसाइट से इसे डाऊनलोड करें और प्रकाशित करें, बशर्ते, पहला, कि इस पुस्तक की विषयवस्तु को न बदलें, न संशोधित करें और दूसरा यह कि यह **पुस्तक निःशुल्क वितरित की जाए।**

'प्रभु का मार्ग तैयार करो;
उसके मार्गों को सीधा करो।'
(यशायाह 40:3, लूका 3:4)

*'**बाइबल के सत्य खोले** गए' नामक पुस्तक बहुत सही समय पर आई है जब कि झूठी शिक्षाओं जिनके विषय में पहले से भविष्यद्वाणी की गई है, ने कलीसिया की दीवारों को मारा है और अब-नासूर की तरह फैलती जा रही है- 2 थिस्सलुनीकियों 2:3; 1 तीमुथियुस 4:1-2; 2 तीमुथियुस 3:1-7; 4:3-4।*

*जब हम सब प्रभु यीशु के सम्मुख खड़े होंगे, तब इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि हमने क्या सोचा था, न ही यह कि हमें क्या सिखाया गया था, परन्तु वही स्थिर रहेगा जो **'लिखा'** गया है। उसके लिखित वचन के अनुसार हमारा न्याय होगा- मत्ती 16:27; 2 कुरिन्थियों 5:10 ।*

*दुर्भाग्यवश आज जो कुछ तेजी से सिखाया और प्रचार किया जा रहा है और सुसमाचारों और पत्रियों के लेखकों और प्रभु यीशु की शिक्षाओं में बहुत अन्तर है। बाइबल यह निर्देश देती है कि इस प्रकार की सभी शिक्षाओं का **खुलासा** किया जाना चाहिए- इफिसियों 5:1-14; 2 यूहन्ना 1:8-11। दुख के साथ कहता हूं, कि बहुत से मसीहियों ने 'परमेश्वर के अनुग्रह को **उल्टा समझा है! तीतुस 2:11-12** कहता है, "क्योंकि परमेश्वर का यह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं" ।*

*झूठी शिक्षाओं का अर्थ है-सत्य से विमुख होना। बाइबल विशेषरूप से कहती है कि अन्तिम दिनों में कलीसिया में **झूठी शिक्षाऐं** बहुतों पर आएंगी, जो धर्म का भेष तो धरेंगे पर उसकी शक्ति को न मानेंगे। आज अधिकांश जो प्रचार किया जाता है वह 'प्रसन्न करनेवाला' सन्देश होता है जिसमें उद्धार पाए हुए पापी के लिए इस बात को सिद्ध करने का आभाव होता है कि उसे उद्धार के निमित्त आज्ञाकारिता के द्वारा **पवित्रता में बढ़ना है**- इब्रानियों 5:8-9।*

*प्रभु यीशु ने ऐसे सभी विश्वासियों को सम्बोधित किया है जिन्होंने 'मूर्खता' के कारण अपनी आत्माओं को अनन्तकालीन के लिए खो दिया है (बहुत से दृष्टान्तों के माध्यम से)। आज कलीसिया **में** दुर्भाग्यवश बहुतों को ज्ञान का आभाव है। **'बाइबल के सत्य खोले गए'** नामक पुस्तक सभी जगह मसीह के विश्वासियों को चेतावनी देती है कि अभी समय है कि हम **परिपक्वता के लिए जाग उठें।***

*जब प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवा आरम्भ की, तब सबसे पहले उसके वचन **'पश्चात्ताप् करने और वापस लौट आने की पुकार थे'**- मरकुस 1:14। संयोगवश वही वचन कलीसिया के लिए उसके भविष्यद्वाणी के वचनों में से थे प्रकाशितवाक्य 2 :4-5; 3:2-6; 22:12-14। यह पुस्तक **उसी बुलाहट पर ध्यान दिलाने के लिए एक शेष है!***

ISBN 978-0-9871722-4-2